संगीतसुदर्शन

हिन्दीभाषामें संगीतशास्त्र

"संगीतं चापि साहित्यं सरस्वत्याः कुचद्वयम्"

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

द्वितीय बार] सन् १९२३ [मूल्य १।)

·क का निवेदन.

पाठक महोदय ! 'संगीत-सुदर्शन' आज आपके सामने है। इस विषय पर हिन्दी में पुस्तकें कम हैं इसी लिए हमने इसे प्रकाशित किया है। संभव है इसे पढ़कर आप इसकी भाषा को कुछ अशुद्ध ठहरायें और इसके लिए प्रेस को उत्तरदाता समझें; इसलिए हम पहले ही से यह निवेदन कर देना उचित समझते हैं कि यह पुस्तक विषय की उपयोगिता के कारण ही इस प्रेस द्वारा प्रकाशित की गई है। भाषा-सम्बन्धी त्रुटियों के दूर करने का जो प्रयत्न प्रेस ने किया था वह ग्रंथकर्त्ता को पसंद न आया, और उन्होंने इस बात का आग्रह किया कि उनकी पुस्तक में ज़रा भी परिवर्तन न किया जावे, क्योंकि उनकी राय में उन्हीं की लेखन-शैली आदर्श है। अस्तु, भाषा-सम्बन्धी या विषय-सम्बन्धी त्रुटियों के लिए प्रेस उत्तर-दाता न समझा जावे यही हमारी प्रार्थना है।

विनीत—

प्रकाशक।

विषयसूची

विषयसूची

स्वराध्याय

रागाध्याय

भूमिकामें नौवातखांजी की जगह नौवतखां प्रसादसे छपगया है, एवं और भी कहीं शब्दकी अशुद्धि हो सो सुधार लेनी।

अच्छा कहा है कि—

"बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवःस्मयदूषिताः" इति।

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२	२१	बुद्धिजनों	मंदबुद्धिजनों
६७	१६	चाय्य	चार्य

२४	१	रखासा	रेखासा
७६	१०	बीराग	श्रीराग
१२५	५	बताई	बनाई
१४१	५	जोड़कर	जोड़का
१४३	३	पंचमपंचम	पंचम
१४३	१६	बनाने	बजाने
१४७	२२	पित्तप्रधान	कफवातपित्तप्रधान
१५५	१६	मेघे	मेघ
१५८	८	रकी	सूरकी
१८२	१०	न्नर्वना	नर्तना
१८८	२०	नर्कः	नर्तकः

६५ पृष्ठपर लिखी खयालियों की रामकली का समय प्रभात है। इसकी गत में दूसरी मींड सात के पड़दे पर जाननी ।

६८ पृष्ठपर गुनकरी की गत में प्रथम मींड को पांचवें पड़देपर जानना

७१ पृष्ठपर शुद्ध विलावल की गत में जो पहली तथा दूसरी मींड के नीचे 'डाडिड़' ये दो दो बोल हैं उनको मिंडे तारपर ही बजाना जो निषाद मध्यम स्पष्ट न बोले ।

७३ पृष्ठपर सुघरई तथा सूहे की गत में जो छै के पड़देपर मीड़ें हैं उनको झटका देकर निकालना।

७६ पृष्ठपर जयश्री की गत के अंतिम डाको दसके पड़देपर जानना।

८२ पृष्ठपर पूरवी की गत में जो मीड है उसको दसके पड़देपर जो प्रथम डा है उस पर जानना। इसके तोड़े में बारहवें डाको नौ तथा आठ के पड़देपर जानना मींड को इससे आगेके डा पर जानना।

८३ पृष्ठपर पूरिया धनाश्री के तोड़ेमें चतुर्थ बोल डा को पंचम पड़देपर बजाना एक स्वर की मीड देनी, और पंचम बोल ड़ा को तीसरे पड़देपर बजाना।

९१ पृष्ठ पर केदारनटके तोड़े मेँ जो मीड है उसे नौ के पड़दे पर जानना।

१०५ पृष्ठपर अड़ाने की गत में छैके पड़देपर जो मीड़ें हैं उनको झटका देकर निकालना।

१०८ पृष्ठपर दरबारी के तोड़े में दूसरी मीड को एक के पड़देपर और तीसरी मीड को नौके पड़देपर जानना।

११३ पृष्ठपर मालकौस के तोड़े मेँ जो ठाकी ठाके चार बोल हैं

मी

उनको 'डा ड़ा डा ड़ा' इस प्रकार जानना।

१ ८ १५ ५

१२१ पृष्ठपर तिलंग की गत में तीसरे पड़देपर जो डा है उसके आगे चतुर्थ पड़देपर एक डा और लगाना।

१२३ पृष्ठपर मीयांकी सारंग की गत में जो दो मीड़ें हैं उनको बारह के पड़देपर एक एक स्वर की जानना।

१२५ पृष्ठपर शुद्ध सारङ्ग की गत में जो दो मीडें हैं उनको नौकं पड़देपर जानना अर्थात् ड़ा बजाकर पंचम को मीड़ना लौटते समय मध्यम की मीड पर डा बजाना।

१२८ पृष्ठपर धूरिया मलार की गत में जो एक का अंक है उसे ११ का अंक ड़ा के नीचे जानना।

१२९ पृष्ठपर नट मलारी में कभी कभी ऋषभ को छोड़ देना।

१३८ पृष्ठपर हिंडोल की गत में तीसरी मीड को तथा तोड़े में भी तीसरी मीड को चढ़े मध्यम की मीड जानना।

१४७ पृष्ठपर पित्त प्रधान रोगों के लिए आसावरी प्रभृति का गाना बजाना हितकर है।

यदि और कोई अशुद्धि नजर में आए तो अपनी बुद्धि से उसे शुद्ध कर लेना। गतों की शुद्धि के लिए उस उस राग के लक्षणपर पूरा ध्यान देना, जिस राग में जो स्वर वर्जित लिखा है वह स्वर उस राग में कदापि न लगाना। मेरे जीते जी यदि यह ग्रन्थ तीसरी वेर छपा तो इसको कुछ और भी बढ़ा दूँगा। किसी उत्तम गुरु से कुछ सीखिये। इत्यलम्।

॥ श्रीः ॥

भूमिका

श्रीसरस्वत्यै नमः

अये रत्नगर्भाऽनर्घरत्नशिरोमणे संगीतविद्याविशारद ! जीवमात्र सुखको चाहताहै कहा भी है—"सुखार्थं सर्वलोकानां प्रवृत्तिः परिचीयताम्" इति. वह सुख अंतःकरण (मन) का धर्म है अतएव भोजनपानादि पुत्रकलत्रादि बाह्य सामग्रीसे भी यदि सुख होताहै तो अंतःकरणमें ही होताहै यथा उसगृहमें प्रज्वलित दीपसे उसगृह में जैसा प्रकाश होसकताहै वैसा प्रकाश बाहरके दीपकसे उसमें नहीं होसकता तथा अंतःकरणमें होनेवाले विद्यादिपदार्थोंसे जैसा सुख होसकताहै वैसा सुख बाह्यपदार्थोंसे नहीं होसकता, क्योंकि सुख और विद्या दोनों अंतःकरणके धर्म हैं और कार्यकारणोंका सामानाधिकरण्य अपेक्षित है।

आजकलके लोगोंने जिसको सुख समझाहै वह वस्तुगत्या सुख नहीं सुखाभास है; इसी कारणसे भारतके पूर्वपुरुष विशेषकर साइन्स-की ओर नहीं झुके वे जानतेथे कि विशेष आयास तथा दौड़ धूपमें सुख नहीं; इसीलिए उन्होंने रेल तार प्रभृति भयङ्कर तथा घोर पदार्थोंका निर्माण न किया अन्यथा वे भी बड़े बुद्धिमान् थे चाहतेतो बहुत कुछ बनाडालते कहा भी है कि "जो सुख छज्जूके चौबारेमें, वह न बल्ख औ बुखारे में"। महाभारतमें भी कहा है कि "अनृणी चाऽप्रवासी च

स वारिचर ! मोदते" इति. इसलिए पूर्वपुरुष जैसी कैसी भी कुटिमें बैठ विद्याचर्चामें तथा परमेश्वरके ध्यानमें सर्वोत्तम सुख समझतेथे वैसे ही करतेथे, वे प्राय: वनोंमें रहतेथे। नगर भी जो थे वे बहुत छोटे छोटे थे। अयोध्याप्रभृति सात नगर सबसे बड़े होनेके कारण ही पुरी कहातेथे। गोचर भूमि तथा गौएं बहुत थीं इस कारण दुग्धकी कुछ कमी न थी वे थोड़ासा तंडुलादि अन्न उत्पन्न करलेतेथे और बड़े आनन्दमें रहतेथे। राजा लोग भी विद्वान् ब्राह्मणोंकी सहायता बहुत करतेथे। रोगादि उपद्रव बहुत ही कम थे, सत्यधर्मका बड़ा विस्तार था।

वस्तुगत्या देखा जाय तो ऐहिक सुख विद्यासे बढ़कर और किसी पदार्थसे नहीं होसकता क्योंकि सुख भी अंत:करणका धर्म है और विद्या भी ज्ञानस्वरूपा होनेसे अंत:करणका धर्म है बस सामानाधिकरण्य होगया; कहा भी है कि–"अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणा:"। तथा—

"मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय दु:खम्।
कीर्तिं च दिक्षु वितनोति तनोति लक्ष्मीं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥"

यथार्थ तो यह है कि विद्यासे ही पुरुष पुरुष कहला सकताहै विद्याके बिना तो उसे एकप्रकारका पशु ही कहनाचाहिए कहा भी है—

"अहितहितविचारशून्यबुद्धे: श्रुतिसमयैर्बहुभिर्बहिष्कृतस्य।
उदरभरणमात्रकेवलेच्छो: पुरुषपशोश्च पशोश्च को विशेष:॥"

"वित्तभ्रष्टान् जगति गणयेत् करतृणेनापि मूर्खान्
विद्वांसस्तु प्रकृतिसुभगाः कस्य नाभ्यर्हणीयाः।" इत्यादि।

उन विद्याओंमेंसे भी साहित्य और संगीत विद्या बहुत ही सुखजनक है कहा भी है—

"संगीतं चापि साहित्यं सरस्वत्याः कुचद्वयम्।
एकमापातमधुरं परमालोचनामृतम्॥"

अर्थात्—यथा नायिका का समग्र ही वपु नेत्रद्वारा सुखजनक होने पर भी स्तनमंडल अधिक सुखजनक होताहै तथैव सरस्वती देवीका समग्र ही विद्यारूपी वपु सुखजनक होने पर भी संगीत और साहित्य मधुर होनेसे अधिक सुखजनक हैं। इन दोनोंमेंसे भी संगीत अधिक सुखजनक है यह स्पष्ट है इसकेलिए किसी प्रमाणकी अपेक्षा नहीं। उत्तमोत्तम संगीत से भी मूर्खसे मूर्ख जन भी प्रसन्न ही होगा, विशेषज्ञलोगोंके आनंदकी तो कथा ही क्या? इसीलिए कहा कि "एकमापातमधुरम्" इति। संगीतविद्याके आनंदमें बहुत लोग फ़क़ीर होगये, उनमें नारदजी भी हैं। आधुनिक कालमें मियाँ तानसेनजीके ज्येष्ठ पुत्र तथा उनके वंशमें होनेवाले और भी कई पुरुष संगीतके आनंदसे फ़क़ीर हो गये। झझर-में मियाँ अमृतसेनजीका सितार सुन एक बंगाली पागल होगया था। कहा है—

"ऐहिकामुष्मिके त्यक्त्वा देवर्षिर्नारदः सदा।
ब्रह्मानन्देपि वीणाया वादने नियतोऽभवत्॥
मृगः सोपि तृणाहारो विचरन्नटवीं सदा।
लुब्धकादपि संगीतं श्रुत्वा प्राणान् प्रयच्छति॥

क्रुद्धो विषं वमन् सर्पः फणामान्दोलयन् मुहुः ।
गानं जाङ्गलिकाच्छ्रुत्वा हर्षोत्कर्षं प्रपद्यते ॥
नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥
वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तालज्ञश्चाऽप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥
तस्य गीतस्य माहात्म्यं के प्रशंसितुमीशते ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेवैकसाधनम् ॥" इत्यादि ।

संगीतविद्या अनादिकालसे चलीआतीहै प्राचीनकालमें इसविद्याके बहुतसे आचार्य होचुकेहैं उनमेंसे कुछ आचार्योंके नाम संगीतरत्नाकरकारने लिखेहैं यथा—

"विशाखिलो दन्तिलश्च कम्बलोऽश्वतरस्तथा ।
वायुर्विश्वावसू रम्भार्जुनो नारदतुम्बरू ॥
आञ्जनेयो मातृगुप्तो रावणो नन्दिकेश्वरः ।
स्वातिगुणो बिन्दुराजः चेत्रराजश्च राहलः ॥
रुद्रसेनश्च भूपालो भोजभूवल्लभस्तथा ।
परमर्दी च सोमेशो जगदेकमहीपतिः ॥
व्याख्यातारो भारतीये लोल्लटोद्भटशङ्कुकाः ।
भट्टाभिनवगुप्तश्च श्रीमत्कीर्तिधरोऽपरः ॥" इति ।

पदार्थमात्रका स्वभाव है कि प्राथमिक बीजावस्थासे परमपोषावस्थाको प्राप्त होकर क्रमशः क्षीण होताहुआ नष्ट होजाता है ये ही—"अस्ति, जायते, वर्द्धते, परिणमते, क्षीयते, नश्यति" ये छै भावविकार कहेहैं । तथा च और विद्याओंके तुल्य यह संगीतविद्या

भी आदिकालमें सर्वथा सीधी सादी होगी ऐसा संभव है; कबसे इसका उत्कर्ष होनेलगा यह कहना अशक्य है अथापि श्रीहरि-दासस्वामीजीके कालमें आकर इसका उत्कर्ष निरुद्ध होगया यह कहाजा सकताहै; अर्थात् श्रीहरिदासस्वामीजी और मियाँ तान-सेनजीके अनंतर इसविद्याका ह्रास होनेलगा तबसे यह विद्या क्षीण होती हुई इससमय लुप्तप्राय होरहीहै, क्यों कि इससमय इस-विद्याके दोतीन ही वास्तविक उस्ताद शेष रहगयेहैं वे भी वृद्ध हैं अत एव दस पाँच वर्षमें उनके अनंतर इतिश्री ही है।

रोना गाना कौन नहीं जानता; और इससमय भी एकप्रकार की संगीतविद्या बढ़ ही रहीहै, किन्तु मैंने जो बात ऊपर लिखीहै वह एक प्रौढ़ संगीतपरिपाटीकी लिखीहै, जो इससमयमें आकर नष्ट होरहीहै। इसी प्रौढ़परिपाटीके अन्त्यकालमें ध्रुवपदके सुख-सेनजी दूलहखाँजी हैदरबख़्शजी; सितारके रहीमसेनजी अमृत-सेनजी; रबाब और स्वरशृंगारके बहादुरसेनजी सादिकअलीख़ाँजी; वीणाके रागरसख़ाँजी रसबीनख़ाँजी; ख़यालके ममदख़ाँजी हस्सूख़ाँहद्दूख़ाँजी; ये लोग अंतिम बड़े नामी उस्ताद होगये इन लोगोंके अनंतर प्रकृत संगीतपरिपाटी बहुत ही क्षीण होगई।

मैं तर्क करताहूं कि संगीतविद्याकी यह प्रकृत प्रौढ़परिपाटी एक हज़ारवर्षसे अधिककी प्राचीन न होगी क्यों कि एकहज़ारवर्षसे पूर्वके अन्यविद्याओंके ग्रन्थ देखनेसे यही सिद्ध होता है कि उस कालमें विद्याओंकी पद्धति बहुत सरल थी कुटिल पद्धति ता एक हज़ारवर्षसे पश्चाद्भावीग्रन्थोंमें ही देखीजातीहै ऐसा ही इस विद्यामें भी जाननाचाहिए। कुटिल करनेवालोंने विद्याकी पद्धतिको इतना

कुटिल करदिया कि विद्वानोंमें विद्वान् (उस्ताद) कहाना कठिन हो गया। विद्वान् लोग ऐसेवैसेके हाथसे तुम्बूरा वीणा प्रभृति साजको खोसलेतेथे। इसकार्यमें सादकअलीखाँजी बड़े ढीठ थे। उन्होंने बहुतसे लोगोंके हाथसे साज (वाद्य) खोसे। चार उस्ताद लोगोंमें बैठ वीणाको बजाना आजकलके सदृश सहज न था। मियाँ अमृतसेनजी कहतेथे कि "आज कल वीणा तो तीतरका पिंजड़ा होगयाहै जो चाहताहै वह उठालेताहै पूर्वकालमें ऐसा न था"।

वस्तुगत्या पूर्वज उस्तादों ने इसको ऐसा परिष्कृत किया कि उसका कहना तथा लिखना अशक्य है। कुम्भनदासजीको बादशाह अकबर ने बड़े आग्रहसे बुलाकर बहुत संमानसे गान सुना सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। श्रीहरिदासस्वामीजीका गान सुननेकेलिए बादशाह अकबर मियाँ तानसेनजीके भृत्य बन बग़लमें उनका तुम्बूरा उठा उनके साथ स्वामीजीके पास गये स्वामीजीका गान सुन अकबरके आनंदकी सीमा न रही, क्यों न हो एक तो स्वामीजी संगीतविद्याके आचार्य दूसरे परम विरक्त भगवद्भक्तोंके शिरोरत्न थे वस्तुगत्या वे गोलोकके दिव्यगायक थे। लोभ और नौकरी पेशेसे इसविद्याकी तासीर नष्ट होतीगई यही बात अमृतसेनजी भी कहतेथे। पूर्वपुरुषोंने इस विद्यासे भी बहुत संमान पायाहै। कईकारणोंसे विद्याके ह्रासके संमानका भी ह्रास होतागया; होते होते इसविद्यावाले कुछ लोग बहुत ही अपमानको सहन करने लगगये, इस अपमानका हेतु भी विद्याह्रास ही है।

प्रथम यह विद्या हिन्दुओंके पास थी बादशाही समयसे मुसलमानोंके पास जानेलगी। बादशाही समयमें मुसलमानोंने अपनी बहुत

ही उन्नति की । होते होते मियाँ तानसेनजीके अनंतर तो मानो इसविद्याने हिन्दुओंको त्याग ही दिया । तानसेनजीके पुत्रपौत्रादि तथा शिष्योंने इसविद्या पर बहुत ही परिश्रम किया खूब जान लड़ाई। कहतेहैं कि मियाँ तानसेनजी के मृतशरीरके आगे उनके एक शिष्यने गाया उससे मृतशरीरसे भी वाह वाह यह शब्द निकला फिर उनके पुत्रने गाया तो मृतशरीर भी एक बार उठकर बैठगया, एवं और भी इसविद्याकी तासीरकी बहुतसी बातें सुननेमें आतीहैं यथा श्री-हरिदासस्वामीजीने अकबरको लंकदहनसारंग सुनाई तो वनमें अग्नि लगगई अकबर बहुत डरे तब स्वामीजीने तानसेनजीको मेघराग गानेको कहा इनके मेघरागसे वर्षा हुई जिससे वह अग्नि शांत होगई। दीपकराग गानेसे उससमय गानेवालेको इतना संताप होताथा कि उसका जीना कठिन होजाताथा इसीसे तानसेनजीने दीपकका गाना बंद करदियाथा। अब वस्तुगत्या कोई भी दीपकरागको नहीं जानता। कोई लोग दीपक जलनेको दीपकरागका फल बताकर कुछ गाकर किसीयुक्तिसे दीपकको जलादेतेहैं यह कुछ सयुक्तिक प्रतीत नहीं होता क्योंकि यदि दीपकका जलना ही दीपकरागका फल होता तो तान-सेनजी दीपकरागके गानेको बन्द क्यों करते ? दीपक जलनेसे तो कोई अनिष्टापत्ति नहीं है इससे प्रतीत होताहै कि दीपकरागका फल कोई भारी अनिष्ट है जिसके भयसे दीपकरागका गाना बन्द करदिया गया । यों अपने घरमें तथा अपनेसे अल्पज्ञ लोगोंके बीचमें बैठकर तो मनुष्य जो चाहे सो गप्प मार सकताहै किंतु उससे विद्वत्समाजमें संमान प्राप्त नहीं होसकता । विद्वत्समाजमें तो जितनी विद्या होगी उतना ही संमान प्राप्त होगा। यहाँ पर यह भी जानलेना आवश्यक

है कि विद्वान् लोगोंके भी आतिथ्योचित आवश्यक संमानसे भी कोई विद्वान् नहीं कहलासकता क्यों कि यदि कोई मूर्ख भी पूर्णविद्वान्के पास जायगा तो क्या विद्वान् उसको 'आओ जी' न कहेगा ? वा आसन न देगा ? आयेहुएका आदर करना मनुष्यमात्रका धर्म है वह आदर विद्वत्ताका सूचक नहीं होसकता; विद्वत्ताका सूचक किं वा विद्वत्ताप्रयुक्त आदर कुछ और ही होता है । जो पुरुष मनुष्यत्वप्रयुक्त उक्त सामान्यसंमानसे अपनेको विद्वान् सिद्ध करतेहैं उनका वह प्रयास विद्वत्समाजमें सफल नहीं होसकता। तानसेनवंशके संगीतविद्याके पांडित्यसे चिढ़कर केवल ईर्षासे उनके परोक्षमें बैठ बहुत लोगोंने उनकी निंदा की और अपने महत्त्वकी गाथा गाई तो भी उससे कुछ न बना। बात तो तब थी यदि उनके संमुख बैठ कुछ चमत्कार दिखाते। मंदबुद्धिलोग ऐसे लोगोंकी गप्पोंको सत्य समझलेतेहैं तर्क कुछ नहीं करते और तर्क तो तब करें जब परमेश्वरने तर्कशक्ति दी हो। कुछ लोग अपनेको पूर्वाचार्योंका वंशोत्पन्न बताकर सिद्ध बनबैठतेहैं मैं पूछताहूँ कि यदि कोई किसी सिद्धपुरुषके वंशका होनेसे ही सिद्ध बन सकताहै तो वह पहले सिद्ध कैसे सिद्ध बने ? वे तो किसी सिद्धके वंशमें उत्पन्न नहीं हुए। एकप्रकारसे तो सभी जगत् परमात्मासे किं वा ब्रह्मासे किं वा पूर्वजऋषियोंसे ही उत्पन्न है उनसे बढ़कर कौन सिद्ध होगा ? तब तो सभी जगत् सिद्ध बनगया ? फिर किसीका विशेष महत्त्व ही क्या ? इससे यही बात सिद्ध होतीहै कि जो कोई बड़ा बनसकताहै वह अपने ही गुणोंसे बड़ा बनसकताहै न कि अपने पूर्वजोंके गुणोंसे किं वा दूसरेकी निंदासे। श्रीशंकराचार्यस्वामी

श्रीहरिदासस्वामी मियाँ तानसेनजी प्रभृति महामान्य लोग कौनसे जगन्मान्यवंशमें उत्पन्न हुएथे ? कहा भी है—

"लोकोत्तरं चरितमर्पयति प्रतिष्ठां
पुंसां कुलं न हि निमित्तमुदात्ततायाः ।
वातापितापनमुनेः कलशात् प्रसूति—
र्लीलायितं पुनरमुद्रसमुद्रपानम् ॥"

"किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः ।
अकुलीनोपि विद्यावान् देवैरपि सुपूज्यते ॥"

"गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवंशो निरर्थकः ।
वसुदेवं परित्यज्य वासुदेवं नमेज्जनः ॥"

"गुणैर्गौरवमायाति न महत्यापि संपदा ।"

"गुणैरुत्तुङ्गतां याति नोच्चैरासनसंस्थितः ।
प्रासादशिखिरारूढः काकः किं गरुडायते ॥"

"गुणेषु क्रियतां यत्नः किमाटोपैः प्रयोजनम् ।
विक्रीयन्ते न घण्टाभिर्गावः क्षीरविवर्जिताः ॥" इत्यादि ।

(पुनः प्रकृत)

यदि मियाँ तानसेनजी दीपकरागका निरोध न करते तो भी इससमय कोई अनिष्टापत्तिकी संभावना न थी क्यों कि जैसे इस समयमें मेघादिरागोंसे वर्षादि फल नहीं होता, वैसे दीपकरागसे भी इससमय कोई फल होनेकी संभावना न थी अथापि उसकाल में कुछ लोगोंको दीपकरागसे अनिष्ट फल होता इससे ही इस राग का निरोध करदियागया ऐसा प्रतीत होताहै ।

कोई कोई रागोंसे कोई कोई रोग भी निवृत्त होतेहैं ऐसा

सुनाहै । कहते हैं कि दिल्लीके एक बादशाहको एक रोग हुआ जो किसी भी चिकित्सासे दूर न हुआ तब हकीमोंने किसी रागविशेष-को सुननेको उनसे कहा, बादशाहने तानसेनवंशके एक वृद्ध फ़कीर उस्तादको बड़े आग्रह तथा सम्मानसे बुलाकर सुना तो वह रोग नष्ट होगया । अलवरके विनयसिंहजीराजाका ज्वर किसी चिकित्सासे जब न हटा तो वैद्यने कहा कि किसी उस्तादकी भैरवीमें तासीर हो तो उससे यह ज्वर जायगा राजाने रहीमसेनअमृतसेनजीसे यह वृत्तान्त कहा उन्होंने सितारमें भैरवी ऐसी बजा सुनाई जिससे राजाका ज्वर दूर होगया। झझरमें एकदिन सर्प एकघंटाभर इनका सितार सुनतारहा । पंजाबमें नाभेके राजाकी निद्रा नष्ट होगईथी एकगायकके रागविशेषको गानेसे फिर निद्रा आनेलगगई। जयपुरके रूपनिवासबागमें अमृतसेनजीने ऐसा सितार बजाया कि कई चिड़ियाँ सितारपर आबैठीं । अमृतसेनजीने एकदिन किदारेकी एक ऐसी तान ली जिससे चाँदनी कुछ अधिक प्रतीत होनेलगी। पूर्वज पुरुषोंके रागोंसे जलाशय लहराने लगतेथे, लहराते हुए स्तब्ध होजातेथे, मृग आजातेथे, बादल उड़जातेथे इत्यादि बहुतसे फल सुननेमें आतेहैं। आजकलतो अधिकसे अधिक मनोनुरञ्जनसे अधिक कुछ फल देखनेमें नहीं आता इसका कारण भी कुछ निश्चित नहीं होता न जाने रागस्वरूपोंमें कुछ भेद होगया, या उनलोगोंके कोई योगादिसामर्थ्यका वह फल था, या उन उन रागोंकी कोई विशेष तानोंसेवे फल होतेथे और वे तानें आगेके शिष्योंको प्राप्त न होनेसे फलदर्शन नष्ट होगया; कुछ पूरा पता नहीं चलता ।

उत्तरोत्तर बुद्धि और श्रमके मंद होजानेसे भी विद्याकी अल्पता

होतीगई, और कुछ दुर्जनशिष्योंकी दुर्जनताके कारण गुरुलोग संशयित होकर सज्जनशिष्यों से भी विद्यामर्मको छिपाने लगे । इस छिपावसे भी विद्याएँ नष्ट हुई । गुरु बुद्धि और श्रम ये तीन जैसे ही उत्कृष्ट होतेहैं वैसी ही विद्या भी उत्कृष्ट होतीहै, यह भी एक चमत्कार है कि पूर्ण नैयायिकसे तर्कसंग्रह पढ़नेसे जैसा तर्कसंग्रह आताहै मुक्तावलीमात्र पढ़ेसे पढ़नेसे वैसा नहीं आता यही रीति और भी सब विद्याओंमें जाननी चाहिए इस कारण भी विद्याओंका ह्रास होताजाताहै । भारतवर्षका न जाने क्या दुर्दैव है जो चाहे शिष्य कितना भी बुद्धिमान् और श्रमी क्यों न हो तो भी गुरुके बराबर नहीं पहुँचता । जो विद्वान् उठ जातेहैं उनकी समताका आगे कोई नहीं निकलता, श्रीगंगाधरशास्त्रीजीमहाराजका विद्याचमत्कार उनके साथ ही चलागया, अमृतसेनजीके भागिनेय शागिर्द मियाँ अमीरख़ाँजी (१) ने कुछ कम श्रम नहीं किया और इस समयमें ये संगीतविद्या-के अद्वितीय उस्ताद भी हैं तो भी अमृतसेनजीकी अपेक्षा ये उनके चतुर्थांशसे अधिक नहीं हैं । यही दशा और विद्याओंकी भी जानिए । यह भारतीयविद्याओंका ह्रास हृदयको विदीर्ण करे डालताहै बड़े शोककी बात है तथापि वश कुछ नहीं, यदि वश होता तो मैं अपने उस्ताद मियाँ अमृतसेनजीसे सितारके निजप्रावीण्यमें रत्तीभर भी कमी न होनेदेता । किसीने अच्छा कहा है—"दैया कहाँ गये वे लोग !" इति । इसविद्यामें वेश्याओंके प्रवेशसे भी बड़ी क्षति हुईहै इनके संगसे मनुष्य प्रायः मनुष्यत्वसे भी क्षीण और अप्रामाणिक होजाताहै फिर विद्याकी तो कौन कथा ? ।

(१) ये मियाँ अमीरख़ाँजी अब वर्त्तमान नहीं हैं सं० १९७२ कार्तिकमें मरगये ।

आजकल जैसे कुछ लोग अपने ही मुखसे उस्ताद बनजातेहैं वैसे कुछ लोग पदकों (तमगों) से उस्ताद बनजातेहैं बहुतसे पदक छातीपर लटका लिये बस होगया शेष कुछ नहीं रहता उन पदकोंसे उनका पैर पृथ्वीपर नहीं डटता। उनपदकोंमेंसे कुछ तो ख़ुशामद-पसंद श्रीमानोंके दियेहोतेहैं कुछ अपने मित्रबंधुबांधवोंके दियेहोतेहैं, शेष स्वयं बनवा लियेजातेहैं। विद्याके ह्रासमें गुणग्राहकोंका अविवेक भी भारी कारण है। गुणग्राहक लोग मूर्ख दंभी पाखंडियोंका आदर करनेलगगये अत एव वास्तविकविद्वान् भूखे मरनेलगे। इसभेदको जाननेवालोंने विद्याश्रमको त्याग दंभ पाखंड मार्गका ग्रहण करलिया क्यों कि सब कोई आदर और धनको प्रथम चाहताहै। गुण-ग्राहकोंके इस अविवेकके कारण वास्तविक विद्वानोंने अपनी संतानको भी विद्याश्रमका क्लेश देना कम करदिया। वास्तविक विद्वान् अपने मुखसे अपनी प्रशंसा नहीं करते; इतना ही नहीं वे अपनी विद्याके सत्यस्वरूपको भी अपने मुखसे नहीं कहते, न कभी दूसरेका निरादर करतेहैं। वास्तविक विद्वानोंके स्वभावादिक कैसे होतेहैं इसको वही जानसकताहै जिसने किसी वास्तविक विद्वान्का संग कियाहो। सी० आई० ई० महामहोपाध्याय श्रीगंगा-धरशास्त्रीजीसे किसी मादृश मूर्खने पूछा कि 'आप क्या पढ़ेहैं?' उन्होंने उत्तर दिया कि 'कौमुदीके दो चार सूत्र' ऐसी बोलचाल विद्वानोंकी होतीहै। मादृश दंभी तो यही उत्तर देता कि 'सब कुछ पढ़ेहैं'। दंभी लोग प्रथम तो अपने ही मुखसे अपने गीत गालेतेहैं, फिर कुछ लोगोंको रुपया पैसा देकर गवालेतेहैं इससे अविवेकी लोग उन दंभियोंको ही विद्वान् और विद्वानोंको मूर्ख जानलेतेहैं।

परमेश्वर जिसको नष्ट करे उसको ऐसा ही नष्ट करे जैसा उसने भारतको नष्ट कियाहै। जिस भारतमें बड़ी बड़ी बुद्धि और परिश्रमोंसे वृद्धावस्थामें जाकर विद्याके आचार्य कहला सकतेथे, अब उस भारतमें आठ आठ दस दस वर्षके बालक भी विद्याके आचार्य कहातेहैं, अत एव वे विद्याहीन रहजातेहैं, क्यों कि बालककेलिए आदर विषके समान है। आठ दस वर्षकी अवस्थामें बृहस्पति भी जिस विद्याके मर्मको पा नहीं सकता उस विद्याके मर्मको आठदस-वर्षका मनुष्य-बालक कैसे पायगा? इतना भी विचार लोग नहीं करते बड़े शोकका स्थान है। न जाने इस भारतने परमेश्वरका ऐसा क्या अपकार कियाहै जो यह ऐसी अधोगतिको पहुँचा है।

ऐसी दशामें वे ही लोग विद्वान् हुए जिनको विद्याका नशा लग गया और लोगोंसे धनमानकी परवाह न रही। इस लापरवा-हीसे विद्वान् बनजानेपर भी लोगोंके अविवेकसे उनका भी उत्साह अवश्य टूट जाताहै। विद्वानोंके बालकोंकी बिना कारण स्वयं ही विद्यासे रुचि निवृत्त होतीजातीहै ये सब ईश्वरकोपके फल हैं, अन्यथा बालक उक्त अविवेक कथाको क्या जाने? यूरपपर आज परमेश्वरकी कृपा होनेसे वहाँ विवेक है अत एव वहाँ दिन दूनी रात चौगुनी विद्यावृद्धि होरहाहै।

हमारे देशमें प्रथम शांतरसका बड़ा प्रस्तार था इसकारण उस समय बड़े बड़े भगवद्भक्त और ज्ञानी होगये। उससमय विद्यायें भी बड़ी शांत थीं। काल सदा एकसा नहीं रहता इससे तदनन्तर वीररस का प्रभाव बढ़ा बहुतसे व्यवहारोंमें अभीतक वीररसानुसरण चला-आताहै यथा पंजाबमें वर वधू एक दिन लकड़ी खेलतेहैं, बहिन

भाईको वीर कहतीहै इत्यादि। उस समय विद्याओंमें भी वीररस घुस-गया; विद्वान् लोग विद्याकेलिए प्राण देदेतेथे। उसीसमय विद्याओंने भी उन्नति पाई। किंतु विद्यावीरोंका समय एक दो हज़ार वर्षसे प्राचीन प्रतीत नहीं होता। तदनन्तर शृंगाररसका राज्य बढ़ा इसरसके राज्य-से सभी विद्याओंकी बहुत क्षति हुई; देश नष्टप्राय होगया; संगीत-विद्यामें वेश्याओंके प्रवेशसे भी बहुत क्षति हुई, यही दशा प्रायः सब देशोंकी क्रमसे होतीहै क्यों कि उक्त तीनों रसोंका चक्र निरंतर घूमता रहताहै। अब आगे फिर प्रकृत विषयको लिखताहूँ।

जैसे अनेक प्रकारके वाद्य होनेसे उनकी वादनप्रणाली अनेक प्रकारकी है वैसे गानप्रणाली भी अनेक प्रकार की है यथा ध्रुवपद (धुरपत) ख़याल टप्पा ठुमरी इत्यादि। इनमेंसे धुरपत की प्रणाली सबसे प्राचीन है श्रीहरिदासस्वामी तानसेनजी बैजू इत्यादि लोग इसी प्रणालीके आचार्य थे। इस प्रणालीके उस्ताद लोग गानकालमें प्रथम गेय रागका आलाप करतेहैं फिर उस रागकी सरगमोंको और फिर चीज़ों (पदों) को गातेहैं। आलाप करना बड़ा क्लिष्ट है आलापको वे ही उस्ताद करसकतेहैं जिनमें कल्पनाशक्ति होतीहै। उस्ताद शागिर्द आलापका मार्ग (प्रकार) बतादेतेहैं आलाप घोखा नहीं जाता। गायक अपनी कल्पनाशक्तिसे आलाप करताहै। यदि आलापकी दस पाँच तानोंको घोख भी ले तो उतनेसे कुछ बन नहीं सकता जब घंटा आधाघंटा आलाप किया तो वहाँ घोखीहुई दस पाँच तानोंसे क्या बनेगा? बड़े उस्ताद लोग तो तीन तीन चार चार घंटे एक एक रागका आलाप करतेथे, इसीकारण उन लोगोंमें आज कलके सदृश एकबार बहुतसे रागोंको गानेका प्रचार न था, किन्तु एकबार (एक

मुजरेमें) एक वा दे रागोंको गाते बजाते थे । जिस रागको गाते बजातेथे उसका दरिया बहादेतेथे; कानोंमें वह राग रम जाताथा। लखनऊके एक गुणग्राहीने कहाथा कि रहीमसेनजीकी भीमपलासी आजतक कानोंसे नहीं निकली।

आलापकी श्रेष्ठता यह है कि एक तो रागका स्वरूप न बिगड़े यह भी छोटीसी बात नहीं क्यों कि उस राग के समीप समीप जो राग खड़ेहैं उनसबसे उसरागको बचाकर शुद्ध रखनाचाहिए इसके-लिए उन समीपस्थ सब रागोंके स्वरूपका ज्ञान होनाचाहिए, दूसरे कल्पना उत्तरोत्तर नवीन होनीचाहिए उन्हीं तानोंको बारबार लेनेसे विज्ञलोग हँसदेतेहैं, तीसरे कल्पना मार्मिक होनीचाहिए, चौथे कल्पना रमणीय = मनोहर होनीचाहिए जिससे विज्ञ श्रोतालोग आनंद में मग्न होजाएँ। जैसे अपना कुरूप भी पुत्र अपनेको चंद्रमासे भी बढ़कर सुन्दर लगताहै एवं अपना तुच्छसा भी गुण अपनेको भारी रमणीय प्रतीत होताहै तथा आनंदित करदेताहै तो भी वैसे गुणसे विद्वत्समाज में मान प्राप्त नहीं होसकता। गुणीको तटस्थ होकर अपने गुणकी ओर देखनाचाहिए इस प्रकार बार बार देख अपने गुणको विद्वत्समाजग्राही बनानाचाहिए। विद्याके दोषोंको सर्वथा निकाल उसे उत्कृष्ट करनाचाहिए। ये ही विशेष खयालकी फिकरे-बंदीमें भी जानने। 'ताय नों री तनन नों री ता आ आ री त नों' इत्यादि बोलोंसे आलाप कियाजाताहै।

जिसरागकी जो 'सा रे ग म प' इत्यादि स्वरानुपूर्वी है वह उस-रागकी 'सरगम' कहलातीहै। इन अक्षरोंपर रागोंके स्वरोंको शुद्ध अभिव्यक्त करना सहज नहीं; दूसरे सरगमसे रागस्वरूपको पूर्ण

रूपसे खड़ा करदेना भी सहज नहीं क्यों कि सरगमके स्वर खड़े होतेहैं। सरगमको गायक प्रायः घोख लेतेहैं। बड़े उस्ताद तो कुछ सरगमकी भी तत्काल कल्पना करतेहुए भी गातेहैं यह भो बहुत कठिन है। कोई कोई कभी कभी सरगमको नही भी गाते।

किसी छंदोबद्ध कविता (पद) में जो किसीरागकी तानोंको तथा किसीतालको नियत करदेतेहैं उसे ध्रुरपत कहतेहैं यह तानोंका नियत करना सहज नहीं है, बड़े उस्ताद लोग ही उत्तम प्रकारसे करसकतेहैं। मट्टी ख़राब करनी तो कौन नही जानता? इसकारण प्रायः पुराने उस्ताद लोगोंके हीं बनायेहुए ध्रुरपत चले आतेहैं, उन्हींको गायकलोग सीखकर गातेहैं। यद्यपि ध्रुरपतमें कल्पनाशक्तिका काम नहीं तथापि उसको यथार्थरूपसे यादकर यथार्थरूपसे सभामें गाना सहज नहीं। उस्तादने ध्रुरपतकी तानें जैसी बताईहैं वैसी ही रहनीचाहिएँ बिगड़ न यहो इसमें मर्म है। बिगड़ी तानोंको सुधारना तो फिर बड़ी ही बुद्धिका काम है। वस्तुगत्या उत्तरोत्तर कालमें वे तानें बिगड़ ही जातीहैं इसमें उत्तरोत्तर सीखनेवालोंके बुद्धिमांद्य तथा प्रमादादिक ही कारण हैं। जिन छंदोंमें रागकी उत्तम मार्मिक तानें रक्खी जातीहैं वे ही उत्तम ध्रुरपत कहातेहैं। ऐसे ध्रुरपत प्रत्येक रागके दस बीस से अधिक प्राप्त नहीं होसकते। पूर्वज उस्ताद स्वयं कविता करके भी उसमें रागतानोंको नियत करतेथे और किसी अन्य उत्तम कविकी कवितामें भी रागतानोंको नियत करलेतेथे। सूरदासजी प्रभृति उत्तम कवियोंके पदोंमें भी तानसेनवंशके उस्ताद लोगोंने रागतानें नियत कीहैं जो अभीतक गानेमें आतीहैं। ध्रुरपतिये उस्ताद

लोग उक्तरीतिसे आलाप कर सरगम गा पाँच सात उत्तम ध्रुरपत गाकर गानेको समाप्त करदेतेहैं। ध्रुरपतके उत्तम उस्तादों को सब रागोंके मिलाकर हज़ारों ध्रुरपत याद होतेहैं।

मैंने जिस ध्रुरपतप्रणालीका यह इतिवृत्त लिखाहै वह कबसे चली यह जानना असाध्य ही है, तो भी मेरी रायसे यह हज़ार आठ सौ वर्षसे अधिककी प्राचीन न होगी इससे प्राचीन जो प्रणाली थी उसी का यह परिष्कृत रूप है; यह सर्वथा उससे भिन्न भी नहीं। सौभाग्यकालमें विद्या (पदार्थमात्र) परिष्कृत होती होती बहुत उत्कृष्टावस्थाको प्राप्त होजातीहै, दौर्भाग्यकालमें विकृत होती होती नष्टप्राय वा नष्ट ही होजातीहै। अंत में इस विद्यामें तानसेनवंशने बहुत ही उत्कर्षका सम्पादन किया। गाना श्वासके अधीन है इसकारण जैसाही श्वास लंबा होगा वैसा ही गाना अच्छा होगा क्यों कि जहाँ-तक एक श्वाससे पहुँचनाचाहिए वहाँतक पहुँचनेसे पूर्व यदि श्वास टूटजाय तो तान टूटजानेसे गानका आनंद बिगड़ जाताहै उस पर भी तानसेनजीने तथा उनके पुत्रपौत्रोंने तो ध्रुरपतोंमें ऐसी तानें रक्खीहैं जिनकेलिए बहुत ही लंबे श्वासकी अपेक्षा है। ध्रुर-पतके जो अस्ताई प्रभृति खंड (पाद) हैं उनमेंसे एक खंड समाप्त हुए बिना श्वास टूटना न चाहिए। हैदरबख़्शजीके पुत्र अज्जूख़ाँ-जीने समग्र एकध्रुरपतको एकश्वासमें गानेका अभ्यास कियाथा किन्तु इस अभ्यासकी कठोरतासे उनकी छातीसे मुखके मार्ग रुधिर गिरने लगगयाथा इसीसे वे मर भी गये यह काम ऐसा कठोर है। तानसेनजीके दौहित्रवंशने यह विशेषता की कि अपने ध्रुरपतोंमें वीणाकी तानोंको रखदिया इससे इनके ध्रुरपत और

भी कठिन होगये। वस्तुगत्या जिसको वीणाका तत्व ज्ञात नहीं उसकेलिए इनके धुरपत बहुत ही क्लेशप्रद हैं।

तानसेनवंशके धुरपतियोंके साथ कुछ ईर्षा द्वेष बढ़जानेके कारण तानसेनजीके दौहित्रवंशमें होनेवाले सदारंगजीने ख़याल-प्रणालीकी रचना की। इनका पैतृक नाम न्यामतख़ाँ था। सुनते हैं कि बादशाही दरबारमें जब धुरपतका गान होताथा तब तान-सेनदौहित्रवंशके वीणाकार लोगोंको धुरपतियागायकके पीछे बैठ वीणा बजानी पड़तीथी कुछकालतक तो यह क्रम चला, तदनन्तर वीणाकारलोगोंने इसमें अपना निरादर जान पीछे बैठ वीणाके बजानेको त्याग दिया इस कारण इनका दरबार बंद होगया यही ईर्षा द्वेष बढ़नेका कारण सुननेमें आताहै आगे परमेश्वर जानें। सदारंगजीने ख़यालप्रणालीकी रचना करके प्रथम दो भिक्षुक बालकोंको अपने पास रख उनको ख़याल सिखाया जब वे ख़यालगानेमें प्रवीण होगये तब बादशाहीवज़ीरके द्वारा बाद-शाहको उनका गाना सुनवाया, नवीनप्रकारका गान सुन बाद-शाह बहुत ही प्रसन्न हुए, इस कारण फिर सदारंगजीका दरबार में प्रवेश हुआ। इस घटनाको करनेवाले वज़ीर सदारंगजीके किं वा उनके पिताके शागिर्द थे, और वे बादशाह तानसेनपुत्रवंशके किसी धुरपतियेके शागिर्द थे। इन ख़यालियोंने अपने लिए बहुतसे रागोंके स्वरूपोंमें भी कुछ भेद करलिया उसे यथामति रागाध्यायमें लिखूँगा।

तानसेनजीके पुत्रवंशके तथा दौहित्रवंशके लोग गानेमें धुरपत ही गातेथे बजानेमें वीणा रबाब स्वरशृंगार सितार

इन्हीं वाद्योंको बजातेथे तथा सभामें एतदतिरिक्त गाने बजाने में अप्रतिष्ठा समझतेथे इसकारण सदारंगजीके किसी भी पुत्रादि ने सभामें ख़याल न गाया इससे सदारंगजीके नीचे उनके सिखाये उक्त भिक्षुक बालक ही ख़यालप्रणालीके उस्ताद हुए। इनका भी ख़यालविद्याके कारण दरबारमें और प्रजामें बहुत संमान हुआ। ये बालक तानसेनवंशके न थे। इनसे डूम (तानसेनवंशातिरिक्त गायक मुसलमान) लोगोंने ख़ूब अच्छी तरह ख़याल सीखा। ख़यालविद्यामें अंतमें हस्सूख़ाँहद्दूख़ाँजीने बहुत कीर्त्ति सम्पादित की। हस्सूख़ाँ हद्दूख़ाँ और नत्थेख़ाँ ये तीन भ्राता थे प्रथम इन्होंने किसी औरसे ख़याल सीखा पीछे उसकालके सर्वोत्तम ख़यालिये ममदख़ाँजीसे रीवाँमें जाकर पूर्णश्रमसे ख़याल सीखनेका आरंभ किया। ये बड़े बुद्धिमान् थे इस कारण ममदख़ाँजीने जाना कि ये थोड़े ही कालमें मेरी सब विद्याको लेलेंगे यह सोच इनको सिखाना छोड़ घरसे निकालदिया। इनको विद्याकी बड़ी लगन थी इससे ममदख़ाँजी जब रातमें गाते तब ये उनके घरके नीचे खड़े रहकर उनका गाना सुन सुन कर उड़ानेलगे। इस चोरीको समझ ममदख़ाँजी रीवाँसे चल दिये, ये भी चोरीसे ममदख़ाँजीके पीछे पीछे गये। अनेक विपत्तियाँ उठाईं किन्तु ममदख़ाँजीका पीछा इन्होंने न छोड़ा। इसी प्रकार उड़ा उड़ाकर ममदख़ाँजीकी शेष विद्या इन्होंने ले ही तो ली। ममदख़ाँजीकी जैसी ही विद्या थी वैसी ही आवाज़ भी बड़ी मधुर थी कंठ बड़ा सुरीला था यही हाल हस्सूख़ाँजीका भी था। इस विद्याप्रावीण्यके कारण हस्सूख़ाँहद्दूख़ाँजी गवालियरनरेश-के उस्ताद बने और बहुत संमान पाया। एक दिन लोकसभामें

इन्होंने गाया और अमृतसेनजीने सितार बजाया इन्होंने अमृतसेन-जीसे कहा कि 'मैंने सितार आज ही सुना' अमृतसेनजीने कहा कि 'मैंने ख़याल आज ही सुना' ये लोग ऐसे प्रवीण थे। इस उक्त विद्याकी चोरीसे हद्दूख़ाँहस्सूख़ाँजीसे और ममदख़ाँजीसे वैर बढ़ गया गुरुशिष्यभाव कुछ न रहा आपसमें काटकतर चलती-थी। एकदिन गवालियरनरेशके दरबारमें रातको ममदख़ाँजीने बड़े ज़ोरशोरसे बहुत ही उत्तम गाया हस्सूख़ाँजीसे यह सहा न गया इसकारण ममदख़ाँजीके पीछे गाने बैठगये। इनकी पसलीमें बहुत पीड़ा थी हकीम तथा डाकृरने इनको बहुत रोका यहाँतक कहा कि 'आप गानेसे मर जायँगे' इन्होंने कुछ न सुना यही कहा कि 'एक-दिन मरना तो ज़रूर है' इन्होंने भी बड़े ज़ोरशोरसे ऐसा गाया कि ममदख़ाँजीका सब गाना गादिया चारों ओरसे 'वाह वाह' की वर्षा हो रहीथी इतने में इन्होंने एक तान ऐसे ज़ोरशोरसे ली कि तानके साथ आयुष्य भी समाप्त होगया वही पसलीकी पीड़ा इतनी बढ़ी कि उन्होंने बड़े क्लेशसे उस तानको समाप्त किया, समाप्त करते ही पृथ्वीपर गिरगये और हाय हाय करने लगे किंतु चमत्कार यह है कि इतनी पीड़ा होनेपर भी तानको बिगड़ने नहीं दिया। ये थोड़े ही कालके अनंतर मरगये। महाशय! पूर्वज विद्वान् विद्यामें ऐसा अभिनिवेश रखतेथे देखिए प्राण देदिये किंतु विद्यामें अपनी बात नीची न होनेदी। हस्सूख़ाँहद्दूख़ाँजी तो मर गये परन्तु उनका नाम नहीं मरा वह तो जब तक ख़याल विद्या है तब तक बराबर अमर ही रहेगा। इस समय इनका पुत्र रहमतख़ाँ भी ख़यालका अद्वितीय विद्वान् है इसकी आवाज़ भी

बहुत ही उत्तम है। इस समय इसके बराबरका दूसरा ख़्यालिया नहीं है। उक्त अंतिम गानके विषयमें यह भी सुना है कि जब ममदख़ाँजी गाते थे तब हस्सूख़ाँजी वहाँ न थे हद्दूख़ाँजी थे ममदख़ाँजीके गानेके अनंतर हद्दूख़ाँजीने भ्राता हस्सूख़ाँजीको नीचेसे बुला कर गानेको बिठादिया आगे वही हुआ जो ऊपर लिखा है, ऐसा सुननेमें आताहै आगे राम जाने।

ख़्यालगानेवाले उस्ताद लोग गानकालमें प्रथम ख़्यालको गाकर फिर उस राग में फ़िकरेबंदी करते हैं (फ़िकरे लेते हैं) इसके अनंतर गानको समाप्त करदेतेहैं। कोई कोई तरानेको भी गाते हैं। धुरपतकी गानक्रियामें कभी भी गला फिराया नहीं जाता अर्थात् कंठ स्थिर रहता है। ख़्यालकी गानक्रियामें गला फिराया भी जाता है अर्थात् कंठ कंपित भी होताहै। यही इन दोनों गानक्रियाओंमें विशेष भेद है। रागस्वरूप तो सर्वत्र एकसमान ही रहताहै तो भी धुरपतियोंके और ख़्यालियोंके वसंतप्रभृति किसी किसी रागके स्वरूपमें भी भेद पड़गयाहै इसको आगे लिखूँगा। धुरपतियोंके रागोंके ख़्याल भी बन सकते हैं और ख़्यालियोंके रागोंके धुरपत भी बन सकते हैं तथा बने हुए भी हैं, ख़्याल और धुरपत की प्रणाली का भेदक कारण तो दूसरा ही है कुछ रागस्वरूप नहीं। ख़्यालकी अपेक्षा धुरपतमें रागका स्वरूप भारी प्रतीत होताहै।

छंदोबद्ध कविता (पद) में जो किसी रागकी तानोंको और किसी तालको नियत करदेतेहैं उसे ख़्याल कहते हैं यह तानोंका नियत करना बड़ा कठिन है। धुरपतकी और ख़्यालकी तानोंका भेद अवश्य है किंतु उसे लिखना कुछ कठिन है। बहुतसे

ख़याल सदारंगजीके बनाये हैं उन्हींको लोग गातेहैं । सदारंगजी ही ख़यालके मूल पुरुष हैं । और जो विशेष धुरपतके प्रकरणमें लिखे हैं वे इस विषयमें भी समझ लेनेचाहिएँ । कोई लोग धुरपत और ख़याल का यह भी भेद कहतेहैं कि धुरपत के अस्ताई अंतरा भोग ये तीन खंड होतेहैं ख़यालके अस्ताई और अंतरा ये दो ही खंड होते हैं, प्रथा ऐसी होने पर भी इसमें व्यतिक्रम होनेसे भी कुछ क्षति प्रतीत नहीं होती । धुरपत और ख़यालके जो कई एक अवांतर भेद हैं उनको गुरुसे जानना चाहिए । धुरपत और ख़यालका परस्पर उतना ही भेद है जितना हस्ती और अश्वकी चालमें भेद है । धुरपतकी अपेक्षा ख़यालमें चपलता है ।

उक्त ख़यालके अस्ताई अंतरेको गाकर जो उस्ताद लोग उस रागमें तालबद्ध चलते फिरतेहैं अर्थात् कंपितकंठसे जो तानोंकी कल्पनाको करतेहैं उसे फ़िकरेबंदी कहते हैं, इसीमें ख़यालियोंका पाण्डित्य देखाजाताहै, यह भी कल्पनाशक्तिके बिना नहीं होसकती; इसकी भी वही श्रेष्ठता है जो आलापकी लिखीहै, अर्थात् १ रागका स्वरूप न बिगड़े, २ कल्पना उत्तरोत्तर नवीन हो, ३ कल्पना मार्मिक हो, ४ रमणीय हो । धुरपत और ख़यालकी तानोंके स्वरूपमें भी कुछ भेद रहताहै । इस ख़यालकी गवाईने धुरपत और आलापमें अरुचिका बीज बोदिया जो इस समय खूब लहरा रहाहै । तदनंतर ठुमरी टप्पेने ख़यालसे भी अरुचि उत्पन्न करदी, सत्य अनुगम तो यह है कि निकृष्टसंगीतने उत्कृष्टसंगीतसे बुद्धिजनोंकी अरुचि कर दी ।

पूर्वोक्त धुरपतकी गवाईमें जितनी गंभीरता है उतनी गंभीरता

ख़यालकी गवाईमें नहीं, टप्पेमें और भी कम है। ख़याल टप्पा प्रभृति गानेवालेका कंठ धुरपत गानेके योग्य नहीं रहता क्यों कि ख़याल प्रभृतिके गानेसे कंठमें कुछ न कुछ कंप उत्पन्न हो ही जाता है और कंठकंप तो धुरपतमें सर्वथा निषिद्ध है। जब कि धुरपत-प्रभृति एक भी प्रणालीमें पूर्ण पांडित्यका सम्पादन करना कठिन है तब अनेक प्रणालियोंमें पूर्ण पांडित्य भला कैसे सम्पादित हो सकता है? इसी कारण पूर्वज उस्ताद लोग एक ही प्रणालीमें व्याम करतेथे एक ही प्रकारका गान गाते थे; धुरपतिए ख़याल नहीं गातेथे, ख़यालिये धुरपत नहीं गातेथे। आजकल जो लोग कहते हैं कि 'हम धुरपत ख़याल सब गातेहैं' उन लोगोंको वस्तुगत्या कुछ भी नहीं आताजाता; वे मूर्ख मंडलीमें ही विद्वान् (उस्ताद) कहासकतेहैं। यही बात वाद्योंमें भी जानलेनीचाहिए। किसी भाग्यवान्को ही एक वाद्य बजाना आसकताहै; अनेक वाद्य बजाने वाले कुछ भी नहीं जानाकरते, किं वा अभ्यस्तातिरिक्तकी मट्टी ख़राब कियाकरतेहैं ऐसा कहनाचाहिए। उस्ताद लोग ऐसा न करते हैं न बोलतेहैं। श्रीगंगाधरशास्त्रीजीमहाराज कहाकरतेथे कि 'जिसको एक दो ग्रंथ आजायँ उसका भारी भाग्य समझना चाहिए शास्त्रोंकी बात तो बहुत दूर है' वस्तुगत्या ऐसा ही है।

वाद्य दो प्रकारके हैं—१रागके, २ तालके। रागवाद्य भी दो प्रकारके हैं—१जो तार चढ़ाकर बजायेजातेहैं यथा वीणा सितार रबाब स्वरशृंगार सरोद सारंगी तुंबूरा इत्यादि। इनको 'तत' कहते हैं "ततं वीणादिकं वाद्यम्" इति। २ जो कंठसे बजायेजातेहैं यथा बंशी शहनाई अलगोजा इत्यादि इनका सामान्य नाम 'सुषिर' है

क्यों कि इनमें छिद्र होतेहैं–"वंशादिकं तु सुषिरम्" इति। तालवाद्य भी दो प्रकार के हैं—१ जिनका मुख चमड़ेसे मढ़ा होताहै यथा मृदंग ढोलक तबला नगारा इत्यादि इनका सामान्य नाम आनद्ध है—"आनद्धं मुरजादिकम्" इति। २ जो परस्परमें टकराकर बजायेजातेहैं यथा खड़ताल प्रभृति इनका सामान्य नाम 'घन' है— "कांस्यतालादिकं घनम्" इति।

ततवाद्योंमें वीणा सबसे प्राचीन है वीणाके ही आधारसे लोगोंने सितार रबाब प्रभृति वाद्य बनायेहैं। रबाबके बाद स्वरशृंगार निकला फिर सरोद सारंगी निकले ऐसा तर्क होताहै। तुंबूरा भी बहुत प्राचीन वाद्य है, प्रतीत होता है कि गानेमें स्वरस्थिरताके साहाय्यकेलिए इसे तुंबुरु गंधर्वने प्रथम बनायाहै इसी कारण इसका 'तुंबुरीय' यह नाम पड़ा वह बिगड़ता बिगड़ता तंबूरा होगया। तुंबूरी' यह नाम कुछ लोगोंसे सुना भी है। आज कल जो लोग स्वपाण्डित्यप्रकटनार्थ इसे 'तानपूरा' कहतेहैं वह कुछ युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होता क्यों कि स्वरोंके आरोहावरोहको ही तान कहते हैं उसकी पूर्त्ति तुंबूरेके अधीन नहीं, तुंबूरेसे षड्ज और पंचम ये ही दो स्वर निकला करतेहैं इस कारण तुंबूरा तो केवल स्वरका सहायक मात्र है। वीणाके अनेक प्रभेद हैं यथा रामवीणा भरतवीणा रुद्रवीणा नारदवीणा इत्यादि। वीणाके वादनमें तानसेनजीके दौहित्र-वंशने खूब उत्कर्ष किया। तानसेनजीके जामाता (दामाद) नौबातखाँजी वीणावादनमें श्रीहरिदासस्वामीजीके शागिर्द थे ये वीणामें बड़े प्रवीण थे शरीरसे बड़े बलिष्ठ थे इनकी पाचनशक्ति और क्षुधा भी बहुत थी, सुना है कि एक दिन ये बादशाहअकबरको रात्रिमें वीणा

सुना रहेथे इतनेमें वायुके झोंकसे मोमबत्ती बुझगई इन्होंने एक ऐसी ठोक बजाई कि मोमबत्ती फिर जलउठी। इनकी वीणाकी ध्वनि बहुत दूरतक सुनाई देतीथी। तानसेनजीके वंशमें होनेवाले कुछ लोग रबाब स्वरशृङ्गारको भी बजाने लगगये। अंतमें रबाब स्वरशृङ्गारमें बहादुर-सेनजीने और सादिक़अलीख़ाँजीने बहुत कीर्ति पाई, इनमेंसे बहादुर-सेनजी प्यारख़ाँजीके भानजे थे और बाँदा लखनऊ रामपुर इन स्थानोंमें रहतेथे। सादिक़अलीख़ाँजी प्यारख़ाँजीके भतीजे थे और काशीमें ही ज्यादा रहतेथे ये स्वभाव के क्रोधी थे छोटे मोटे गुणी-की इज्ज़तको झट उतारदेतेथे।

नौबातख़ाँजीके वंशमें अन्तमें रसवीनख़ाँजी भारी वीणाकार हुए, लोग इनको दूसरे नौबातख़ाँजी कहतेथे, ये प्रथम ऐसे ही फिरा करतेथे एक दिन एकसमाजमें निरादर पाकर पितासे खानेको संखिया माँगा पिताने बहुत समझाया कहा कि संखिया खानेकी कोई ज़रूरत नहीं, परिश्रम करो, चौबीस दिनमें तुमसे वीणा बजवा दूँगा, वैसा ही किया; फिर तो ये वीणाके अद्वितीय उस्ताद होगये। रागरसख़ाँजी भी उस समय भारी वीणाकार थे ये रसवीनख़ाँजीसे बड़े थे उनकी बूआ के पुत्र भाई थे और रसवीनख़ाँजीके पिताके ही सिखाये हुएथे। इन लोगोंका गोत खँडारे कहाताहै।

नौबातख़ाँजीके वंशमें कोई कोई लोग ध्रुरपत भी गातेथे। इन लोगोंने ध्रुरपतमें वीणा की भी तानें रखदीहैं यह विशेष कियाहै। इस वंशमें इस समय वज़ीरख़ाँजी हैं ये भी वीणामें बड़े प्रवीण हैं रामपुरनवाबके उस्ताद हैं और वहाँ बड़ी प्रतिष्ठासे रहतेहैं।

सुषिरवाद्योंमें वंशी सबसे प्राचीन है तो भी शहनाई बहुत उत्तम

है। शहनाई काशीकी प्रसिद्ध है। आनद्धवाद्योंमें मृदंग सबसे प्राचीन समझा जाताहै। मेरी ज्ञानमें तो नगाड़ा डफ इत्यादि मृदंगसे भी प्राचीन प्रतीत होतेहैं। मृदंगसे ही तबलेकी रचना हुई। मृदंगवादनमें अन्तमें कदौसिंहने बहुत कीर्ति पाई ये अद्वितीय मार्दंगिक थे लय ताल बोल हाथ सभी इनके उत्तम थे इन्होंने बहुत लोगोंको मृदंग सिखाया ये बाँदा दतिया प्रभृति कई रियासतोंमें नौकर रहे। सुनतेहैं कि इन्होंने गणेशपरन बजाई तो हाथीने इनके आगे मस्तक झुकादिया। घन वाद्य तो बहुत मामूली वाद्य है। अब मैं आगे सितारका वृत्तान्त लिखताहूँ।

सितारको अमीरखुसरों फ़कीरने निकाला और इसपर तीन तार चढ़ाये इसी कारण इसका नाम 'सहतार' रक्खा, फ़ारसीमें 'सह' नाम तीनका है। यह भी सुनाहै कि अमीरखुसरोके पीरकी सिद्धि किसी फ़कीरने चिढ़कर छीन लीथी उस फ़कीरको प्रसन्न कर अपने पीरकी सिद्धिको लौटा लानेकेलिए ही अमीरखुसरोने सितारको निकाला। उस समय यह एक साधारण वाद्य था। अमीरखुसरो तानसेनजीके दौहित्रवंशमें थे, इनके पुत्र फ़ीरोज़ख़ाँजी हुए फ़ीरोज़ख़ाँजी के पुत्र मसीतख़ाँजी हुए मसीतख़ाँजीने पितासे सीख सितारको कुछ परिष्कृत किया। विलंपतका मसीतख़ानी बाज इन्हीं के नामसे प्रसिद्ध है इसीको दिल्लीका बाज (बजाना) भी कहते हैं। उस समय सितारमें जोड़ बजानेका प्रचार न था केवल गत तोड़ा बजाया जाताथा। मसीतख़ाँजीने अपने भागिनेय दूलहख़ाँजीको सितार बताया, दूलहख़ाँजी धुरपत तथा वीणा दोनोंमें बड़े प्रवीण थे उस समयके भारी उस्ताद थे ये कुछ काल गवालियरनरेशके

निकट भी रहे । दूलहखाँजीने अपने जामाता रहीमसेनजीको सितार सिखाया रहीमसेनजीने सितारको ऐसा परिष्कृत किया कि वीणाके समान बनादिया । रहीमसेनजीने अपने पुत्र अमृतसेनजीको सितार बताया इन्हेंाने सितारको यहाँ तक परिष्कृत किया कि जगत् में सितार रहीमसेनअमृतसेनजीका कहागया । इनके सितारसे वीणा-कार डरतेथे । वीणाका कोई अंग इन्हेंाने बाक़ी न छोड़ा बल्कि कई बातें वीणासे भी अधिक कर दिखाईं । असलमें वीणाका नाम बड़ा होनेपर भी इनका सितार वीणासे भी कठिन है क्यों कि वीणामें तालका कुछ काम नहीं सितारमें तालका भी काम है रागदारी तथा जोड़ तो जैसे वीणामें हैं वैसे इनके सितारमें भी है ही । सच तो यह है कि इन्हेंाने वीणा धुरपत खयाल इन तीनोंको अपने सितार में भरदिया क्यों कि इन्हेंाने प्रथम जोड़ फिर गत तोड़ा फिर फ़िकरे इनको सितारमें बजानेका अरंभ किया, इनमेंसे जोड़ वीणा-का और आलापका अनुकरण है; गत तोड़ेको धुरपतके तथा ख़या-लके अस्ताई अंतरेका अनुकरण कह सकतेहैं, फ़िकरे ख़यालकी फ़िकरेबन्दीका अनुकरण हैं । कोई कोई बात इनके सितारमें ऐसी भी है जो कंठ और वीणा इन दोनोंसे भी नहीं निकल सकती यथा मिज़राब प्रभृति । मियाँ तानसेनजीके पुत्रवंशमें सबसे प्रथम मियाँ रहीमसेनजीने ही सितार बजाया इनसे पूर्व सितार तानसेनजीके दौहित्रवंशमें ही था । रहीमसेनजीके पिता सुखसेनजी तो धुरपतके भारी उस्ताद थे, उनके पिता पितामह भी ऐसे ही थे । मसीतखाँजी संबंधमें अमृतसेनजीके दादा लगतेथे । मसीतख़ाँजीके पुत्रका नाम बहादुरख़ाँजी था इन्होंने भी सितारके बहुत से गत तोड़े बनाये,

उनमेंसे शुद्धसारंगकी गत बहुत ही उत्तम है, अतएव अभीतक चलीआतीहै। अमृतसेनजी इनको चचा कहतेथे।

रहीमसेनजीके अमृतसेनजीसे छोटे दो पुत्र न्यामतसेनजी और लालसेनजी नामके और थे। इनमेंसे न्यामतसेनजीको भ्राता अमृतसेनजीने और लालसेनजीको पिता रहीमसेनजीने सितार सिखायाथा। दोनों ही अत्युत्तम सितारिये बनगयेथे। न्यामत-सेनजीका हाथ बहुत कोमल था, ये छोटी अवस्थामे ही मथुरामें मरगये। लालसेनजीको मैंने भी देखाहै इनकी आकृति विशेषकर तानसेनजीकी तसवीरके तुल्य थी। दैवात् एक कच्ची धातु खानेसे इनके हाथ ख़राब होगयेथे ये भी अपने भ्राता अमृतसेनजीसे दोवर्ष पूर्व जयपुरमें मरगये। इनके मरनेसे मियाँ अमृतसेनजीको बहुत शोक हुआ। अमृतसेनजीने इनके मरनेका कार्य (दशमाप्रभृति) और तुकता बहुत उत्तम किया। इस अवसरकी सेवासे मियाँ अमृतसेनजी मुझपर बहुत प्रसन्न हुए।

रहीमसेनजीने और भी बहुतसे शागिर्दोंको तथा अपने कुलवालोंको सितार बताया था, इनमेंसे हुसेनख़ाँजी सबसे प्रवीण निकले ये संबंधमें रहीमसेनजीके छोटे भ्राता लगतेथे। रहीमसेनजीने एक दिन बहुतसे लोगोंको झझरमें हुसेनख़ाँजी का सितार सुनवाया लोगोंसे पूछा कि 'आप लोग प्रसन्न हुए?' उनमेंसे रत्नसिंह पखावजी बोला कि प्रसन्न तो बहुत हुए किंतु आपने यह अमृतसेनके गले पर छुरी फेरी है। यह सुन रहीमसेनजी बोले कि 'रंज मत करो अमृत-सेनका हिस्सा जुदा रक्खा है।' उस समय अमृतसेनजी बालक थे। फिर अमृतसेनजीको अपना आंतरिक सितार सिखा उन लोगोंको

सुनवाकर अपने पूर्वोक्त वचनको सत्य करदिखाया । अनेक शिष्यों-को एक ही विद्या भिन्न भिन्न प्रकारसे बतानी सहज नहीं यह बड़े पाण्डित्यका काम है । हुसेनखाँजी इंदौरमें रहे और वहीं मरे इंदौर तथा उस देशमें और राजदरबारमें इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी ।

एक बार झझरके नवाबने रहीमसेनअमृतसेनजीसे सितारमें सोरठ बजा सर्पको बुलानेकी फरमायश की उस पर प्रथम तो इन्होंने जवाब देदिया; फिर नवाबने इनकी और इनके पूर्वजोंकी बहुत प्रशंसा की तो इन्होंने सोरठ बजानेका आरंभ किया, शीघ्र ही एक मोटा श्याम सर्प नवाबकी कोठीमें प्रकट हुआ । नवाब तथा और सब तो डरकर परे हटगये किंतु ये पिता पुत्र देर तक सितार बजातेरहे सर्प भी फन उठा मस्त हो इनका सितार सुनतारहा । सितार बंद करते ही चुपसे चला गया, उसने किसीको कुछ नहीं कहा । यह चमत्कार छोटी सी बात नहीं । अलवरनरेशके ज्वरको सितारमें भैरवी बजाकर उतारनेके विषयमें पूर्वमें लिखा ही गया है ।

ये लोग अपने मुखसे कभी अपनी प्रशंसा नहीं करतेथे विशेष बोलते भी न थे, जो बनसकताथा उसे कंठसे वा हाथसे करके दिखादेतेथे । एक बार मियाँ रहीमसेनजी देहलीमें बड़े बड़े उस्ताद तथा श्रीमान् और बादशाहज़ादोंमें बैठ सितार बजारहेथे चारोंओरसे वाह वाह होरहीथी; इन्होंने एक फ़िकरा ऐसा ज़ोरसे लियाकि स्वयं इनके मुख से विवश 'ओह ओह' यह शब्द आश्चर्यबोधक निकलगया इस शब्दके मुखसे निकलतेही इन्होंने सितार रखदिया । लोगोंने पूछा कि 'ख़ाँ साहेब ! क्या चाहिए ?' इन्होंने कहा कि 'छुरी चाहिए' लोग इस वचनको सुन चकित हो अभिप्राय पूछने

लगे इन्होंने कहा कि 'आज हमारी जिह्वाने ऐसा बुरा काम किया-है कि इसको काटडालना उचित है कैसी बुरी बात है कि मेरे बजाने पर मेरी जिह्वासे 'वाह वाह' निकले ? इस पर लोगोंने कहा कि खाँ साहेब ! आपने ऐसा ज़ोरका उत्तम फ़िकरा लियाथा कि अगर पत्थरके जिह्वा होती तो वह भी 'वाह वाह' कहे बिना न रहता फिर आपकी जिह्वासे 'वाह वाह' निकल गई तो कौन बड़ी बात है ? इसपर रहीमसेनजीने कहा कि 'एक तो हमारे बड़े इस विद्याको ऐसा करगयेहैं कि उनकी अपेक्षा हम कुछ भी वस्तु नहीं; दूसरे स्वयं अपनी प्रशंसा करना यह भारी दोष है; इससे जिह्वाको काट देना चाहताहूँ । इसपर लोगोंने इनको बहुतशांत कर फिर सितार बजानेको कहा ये लोगोंके कथनसे शांत तो हो गये किं तु फिर उस समय सितार न बजाया इनके मुखपरसे शोक भी न उतरा । इन्होंने कहा "इस आत्मप्रशंसासे मेरे चित्तपर शोक छागयाहै इस कारण अब मुझसे सितार अच्छा न बजेगा आप लोगोंको फिर कभी सुनाऊँगा ।" देखिए पूर्वज विद्वान् ऐसे होतेथे । आजकलके मादृश लोग तो प्रशंसाकेलिए किसी दूसरेकी अपेक्षा ही नहीं रखते अपने ही मुखसे भरपेट अपनी प्रशंसा करलेतेहैं उससे लजाते भी नहीं ।

एक दिन मियाँ रहीमसेनजी एक सीधी सी गत बजारहेथे चमत्कार यह हुआ कि रत्नसिंह पखावजीने बहुतेरा यत्न किया किं तु उसे उस गतका सम ज्ञात नहीं हुआ । रत्नसिंह भी सामान्य पखावजी न था किं तु उस समयका बहुत उत्तम उस्ताद पखावजी था ।

सत्य तो यह है कि सितारके मसीतखाँजी सूत्रकार हुए रहीमसेनजी भाष्यकार हुए और अमृतसेनजी वार्तिककार हुए ।

मियाँ रहीमसेनजी स्वभावके इतने मृदु न थे। एक बार अमृतसेनजीकी स्वरशृंगारपर श्रम करनेकी इच्छा हुई रहीमसेनजीने स्पष्ट कहदिया कि बेटा सितारके सिवाय किसी दूसरे वाद्यपर परिश्रम करेगा तो तेरे हाथ काट डालूँगा सितारमें सब है उसीपर ध्यान लगाओ; अनेक वाद्य बजानेवाला धोबीका कुत्ता बनजाताहै। यह सुन फिर अमृतसेनजीने सितारके सिवाय और वाद्यपर श्रम करनेकी इच्छा न की, यों तो वे सभी वाद्योंके तत्वको जानतेथे। आजकल तो जिस सांगीतिकको देखिए वह सब प्रकारके गाने गाताहै और वाद्य बजाताहै। असल तो यह है कि मट्टी ख़राब करनी कुछ कठिन नहीं; पांडित्य तो एक भी वाद्यमें अथवा गानमें एवं और विद्या में प्राप्त होना कठिन है। यह उन्हींको प्राप्त होताहै जो पूर्वजन्ममें कोई भारी पुण्य कर इस जन्ममें अपनी पूरी जान मारतेहैं और किसी उत्तमगुरुकी दीर्घकालपर्यन्त सेवा करतेहैं।

मियाँ रहीमसेनजी तथा अमृतसेनजी मसीतख़ाँनी बाज बजातेथे। सितारका दूसरा बाज 'पूर्वीबाज' कहलाताहै। इसको पूर्वमें रहनेवाले तानसेनवंशधर उस्तादोंने निकालाहै। इस बाजमें मसीतख़ाँनी बाजके बराबर गंभीरता नहीं और इस बाजमें मध्य और द्रुत लयका प्राधान्य है अतएव रागदारीका प्राधान्य नहीं, तालका प्राधान्य है। इस बाजमें 'डाड़ डाड़ डा डा' ऐसे बोल विशेष रहतेहैं। रागाध्यायमें मैंने इस बाजकी एक गत भैरवीकी लिखीहै, और सब गतें मसीतख़ाँनी बाजकी लिखीहैं। मसीतख़ाँनी बाजमें रागदारीका प्राधान्य है अतएव विलंपत और मध्य लयका प्राधान्य है।

मियाँ अमृतसेनजी यद्यपि रहीमसेनजीके पुत्र थे तथापि सितार

के पांडित्यमे ये रहीमसेनजीके पुत्र प्रतीत न होतेथे किंतु भ्राता प्रतीत होतेथे इसी पांडित्यके कारण लोग—'अमृतसेनरहीमसेनजी' इसतरह दोनों नामोंको इकट्ठा करके बोलतेहैं। एक दिन बड़े बड़े संगीतविद्वानोंमें रहीमसेनजीने स्वयं सितार बजा अमृतसेन-जीको सितार बजानेको कहा इन्होंने पिताके अनंतर सितार बजाना उचित न समझ कहा कि 'आपने कुछ बाकी नहीं छोड़ा अब मैं क्या बजाऊँ !' रहीमसेनजीके फिर बहुत कहनेसे इन्होंने वही राग ऐसा बजाया कि लोग रहीमसेनजीके सितारको भूलगये। विद्वत्समाज प्रसन्न हो 'वाह वाह' करनेलगा। सबने कहा कि 'अमृतसेनजी ! आपका मार्ग कुछ दूसरा ही है' रहीमसेनजीने कहा कि 'भाइयो ! शुकर है जो अमृतसेन मेरा बेटा हुआ यदि यह किसी औरके घर जन्मकर ऐसा सितार बजाता तो मैं विष खाकर मरजाता' अमृतसेनजी ऐसे थे। लखनऊमें अमृतसेनजीका सितार सुन एक विज्ञ बोला कि 'यह वही सितार और भीमपलासी है जिसे यहाँ रहीमसेनजी बजागयेहैं' तब उन्होंने कहा कि 'मैं उन्ही का पुत्र अमृतसेन हूँ' यह सुन वह वृद्ध बोला कि 'सत्य है'।

मियाँ अमृतसेनजी एक बार अपनी जागीर के ग्राममें गये वहाँ उन्होंने सितारमें किसी ग्रामीणगीतका बजाना जो आरम्भ किया तो समग्र ग्रामके लोग इकट्ठे होगये। एकबार अमृतसेनजी जयपुरमें रात्रिको अपने मकानमे सितार बजारहेथे बाहिरके ओर की खिड़की फटसे खुलगई और 'वाह वाह' यह शब्द सुनाई दिया किन्तु उस शब्दके कहनेवाला कोई दिखाई न दिया, ऐसा और भी तीन चार बार हुआ कहाँ तक लिखूँ।

मियाँ अमृतसेनजी अपने कनिष्ठ भ्राता लालसेनजीको विवाहने गवालियर गये जाते समय मार्गमें इनकी सितार बजानेकी वाम अंगुलिपर व्रण (फुंसी) होगया । गवालियरमें वैवाहिकसंगीतोत्सव हुआ तो इनके इस अंगुलिव्रणको देख श्रोता लोग उदास होगये, क्यों कि उनको इनसे सितार सुननेका बड़ा चाव था। अमृतसेनजी ने उस रात्रिको श्रोताओं का चाव पूर्ण करनेको सबके रोकते हुए भी उस सव्रणअंगुलिसे ऐसा सितार बजाया कि श्रोता लोग चकित होगये, व्रण चिरजानेसे रुधिर टपकताथा सितार भी रुधिरसे रङ्गगया ये ऐसे थे ।

एक बार आगरेमें दरबार था बहुतसे संगीतविद्वान् अपने अपने राजा लोगोंके साथ उस समय आगरेमें इकट्ठे हुए मियाँ अमृतसेनजी रहीमसेनजी भी गये । पूर्वसे बहादुरसेनजी भी गयेथे । बहादुरसेनजी रबाब स्वरशृङ्गारके अद्वितीय उस्ताद थे । तानसेनजी के वंशमें थे । संबंध में अमृतसेनजीके छोटे भ्राता लगतेथे । पूर्व में इनका बड़ा मान था । उस समय एक दिन एक [illegible]यकके घर अमृतसेनजीका सितार बजा तदनन्तर रहीमसेनजीने बहादुरसेनजी को स्वरशृङ्गार बजानेको कहा तब बहादुरसेनजीने उन्होंने कह दिया कि 'भाई अमृतसेन ऐसा बजा चुकेहैं कि अब बजानेका रंग जम नहीं सकता इसलिए मैं फिर किसी समय [illegible]तथा गा इस समय मेरा रंग जमेगा नहीं । भाई अमृतसेन तो कि येकुलका मुकुट है ।'

तदनंतर [illegible]ादिकअलीख़ाँजी और काज़िमअलीख़ाँजी ये दोनों भ्राता उस[illegible]बाब स्वरशृङ्गारके अद्वितीय उस्ताद थे ये ऐसेवैसेकी इज्ज़त

झट बिगाड़ देतेथे और छोटेमोटे गानेबजानेवालेके हाथसे साजको खोसलेतेथे ये एक बार बनारससे अलवर गये वहाँ अमृतसेनजीने इनका बड़ा आदर किया क्यों कि एक तो ये संगीत के भारी विद्वान् थे दूसरे सम्बन्धमें छोटे भ्राता लगते थे। ये भी तानसेन-जीके वंशमें थे। अमृतसेनजीके घर पर इन्होंने स्वरशृङ्गार ऐसा बजाया कि चारों ओरसे सैकडों संगीतके विद्वान् 'वाह वाह' कहने लगे। इनके अनंतर लोगोंने अमृतसेनजोको सितार बजानेको कहा किन्तु अमृतसेनजीने इनके आतिथ्यके कारण सितार बजानेसे इनकार करदिया फिर सादिकअलीखाँजीके आग्रहसे अमृतसेनजी सितार बजाने बैठे तो जो कुछ सादिकअलीखाँजी काज़िमअलीखाँजीने बजायाथा वह सब बजादिया, फिर अमृतसेनजीने अपना बजाना बजाया तो अमृतसेनजोका सितार सुन काज़िमअलीखाँसादिक अलीख़ाँजीका मुख छोटासा होगया क्यों कि ये समझेहुएथे कि 'इस समय संगीतमें हमारे सदृश भी दूसरा कोई नहीं फिर हमसे अधिक तो क्या होसकता है !' सब लोगोंके बीचमें ये बोले कि मैं 'भाई अमृतसेनको तो परमेश्वरने अपने हाथसे संगीत विद्या गाई'। नहीं तो हमारे ऊपर बैठ कर कौन है जो रंग जमाये।' कह गये

जयपुरमें जब ये रामसिंहजीके नौकर हुए तो निरंतर आठ प्रारम्भ तक रात्रिमें एक कल्याण रागको सुनाते रहे। आठवें दिल्तसेनजी सितार बजाकर घर चलेजानेके अनंतर दीवान फ़तेसिंहने बाहिरके सिंहजीसे कहा कि 'सरकार! मियाँ अमृतसेनजोको क्या द सुनाई और राग बजाना नहीं आता जो आठ दिनसे एक ही कल्या, ऐसा सुनारहेहैं ?' इसपर रामसिंहजीने कहा कि 'आप समझे

वे अपना पाण्डित्य दिखारहेहैं फतेहसिंहजी! एक ही रागको आठ दिन नित्य नये प्रकारसे सुनाना बहुत ही कठिन है ऐसा इस समय और कोई नहीं करसकता। मियाँ अमृतसेनजी अद्वितीय उस्ताद हैं अपनेको बड़े भाग्यसे यह रत्न मिल गयाहै ये पृथ्वीके रत्न हैं' यह वृत्तांत ज्ञात होनेसे नवम दिन अमृतसेनजीने कल्याण न बजा और ही राग बजाया सितार बंद होने पर रामसिंहजीने कहा कि 'मियाँ जी आज कल्याण नहीं सुनाई?' इसपर अमृतसेनजी बोले कि सरकार! मेरे जीमें तो एकमासभर आपको एक ही कल्याण सुनाने की थी किन्तु आपके दरबारमें कल इसकी कुछ चर्चा चली इससे मैंने कल्याण नहीं बजाई।' यह सुन रामसिहजी बोले कि 'आप सब करसकतेहैं आपजैसे आप ही हैं।' एक दिन जयपुरके रूपनिवास बाग़में इन्होंने ऐसा सितार बजाया कि बहुतसी चिड़ियाँ इनके सितारपर आबैठीं! ये सब चमत्कार सहज नहीं हैं।

बंगालसे एक बंगाली झझरमें अमृतसेनजीसे सितार सीखने आया वह कुछ काल सीखतारहा। एकदिन इनका सितार सुन ऐसा सितार हमको नहीं आवेगा यही बार बार कहता कहता पागल होगया। यों तो अमृतसेनजी प्रथमसे ही बहुत कम शागिर्द करतेथे उसपर भी इस बंगालीके पागल होजानेसे तो इन्होंने शागिर्द बनाना एकप्रकारसे छोड़ ही दिया क्योंकि ये प्रकृतिके बहुत ही साधु तथा भोले थे इनको पहले ही देखकर कोई नहीं जानसकताथा कि ये पृथ्वीके रत्न हैं। उस बंगाली के पागल होनेसे ये डरगये। तदनंतर जो कोई बहुत ही आग्रह कर इनके पीछे पड़ा तो कहीं उसको शागिर्द बनाया। मैं ही संवत् १९४५ के चैत्रसे श्रावणतक

पाँच मास जब इनके पीछे पड़ा रहा तब इन्होंने मुझको शागिर्द बनाया। मेरा यह भारी सौभाग्य है जो संस्कृतविद्यामें मुझको महामहोपाध्याय सी. आई. ई. श्रीगंगाधरशास्त्रीजी महाराज और संगीतविद्यामें ये मियाँ अमृतसेनजी साहेब गुरु प्राप्त हुए।

दोहा—'जिमि निषाद रघुवीर पद पायो परम पुनीत।
ईशकृपा पाये तथा ये गुरु दोउ सुरीत॥'

पीछे इन दोनों ही गुरुवरों की मुझपर पूर्ण कृपा रही। अमृतसेनजीने तो मरणकालमें सबके संमुख यह कहा कि "सुदर्शनाचारीको मैं अपना पुत्र समझता हूँ" मेरी योग्यताकी अपेक्षा उन्होंने मुझको बहुत संगीतविद्या दी उनकी विद्याकी तरफ़ देखाजाय तो रुपयेमेंसे एक पैसा भी मुझको प्राप्त नहीं हुआ इसपर मैं यहाँ एक दोहा लिखता हूँ—

अमृतसरोवर गुरु दिये अंजलिभर संगीत।
बिन्दुयुगल मायो मेरी मनमटकीमें मीत॥

अर्थात् अमृतसेनजी गुरु संगीतविद्यारूपी अमृतसे भरा एक भारी सरोवर था उसमेंसे उन्होंने मुझ भिक्षुकको अंजलि भरके विद्या दी उस अंजलिमेंसे भी केवल दो बूँद मेरी मनरूपी मटकी (गगरी) में समाई सो मेरी उनकी विद्याका इतना अंतर है जितना एक भारी सरोवरका और दो बिन्दुओंका होता है वस्तुगत्या वे वे ही थे, वैसा मनुष्य फिर न देखा परमेश्वर भी फिर वैसे मनुष्यको उत्पन्न करसकताहै वा नहीं इसमें भी संदेह है। सच पूछिए तो वे किसी न किसी गंधर्वका अवतार थे। जैसी उनकी विद्या थी वैसे ही उनमें और भी सब गुण थे, ये स्वभावके बड़े गंभीर तथा धीर

थे, इन्होंने अपने मुखसे किसीको भी बुरा न कहा, अपने मुख से स्वविद्याके विषयमें ये कुछ न बोलतेथे जो मनमें होतीथी उसे सितारमें हाथसे करदिखातेथे। इनके उत्तरोत्तर दो विवाह हुए अपनी उन दो पत्नियोंके सिवाय इन्होंने तीसरी स्त्रीको कामाभिलाषा-से हाथ भी नहीं लगाया इस कारण कोई कोई सांगीतिक लोग इनको कामशक्तिसे हीन भी कहतेथे क्योंकि ये संयमी थे और सांगीतिक लोग तो प्रायः कामी होतेहैं। असल में ये कामशक्तिसे रहित न थे किंतु संयमी थे। मुसलमान संगीतविद्वानोंको तो प्रायः वेश्या और मद्यका व्यसन लगही जाता है। ये दोनों ही व्यसनोंसे दूर थे। इसी कारण जब ये अधिक कालकेलिए कहीं जाते तो इनका पानदान और पानी (जल) साथ जाताथा क्यों कि मद्यपलोगोंके स्पष्ट भ्रष्ट पान और पानी तकसे इनको ग्लानि थी।

साधु महात्माओंमें इनको बड़ी श्रद्धा थी, यदि एक हो काल में किसी श्रीमान्का और साधु फ़कीरका बुलावा आता तो ये प्रथम साधु फ़कीरके यहाँ जातेथे। कोई कोई साधु फ़कीर सितार सुन इनको एक पैसा प्रसाद देदेतेथे ये उस पैसेको प्रसाद समझ सम्हालकर रखतेथे। बड़े बड़े साधु फ़क़ीर इनके पास भी आते थे, ये उनका पूर्ण सत्कार करतेथे और बड़े आदरसे सितार सुनाते थे। वृद्ध साधु इनको 'अमृतघट' 'अमृतकलश' कोई 'अमृतवान्' ऐसा कहदेतेथे। हिंदू धर्मको ये बहुत उत्तम समझतेथे। हिंदू धर्म की जो प्रथाएँ इनके कुलमें चलीआतीथीं उनका पूर्णरूपसे निर्वाह करतेथे क्यों कि इनके मूलपुरुष तानसेनजी आदिमें ब्राह्मण थे। ये ग़रीब शागिर्दोंसे कुछ न चाहतेथे प्रत्युत उनकी सहायता करतेथे।

ये शागिर्द कम करतेथे तो भी इनके शागिर्द बहुत थे, झझरके नवाब और अलवरके राजा शिवदानसिंहजी इन्हींके शागिर्द थे। झझर और अलवरमें तो उस समय मानों इनका राज्य था। उस भारी तनख़्वाहको भी ये कुछ न गिनतेथे क्यों कि उक्त दोनों ही नरेश इनको अपने भ्राताओंके तुल्य रखतेथे अपना जैसा खिलाते पहनातेथे और सदा इनको अपने पास रखतेथे।

मियाँ अमृतसेनजीमें कुटुंबपालनका भी भारी गुण था। इनके मातुल मियाँ हैदरबख़्शजीका ही कुटुम्ब इनका कुटुम्ब समझना चाहिए क्यों कि इनके कोई संतान नहीं हुई और इनके भ्राताओंकी कोई संतान बची नहीं। हैदरबख़्शजीके कुटुम्बका इन्होंने ऐसा पालन किया कि दूसरा कोई क्या करेगा। ये मामा हैदरबख़्शजी को सदा अपने पास रखतेथे उनके पुत्रोंको अपना सहोदर भ्राता समझतेथे उनमेंसे भी मम्मूख़ाँजी और अलमूख़ाँजीपर बहुत प्रीति थी। अलमूख़ाँजी तो सब प्रकारसे इनके कारकुन मुंशी थे जो चाहतेथे सो करतेथे सब इन्हींके अधीन था। मम्मूख़ाँजीके प्रेम से उनके पुत्र हफ़ीज़ख़ाँको इन्होंने ऐसा सितार बताया कि हफ़ीज़ख़ाँ भी सितारमें नाम कर गये। हफ़ीज़ख़ाँपर इनको बहुत वात्सल्य था। हफ़ीज़ख़ाँ प्रथम टोंकमें फिर रामपुरमें नवाबके नौकर रहे और बड़ा आदर पाया। ये काशीमें मेरेपास भी आये इनका सितार सुन काशीके लोगोंने कहदिया कि 'ऐसा सितार आजतक कभी नहीं सुना।' ये स्वभावके बड़े लायक़ थे। मम्मूख़ाँजी ध्रुरपतके और सांगीतिक ग्रंथविद्याके उत्तम विद्वान् थे। हैदरबख़्शजी तो ध्रुरपत के बादशाह तथा संगीतविद्याके समुद्र थे, इनमें यह एक भारी

गुण था कि सीखनेवालेकी लायक़ी नालायक़ीकी ओर ध्यान न दे सबको बहुत मनसे बतातेथे बहुत लोगोंको इन्होंने बताया। ये धुरपतके सिवाय सितार वीणा भी सिखातेथे। इनके मरनेके दिन मियाँ अमृतसेनजीने कहदिया कि 'आज हमारे घरकी पाठशाला (संगीतशाला) उठ गई।' ये ऐसे साहसी थे कि प्राण निकलनेसे केवल एक घंटा पूर्व इनके पुत्रने एक धुरपत पूछा सो उस समय भी अच्छी तरह बता दिया। ये एकसौछःवर्षकी अवस्था भोग १९४९ के शीतारंभमें जयपुरमें मरगये नाम तो इनका अमर है। इनको यह व्यसन था कि पखावजी चाहे जितना उस्ताद क्यों न हो उसे बेताला किये बिना न छोड़तेथे। बेताला करनेमें राजा लोगोंसे भी नहीं डरतेथे। इस विषयमें इनका रीवाँका वृत्तांत प्रसिद्ध है। ये संवत् १९१३ में पंजाब भी गयेथे औरे वहाँ बहुत मान पाया।

मियाँ अमृतसेनजीकी भगिनी हैदरबख़्शजीके ज्येष्ठ पुत्र वज़ीरख़ाँजीको ब्याही थी उससे अमीरख़ाँजी और निहालसेनजी ये दो पुत्र हुए दोनोंपर अमृतसेनजीका प्रेम था। उन्होंने दोनों को ही सितार सिखाया। उनमेंसे अमीरख़ाँजी विद्यामें प्रधान हुए। सच तो यह है कि अमीरख़ाँजी हैदरबख़्शजीके कुलमें अद्वितीय विद्वान् हैं। प्रथम ये जयपुरमें रामसिंहजीके पास नौकर रहे फिर गवालियरमें जीयाजी महाराजके नौकर और अत्यन्त कृपापात्र हुए फिर उनके पुत्र माधवरावमहाराजके उस्ताद बने; अब विशेष कर जयपुरमें रहतेहैं। इन के दो पुत्र फ़िदाहुसेन और फ़ज़लहुसेन हुए दोनों ही सितारमें प्रवीण हुए। उनमेंसे छोटा फ़ज़लहुसेन मरगया। यह भारतका दौर्भाग्य है कि जो होनहार होताहै वह

शीघ्र ही उठजाताहै। दूसरे भागिनेय निहालसेनजीको अमृतसेनजी ने अपना दत्तक पुत्र बनालिया। ये भी जयपुरमें अमृतसेनजीकी जगहपर थे तथा जागीरदार थे और तीनसौ रुपया तनख्वाह पाते थे, ये[1] बड़े लायक़ और सितार वीणामें बड़े प्रवीण थे, इनके दो पुत्र हैं। अमृतसेनजीका इनकी ज्येष्ठपुत्रीपर बहुत ही वात्सल्य था उस आठनौ वर्षकी कन्याका नाम लेकर अमृतसेनजी कहा करतेथे कि 'यदि यह कन्या लड़का होता तो इस अवस्था में इसके हाथसे सभामें सितार बजवादेता।'

मियाँ अमृतसेनजीने प्रथम अपने भ्राता न्यामतसेनजीको फिर भागिनेय अमीरख़ाँजीको फिर उक्त निहालसेनजी तथा हफ़ीज़ख़ाँजीको ख़ूब ही सितार बताया और चारोंको पृथक् पृथक् प्रकारका बताया। अंतमें इस लेखकको भी मुष्टिभर भिक्षा देगये। मैं उनसे संवत् १९४५ से लेकर १९५० में उनके अंतकाल पर्यन्त निरन्तर सीखता रहा। मैं उनको पिता समझताहूँ; वे मुझको पुत्र समझतेथे। उनकी मुझपर इतनी कृपा हुई कि रोगावस्थामें उनके घरके लोग भी उनका हाल मुझसे पूछा करतेथे यह सब केवल उनकी लायकी थी मैं तो इस लायक न तब था न अब हूँ। अमृतसेनजीके सिखाये हुओंमेंसे अमीरख़ाँजी सबसे बढ़कर विद्वान् और कीर्त्तिमान् हुए।

मियाँ अमृतसेनजीका शरीर उत्तम पुष्ट लंबा चौड़ा तथा बलवान् था। इनका रंग श्यामल था। इनको मिठाइयोंमेंसे कलाक़ंद और सवारियोंमेंसे तामझाम प्रिय था। प्रायः जहाँ जाते ताम-

---

[1] भारी अफसोस है कि इस समय ये भी नहीं हैं।

कामपर ही जातेथे। घरसे बाहिर जाते तो अंगरखा पहनकबसौसे दिल्लीकी पगड़ी बाँधकर जातेथे। घर में दुकली टोपी पहिनते थी; स्वभावके बहुत भोले थे। सबका यथोचित आदर करतेथे। प्राचीनशैलीके मनुष्य थे इससे सूर्योदयसे दो घंटा पूर्व जागजातेथे। बड़े उदार थे। तानसेनवंशके धुरपतियोंके जो 'गुवरहारे' 'खंडारे' 'डागर' 'सरौत' ये चार गोत प्रसिद्ध हैं उनमेंसे अमृतसेनजीका 'गुवरहारे' गोत था। यद्यपि ये सभामें गाते न थे तो भी धुरपतमें बड़े प्रवीण थे। इनके मुखसे जैसा धुरपत निजमें सुना वैसा इनके भी घरमें दूसरेके मुखसे न सुना। एवं ये वीणाके तत्वको भी पूर्णप्रकारसे जानतेथे इसीसे अपने पुत्र निहालसेनजीको वीणा भी सिखाईथी। इनको पिताकी आज्ञा थी कि 'सभामें बैठ सितार बजानेके अतिरिक्त दूसरा संगीतकार्य नहीं करना' इस कारण ये सभामें सितारके अतिरिक्त और कुछ गाते बजाते न थे। इनके सितारका नाम 'मणिराम' था। इनका युवावस्थाका चित्र इस-पुस्तकके अंतभागमें दियागया है।

मियाँ अमृतसेनजी बड़े भाग्यवान् प्रतापशाली और तेजस्वी पुरुष थे। किसी सांगीतिकको इनके बराबर बैठते नहीं देखा। बड़े बड़े कड़े कंठे पहिनेहुए भी जो संगीतविद्वान् आतेथे वे हाथ जोड़ कर इनके आगे बड़े अदबसे बैठतेथे। बहुत लोग इनके नामसे कान पकड़तेहैं। ये ऐसे भाग्यवान् थे कि गद्दीपर जन्मे और गद्दीपर ही मरे। इनके जन्मसे पूर्व इनके पिता रहीमसेनजी आर्थिक विपत्ति में बहुत ही फँसगयेथे सुना है कि किसी किसी दिन भोजन भी प्राप्त न होता था। अमृतसेनजी जबसे उनकी पत्नीके गर्भमें आये

शीघ्र इनकी विपत्ति दूर हो ऐश्वर्य बढ़नेलगा—झझरके नवाब ने,के शागिर्द होगयेथे इसीसे कहतेहैं कि अमृतसेनजी गद्दीपर जन्मे। अमृतसेनजीपर कभी भारी विपत्ति नहीं पड़ी बस यही विपत्ति समझिए कि जयपुरनरेश रामसिंहजीके मरनेके अनंतर इनको ऊपरकी कोई विशेष आमदनी न रही, रियासतसे जो तनख़्वाह और जागीर थी प्राय: उसीमें निर्वाह करना पड़ताथा इतनेमें इनका निर्वाह क्लेशसे ही होता था। जयपुरमें इनकी पाँचसौकी तनख़्वाह थी एकसौरुपये मासिक का लवाज़मा (तामझाम सोलह नौकर मशालका तेल एक रथ इत्यादि) था, जागीर में एक ग्राम था, इतने पर भी ये तङ्ग रहतेथे। रामसिंहजी इनको ऊपरसे भी बहुत देते रहतेथे। इनका रईसी ठाठ था। इनके पास चाँदीके पात्र, चाँदी का हुक़ा बहुमूल्य दुशाले रहतेथे। झझर और अलवरमें भी इनकी यही तनख़्वाह व जागीर थी किन्तु वहाँके नरेश इनके शागिर्द थे इससे वहाँ ये बहुत ऐश्वर्यसे रहे। चौदह वर्षकी अवस्थामें झझरमें इनकी पूर्वोक्त तनख़्वाह प्रभृति पितासे पृथक् नियत होगईथी। ये दसवें वर्ष सभामें पिताके साथ और तेरहवें वर्ष स्वतंत्र सितार बजाने लगगयेथे। सब लोग इनसे बहुत प्रसन्न थे।

मियाँ अमृतसेनजी बड़े संतोषी थे इन्होंने कभी भी किसीसे कुछ नहीं माँगा जो देदिया उसीमें संतुष्ट होजातेथे। इनकी जो पूर्वोक्त तनख़्वाह थी उसे भी इन्होंने स्वयं नहीं माँगाथा किन्तु पूर्वोक्त नृपतियोंने उसे स्वयं ही अपनी इच्छासे नियत कियाथा। जब कोई श्रीमान् इनको बुलाता तो ये मुजरेका रुपया कभी नहीं ठहरातेथे जो श्रीमान् देता सो लेलेतेथे किन्तु विद्वान् और भाग्यवान्

ऐसे थे कि जो श्रीमान् जयपुरमें बुलाता वह इनको हज़ार पाँचसौसे कम न देताथा। मुजरेका रुपया ठहरानेसे इनको बड़ी ग्लानि थी; यही कहाकरतेथे कि माँगना तो परमेश्वरसे माँगना जो सबको देताहै, श्रीमान् हमसे प्रसन्न होगा तो अपनी शक्त्यानुसार देगा ही। जब इन्होंने इंदौरकी यात्रा की तो वहाँ एक दिन एक गोस्वामीजीने कह कर भेजा कि 'हम आपको दोसौ रुपया देंगे आप हमारे यहाँ सितार बजाने आइए' इन्होंने उत्तर दिया कि 'यदि आप रुपया ठहराकर मुझको बुलातेहैं तो मैं चारसैासे कमपर नहीं आऊँगा, आपको ठहरानेकी क्या ज़रूरत थी? यदि आप मुझे बुलाकर और सुन कर दोसौकी जगह दो ही रुपये देते तो क्या मैं आपपर नालिश करता?'

पटियालानरेश नरेंद्रसिंहके एक चचा दिल्लीमें रहतेथे इनपर उस समयके बादशाहकी भी बड़ी कृपा थी ये संगीतविद्याके बड़े रसिक थे और बड़े उदार भी थे। पटियालेसे जो रुपया आताथा वह बहुत शीघ्र समाप्त हो जाता फिर ऋणसे काम चलाते उसके अनंतर ऋण भी न मिलता तो मूसे कलोल करते। झझरका राज्य नष्ट होनेसे अमृतसेनजी दिल्ली गये तो उन्होंने सितार सुननेको इन्हें बुलाया सितार सुन बहुत प्रसन्न हुए किन्तु देनेको पास एक पैसा भी न था इससे बड़े उदास होकर अमृतसेनजीसे बोले कि 'आपके लायक़ तो मैं किसी दशामें भी दे नहीं सकता फिर इस समय तो मेरे पास कुछ भी नहीं ख़ैर यह छोटीसी कोठी है आप इसे ले लीजिए मैं और कहीं जारहताहूँ' यह कह उठ खड़ेहुए। अमृतसेनजीने उनको बहुत समझाया कहा कि 'मैं फिर कभी आकर आपसे नक़द

ही इनाम लूँगा, कोठी मैं नहीं लेता, आप कोठी छोड़नेकी तकलीफ़ न करें; आपसे कोठी लेनी मुझको मुनासिब नहीं' इत्यादि बहुत कुछ कह सुन उनको कोठीमें बैठाया। फिर बुलानेसे आनेका करार राजाने इनसे करालिया; राजा फिर अपने ज़नानेमें गये इधर उधर बहुत खोजा और तो कुछ न मिला केवल एक सुवर्णकी डब्बी मिली उसमें इलायची भरकर और लाकर खड़ेहो अमृतसेनजीसे बोले कि 'ये चार इलायची तो लेतेजाइए मैं इस समय आपसे बहुत ही लज्जित हूँ जो आप जैसे अद्वितीय उस्तादको कुछ नज़र न करसका आप इस समयके तानसेनजी हैं।' ऐसी ही बहुत प्रशंसा कर अमृतसेनजी को बिदा किया। यह बात पटियालाके एक आदमीसे भी सुनी है। पाठक महाशय! यदि कोई और होता तो मिली कोठीको कभी न छोड़ता। कोठी महाराजा पटियालाकी होनेसे छोटीसी वस्तु न थी। उसके अनंतर अमृतसेनजीको दिल्लीसे अलवरनरेशके आदमी आकर लेगये। जब इस राजाके पास पटियालेसे रुपया आया तो इसने अलवरसे अमृतसेनजीको बुलाया किन्तु अमृतसेनजी नहीं गये तो इसने दो हज़ार रुपया अलवरमें ही भेजदिया।

झझरमें एक अँग्रेज़ अफ़सर इनका सितार सुन ऐसा प्रसन्न हुआ कि गवर्नमेंटसे इनको एक मुक्तामाला भिजवाई। और भी कई अच्छे अच्छे अँग्रेज़ अफ़सरोंने इनका सितार सुना। कई दरबारोंमें इनका सितार बजा। लंदनतक इन पितापुत्रोंका नाम प्रसिद्ध होचुकाहै। भारतके कई एक नरेशोंने इनका चित्र उतरवाया। जयपुरमें जो संगीतरसिक श्रीमान् लोग जातेथे वे इनके

सितार सुननेकी जयपुरनरेशसे फ़रमायश करतेथे और बड़े कृतज्ञ हो सुनतेथे। गवालियरनरेश जियाजीने तो रामसिंहजी से इनको मुँहखोल माँग ही लिया, रामसिंहजीने कहा कि 'अमृतसेनजीको लेजानाहै तो मुझे भी लेचलिए।' यह सुन जियाजीराव चुप रह-गये। वर्तमान गवालियरनरेश माधवरावने अपने उस्ताद पूर्वोक्त अमीरखाँजीसे उस समय कईबार कहा कि 'मियाँ अमृतसेन-जीको देखनेको बहुत मन चाहताहै किन्तु रियासत पर अख्तियार न होनेसे इस समय मेरी शक्ति उनको बुलानेयोग्य नहीं ख़ैर कभी तो वह दिन आवेगा।' इनको अधिकार मिलने से पूर्व ही वह संगीतसूर्य अस्ताचलको चलागया इससे वर्तमान गवालियरनरेशकी मनकी मनमें ही रहगई। इनकी मृत्युकी ख़बर सुन ये बहुत शोकाकुल हुए। इनको अधिकार प्राप्त होनेतक यदि मियाँ अमृतसेनजी जीवित रहते तो ये बड़े आदरसे उन्हें बुलाते।

मियाँ अमृतसेनजी विक्रमसंवत् १८७० में जन्मे। चौदहवें वर्षकी अवस्थामें अपने पिता रहीमसेनजीके शागिर्द नवाब झझरके नौकर हुए, नवाबने प्रसन्न हो इनकी पाँचसौकी तनख़्वाह जागीरका ग्राम और पूर्वोक्त सवारी नौकर प्रभृति लवाज़मा नियत करदिया क्यों कि ये नवाबके ख़लीफ़ा थे, नवाब सदा इनको अपने पास रखते और अपना जैसा खाने पहननेको देतेथे इस कारण तनख़्वाह-की ओर इनकी कुछ दृष्टि न थी। विक्रम संवत् १९१४ में ग़दरके अनंतर झझरके नवाबको दोषी ठहरा फाँसी दे रियासतको गवर्न-मेंटने ज़प्त करलिया तब ये नवाबके वियोगसे दुःखी हो देहली चलेगये। वहाँसे अलवरनरेशने इनको बुलाकर अपना उस्ताद

बनाया। तनख़्वाह प्रभृति सब पूर्व तुल्य ही नियत करदिया। अलवरमें भी ये बड़े ऐश्वर्यसे रहे।

यहाँ इनका कदौसिंह पखावजीके साथ सितार बजा प्रथम इन्होंने इतना विलंपत बजाया कि कदौसिंह साथ न करसका। कदौसिंह के कहनेसे इन्होंने लय बढ़ाई तो एकदम इतनी बढ़ाई कि फिर भी कदौसिंह साथ न करसका (ऐसा करना सहज नहीं) फिर कदौसिंहके कहनेसे मध्यलय चलाई तो कदौसिंह साथ चला किन्तु कई बार बेताला हुआ। फिर धीरे धीरे ऐसी लय बढ़ाई कि कदौसिंह इनके बराबर न मिलसका। उस दिन इन्होंने अपने मुख से कदौसिंहको इतना कहा कि 'सिंहजी! आपके दोनों हाथ काम देरहेहैं, मेरी केवल एक उँगलीमात्र काम देरहीहै देखिए' बस, कदौसिंहने कहा कि 'मियाँजी! आप आप ही हैं लयसे गिरनेक मेरा यह प्रथम दिन है; आपके सिवाय आज दूसरा कोई न जो मेरी द्रुतलयसे आगे निकलजाय।' अलवरनरेश कदौसिंह खफा होनेलगे तो अमृतसेनजीने कदौसिंहकी बड़ी प्रशंसा कर [illegible] हज़ार रुपया एक उत्तम दुशाला और सुवर्ण के कंकण—यह इनाम दिलाया।

अलवरके राजा शिवदानसिंहजी रियासतको भूल तन मन धनसे संगीतविद्यारसमें ऐसे लीन हुए कि ऐसा सांगीतिकसमाज फिर किसी भी राज्यमें नहीं जमा। उस समय संगीतके उस्ताद भी बड़े बड़े थे उनका अलवरनरेशने आदर सत्कार भी ख़ूब किया। इस राज्य विस्मरणसे किं वा और किसी कारणसे अप्रसन्न हो गवर्नमेंटने रियासतपर कोर्ट करदिया। जो गवर्नमेंटकी ओरसे

व्यवस्थापक अफ़सर आया था उसने शिवदानसिंहजीसे कहा कि 'संगीतविद्वानोंमेंसे अमृतसेनजी प्रभृति पाँच चार सत्पुरुषोंको आप अपने पास रखिए हम रियासतसे उनकी पूरी तनख्वाह देंगे और दूसरे सैकड़ों सांगीतिक जो आपने रखछोड़ेहैं उनको निकाल दीजिए रियासत इन सबको पूरी तनख़्वाह नहीं देसकती । इसपर शिवदानसिंहने यह हठ पकड़लिया कि रक्खूँगा तो सबको ही रक्खूँगा, उस समय राज्यमें बहुत ही गड़बड़ हुई । सुना है कि राजा उदास हो फ़क़ीर होनेको तैयार होगयेथे, सच झूठ की राम जानें । ऐसे कारणोंसे अमृतसेनजी राजा शिवदानसिंहसे बिदा हो दिल्लीको चलेगये । यह वृत्तांत ज्ञात होनेपर गवालियरनरेश जियाजीने और जयपुरनरेश रामसिंहजीने अमृतसेनजीको लेआनेको दिल्ली में अपने भृत्य भेजे । उनमेंसे राजारामसिंहजीके आदमी प्रथम पहुँचे सो अमृतसेनजीको जयपुर लेगये । राजारामसिंहजीने इनका बड़ा आदर किया तथा पूर्वोक्त तनख्वाह प्रभृति सब नियत कर दिया । वे कभी कभी इनके मकान पर भी आतेथे । ताज़ियोंमें तो एक दिन नियमसे इनके मकानपर आतेथे । अपने निजसे भी कुछ देतेरहतेथे । जैसे और भाई बेटोंके यहाँ वर्षमें एक दिन महाराजका काँसा (भोजनपूर्ण थाल) जाताहै वैसे अमृतसेनजीके यहाँ भी आताथा । जयपुरमें यह भारी प्रतिष्ठा गिनी जातीहै । अलवरसे जयपुर आनेकी यह घटना अंदाजन संवत् १९२०—२१—२२ की है ।

संवत् १९५० के आश्विनमें मियाँ अमृतसेनजीने अपनी दो पौत्रियोंका अमीरख़ाँजीके दो पुत्रोंके साथ स्वरूपानुरूप ऐसे समा-

रोह से विवाह किया कि सब कोई जैसा नहीं कर सकता था। रुपयेकी तो केवल मठाई घरमें बनीथी जो बाज़ारसे आई वह ९ रही। अमीरखाँजी गवालियरसे बरात लेकर आएथे उस विवाहपर उक्तमियाँहैदरबख़्शजीके पुत्रपौत्रोंमें कुछ ऐसा बेढब कलह हुआ कि उससे अमृतसेनजी इतने दुःखित हुए जो मुखसे कह दिया कि 'यदि मुझे इस कलहकी मालूम होती तो मैं जीतेजी इस विवाहको न करता।' अंतरात्मा इस कलहसे संतप्त होनेसे और वैवाहिककार्यश्रमसे शरीरके श्रांत होनेसे उस विवाहमें ही इनको ज्वर आनेलगा। परम वात्सल्यपात्र ज्येष्ठ पौत्रीके बिदा होते ही ये वृक्ष के तुल्य जो शय्यापर गिरे फिर न उठे, ज्वर बढ़ता ही गया फिर दस्त भी लगगए। बड़े बड़े लोग इनकी ख़बरको आते थे। पुत्र निहालसेनजीने उस समय बहुत सेवा की उत्तम चिकित्सा कराईगई किन्तु कुछ फल न हुआ, अंतमें उसी संवत् १९५० पौषकृष्णअष्टमीके दिन सूर्योदयसे डेढ़ घंटा पूर्व अस्सी वर्षकी अवस्था (आयु) भोग यह संगीतका सूर्य शीलका चंद्रमा अस्त हो ही गया यह सितारविद्याका समुद्र अगस्त्यरूपी कालने पी ही लिया। घरभर रोने लगा सूर्योदय होते होते लोगोंसे घर भरगया। वर्त्तमान जयपुरनरेश माधवसिंह-जीके पास ख़बर भेजी इनोंने सुन कर बड़ा शोक मनाया अपनेमुखसे कहा कि 'आज मेरी रयासतका एक भारी रत्न उठगया' फिर भाई-बेटोंके तुल्य मरणकालके आदरकी आज्ञा दी उससे राज्यसे मरण-कालिक डफड़ेका बाजा और निशानका हाथी आया वह अमृतसेन-जीकी शवसवारीके आगे आगे चला इनके शवशरीरपर एक उत्तम दुशाला उढ़ायागया सैकड़ों भद्रमनुष्य साथ थे होते होते इंदाज़न

दोबजे इनको दफन (समाधिस्थ) कियागया। पुत्र निहालसेनजीने इनका दशमा प्रभृति तथा नुकता ये सब मृत्युकार्य बहुत उत्तम किये। नुकतेपर राज्यसे भी कुछ रुपया मिला। हाय अब वैसे महापुरुष कहाँ, किसी ने अच्छा कहा है—"दैया कहाँ गए वे लोग।"

मियाँ अमृतसेनजी जब जयपुरमें थे तब नैपाल के महाराजने इनको अपने सांगीतिक जलसेमें बुलायाथा। बहुत आदर किया प्रसन्न हो दस हजार रुपया विदाउगीमें दिया। छोड़ जानेको सवारी तथा आदमी भी दिये, यह बहुत कालकी बात है, उससमय नैपालके महाराजने संगीतका एक जलसा कियाथा और भी बहुत से उत्तम उत्तम सांगीतिकविद्वानोंको बुलायाथा। उस जलसेमें इनके साथ लखनऊके कालिकप्रसाद कत्थकने तबला बजाया। होश सीधे होगए। वहाँसे ये अपने चाचा पूर्वोक्तहुसेनखाँजीकी मृत्युका शोक प्रकट करने इंदैार गए तो इंदैारके राजा तुकाजीरावने इनको बड़े आदरसे बुला सितार सुना बहुत कुछ दिया भी, किन्तु इंदैारमें चाचाकी मृत्युपर गएथे इसकारण वहाँ इनका ख़र्च भी बहुत हुआ। फिर वहाँसे गवालियर आए वहाँ भी संबंधी बांधव थे। इससे वहाँ भी खर्च हुआ, राजासाहेब वहाँ थे नहीं इससे लाभ कुछ हुआ नहीं। ये लोग लखलुटा थे सो जयपुर पहुँचते पहुँचते बहुत कुछ खर्च होगया जो शेष रहाथा सो सब रामसिंहजीको दिखा यात्राका सब वृत्तांत कहा रामसिंहजी देख सुन प्रसन्न हुए कहा कि 'आपकेलिए यह कुछ बड़ी वस्तु नहीं आप तो इस समयके मियाँ तानसेनजी हैं।' अमृतसेनजी केवल दो मासकी छुट्टी लेकर गएथे और लौटे पाँच मासमें इससे रामसिंहजीके

खजानचीने तीन मासकी तनख्वाह काटली यह वृत्तांत सुन रामसिंहजी खज़ानचीपर बड़े नाराज़ हुए कहा कि 'ऐसा भारी कार्य हमसे पूछकर किया करो अमृतसेनजीकी जितनी तनख्वाह काटी है सब स्वयं उनके घर जाकर देकर माफी माँगो।' खज़ानचीको वैसा ही करना पड़ा।

अमृतसेनजीको लेजानेकेलिए जयपुरमें ईरानके बादशाह का भी आदमी आयाथा वह दस हज़ार तो घरखर्चकेलिए देताथा कहताथा कि बादशाह एक लक्ष रुपया तो आपको नियमेन देंगे ही यदि अधिक प्रसन्न हुए तो और भी अधिक देंगे। अमृतसेनजीने सोचा कि 'वह स्वतंत्र बादशाह है यदि हमको लौटने न दिया तो हम क्या करेंगे, और कुटुम्बको छोड़कर इतने धनका भी क्या करेंगे' यह सोच ईरान जानेसे इनकार करदिया इस प्रतिषेधसे रामसिंह बड़े प्रसन्न हुए।

संवत् १९४८ के आरम्भमें इनको इंदौरनरेशने बड़े आदरसे बुलाया एकमास अपने पास रक्खा, उत्तम सत्कारसे विदा किया विदाके समय अपने हाथसे एक पन्नोंका कंठा इनके कंठमें पहराया इस आदरसे इंदौरनिवासी चकित हो गए। इंदौरमें एक दिन इनके शागिरद एक गायकने इनका अपने मकानपर आतिथ्य किया इनके कारण बहुत लोग एकत्रित हुएथे इनके पुत्र निहालसेनजी और पूर्वोक्त हफीज़खाँजी सितारमें इमनकल्याण बजानेलगे तदनंतर इनकी भी बजानेकी इच्छा हुई सो सितार उठा ऐसे विलक्षण-प्रकारसे इमनकल्याण बजाई कि सब लोग चकित होगये और तो क्या उक्त निहालसेनजी हफीज़खाँजीको भी वह प्रकार

ज्ञात न था इससे उनोंने विवश सितार रखदिया अमृतसेनजीने उनको बजानेको कहा तो उनोंने स्पष्ट कहदिया कि 'हमको यह प्रकार ज्ञात ही नहीं हम क्या बजाएँ' तब अमृतसेनजीने उनके ध्यानको अपनी तरफ खैंचा और कानमें कुछ समझाया तब आठ दस जोड़ सुनकर वे भी जैसे कैसे साथ बजानेलगे, गृहपतिने उठकर अमृतसेनजीके चरण पकड़लिए।

इंदैारमें एक दिन इनोंने अपने एकांतमें निजचित्तोल्लासके लिए सबसे चोरी भीमपलासी बजाई, उस समय इनके साथके सब सोरहेथे एक मैं ही इनसे कुछ परे ओटमें लेटा हुआ जागताथा, उस सितारको सुनकर कान खुलगए। ऐसा कभी सितार सुना न था और न कभी फिर सुना। मानों राग का नशा चढ़ताजाताथा उस सितारका वर्णन लिखना छोड़ जिव्हासे कहना भी अशक्य है। सितार बजानेके कुछ काल अनंतर मैंने कहा कि 'हजूर सितार तो आज सुना' तब चकित होकर बोले कि 'तुम कहाँ थे' मैंने अपने लेटनेका स्थान बतादिया सुनकर चुप होगए। इंदैारको जाते समय रतलाममें उतरे वहाँ अच्छे अच्छे लोग इनको सुनने आए रात्रिके आठ बजेथे चंद्रिका खिलरहीथी इनोंने शुद्धकल्याण ऐसी बजाई कि लोग सुन कर चकित होगए बीचमेंसे इनोंने किदारेकी एकतान जो बजाई तो यह मालूम हुआ कि मानों चंद्रिका सवाई डेढ़ी होगई। फिर रतलामनरेशने भी इनको चार पाँच दिन अपने पास रक्खा।

मियाँ अमृतसेनजी जैसे रागके पादशाह थे वैसे लयताल के भी पादशाह थे। बड़े बड़े पखावची इनके लयतालके पांडित्यसे

चकित होजातेथे। ये जोड़ बजाकर जो गत बजाते थे तो पखावची के तालके विश्वासपर नहीं बजातेथे, किंतु अपने पैरके विश्वासपर बजातेथे इनका पैर बराबर ताल देता रहताथा कभी बंद न होता था यह विशेष भी किसी औरमें देखा नहीं गया। एक दिन जय-पुरमें इनका लयकारीका ऐसा सितार सुना कि बड़े बड़े सांगीतिक उस्ताद दांतसे अंगुलि दबातेथे (चकित होगए)। समपर आगिरने में कोई लयतालका पांडित्य नहीं क्योंकि यदि बजानेवाला समपर आकर न गिरेगा तब तो बेताला ही कहावेगा लयतालका पांडित्य तो कुछ और ही है यथा तालके उन उन सूक्ष्ममात्रास्थानोंमें आकर मिलना इत्यादि, विशेष रहस्यको ग्रंथमें लिखना अशक्य है।

सितारकी बहुतसी गतें तो मसीतखाँजी प्रभृति उस्तादोंकी बनाई चलीआतीहैं वे सीधी साधी हैं प्राचीन कहातीहैं, कुछ रागोंकी गतें रहीमसेनजीने भी बनाईहैं शेष बहुतसी गतें अमृतसेनजीने बनाईहैं ये रहीमसेनजी अमृतसेनजीकी बनाई गतें अमूल्य रत्न हैं उस उस रागके मानों लक्षण हैं, ये लयकी टेढ़ी और मीड़ोंसे भरी हैं इन गतोंको यथार्थ रूपसे बजाना सहज नहीं, फिर इनगतों के अनुरूप आगे तोड़ेफ़िकरोंकी कलपना करनी तो अशक्य ही है। जिस राग की मीयाँ रहीमसेनजी वा अमृतसेनजीकी बनाई गत याद हो उस रागका ऐसा ज्ञान (साक्षात्कार) होजाताहै कि उस रागमें चलना फिरना सहज होजाता है, अत एव ये गतें इस लेखकके सिवाय साकल्येन इनके घरसे बाहिर और किसीके पास नहीं पहुँची।

जयपुरनरेश रामसिंहजीके मरनेके अनंतर और सब सांगी-तिकोंके साथ साथ हरेबंगलेकी नौकरीका परमाना अमृतसेनजीके

और इनके मातुल हैदरवख़्शजीके पास भी पहुँचा अमृतसेनजीने हैदरवख़्शजीको साथ ले दीवान फ़त्तेसिंहजीसे जाकर कहा कि 'मैं और मेरा मामा हरेबंगलेकी नौकरी नहीं करेंगे महाराजासाहेब जब सुनेंगे तब उनको सुनाएँगे आपको रखना हो तो हमें रक्खो नहीं तो और कहींसे परमेश्वर आधसेर आटा दिलादेगा।' यह सुन फ़त्तेसिंहजी बोले कि 'मीयाँजी आपकेलिए हमसे बड़ी बड़ी कई रयासतें मौजूद हैं हमको तो आपसा रत्न दूसरा मिल नहीं सकता आप राज्यके रत्न हैं हरेबंगलेकी नौकरीका परमाना आप दोनोंके पास भूलकर चलागया माफ कीजिए आप दोनोंको हरेबंगलेसे कुछ काम नहीं महाराजासाहेबको जब इच्छा होगी तो वे आपको बुलाएँगे।' सो अमृतसेनजी और हैदरवख़्शजीको हरेबंगलेकी नौकरी भी माफ थी। अमृतसेनजीके[1] पुत्र निहालसेनजीको भी यह नौकरी माफ है। निहालसेनजीकी तीनसौकी तनखाह है एक ग्राम में जागीर है। हैदरवख़्शजीकी दोसौकी तनखाह थी।

जयपुरनरेश माधवसिंहजी संगीतचर्चाके काल अभीतक अमृतसेनजीका स्मरण करतेहैं यह भी सुना है कि जयपुरनरेश माधवसिंहजी अपने राज्यके जिन चार मृत पुरुषरत्नोंका प्रायः स्मरण किया करते हैं उनमें से एक यह मीयां अमृतसेनजी हैं। वे चार पुरुषरत्न यथा—१ बाबू कांतिचन्द्रजी, २ मीयां अमृतसेनजी, ३ पढ़ाने वाले, ४ एक खुशनज़र।

मीयां अमृतसेनजीका फोटू उतरानेका मेरा संकल्प कई

---

१ मीयां अमृतसेनजीका जो मुझे थोड़ासा जीवनवृत्तान्त ज्ञात है उसमेंसे मैंने थोड़ासा यहाँ लिखा है अन्यथा बहुत विस्तर होजाता।

कारणोंसे मनमें ही रहगया इसकारण इनकी युवावस्थाका जो चित्र प्राप्त हुआ उसका फोटू इस पुस्तकके अंतमें देताहूँ। वृद्धावस्थामें इनकी आकृति विशेषकर निजपिता रहीमसेनजीके सदृश ही प्रतीत होतीथी विशेष यही था कि इनका नाक आगेसे गोल था। इनके पिता मीयां रहीमसेनजीका तथा इनके पूर्वपुरुष मीयां तानसेनजीका भी चित्र इस पुस्तकमें वर्तमान है, इनीके कारण श्रीहरिदासस्वामीजीका भी चित्र इस पुस्तकमें दियाहै।

सितारमें मीयाँ अमीरखांजीने भी इस कालमें बड़ा नाम पाया है इससे इनका फोटूचित्र भी आगे दिया है। मीयां अमीरखांजी अमृतसेनजीके भागिनेय थे इनके पिता वजीरखांजी वीणाकार थे, पितामह हैदरबख्शजी ध्रुपदके भारी उस्ताद (पादशाह) थे। अमीरखांजीने झझरमें जन्म पा अलवरमें विशेषकर अमृतसेनजीसे सितारकी शिक्षा पाई कुछ अपने मातामह रहीमसेनजीसे भी शिक्षा पाई। ये प्रथम अलवरनरेशके फिर जयपुरनरेश रामसिंहजीके फिर गवालियरनरेश जयाजीरावके नौकर रहे। जयाजीरावकी सितारचमत्कारसे इनपर बहुत कृपा थी। इनोंने बड़े बड़े संगीत-विद्वानोंमें सितार बजाया इनका हाथ बहुत कोमल था। वर्तमान गवालियरनरेश माधवरावजीने संगीतमें इनको अपना उस्ताद बनाया। इनके तीन पुत्र हुए दो मरगए एक फ़िदाहुसेन वर्त्तमान है, जयपुर में नौकर है। अमीरखांजी[१] भी अब जयपुरमें रहते हैं।

अब मैं मीयां तानसेनजीकी वंशावलीको लिखता हूँ—गवा-

---

१ इस ग्रंथको लिखनेके समय ये जीतेथे, उसके अनन्तर संवत् १९७२ कार्तिकमें मरगए।

लियरमें एक गौड़ ब्राह्मण मकरन्दपाँडे थे उनकी कोई संतान बचती न थी इस कारण उनके जब तानसेनजी जन्मे तो यह बच्चा बचजाय इसकेलिये मातापिताने इनको महम्मदगौसके भेट करदिया। महम्मदगौस उससमय गवालियरमें एक सिद्ध मुसलमान फकीर थे अब तक वहाँ इनका उत्तम मकबरा (समाधिस्थान) बनाहै, उसीके पास तानसेनजीकी भी कबर है उसपर एक इम्लीका वृक्ष प्राचीन लगाहै सांगीतिक लोग वहाँ जातेहैं तो इसकी पत्तीको चबातेहैं। महम्मदगौसकी भेट हो जानेके कारण तानसेनजी चिरायु हुए। इनका पैतृक नाम 'वनआयोव्यास' था। इनकी संगीतविद्यामें रुचि हुई कुछ सीखने लगे। कोई कहतेहैं कि महम्मदगौसने ही इनको संगीतविद्यामें निजसिद्धिसे सिद्ध बनादियाथा श्रीहरिदासस्वामीजीके ये शागिरद न थे किन्तु उनमें श्रद्धा रखतेथे क्यों कि हरिदासस्वामीजी भारी सिद्ध साधु महात्मा थे और संगीतमें भी इनसे अधिक थे। कोई कहतेहैं कि तानसेनजी हरिदासस्वामीके शागिरद ही थे उनींके प्रभावसे संगीतमें ये सिद्ध हुए। उस समय लौकिक जनोंमें संगीतविद्यामें तानसेनजीसे बढ़कर और कोई न था यह अविवाद सिद्ध है। सुनाहै कि तानसेनजी प्रथम रीवांमें रामराजाके पास उस्ताद बनकर रहे। फिर इनकी संगीतकी कीर्ति जो दिगंत व्याप्त हुई तो इनको पादशाह अकबरने बुलाकर अपना उस्ताद बनाया। अकबरके नवरत्नोंमेंसे एक ये भी रत्न गिने जातेहैं। वस्तुगत्या आपामरपंडित इनने संगीतविद्यामें ऐसी कीर्ति पाई जैसी आजतक और कोईको प्राप्त नहीं हुई। संगीतमें उस समय इनोंने बहुत लोगोंको

पराजित किया और शिक्षा दी। मद्रासहातेको छोड़ और समग्र-भारतके सांगीतिकोंमें सैकड़े पीछे नब्बे सांगीतिक इन्हींके वंशके साक्षात् किं वा परंपरया शागिरद निकलेंगे। बैजूप्रभृति भी उस समय उत्तम संगीतविद्वान् थे किन्तु उनसे लोकोपकार इतना नहीं बना। कोई कहतेहैं कि बैजू तानसेनजीसे प्राचीन हैं जो हो। श्री-हरिदासस्वामीप्रभृति तो अलौकिक पुरुष थे।

कोई कहतेहैं कि तानसेनजी अकबरके संगसे मुसलमान हुए। कोई कहतेहैं कि महम्मदगौसके पास ही मुसलमान होगएथे। किसी कविने कहाहै कि 'अच्छा हुआ जो सर्पके कान न हुए नहीं तो तानसेनकी तान सुन शेषनागके सिर हिलानेसे पृथ्वीपर प्रलय ही होजाती'—"भलो भयो विधि ना दिये शेषनागके कान।"

मीयां तानसेनजीके मुसलमान होजानेपर भी इनके वंशमें अभीतक हिंदुधर्मकी बहुतसी प्रथाएं चलीआतीहैं—यथा दीपमा-लाकी रात्रिको सरस्वतीका और वाद्योंका पूजन करना। विवाहमें वरकन्याके जन्मपत्र लिखवा पूजन करना। वरकन्याका नकाह होनेपर भी वे एकवेर हिंदूमंडपतुल्यमंडपमें बैठते हैं, उसदिन स्त्रीलोग धोती पहिरती हैं इत्यादि। मीयां रहीमसेनजी तो बहुत् ब्राह्मणों को गौएँ मोल खरीददेतेथे। ये लोग मद्यका तो स्पर्शतक नहीं करते बल्के कोई प्रकारके भी नशेका सेवन नहीं करते। पानके अतिरिक्त इनलोगोंको और कोई व्यसन नहीं। गौब्राह्मणमें श्रद्धा रखतेहैं।

मीयां तानसेनजीके तानतरङ्गखां सूरतसेन विलासखां निचोड़-सेन ये चार पुत्र हुए एक पुत्री हुई, कोई कहते हैं कि तानसेनजी के छै पुत्र हुए, इनमेंसे विलासखांजी फकीर होगए। अपने

उस्तादकी पुत्रीकेलिए पादशाह अकबरकी इच्छा हुई कि "यह कन्या किसी भारी सांगीतिकविद्वान्‌को देनी चाहिए' इससे बहुत अन्वेषण करनेसे वीणाकार नौवातखांजी मिले उनको कन्या दीगई। उसके पुत्रसे जो वंश चला वही तानसेनजीका दौहित्रवंश है इनका पूर्वोक्त चारगोतोंमेंसे खंडारे गोत है। नौवातखाँजी भी प्रथम हिदू थे पीछे इस विवाहके कालमें मुसलमान हुए। नौवातखांजी दामाद होनेके कारण तानसेनजीके पुत्रतुल्य ही थे इससे संभव है कि इनको कुछ शिक्षा तानसेनजीसे भी प्राप्त हुईहो तो भी ये प्राधान्येन वीणामें श्रीहरिदासस्वामीजीके ही शिष्य थे वीणाके अद्वितीय उस्ताद हुए। इनके वंशके लोग वीणा बजातेरहे धुरपत भी गातेथे पीछेसे कुछ लोग रबाब और स्वरशृंगारको बजाने लगगए, इसकालमें वीणा इस वंशके शाहलोगोंके अधीन थी। ख़यालके आदिपुरुष सदारंगजी भी इसी वंशमें हुएहैं और रामपुरके वर्तमान वीणाकार वजीरखांजी भी इसी वंशमेंसे हैं। रागरसखां रसवीनखां इत्यादि वीणाकार भी इसी वंशमें थे। नौवातखांजीके जीवनखां इनके वजीतखां इनके दूलहखां पुत्र हुए ऐसा सुनाहै। तानसेनजीके पुत्र तथा दौहित्र इन दोनों वंशोंमें संबंध होनेसे पीछे पुत्रवंशवाले भी कुछ लोग वीणाको बजाने लगगए।

यह भी सुनाहै कि नौवातखांजी स्वतंत्र संगीतविद्वान् होने के कारण अपने श्वशुर मीयाँ तानसेनजीसे आंतरिक ईर्षा रखतेथे, एकदिन नौवातखांजी वीणा बजारहेथे एकतानपर तानसेनजीने कहा कि 'बेटा यह तान पूरी नहीं हुई' यह सुन नौवातखांजीने कहा कि 'और पूरी आप कर दिखाइये ?' तब तानसेनजीने उस तानको पूरा गादिया,

इस देशकी नस नसमें भर गया इसीका फल यह दुर्गति है । अब मैं तानसेनजीके ज्येष्ठपुत्रकी वंशावली लिखताहूँ—

(तानसेनजी)
|
तानतरंगखांजी
|
सूरजसेनजी
|
सुफलसेनजी
|
झंडेसेनजी
|
सुभागसेनजी
|
सूरतसेनजी
|
दयालसेनजी
|
कृपालसेनजी
|
निहालसेनजी
|
खयालसेनजी
|
कृपालसेनजी
|
खुशालसेनजी
|
अद्भुतसेनजी
|
बालसेनजी प्रभृति पांच पुत्र हुए
|
रूपसेनजी
|
निहालसेनजी
|
लालसेनजी
|
फ़ाज़िलसेनजी
|
मुरादसेनजी

इन मुरादसेनजीके नूरसेनजी सुखसेनजी और बहादुरसेनजी ये तीन पुत्र हुए। सुखसेनजी के रहीमसेनजी, और रहीमसेनजी के अमृतसेनजी न्यामतसेनजी और लालसेनजी ये तीन पुत्र हुए। इन्हीं रहीमसेनजी अमृतसेनजी का थोड़ा सा जीवनवृत्तांत पूर्वमें लिखा है। अमृतसेनजीके निहालसेनजी दत्तक पुत्र वर्तमान हैं।

उक्त बहादरसेनजीके हैदरबख़शजी पुत्र हुए ये धुरपतके अंतिम पादशाह होगए, अमृतसेनजीके मामा थे। इनका भी थोड़ा सा वृत्तांत पूर्वमें लिखाहै। ये दूलहखांजी के गोद गये। संगीतसे इनका नाम बुधप्रवीण था। इनके वजीरखाँजी मम्मूखाँजी अज्जूखाँजी अलमूखाँजी और सलावतखाँजी ये पाँच पुत्र हुए। वजीरखांजी वीणाकार थे। इनके अमीरखाँजी पुत्र जन्मे ये वर्तमान काल में ७० वर्ष के हैं सितारके और वीणाके अद्वितीय उस्ताद हैं। मम्मूखाँजीके हफीजखांजी हुए इनको अमृतसेनजीने उत्तम सितार सिखायाथा ये प्रथम नवाबटौंकके फिर नवाबरामपुरके बड़े आदरसे नौकर रहे। दस वर्ष हुए मरगये। काशीमें मेरे पास आये थे सितारमें बड़ा नाम करगये।

पूर्वोक्त सुखसेनजीके भ्राता नूरसेनजीके गुलमसेनजी इनके हस्सूसेनजी इनके उत्तमसेनजी इनके आलमसेनजी पुत्र हुए। आलमसेनजीके साथ तानसेनवंशका सभामें धुरपतका गाना अस्त होगया, तानसेनवंशमें इनके पीछे कोई ऐसा नहीं जो सभा में धुरपत गाकर वाहवाह कहावे, जब मूलभूत तानसेनवंशमें ही कोई उत्तम धुरपतगायक नहीं तो और जगत्में कहाँसे आवेगा? आलमसेनजी बड़े सुरीले और धुरपतके भारी विद्वान् थे। इनका

गाना इतना सुरीला था कि लोग इनको नश्तरसेन कहदेतेथे। मीयाँ अमृतसेनजीने कहाथा कि 'हमारे घर की यत्किंचित् तायनोम् (धुरपतका गाना) जो शेष है वह आलमसेनके गलेमें है इसके अनंतर समाप्ति ही है।' इनके कोई संतान नहीं हुई।

मीयाँ अमृतसेनजीका घर मानों संगीतविद्याका सर्वोत्तम कालिज था। मेरे शिक्षाकालमें भी इस घरमें अमृतसेनजी और हैदरबखशजी ये दो तो साक्षात् गंधर्व ही थे। इनसे नीचे लालसेनजी आलमसेनजी चाउसेनजी वजीरखांजी मम्मूखाँजी सलावतखांजी अमीरखांजी निहालसेनजी तथा हफीजफखांजी ये लोग थे। सभी संगीतके उस्ताद थे, अब इनके सदृश कोईभी दृष्टिगोचर नहीं होता। इस घरमें उस समय चारों ओर संगीतविद्या लहरातीथी इसी कारण मुझे संगीत का ज्ञान कुछ प्राप्त होगया। यह घर अलवर झझर और दिल्ली में तो मानों पूर्ण गन्धर्वालय ही था। और ये लोग बड़े सत्पुरुष थे व्यसनी न थे।

तानसेनवंशके धुरपतविद्याके नाशका कारण रहीमसेनजी अमृतसेनजीका सितार ही है। इनोंने ऐसा सितार बजाया कि इनके वंशके बालक धुरपतको त्याग सितारमें लगगये सितार भी वैसा किसी को आया नहीं। उक्त मम्मूखांजीने स्पष्ट कहदियाथा कि 'भाई अमृतसेनके सितार ने घरका धुरपत नष्ट करदिया।' स्वयं ऐसा कहकर भी फिर अपने पुत्र हफीजखाँको अमृतसेनजीसे सितार ही सिखलाया; इनका सितार ऐसा चमत्कारी था।

रहीमसेनजी धुरपतविद्यामें अभी परिपूर्ण प्रवीण नहीं हुएथे कि इनके पिता सुखसेनजी मरगए, सुखसेनजीका गाना ऐसा हृदय-

ग्राही था कि लोग इनको सुखचैन कहाकरतेथे, इनके भाईबरादर बड़ी जान मारमारकर इनका अनुकरण करते किन्तु इनको पहुँच न सकतेथे। पिताके मरणानंतर रहीमसेनजीको और कोई से आगे धुरपत सीखने की इच्छा न हुई इससे अपने श्वशुर दूलहखांजीसे सितार सीखा, उस समय सितार एक साधारण (मामूली) वाद्य था, इससे किसीने रहीमसेनजीको चिढ़ाकर कहा कि 'तुम तो अब डिड़ डा डिड़ डाड़ा बजायाकरो' रहीमसेनजीने भी इसपर गुस्सा खाकर कहा कि 'भाइयो निस्सन्देह सितार धुरपतके आगे दोकौड़ोका है धुरपत रत्नके तुल्य है और सितार कंकड़के तुल्य किन्तु इस कंकड़को ऐसा परिष्कृत करूँगा कि रत्नके बराबर का बनादूँगा।' तदनंतर सितारपर ऐसी बुद्धि लगाई और परिश्रम किया कि सितार में वीणा धुरपत ख़याल तीनोंको भरदिया, जिससे बड़े बड़े सांगीतिक इनके सितारको सिर झुकाने लगे। इसीसे विज्ञ लोग कहते हैं कि 'सितार रहीमसेनअमृतसेनजीका है।' जिसने इनका सितार सुना उसको फिर दूसरा गाना बजाना वैसा न जचा। तानसेनवंशमें भी इनीके पूर्वज सर्वोत्कृष्ट होतेरहे।

मीयां रहीमसेनजी एकबेर लखनौ गए इनके एक ईर्षाग्रस्त भ्राताने इनके साथ यों घात किया कि इनको भोजनका निमंत्रण दे लखनौके उत्तमोत्तम गाने बजानेवालोंको इकट्ठा किया। उस समाजमें प्रथम वे आप बजाए फिर एक सुन्दर सुरीली वेश्याको गवाया यह वेश्या 'मेरा पियरवा जोगिया होगया' ऐसी एक ठुमरी ऐसी गातीथी कि समग्र समाज रोदेता था। उसी ठुमरीको इसने ऐसे आवेशमें गाया कि दोसौ रुपयेकी

अपनी चुनरी (ओढनेका दुपट्टा) भी फाड़ डाली ऐसा रंग जमाया कि समाज में सन्नाटा छागया। इस वेश्याकी इसी ठुमरीके गाने का यह प्रभाव था कि उसके अनंतर किसीके भी गाने बजानेका रंग नहीं जमताथा। उसपर भी इस वेश्याने रहीमसेनजीके कारण उस समय और भी अधिक आवेशसे ठुमरी गाईथी। इस ठुमरीका इस वेश्याको भारी घमंड था, क्योंकि इसके अनंतर किसीका रंग जमता न था। सो इस वेश्याके उस ठुमरीको गाने के अनंतर उक्त गृहपति भ्राताने रहीमसेनजीको सितार बजानेको कहा। ठीक सूर्यास्तका समय था वह समय भी संगीत के उत्तम अनुकूल नहीं होता, भोजनसे रहीमसेनजीका पेट भराहुआ था उक्त वेश्या रंग जमाचुकीथी, ये ही सब घातें थीं। रहीमसेनजीने उस भ्राता से कहा कि 'भाई तुमने मेरे साथ दगा तो बहुत किया क्यों कि उक्त वेश्या अपना रंग जमाचुकीहै पेट ऐसा भरा है कि लेटनेको मन चाहताहै बैठा भी नहीं जाता संगीतसे प्रतिकूल[1] सूर्यास्तका समय है खैर खुदा इज्जतरखने वाला है बजाताहूं।' उस समाजमें डेढ़दोसौ तो केवल सितारिये रहीमसेनजीका सितार खोसनेके संकल्पसे इकट्ठे हुए थे क्यों कि इनको रहीमसेनजीके सितारका तत्वज्ञान था नहीं। उस समय रहीमसेनजीने श्याम-कालंगड़ेको सितारमें ऐसा बजाया कि पूर्वोक्त वेश्याका रंग सब बह गया—समग्र समाजके मुखसे वाहवाहकी वर्षा होनेलगी समाजने

१—सूर्यास्तका समय संगीतसे प्रतिकूल यों है कि सूर्यास्तके समय आरंभ करनेको कोई भी उत्तम राग नहीं, सब इधर विधरके समयमें आरंभ करनेके हैं।

स्पष्ट कहा कि 'आप आप ही हैं हम लोग आपको ऐसा नहीं जानतेथे आपका सितार तो आफत है ऐसे लय ताल आलाप गत तोड़ फ़िकरे तो आज तक कभी नहीं सुनेथे आपके सितारने तो वीणा धुरपत खयाल तीनों को मात कर दिया सितार तो आप ही का है।' रहीमसेनजीने कहा कि हमारे पूर्वज पुरुष ऐसे होचुकेहैं कि मैं उनकी अपेक्षा तृणके तुल्य हूँ परमेश्वरने इस समय मेरी इज्ज़त रखली यह बड़ी बात है।' उक्त भ्राताने लज्जासे सिर झुका-लिया उक्त वेश्याने रहीमसेनजीके पैर पकड़लिए कहा कि 'आप उस्ताद क्या हैं आप तो वे ही मीयां तानसेनजी हैं।' जो उक्त सितारिये जमा हुए थे वे धीरे धीरे मुख छिपा खिसकने लगे उनमेंसे बहुतसे रहीमसेनजीके शागिरद होगए। फिर बड़े बड़े संगीतिक और श्रीमानोंने रहीमसेनजीके आतिथ्य कर सितार सुने, लखनौके इलाकेमें इनकी धूम मचगई। इसीसे कहतेहैं कि सितार रहीमसेनजीअमृतसेनजीका ही है, जिसने इनका सितार सुनाहै उसको दूसरेका गाना बजाना रुचिकर नहीं होसकता।

लखनौमें कत्थक बहुत उत्तम होचुकेहैं। अंतमें विंदादीनजीने नृत्यमें बहुत कीर्ति पाई। ये अभी विद्यमान हैं प्राचीन गुणियों मेंसे हैं।

मैंने उक्त मीयां श्रीअमृतसेनजीसाहेबसे रागविद्या (सितार) की शिक्षा पाईहै और काशीमें महामहोपाध्याय सी० आई० ई० श्रीगंगाधरशास्त्रीजीमहाराजसे संस्कृतविद्याकी शिक्षा पाईहै। संस्कृत में तर्क वेदांत मीमांसादि शास्त्रोंके तथा हिन्दीभाषामेंभी मैंने कई ग्रंथ बनाकर छपवाएहैं, संगीतविद्या बहुत लुप्त होजातीहै इसकारण

सीखनेवालोंको सहायता प्राप्त्यर्थ मैंने यह संगीतसुदर्शन नामका छोटासा ग्रंथ लिखाहै, इसके चार अध्याय हैं—१ स्वराध्याय, २ रागाध्याय, ३ तालाध्याय, ४ नृत्याध्याय । मैंने अपनी मतिके अनुसार थोड़ासा विषय इस ग्रंथमें लिखदियाहै इस ग्रंथका पसंद करना बाचनेवालेके अधीन है । मीयाँ रहीमसेनजीअमृतसेनजीका कुछ जीवनवृत्त लिखनेसे इसग्रंथकी भूमिका कुछ बढ़गईहै । चारों अध्यायोंमेंसे नृत्याध्याय बहुत संक्षिप्त है शेष तीन अध्याय अधिक सविस्तर नहीं तो बहुत संक्षिप्त भी नहीं हैं, इन तीन अध्यायोंसे जिज्ञासु को कुछ साहाय्य प्राप्त होसकताहै विशेषज्ञान तो गुरुमुखके अधीन है, यह इसग्रंथका और मेरा स्वरूप है । स्वराध्यायका और अधिक ज्ञान संगीतरत्नाकरादिग्रंथोंसे होसकता है । आधुनिक रागाध्यायका विशेषज्ञान तो गुरुशिक्षाके बिना प्राप्त हो नहीं सकता ।

संगीतविद्याके मुसलमानोंके हाथ चलीजानेसे भी संगीतग्रंथोंके पठनपाठनकी परिपाटी उठगई क्यों कि संगीतग्रंथ संस्कृतभाषामें हैं मुसलमान तो संस्कृतभाषाको छोड़ ग्रांथिक हिंदीभाषाको भी नहीं जानते अत एव हिंदीभाषाके ग्रंथोंको भी वे पढ़ा नहीं सकते । आजकल्हके गानेबजानेवालोंके जो बालक कुछ अक्षरमात्रका किंवा चिट्ठीपत्रीयेग्य पढ़ने लिखनेका अभ्यास कर संगीतग्रंथविद्यामें पैर अड़ातेहैं प्राय: वह अशुद्ध है कुछ औरका और ही समझ बैठेहैं। उसका तत्त्व इतना ही है कि उनोंने 'वादी विवादी तान मूर्छना' इत्यादि कुछ शब्दोंको कंठ करलिया है उनमेंसे भी जिसने 'ग्रह अंश न्यास श्रुति' इत्यादि शब्दोंको कंठ करलिया वह तो मानों

संगीतभट्टाचार्य बनगया, वे लोग कंठ किए शब्दोंके भी वास्तविक अर्थको कहसकते नहीं। गानेबजानेवालोंमें ग्रांथिकविद्याका ज्ञान इतना क्षीण होगयाहै कि प्रतिसैकड़े दश भी ऐसे लोग दुर्लभ हैं जो श्रुति और स्वरके यथार्थ भेदको कहसकें।

और इस संगीतविद्याका लक्ष्य (गानाबजाना) अत्यधिक मधुर होनेसे भी संगीतग्रंथोंके पठनपाठनकी परिपाटी उठ गई क्यों कि उस माधुर्यके कारण लोग ग्रंथोंको छोड़ गानेबजानेपर ही टूटपड़े। इसी माधुर्यके कारण ही रागादिस्वरूपोंमें कुछ भेद पड़गया यथा कोई वागीश्वरीमें तीव्र ऋषभ लगातेहैं कोई कोमल ऋषभ लगातेहैं कोई दोनों ही, एवं कोई तीव्र धैवत लगाते हैं कोई दोनों ही, इस संशयमें इससमय तानसेनवंश ही प्रधान प्रमाण है अर्थात् मीयां तानसेनवंशके लोग जैसा गाते बजातेहैं उसे ही यथार्थ समझना चाहिए। इसवंशमें भी जहाँ भेद प्रतीत हो वहाँ विकल्प जानना। तानसेनवंश संगीतविद्यामें इतना प्रतिष्ठित है कि मेरी जानमें उसको प्रमाण माननेमें किसीको भी वैमत्य न होगा।

तानसेनजीके वंशके कुछलोग पूर्व (काशीप्रभृति) में रहतेहैं कुछलोग पश्चिम (जयपुरप्रभृति) में रहतेहैं दोनों ही समुदायोंमें कई अद्वितीय संगीतविद्वान् होचुके हैं इसमें कुछ संशय नहीं किन्तु कुछ पूर्वके लोग जो कहाकरतेहैं कि 'पश्चिमवाले जोड़ बजाना नहीं जानते' सो सब अशुद्ध है और ऐसा वही लोग कहा करतेहैं जिनोंने पश्चिमके उत्तमसंगीतविद्वानोंको नहीं सुना। पूर्वके बहुतसे उत्तमोत्तमसंगीतविद्वान् पश्चिमके संगीतविद्वानोंको सुनकर

चकित होचुकेहैं। पूर्व और पश्चिमके गततोड़में जितना भेद है वस्तुगत्या उतना ही भेद जोड़में भी होनाचाहिए। पूर्ववालोंके जोड़में ऐसा कोई विशेष ज्ञात नहीं होता जिसको पश्चिमवाले न निकालसकें। इस समय भी दोनों दलोंकी एकसमान दशा है। बल्के पूर्ववालोंकी अपेक्षा पश्चिमवालोंका जोड़ बहुत खिला होता है। अपने मुखसे अपनी प्रशंसा और दूसरेकी निंदा करदेनेसे विद्यामें उत्कर्ष नहीं होसकता। पश्चिमवाले स्वभावके भी बहुत साधु होते आयेहैं। वस्तुगत्या दोनों ही दल गुणी थे प्रशंसनीय थे एकदलके पक्षसे दूसरे दलकी निंदा करनी सर्वथा अनुचित है। ये दोनों दल भारतकी अंतिमसंगीतविद्याके मानों सूर्य चंद्र थे और क्या लिखूं।

अब मैं इस भूमिकाको और न बढ़ा समाप्त करता हूँ और निवेदित करताहूँ कि जो महोदय मेरे इसग्रंथकी निंदा स्तुति छापें वे उसे मेरे पास भी भेजदें जो उस निंदास्तुतिका मुझे भी ज्ञान होजाय इति शम्।

"मर्त्यैरसर्वविदुरैर्विहिते क नाम
ग्रन्थेस्ति दोषविरहः सुचिरन्तनेपि"

काशी,
लेखसंवत् १९७१

आपका—
सुदर्शनाचार्य्यशास्त्री

संकेतविशेष ।

मैंने अपने हृदयकी सरलता वा कुटिलताकी अपेक्षा इस ग्रंथको तथा और ग्रंथोंको भी बहुत कुछ स्पष्ट लिखाहै अन्य ग्रंथोंमें इतना मर्म प्राय: कोई नहीं लिखता । मैंने तो रागोंके परमगोप्य मर्मको भी यहां बहुतकुछ स्पष्ट लिखदियाहै यह सब ध्यानपूर्वक देखनेसे ज्ञात होगा । रागाध्यायमें सर्वत्र उपयोगकेलिए यहाँ कुछ संकेत भी लिखदेताहूं—

रागाध्यायमें मैंने सरगम पद और गत ये तीन प्रकारके उदाहरण लिखेहैं उनमेंसे सरगमका विशेषकर द्वितीयसप्तकसे आरंभ करना क्रमसे प्रथमसप्तक और तृतीयसप्तकमें जाना फिर द्वितीय सप्तक में समाप्ति करनी जहाँ 'सा रे ग म प ध नी सा रे ग' ऐसाआरोहहो वहाँ अंतके 'सा रे ग' ये तृतीयसप्तकके जानने जहाँ 'सा नी ध प म ग रे सा नी ध प' ऐसा अवरोह हो वहां अंतके 'नी ध प' ये प्रथमसप्तकके जानने इसी आरोहावरोहसे सप्तक जानलेना ।

पदोंके ऊपर मैंने स्वराक्षर लगादियेहैं जिस पदाक्षरपर जो स्वर हो उस पदाक्षरको उसी स्वरमें निकालना, और जो जो विशेष है वह वहां वहां लिखदियाहै ।

गतोंकेलिए यह सङ्केत है कि मेरे उस्तादघरानेके सितारपर १७ पड़दे 'म प ध ध नी नी सा रे ग म म प ध नीं सा रे ग' इन स्वरोंके क्रमसे होतेहैं । यही क्रम इनगतोंमें भी पड़दोंका तथा गतोंके नीचे दिये अंकोंका जानना । तूंबेकी ओरके पड़देसे संख्याका आरंभ

करना यथा—गतके जिसबोलके नीचे १ अंक हो उसको तूंबेकी ओरके सबसे नीचेके पड़देपर बजाना यह पड़दा तीसरे सप्तकके गंधारका है, २ अंकवाले बोलको उसके ऊपरवाले ऋषभके पड़दे-पर बजाना, एवं आगे भी जानना। जिस बोलके नीचे शून्य हो उसे खुले तारपर बजाना।

सितारमें सूत भी होतीहै इसके संकेतकेलिए बोलपर 'सू' ऐसा अक्षर दियाहै ऐसे बोलके नीचे दोअंक दियेहैं प्रथमअंकके पड़देसे दूसरे अंकके पड़देतक सूतसे जानना। काटकेलिए बोलों-पर 'का' अक्षर दियाहै उसबोलके नीचे जितने अंक हों उतने पड़-दोंपर उसबोलको काट (कतर) से बजाना चाहिये, इसमें दोनों अंगुलियोंका व्यापार होताहै। पड़देपर अंगुलिसे उसस्वरको कंपित करनेको गमक कहतेहैं इसकेलिए बोलपर 'ग' यह चिह्न दियाहै।

मींड़केलिए बोलपर 'मी' यह अक्षर दियाहै इसके आगे जिस स्वरका अक्षर हो उस स्वरकी मींड़ देनी। यदि मीं के आगे अंक हो तो १ अंकसे एकस्वरकी २ अंकसे दूसरे स्वरकी मींड़ देनी यथा गंधारके पड़देके बोल (मी१ डा ६) पर जब मींड़के लिए १ अंक हो तो गंधारसे दूसरे मध्यमकी मींड़ देनी (मी२ डा ६) ऐसे २ अंक हो तो पंचमकी मींड़ देनी। ऋषभादि पांचस्वर चढ़े तथा उतरे दो प्रकार के हैं सो उसरागमें जैसे लगतेहों उनकी ही मींड़ देनी। लचककी सूतकी कतरकी सादी आंसकी इत्यादि कई प्रकारकी मींड़ होतीहै सब ज्ञान शिक्षाके अधीन है।

गत किसी न किसी तालमें बंधी होतीहै सो जहां तालका नाम न हो वहां धीमतिताला तालजानना क्यों कि गतें विशेषकर धीमेतितालामें ही बनी हुईहैं, यह ताल सबतालोंसे कठिन है। गतको बनाने तथा बजानेवाला चाहे तो 'डिड़ ड़ा' इनबोलों पर भी तालकी जरबोंको स्थिर करसकताहै किंतु इन बोलोंपर जरबें सुन्दर नहीं होतीं इससे 'डा' बोलपर जरब होतीहै। बड़े उस्तादोंकी मीड़दार गतोंमें डा बोल अधिक होताहै क्योंकि डापर मींड़ तथा आंस सुंदर होती है। धीमेतितालेकी मात्रा १६ होनेसे एक आवृत्त की गतमें १६ बोल होतेहैं, लय को घटानेसे बोल घट भी सकतेहैं बढानेसे बढ़ भी सकतेहैं। गतें एक आवृत्तसे लेकर चार आवृत्त-तककी देखनेमें आतीहैं।

डिड़ डा डिड़ डाड़ा इसक्रमकी गतोंका धीमे तितालेकी सोल-हवीं मात्रासे आरंभ जानना। बोलोंके क्रमका कुछ नियम नहीं अनेक प्रकारके बोलक्रम देखनेमे आतेहैं। तालमें सम ही प्रधान होता है: वह सम किस बोलपर होताहै यह नियम नहीं तथापि गतमें यदि 'डिड़ डा डिड़ डाड़ा' ये इसक्रमसे बोल हों तो प्राय: इनसे आगेके बोलपर सम रहताहै—इत्यादि प्रकारसे समको खोज लेना, जहां अनेक बोलोंपर सम होसकता हो वहां समयोग्य प्रधान बोलपर समकी कल्पना करनी, बोलकी प्रधानता स्वरकी प्रधानतासे जाननी। यहां गतोंपर (स) यह समका संकेत जानना। धीमे तितालेकी गतोंमें जरबोंके मध्यमें तीनतीन बोलोंका अंतर रहताहै लयको घटाने बढ़ानेसे घट बढ़ भी सकताहै। डिड़ को एक ही बोल जानना इत्यादि।

विशेष सूचना।

इस ग्रंथका यह द्वितीय मुद्रण है। इस वार मैंने इसको कुछ और भी परिष्कृत कियाहै।

आपका—
सुदर्शनाचार्यशास्त्री

॥ श्रीः ॥

अथ

संगीतसुदर्शन

स्वराध्याय

वीणाप्रवीणां स्वरतालविग्रहां
समग्रविद्यैकपराधिनायिकाम् ।
श्रुत्यादिप्रत्यक्षविसर्जनोत्सुकां
दयानिधिं नौमि मुदा सरस्वतीम् ॥

अमृतसेनपदपद्मयुग वंदौं वार वार ।
मोसम जो मतिमंदको दीनों गीतविचार ॥

समग्र संगीत नादके अधीन है वह नाद आहत तथा अनाहत रूपसे दो प्रकारका है कहा भी है—

"आहतोऽनाहश्चेति द्विधा नादो निगद्यते ।"

"गीतं नादात्मकम्, वाद्यं नादव्यक्त्या प्रशस्यते ।
तद्द्वयानुगतं नृत्यं नादाधीनमतस्त्रयम् ॥"

"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते ।"

जो नाद आघातके बिना होताहै उसे अनाहत नाद कहतेहैं यथा जो कानमें अंगुली देनेसे साँ साँ सुनाई देता है, इस अनाहत-नादका संगीतसे कोई सम्बन्ध नहीं । जो नाद आघातसे उत्पन्न होताहै उसे आहतनाद कहतेहैं यथा सितारवीणादि वाद्योंके

तारपर मिज़राबादि मारनेसे और मृदंगादि वाद्योंपर हाथ मारनेसे और कंठसे नाद निकलता है इत्यादि नाद आहतनाद है। इसीका संगीतसे सम्बन्ध है कहा भी है।

"सोपि रक्तिविहीनत्वान्न मनोरञ्जको नृणाम्।
तस्मादाहतनादस्य श्रुत्यादि द्वारतोऽखिलम्।
गेयं वितन्वतो लोकरञ्जनं भवरञ्जनम्॥"

यहाँ पर "सोपि" यह पद अनाहतनादका परामर्शक है।

कंठसे निकलनेवाला भी नाद प्रेरित कीहुई भीतरकी वायुके आघातसे किंवा भीतरकी वायु और अग्निके संयोगसे उत्पन्न होता है इसकारण आहतनाद कहाताहै कहा है—

"नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।
जातः प्राणाग्निसंयोगात् तेन नादोभिधीयते॥"
"आत्मा विवक्षमाणोयं मनः प्रेरयते मनः-।
देहस्थं वह्निमाहन्ति, स प्रेरयति मारुतम्॥
ब्रह्मग्रन्थिस्थितः सोथ (वायुः) क्रमादूर्ध्वपथे चरन्।
नाभिहृत्कण्ठमूर्धास्येष्वाऽऽविर्भावयति ध्वनिम्॥"

वह आहतनाद यद्यपि नाभि हृदय कंठ मुख और शिर इन पाँचस्थानोंके भेदसे पाँच प्रकारका है तथापि लोकव्यवहारमें हृदय कंठ और शिर इन तीनस्थानोंके प्रभेदसे तीनप्रकारका ही गिना-जाताहै कहा भी है—

"नादोतिसूक्ष्मः सूक्ष्मश्च पुष्टोऽपुष्टश्च कृत्रिमः।
इति पञ्चाभिधां धत्ते पञ्चस्थानस्थितः क्रमात्॥

व्यवहारे त्वसौ त्रेधा हृदि मन्द्रोभिधीयते ।
कंठे मध्यो मूर्ध्नि तारो द्विगुणश्चोत्तरोत्तरः ॥" इति ।

नाभिप्रदेशगत नादका प्रत्यक्ष नहीं होता और कंठगत और मुखगत नादोंका भेद स्पष्ट ज्ञात नहीं होता इस कारण व्यवहारमें तीनप्रकारके ही नादका ग्रहण कियाहै। उनमेंसे हृदयदेशमें होनेवाला नाद मन्द्र (पहले दर्जेका) नाद कहाताहै । कंठमें होनेवाला नाद मध्य (दूसरे दर्जेका) नाद कहाताहै । शिरमें होनेवाला नाद तार (तीसरे दर्जेका सबसे ऊँचा) नाद कहाताहै । मन्द्रसे मध्य दुगुना ऊँचा (खिंचा) होता है, मध्यसे तार दुगुना ऊँचा होताहै । नादकी तारता वीणादिवाद्यके तारको खैंचकर देखनेसे ज्ञात होसकतीहै सो यहां ऊँचा पदसे जादा जोरका यह अर्थ नहीं जानना इत्यादि बातोंका ज्ञान केवल शिक्षाके ही अधीन है ।

इन ही तीनस्थानोंके भेदसे स्वरोंके तीन सप्तव कहातेहैं यथा हृदयदेशमें मंद्रनादात्मक प्रथम सप्तक, कंठदेशमें मध्यनादात्मक द्वितीय सप्तक, शिरमें तारनादात्मक तृतीय सप्तक, कहा भी है—

"ते मन्द्रमध्यताराख्यस्थानभेदात् त्रेधा मताः ।" इति।

उक्त तीनोंप्रकारके नादमेंसे प्रत्येक नादके प्राधान्येन प्रत्यक्षयोग्य बाईस भेद होतेहैं इन्हीं भेदोंको श्रुतियें कहतेहैं । हृदयदेशमें एकप्रकारकी बाईस नाड़ीहैं; इनकेकारण हृदयदेशमें मन्द्रनादात्मक बाईस श्रुतियें उत्पन्न होतीहैं, उनमेंसे भी वे बाईस नाड़ी क्रमसे एकसे एक ऊँची होनेके कारण एकसे एक श्रुति ऊँची (तार) होतीजातीहै । एवं कंठदेशमें भी बाईस नाड़ी होनेसे मध्य नादकी

भी बाईस श्रुति हैं और शिरोदेशमें भी बाईस नाड़ी होनेसे तारनाद की भी बाईस श्रुति हैं, कहा भी है—

"तस्य द्वाविंशतिर्भेदाः श्रवणाच्छ्रुतयो मताः ।
हृद्यूर्ध्वनाड़ीसंलग्ना नाड्यो द्वाविंशतिर्मताः ॥
तिरश्च्यस्तासु तावत्यः श्रुतयो मारुताहताः (मरुत्याहते) ।
उच्चोच्चतरतायुक्ताः प्रभवन्त्युत्तरोत्तरम् ॥
एवं कण्ठे तथा शीर्षे श्रुतिद्वाविंशतिर्मता ॥" इति ।

इन बाईस श्रुतियोंके क्रमसे 'तीव्रा कुमुद्वती मंदा छन्दोवती दयावती रंजनी रतिका रौद्री क्रोधा वज्रिका प्रसारिणी प्रीतिः मार्जनी क्षिति रक्ता संदीपिनी आलापिनी मदंती रोहिणी रम्या उग्रा क्षोभिणी ये नाम हैं । इन श्रुतियोंकी पांच जाति हैं दीप्ता आयता करुणा मृदु मध्या, कहा भी है—

"दीप्ताऽऽयता च करुणा मृदुर्मध्येति जातयः ।"

दीप्ताजातिवाली श्रुतियोंके श्रवणसे मन दीप्त होताहै; आयता जातिवाली श्रुतियोंके श्रवणसे मन आयत (विस्तृत) होताहै, करुणाजातिवाली श्रुतियोंके श्रवणसे मन करुणप्रधान होताहै, एवं आगे भी जानना । श्रुतिजातियोंकेलिए यही कारण कहाहै । श्रुतिकी अपेक्षा भी श्रुतिजातिका ज्ञान कठिन है ।

"तीव्रा रौद्री वज्रिकोग्रेत्युक्ता दीप्ता चतुर्विधा ।
कुमुद्वत्याऽऽयतायाः स्यात् क्रोधा चाथ प्रसारिणी ॥
संदीपिनी रोहिणी च भेदाः पञ्चेति कीर्तिताः ।
दयावती तथाऽऽलापिन्यथ प्रोक्ता मदन्तिका ॥

त्रयस्ते करुणाभेदाः, मृदोर्भेदचतुष्टयम्—।
मन्दा च रतिका प्रीतिः क्षमेति, मध्या तु षड्भिदा—॥
छन्दोवती रञ्जनी च मार्जनी रक्तिका तथा ।
रम्या च क्षोभिणीत्यासामथ ब्रूमः स्वरस्थितिम् ॥"

अर्थात् 'तीव्रा रौद्री वज्रिका उग्रा' इन चार श्रुतियोंकी दीप्ता जाति है, 'कुमुद्वती क्रोधा प्रसारिणी संदीपिनी रोहिणी' इन पाँच श्रुतियोंकी आयता जाति है, 'दयावती आलापिनी मदन्तिका' इन तीन श्रुतियोंकी करुणा जाति है, 'मंदा रतिका प्रीति क्षिति' इन चार श्रुतियोंकी मृदु जाति है, 'छंदोवती रञ्जनी मार्जनी रक्तिका रम्या क्षोभिणी' इन छः श्रुतियोंकी मध्या जाति है ।

इनहीं बाईस श्रुतियोंसे षड्जादि सातों स्वर होतेहैं कहा है—

"श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः ।
पञ्चमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥
तेषां संज्ञाः सरिगमपधनीत्यपरा मताः ॥"

इन बाईस श्रुतियोंमेंसे तीव्रा कुमुद्वती मन्दा और छंदोवती ये चार श्रुतिये षड्जस्वरकी हैं, दयावती रञ्जनी रतिका ये तीन श्रुतियें ऋषभस्वरकी हैं, रौद्री क्रोधा ये दो श्रुतियें गान्धारस्वरकी हैं, वज्रिका प्रसारिणी प्रीति मार्जनी ये चार श्रुतियें मध्यमस्वरकी हैं, क्षिति रक्ता संदीपिनी आलापिनी ये चार श्रुतियें पंचमस्वरकी हैं, मदंती रोहिणी रम्या ये तीन श्रुतियें धैवतस्वरकी हैं, उग्रा और क्षोभिणी ये दो श्रुतियें निषादस्वरकी हैं, कहा है—

"तीव्राकुमुद्वती मन्दा छन्दोवत्यस्तु षड्जगाः।
दयावती रञ्जनी च रतिका चर्षभे स्थिता॥
रौद्रो क्रोधा च गान्धारे, वज्रिकाऽथ प्रसारिणी।
प्रीतिश्चमार्जनीत्येताः श्रुतयो मध्यमश्रिताः॥
क्षिती रक्ता च संदीपन्यालापन्यपि पञ्चमे।
मदन्ती रोहिणी रम्येत्येतास्तिस्रस्तु धैवते॥
उग्रा च क्षोभिणीति द्वे निषादे वसतः श्रुती॥" इति।
"प्रथमश्रवणाच्छब्दः श्रूयते ह्रस्वमात्रकः।
सा श्रुतिः संपरिज्ञेया स्वरावयवलक्षणा॥"

इन बाईस श्रुतियोंके और भी अवांतर भेद बहुत होसकतेहैं किंतु वे स्पष्ट प्रत्यक्ष योग्य न होनेसे उनकी सांगीतिकों ने गणना नहीं की। श्रुतियोंके अवांतर भेद छोड़ आजकलह तो इन बाईस श्रुतियों का भी परस्पर भेदज्ञान बहुत अल्प पुरुषोंको है। संगीतसमय-सारमें तो तीनों सप्तकों को मिला कर छयासठ श्रुतियांके छयासठ ही नाम पृथक् पृथक् तथा और ही कहेहैं यथा—

"मन्द्रा चैवातिमन्द्रा च घोरा घोरतरा तथा।
मण्डना च तथा सौम्या सुमना पुष्करा तथा॥" इत्यादि।

किंतु ये नाम सकल सांगीतिकाभिमत न होनेसे मैंने यहाँ नहीं लिखे और प्रत्येक सप्तककी श्रुतियोंके नाम पृथक् पृथक् होनेमें कोई हेतु भी नहीं अन्यथा सप्तकभेदसे स्वरोंके नाम भी भिन्न भिन्न होनेचाहियें तथा च यथा तीनों सप्तकोंमें स्वरोंके नाम एकसमान हैं तथा तीनों सप्तकोंमें श्रुतियोंके नाम भी एक

समान ही हैं वे तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दोवती दयावती इत्यादि लिखदियेहैं ।

स्वरश्रुतियोंके कार्यकारणभावको प्राचीन ग्रंथकारोंने कई प्रकार से लिखाहै किसीने तादात्म्य किसीने विवर्त किसीने परिणाम वाद मानाहै इन सब पक्षोंमें परिणामवाद ही श्रेष्ठ तथा अधिकजनसंमत है । संगीतसमयसारमें स्वरनामोंकी व्युत्पत्ति यों कही है—

"नासा कण्ठ उरुस्तालुर्जिह्वा दन्तास्तथैव च ।
षड्भिः संजायते यस्मात् तस्मात् षड्ज इति स्मृतः ॥
नाभेः समुदितो वायुः कण्ठशीर्षसमाहतः ।
ऋषभवन्नदेद् यस्मात्तस्माद् ऋषभ ईरितः ॥
नाभेः समुदितो वायुः कण्ठशीर्षसमाहतः ।
गन्धर्वसुखहेतुः स्याद् गान्धारस्तेन कथ्यते ॥
वायुः समुत्थितो नाभेर्हृदयेषु समाहतः ।
मध्यस्थानोद्भवत्वाच्च मध्यमस्तेन कीर्तितः ॥
वायुः समुत्थितो नाभेरोष्ठकण्ठशिरोहृदः ।
पञ्चस्थानसमुद्भूतः पञ्चमस्तेन संमतः ॥
नाभेः समुत्थितो वायुः कण्ठतालुशिरोहृदि ।
तत्तत्स्थाने धृतो यस्मात्ततोसौ धैवतो मतः ॥
नाभेः समुत्थितो वायुः कण्ठतालुशिरोहतः ।
निषीदन्ति स्वराः सर्वे निषादस्तेन कथ्यते ॥" इति ।

(श्रुतिस्वरादिका कोष्ठ = नक़शा)

श्रुतिसंख्या	श्रुतिनाम	श्रुतिजाति	षड्जग्राम के शुद्ध स्वर	शास्त्रोक्त प्रकार से षड्जग्राम के उतरे स्वर	शास्त्रोक्त प्रकार से षड्जग्राम के चढ़े स्वर	प्रचलितलोक व्यवहार के स्वर
१	तीव्रा	दीप्ता			तीव्र नि	उतरानि १
२	कुमुद्वती	आयता			तीव्रतर नि	चढ़ा नि
३	मंदा	मृदु			तीव्रतम नि	
४	छंदोवती	मध्या	स			स
५	दयावती	करुणा		पूर्व रि		
६	रंजनी	मध्या		कोमल रि		उतरा रि
७	रतिका	मृदु	रि	पूर्व ग		
८	रौद्री	दीप्ता		कोमल ग	तीव्र रि	चढ़ा रि
९	क्रोधा	आयता	ग		तीव्रतर रि	
१०	वज्रिका	दीप्ता			तीव्र ग	उतरा ग
११	प्रसारिणी	आयता		पूर्व म	तीव्रतर ग	
१२	प्रीति	मृदु		कोमल म	तीव्रतम ग	चढ़ा ग
१३	मार्जनी	मध्या	म		अति तीव्रतम ग	है, उतरा है,

श्रुतिसंख्या	श्रुतिनाम	श्रुतिजाति	षड्जग्रामके शुद्ध स्वर	शास्त्रोक्त प्रकारसे षड्जग्रामके उतरे स्वर	शास्त्रोक्त प्रकारसे षड्जग्रामके चढ़े स्वर	प्रचलितलोकव्यवहारके स्वर
१४	क्षिति	मृदु			तीव्र म	
१५	रक्ता	मध्या			तीव्रतर म	चढ़ा म
१६	संदीपिनी	आयता			तीव्रतम म	
१७	आलापिनी	करुणा	प			प
१८	मदंती	करुणा		पूर्व ध		
१९	रोहिणी	आयता		कोमल ध		उतरा ध
२०	रम्या	मध्या	ध	पूर्व नि		
२१	उग्रा	दीप्ता		कोमल नि	तीव्र ध	चढ़ा ध
२२	क्षोभिणी	मध्या	नि		तीव्रतर ध	

(१ मैंने इन खानोंमें प्रचलितस्वरोंको श्रुतियोंके जिन अंशोंपर लिखाहै उन्हीं अंशोंपर जानना यथा उतरानिषाद तीव्राके प्रथम अंशपर है एवं आगे भी जानना ।)

को उक्त सातों स्वरोंमेंसे षड्ज और पंचम एक ही प्रकारके होतेहैं (उतरे चढ़े नहीं होते, शेष ऋषभ गंधार मध्यम धैवत निषाद ये पाँच ... उतरे चढ़े भी होते हैं, ऋषभादि शुद्ध स्वर जब आगेकी श्रुति-पड़ जातेहैं तब तीव्र कहातेहैं और भी आगेकी श्रुतिपर जानेसे

तीव्रतर कहातेहैं, जब पीछेकी श्रुतिपर आते हैं तब कोमल कहातेहैं और भी पीछे हटनेसे पूर्व कहातेहैं संगीतपारिजातमें कहा भी है-

"स्वरः स्वोत्तरगामी चेत् तीव्रादिवचनोदितः ।
स्वरोग्रिमश्रुतिं याति तीव्रसंज्ञां प्रयात्यसौ ॥
ततोग्रिमश्रुति याति तदा तीव्रतरो भवेत् ।
ततोग्रिमश्रुतिं याति तर्हि तीव्रतमः स्मृतः ॥
स्वरः पश्चान्निवृत्तश्चेत् कोमलादिभिरीरितः ।
एकश्रुतिपरित्यागात् स्वरः कोमलसंज्ञकः ॥
श्रुतिद्वयपरित्यागात् पूर्वशब्देन भण्यते ॥" इति ॥

यद्यपि शास्त्रोक्त तीव्रतर तीव्रतम पूर्वइत्यादि स्वरोंका प्रचलित संगीतमें भी प्रयोग होताहै तथापि प्रचलित सांगीतिकव्यवहारमें तीव्रतमादि शब्दोंका व्यवहार नहीं किन्तु पूर्व कोमल शुद्ध ये तीनों प्रकारके स्वर कोमल वा उतरे कहाते हैं और तीव्र तीव्रतर तीव्रतम ये सब स्वर तीव्र वा चढ़े कहाते हैं । कोमल तीव्र शब्दोंको भी कुछ पढ़े लिखे लोग बोलतेहैं शेष लोग तो उतरा चढ़ा यही कहते हैं ।

षड्ज और पंचम शास्त्रके और लोकके एकसमान हैं, शास्त्रमें जो कोमल ऋषभ है लोकमें वही उतरा ऋषभ कहाताहै, शास्त्रमें जो तीव्र ऋषभ है वही लोकमें चढ़ा ऋषभ कहाताहै, शास्त्रमें जो तीव्र गंधार है वही लोकमें उतरा गंधार कहाताहै, शास्त्रमें जो तीव्रतम गंधार है वही लोकमें चढ़ा गंधार कहाताहै, शास्त्रमें जो शुद्ध मध्यम है वही लोकमें उतरा मध्यम कहाताहै, शास्त्रमें जो तीव्रतर मध्यम है वही लोकमें चढ़ा मध्यम कहाताहै, शास्त्रमें जो कोमल धैवत है लोकमें भी वही उतरा धैवत कहाताहै.

शास्त्रमें जो तीव्र धैवत है लोकमें भी वही चढ़ा धैवत कहाताहै, शास्त्रमें जो तीव्र निषाद है वही लोकमें उतरा निषाद कहाताहै, शास्त्रमें जो तीव्रतर निषाद है, वही लोकमें चढ़ा निषाद कहाताहै,

मैंने जो यह शास्त्रीय तथा लौकिक स्वरोंका मिलान लिखाहै वह श्रुतियोंके स्थूल मानसे लिखाहै श्रुत्यंशोंके सूक्ष्म मानसे इसमें कुछ अंतर है यथा—षड्ज छंदोवतीके अंत्य भागपर, उतरा ऋषभ रंजनीके मध्यभागपर, चढ़ा ऋषभ रौद्रीके मध्य भागपर, उतरा गंधार वज्रिकाके प्रथमभागपर, चढ़ा गंधार प्रीतिके प्रथम भागपर, उतरा मध्यम मार्जनीके अंत्यभागपर, चढ़ा मध्यम रक्ता के अंत्य भाग पर, पंचम आलापिनी के अंत्य भाग पर, उतरा धैवत रोहिणीके तृतीय भागपर, चढ़ा धैवत उग्राके प्रथमभागपर, उतरा निषाद तीव्राके प्रथमभाग पर, चढ़ा निषाद कुमुद्वती के अंत्यभागपर प्राप्त होताहै, ऐसी लौकिक स्वरोंकी व्यवस्था प्रतीत होतीहै ।

श्रुतिभेदसे ही स्वरोंका भेद है, लोक प्रचलित स्वर भिन्न भिन्न होने पर भी शास्त्रीय कोई कोई स्वर श्रुतियोंके ऐक्यसे परस्पर मिल भी जातेहैं यह विषय पूर्व लिखित कोष्ठमें स्पष्ट है यथाशुद्ध ऋषभ तथा पूर्व गंधार ये श्रुत्यैक्यसे एक ही पदार्थ हैं, एवं कोमल गंधार तीव्र ऋषभ, शुद्ध ग तीव्रतर रि, पूर्व म तीव्रतर ग, कोमल म और तीव्रतम ग, शुद्ध म अतितीव्रतम ग, शुद्ध ध पूर्व नि, कोमल नि तीव्र ध, तथा शुद्ध नि तीव्रतर ध ये भी एक ही पदार्थ (स्वर) हैं ।

षड्ज और पंचम उतरे चढ़े नहीं होते इसका यह हेतुहै कि षड्ज और पंचमके ही आश्रयसे सब स्वर स्थिर (कायम) किये

जातेहैं यदि षड्ज पंचम एकरूप न हों तो और स्वरोंकी व्यवस्था न होसके, यथा अवधिकी स्थिरता अपेक्षित होतीहै एवं षड्ज पंचमकी स्थिरता अपेक्षित है, क्योंकि ये दोनों स्वर अवधिभूत हैं। और शास्त्रमर्यादासे षड्जके पीछेकी श्रुतियों को निषादने और आगेकी श्रुतियों को ऋषभने रोक रक्खा है एवं पंचमसे पीछेकी श्रुतियोंको मध्यमने और आगेकी श्रुतियोंको धैवतने रोक रक्खा है इस कारण भी षड्ज पंचम उतर चढ़ नहीं सकते। और षड्ज पंचमकी जैसी ध्वनि अपेक्षित है वह एक छोड़ आधी श्रुति भी आगे पीछे करनेसे प्राप्त नहीं हो सकती इस कारण भी षड्ज पंचम उतरे चढ़े नहीं होते, इसी कारण भूमंडलमें गंधारग्रामका प्रचार नहीं क्योंकि गंधार ग्राममें पंचम एक श्रुति उतरा संदीपिनीपर होताहै लोकमें तो पंचम आलापिनी श्रुतिपर होताहै। यह पंचम षड्जग्रामका है इस कारण लोकमे षड्जग्राम ही प्रचलित है। मेरी जानमें कंठछिद्रका उत्तरोत्तर संकुचित होतेजाना भी स्वरकी तीव्रतामें कारण प्रतीत होता है। वस्तुगत्या स्वरोंकी कोमलता तथा तीव्रताका कारण प्रत्यक्ष नहीं होता।

शास्त्रमर्यादासे सात स्वर शुद्ध हैं और बाईस विकृत हैं मिल कर उनतीस हुए कहा भी है—

"शुद्धाः सप्त विकाराख्या द्व्यधिका विंशतिर्मताः।
एकोनत्रिंशदुच्यन्ते ते सर्वे मिलिताः स्वराः ॥" इति।

लोकव्यवहारमें तो षड्ज पंचम ये दो शुद्ध हैं शेष ऋषभादि स्वर उतरे चढ़े दो दो प्रकारके होनेसे मिलकर बारह हैं।

सामान्यरूपसे स्वर सात ही कहातेहैं, इन स्वरोंके मंद्र मध्य और तार ये तीन सप्तक (प्रकार) हैं, यह पूर्वमें लिखाहै ।

प्रथम उत्पन्न रणन (ध्वनि) मात्रश्रुति कहातीहै तदनंतर जो अनुरणन (अनुध्वनि = आँस) होता है उसे स्वर कहतेहैं यथा षड्जके पड़देपर तार बजाकर तुरत पकड़लेनेसे जो टुन्‌सा शब्द निकलताहै वह छंदोवती श्रुति है उसी पड़देपर तार बजाकर जब न पकड़ो तब जो लंबा शब्द (उसी टुन् की आँस) सुनाई देता है वह स्वर है यही श्रुति और स्वरोंका भेद कहाहै एवं और स्वरों का भी श्रुतियोंसे भेद जानना, कहा भी है—

"श्रुत्यनन्तरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः ।
स्वरो रञ्जयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते ॥" इति ।

चार श्रुतियं षड्जकी हैं तीन ऋषभकी हैं यह गणना शुद्ध स्वरोंके आश्रयसे है, यथा चतुर्थ श्रुतिपर षड्ज होनेसे षड्ज की चार श्रुतियें कहातीहैं, षड्जसे आगे तीसरी श्रुतिपर शुद्ध ऋषभ होने से ऋषभकी तीन श्रुतियें कहातीहैं इत्यादि । तीव्र कोमल स्वरोंको मिलालेनेसे यह व्यवस्था हो नहीं सकती ।

वस्तुगत्या बाईस श्रुतियोंके बाईस ही स्वर हैं किन्तु बाईसकी संख्या अधिक होनेसे तथा बाईस नाम कंठ करनेमें श्रमाधिक्य होनेसे उन बाईस श्रुतियोंमेंसे अधिकानुरंजक सात श्रुतियोंपर सात स्वर स्थिर करदिये । फिर उनके कोमल तीव्रादि भेद करदिये इसमें लाघव है क्योंकि नौ ही शब्दोंसे ऐसे काम चलसकताहै । चाहें तो एक ही स्वर के उत्तरोत्तर तीव्र बाईस भेद मानसकतेहैं कहा भी है "सिद्धस्य गतिश्चिन्तनीया ।" इति ।

रागापेक्षया स्वरोंके चार प्रकार कहेहैं—संवादी वादी अनुवादी और विवादी। जिन दो स्वरोंके बीच आठ वा बारह श्रुतियोंका अंतर पड़ता हो वे दोनों स्वर परस्परमें संवादी कहाते हैं यथा षड्ज और मध्यम के बीच आठ श्रुतिहैं तथा मध्यम और षड्जके बीच बारह श्रुति हैं इसलिए षड्ज मध्यम परस्परमें संवादी हैं, एवं षड्ज और पंचमके बीच बारह श्रुति हैं तथा पंचम और षड्जके बीच आठ श्रुति हैं इससे षड्ज पंचम भी परस्पर संवादी हैं, इसी कारण षड्जमध्यम और षड्जपंचमको मिलाना कुछ सहज है। एवं ऋषभ और धैवत गंधार और निषाद ये भी उक्त व्यवस्थाके कारण परस्परमें संवादी हैं।

जिस रागमें जो स्वर प्रधान हो वह स्वर उस रागका राजा के तुल्य होनेसे वादी कहाताहै यथा मालकौसमें मध्यम, वादी से नीचे दरजेका स्वर उस रागमें वादीस्वरका अमात्य (वज़ीर) तुल्य होनेसे संवादी कहाताहै यथा मालकौसमें गंधार। जिस रागमें जो स्वर वर्जित होताहै वह स्वर उस रागका शत्रुतुल्य होनेसे विवादी कहाताहै तथा मालकौसमें ऋषभ और पंचम, शेष स्वर वादी और संवादी स्वरके भृत्यतुल्य होनेसे अनुवादी कहाते हैं, कहा भी है—

"चतुर्विधाः स्वराः वादी संवादी च विवाद्यपि।
अनुवादी च, वादी तु प्रयोगे बहुलः स्वरः॥
श्रुतयोऽष्टौ द्वादश वा ययोरन्तरगोचराः।
मिथः संवादिनौ तौ स्तः सपौ स्यातां पसौ तथा॥
(मसौ रिधौ गनी ज्ञेयावेवं संवादिनौ मिथः)

विवादी विपरीतत्वाद्धीरैरुक्तो रिपूपमः ।
शेषाणामनुवादित्वम्, वादी राजात्र गीयते ॥
संवादी त्वनुसारित्वादस्यामात्योऽभिधीयते ।
नृपामात्यानुसारित्वादनुवादी तु भृत्यवत् ॥" इति ।

जो ध्रुवपद वा ख्यालादि रूपसे पद (छंद कविता) गाया जाता है यथा "वरन वरनके पहिरे चीर यमुनाके तीर गोविंद ग्वाल लिए संग भीर" इत्यादि तदपेक्षया स्वरोंके छः प्रकार कहे हैं—ग्रह अंश न्यास अपन्यास संन्यास और विन्यास, जिस स्वरसे उक्त पद (चीज़) के गानेका आरंभ होताहै वह स्वर ग्रह स्वर कहाता है। जिस स्वरका उक्त पदमें विशेष प्रयोग हो वह अंश स्वर कहाताहै । उस पदकी (भोगकी) समाप्तिमें जो स्वर नियत कियागयाहो वह न्यास स्वर कहाताहै । एक पदके कई पाद होतेहैं सो प्रथम अंतिम पादातिरिक्त पादोंकी (अंतरोंकी) समाप्तिमें जो स्वर नियत कियागयाहो वह अपन्यास स्वर कहाताहै। अंशका अविवादी हो और पदके प्रथमपादकी (अस्ताईकी) समाप्तिमें जो स्वर नियत कियागयाहो वह संन्यास स्वर कहाताहै । पदके पादोंके भी अनेक भाग रहतेहैं सो अंशका अविवादी होकर जो पादके किसी अवांतर भागके अंतमें नियत कियागया हो वह स्वर विन्यास स्वर कहाताहै । कहाहै—

गीतादिनिहितस्तत्र स्वरो ग्रह इतीरितः ।
रागश्च यस्मिन् वसति यस्माच्चैव प्रवर्तते ॥
अनुवृत्तश्च यश्चेह सोंशः स्याद् दशलक्षणः ।
गीते समाप्तिकृन्न्यास एकविंशतिधा च सः ॥

अपन्यासः स्वरः स स्याद् यो विदारी समापकः ।
अंशाऽविवादी गीतस्याऽऽद्यविदारीसमाप्तिकृत्–॥
संन्यासोंऽशाविवाद्येव विन्यासः सः तु कथ्यते–।
यो विदारीभागरूपपदप्रान्तेऽवतिष्ठते ॥" इति ।

इस स्थलपर संगीतरत्नाकरकारने कुछ और भी भेद लिखे हैं, किंतु उनका आधुनिक संगीतसमाजमें प्रचार न होनेसे वे यहाँ नहीं लिखे, इतनी ज्यादा जिसकी जिज्ञासा हो उसे संगीतरत्नाकरादि ग्रंथ देखनेचाहिएँ ।

श्रुतियों पर शुद्ध स्वरोंकी स्थापनाके तीन भेद होनेसे षड्जग्राम मध्यमग्राम और गांधारग्राम ये तीन ग्राम शास्त्रोंमें कहे हैं । मूर्छना प्रभृतिके आश्रयभूत स्वरसमुदायको यहाँ ग्राम कहतेहैं । यदि बाईस श्रुतियोंमेंसे छंदोवतीपर षड्जको, रतिकापर ऋषभको, क्रोधापर गंधारको, मार्जनीपर मध्यमको, आलापिनीपर पंचमको, रम्यापर धैवतको, और चोभिणीपर निषादको स्थिर कियाजाय तो यह षड्जग्राम कहाता । यदि और छः स्वरोंको इसीप्रकार स्थिर करके केवल पंचमको संदीपिनी श्रुतिपर स्थिर कियाजाय तो मध्यमग्राम बनजायगा । षड्जग्राममें पंचम की चार श्रुति होतीहैं, और धैवतकी तीन, मध्यमग्राममें पंचम की तीन श्रुति होतीहैं और धैवतकी चार, पीछे लिखा श्रुतिस्वरकोष्ठ देखिये सब स्पष्ट हो जायगा । कहा है—

"ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्छनादेः समाश्रयः ।
तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात् षड्जग्राम आदिमः ॥
द्वितीयो मध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते ।

षड्जग्रामः पञ्चमे स्वचतुर्थश्रुतिसंस्थिते ।
स्वोपान्त्यश्रुतिसंस्थेऽस्मिन्मध्यमग्राम इष्यते ॥" इति ।

(स्वस्य पंचस्यान्त्या श्रुतिरालापिनी तत्समीपे वर्तमाना श्रुतिः स्वोपान्त्या सा च संदीपिनी तस्यां पञ्चमे स्थिते सति मध्यमग्राम इष्यते इत्यन्वयः) ।

यदि बाईस श्रुतियोंमेंसे छंदोवतीपर षड्जको, रंजनीपर ऋषभको, वज्रिकापर गंधारको, मार्जनीपर मध्यमको, संदीपिनीपर पंचमको, रोहिणीपर धैवतको, तीव्रापर निषादको स्थिर किया-जाय तो संगीतरत्नाकरके मतसे गान्धारग्राम होताहै, कहा भी है—

"रिमयोः श्रुतिमेकैकां गान्धारश्चेत्समाश्रितः ।
पश्रुतिं धो निषादस्तु धश्रुतिं सश्रुतिं श्रितः (गृह्णाति) ॥
गान्धारग्राममाचष्टे तदा तं नारदो मुनिः ।
प्रवर्तते स्वर्गलोके ग्रामोऽसौ न महीतले ॥" इति ।

इसप्रकार शुद्ध स्वरोंकी स्थापनाको प्राधान्येन लिखनेसे यह प्रतीत होताहै कि अत्यन्त प्राचीनकालमें गानेबजानेमें शुद्ध स्वरोंका ही विशेष प्राधान्य था उसके अनंतर स्वरों के तीव्र कोमल भेद हुए क्यों कि शुद्ध स्वरोंकी अपेक्षा तीव्र कोमल स्वर अधिक अनुरंजक प्रतीत होतेहैं इसी कारण अनंतरकालमें तीव्र कोमल स्वरोंका ही प्राधान्य होगया, इस परिवर्तनका कारण कालही है, कालके प्रभावसे सभी पदार्थोंका परिवर्तन होता रहता है इसीसे देखते देखते संगीतपरिपाटी बहुतकुछ बदलगई । और आरंभकालमें सभी पदार्थ परिष्कारहीन होतेहैं अंतमें भी परिष्कारहीन होजाते हैं मध्यमें ही परिष्कृत होतेहैं ।

(श्रुतिस्वरग्रामचक्र)

श्रुतिसंख्या	श्रुतिनाम	सर्वमतसे षड्जग्राम के शुद्ध स्वर	रत्नाकर मतसे मध्यमग्राम के शुद्ध स्वर	रत्नाकर मतसे गांधारग्राम के शुद्ध स्वर	पारिजातमत से मध्यमग्राम के शुद्ध स्वर	पारिजातमत से गांधारग्राम के शुद्ध स्वर
४	छंदोवती	स	स	स	स	स
५	दयावती					
६	रंजनी			रि		
७	रतिका	रि	रि		रि	रि
८	रौद्री					
९	क्रोधा	ग	ग		ग	
१०	वजिका			ग		ग
११	प्रसारिणी					
१२	प्रीति					
१३	मार्जनी	म	म	म	म	म
१४	क्षिति					
१५	रक्ता					
१६	संदीपिनी		प	प	प	प

श्रुतिसंख्या	श्रुतिनाम	सर्वमतसे षड्जग्राम के शुद्ध स्वर	रत्नाकर मतसे मध्यमग्राम के शुद्ध स्वर	रत्नाकर मतसे गांधारग्राम के शुद्ध स्वर	पारिजातमत से मध्यमग्राम के शुद्ध स्वर	पारिजातमत से गांधारग्राम के शुद्ध स्वर
१७	आलापिनी	प				
१८	मदंती					
१९	रोहिणी			ध		ध
२०	रम्या	ध	ध		ध	
२१	उग्रा					
२२	क्षोभिणी	नि	नि			
१	तीव्रा			नि	नि	नि
२	कुमुद्वती					
३	मंदा					
४	छंदोवती	स	स	स	स	स

(संसकृतके संगीत-ग्रंथोंमेंसे आजकल संगीतपारिजात और संगीतरत्नाकर ये ही दो ग्रथ प्रायः मिलतेहैं इन दोनों ग्रंथोंमें षड्जग्राम तो एक सा ही है मध्यमग्राम और गंधारग्राममें परस्पर कुछ भेद है सो इस नक़शे में स्पष्ट है।)

आजकल लोकमें कौनसा ग्राम प्रचलित है इसमें यद्यपि कोई भी स्पष्ट प्रमाण नहीं तथापि लोकमें जो ग्राम प्रचलित है उसमें

षड्जके मध्यम और पंचम संवादी हैं क्योंकि षड्जसे मध्यम तथा पंचमके तारको मिलालेतेहैं, शास्त्रमें षड्जग्राममें ही षड्जका पंचम संवादी है, मध्यमग्राम और गंधारग्राममें नहा क्योंकि इन दोनों ग्रामोंमें पंचम संदीपिनीपर रहनेसे षड्ज और पंचमके बीच ग्यारह श्रुति पड़ती हैं, और वे स्वर परस्परमें संवादी होतेहैं जिनके बीच आठ वा बारह श्रुतियोंका अंतर हो यथा तीनों ही ग्रामोंमें षड्ज-मध्यम, षड्जग्राममें तो पंचम आलापिनी पर होनेसे षड्ज और पंचमके बीच बारह श्रुतियों का अंतर होनेसे षड्ज पंचम परस्पर संवादी हैं लोकमें भी संवादी हैं इससे सिद्ध होताहै कि लोकमें षड्जग्राम ही प्रचलित है। और सितारपर श्रुतियोंकी स्थापना करके भी देखाहै कि पंचम आलापिनीपर आता है, आप भी सितारादि वाद्यपर श्रुतियोंकी स्थापना करके देखसकतेहैं, इस परीक्षाके समय इतना ध्यान कर लेना कि वीणादि वाद्योंके दंडमें यह एक वैलक्षण्य है कि ज्यों ज्यों नीचेको जाओ त्यों त्यों श्रुति स्वरोंका अंतरस्थान छोटा होता जाताहै यथा षड्ज ऋषभका तीनों ही सप्तकोंमें एकसमान अंतर है किन्तु वीणादिदंडमें द्वितीय सप्तकके षड्ज-ऋषभके सार पड़दाप्रभृति स्थानोंमें जितना अंतर होताहै तदपेक्षया तृतीयसप्तकके षड्जऋषभके सार पड़दा प्रभृति स्थानोंमें बहुत कम अंतर होता है, एवं और स्वरोंपर भी यह नियम सर्व स्पष्ट है। इसका कारण यही है कि तार जितना ही छोटा होगा उतना ही समीप समीपमें स्वरोंको प्रकट करेगा। इसी कारणसे छोटे वाद्यमें बड़े वाद्यके स्वरस्थानोंकासा अंतर नहीं होता, इससे २२ श्रुतियोंको

भी स्थिर करनेके समय उत्तरोत्तर अंतर कम रखना यथा—

| | | | | | | | | | | | | | एवं वीणादि दंडपर

२२ श्रुतियें स्थिर करने से आलापिनीपर ही पंचम आता है इस से षड्जग्रामका ही प्रचार कहाजासकताहै । और तीनों ग्रामोंमेंसे षड्जग्राम ही प्रधान है इससे भी षड्जग्रामका ही प्रचार सिद्ध होताहै कहा भी है—"षड्जग्रामस्त्रिषूत्तम"

"उभयोर्ग्रामयोर्मध्ये मुख्यत्वं कस्य गण्यते?
षड्जस्यैव हि मुख्यत्वं गण्यते वचनान्मुनेः ॥" इति ।

षड्जादि तीन ग्राम कहातेहैं ऋषभादि ग्राम नहीं कहाते इसका कारण विशेषरूपसे कुछ ज्ञात नहीं होता । शास्त्रकारोंने तो यही कहा है कि षड्ज गंधार और मध्यम ये स्वर प्रधान होने से इनके नामसे षड्जादि ग्राम कहातेहैं । संगीतपारिजातसे यह भी प्रतीत होताहै कि षड्जग्रामका तार षड्जमें मध्यमग्रामका तार मध्यममें और गंधारग्रामका तार गंधारस्वरमें मिलाना चाहिए । यद्यपि वीणामें एक तार गंधारमें भी मिलायाजाताहै तथापि वह गंधारग्राम नहीं कहासकता क्योंकि उस तार से भी षड्जग्रामके ही स्वर निकलतेहैं ।

क्रमसे सात ही स्वरोंके आरोहावरोहको मूर्छना कहतेहैं यथा 'सा रे ग म प ध नि—नि ध प म ग रे सा', सात ही स्वर होनेसे प्रत्येक ग्राममें सात सात मूर्छना कही हैं । उनमेंसे षड्ज ग्रामकी मूर्छनाओंके उत्तरमंद्रा रजनी उत्तरायता शुद्धषड्जा मत्सरी-कृता अश्वक्रांता अभिरुद्गता—ये सात ही नाम हैं । मध्यमग्रामकी

मूर्छनाओंके 'सौवीरी हरिणाश्वा कलोपनता शुद्धमध्या मार्गी पौरवी हृष्यका' ये नाम हैं। कहा भी है—

"आरोहेणावरोहेण क्रमेण स्वरसप्तकम्।
मूर्छनाशब्दवाच्यं हि विज्ञेयं तद्विचक्षणैः॥"
"क्रमात् स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्।
मूर्छनेत्युच्यते ग्रामद्वये ताः सप्त सप्त च॥
षड्जे तूत्तरमन्द्रादौ रजनी चोत्तरायता।
शुद्धषड्जा मत्सरीकृदश्वक्रान्ताऽभिरुद्गता॥
मध्यमे स्यात्तु सौवीरी हरिणाश्वा ततः परम्।
स्यात् कलोपनता शुद्धमध्या मार्गी च पौरवी॥
हृष्यकेत्यथ तासां तु लक्षणं प्रतिपाद्यते।
मध्यस्थानस्थषड्जेन मूर्छनाऽरभ्यतेऽग्रिमा॥
अधस्तनैर्निषादाद्यैः षडन्या मूर्छनाः क्रमात्।
मध्यमध्यममारभ्य सौवीरी मूर्छना भवेत्॥
षडन्यास्तदधोधस्थस्वरानारभ्य तु क्रमात्॥" इति।

षड्जग्राममें द्वितीय सप्तकके षड्जसे प्रथममूर्छनाका आरंभ करना, द्वितीयमूर्छनाका प्रथमसप्तकके निषादसे तृतीयमूर्छनाका प्रथमसप्तकके धैवतसे आरंभ करना ऐसे ही आगे भी जानना। यदि द्वितीयमूर्छनाका द्वितीयसप्तकके ऋषभसे तृतीयमूर्छनाका द्वितीय-सप्तकके गंधारसे इसक्रमसे मूर्छनाओंका आरंभ करें तो सप्तमी-मूर्छनामें द्वितीयसप्तकके निषादसे तृतीयसप्तकके धैवततक जाना-चाहिए तृतीयसप्तकके धैवततक कंठसे पहुँचना कठिनहै और वीणा प्रभृतिवाद्योंमें तो तृतीयसप्तकके धैवतका स्थान ही नहीं होता इसी

कारण से प्रतीत होताहै कि द्वितीयादिमूर्छनाका प्रथमसप्तकके निषादादि स्वरसे आरंभ कहाहै । इस क्रमसे मूर्छनाओंके आरंभ से प्रथम और द्वितीय सप्तक के सभी स्वर सातों मूर्छनाओंमें आजायँगे प्रथम सप्तकका षड्जमात्र छूटेगा । षड्जग्राममूर्छनाओंके स्वरूप यथा—

(१) सा रे ग म प ध नि—नि ध प म ग रे सा—इति उत्तरमंद्रा,
(२) निं सा रे ग म प ध—ध प म ग रे सा निं—इति रजनी,
(३) धं निं सा रे ग म प—प म ग रे सा निं धं—इति उत्तरायता,
(४) पं धं निं सा रे ग म—म ग रे सा निं धं पं—इति शुद्धषड्जा,
(५) मं पं धं निं सा रे ग—ग रे सा निं धं पं मं—इति मत्सरीकृता,
(६) गं मं पं धं निं सा रे—रे सा निं धं पं मं गं—इति अश्वक्रांता,
(७) रें गं मं पं धं निं सा—सा निं धं पं मं गं रें—इति अभिरुद्गता,

मध्यमग्राममें मध्यसप्तकके मध्यमसे प्रथममूर्छनाका आरंभ करना यह मूर्छना तृतीयसप्तकके गंधारतक जाकर लौटेगी, द्वितीयमूर्छनाका द्वितीयसप्तकके गंधारसे आरंभ करना एवं आगे भी जानना । मध्यमग्रामकी मूर्छनाएँ यथा—

(१) म प ध नि सा रे ग—ग रे सा नि ध प म—इति सौवारी,
(२) ग म प ध नि सा रे—रे सा नि ध प म ग—इति हरिणाश्वा,
(३) रे ग म प ध नि सा—सा नि ध प म ग रे—इति कलोपनता,
(४) सा रे ग म प ध नि—नि ध प म ग रे सा—इति शुद्धमध्या,
(५) निं सा रे ग म प ध—ध प म ग रे सा निं—इति मार्गी,
(६) धं निं सा रे ग म पं—प म ग रे सा निं धं—इति पौरवी,
(७) पं धं निं सा रे ग म—म ग रे सा निं धं पं—इति हृष्यका

(यहाँपर जिन स्वरों पर ं अनुस्वारसा चिह्न है उनको प्रथमसप्तक के

गांधारग्रामकी तो

"नन्दा विशाला सुमुखी चित्रा चित्रावती सुखा ।
आलापा चेति गान्धारग्रामे स्युः सप्त मूर्छनाः ॥"

ये सात मूर्छनाएँ कहीहैं । यद्यपि इनके विशेष रूप नहीं कहे तथापि पूर्वरीतिसे प्रतीत होता है कि मध्यमगंधारसे इनका आरंभ करना चाहिए । यथा—

(१) ग म प ध नि सा रे—रे सा नि ध प म ग इति नंदा,
(२) रे ग म प ध नि सा—सा नि ध प म ग रे इति विशाला,
(३) सा रे ग म प ध नि—नि ध प म ग रे सा इति सुमुखी,
(४) निं सा रे ग म प ध—ध प म ग रे सा निं इति चित्रा,
(५) धं निं सा रे ग म प—प म ग रे सा निं धं इति चित्रावती,
(६) पं धं निं सा रे ग म—म ग रे सा निं धं पं इति सुखा,
(७) मं पं धं निं सा रे ग—ग रे सा निं धं पं मं इति आलापा,

इन मूर्छनाओंका बहुतसा प्रस्तार लिखाहै यथा छप्पनप्रकार की मूर्छनाओंमेंसे प्रत्येक मूर्छना सात सात प्रकारकी होजाती है वह प्रस्तार जानना हो तो शास्त्र देखो यहाँ विस्तर भयसे नहीं लिखा ।

यदि मूर्छना छः या पांच स्वरकी हो तो उसे तान कहतेहैं । यथा—"तानाः स्युर्मूर्छनाः शुद्धाः षाडवौडुवतीकृताः ।" इति मतंगने कहाहै कि "ननु मूर्छनातानयोः को भेदः ? ब्रूमः—आरोहावरोहक्रमयुक्तः स्वरसमुदायो मूर्छनेत्युच्यते । तानस्त्वाऽऽरोहक्रमेण भवति ।" इति, इससे यह प्रतीतहोता है कि जैसे प्रथममूर्छनाका षड्जसे द्वितीयमूर्छनाका निषादसे आरंभकरना—

तथा च अवरोहक्रम से प्रस्तार हुआ; वैसे तानका प्रस्तार नहीं करना; किन्तु आरोहक्रम से यानी प्रथम तान षड्जसे द्वितीय तान ऋषभसे, इस क्रमसे प्रस्तार करना, और औडुव षाडव मूर्छनाओं का ही तान कहाहै इससे सा रे ग म प ध—ध प म ग रे सा, रे ग म प ध नी—नी ध प म ग रे, गम प ध नी सा—सा नी ध प म ग' इस क्रमसे षाडव तानें होनी चाहिएँ। तथा 'सा रे म प ध—ध प म रे सा, रे ग म ध नी—नी ध म ग रे, ग म ध नी सा—सा नी ध म ग' इस क्रम से औडुव तानें होनी चाहिएँ, ऐसा ग्रन्थकारों का अभिप्राय प्रतीत होताहै, आज कल्ह तो स्वरसमुदायको तान कहतेहैं, उसमें भी स्वरोंका कुछ नियम नहीं, हाँ रागविरुद्ध स्वर नहीं होता।

षाडवतानोंमें यथेच्छ एक स्वरका और औडुवतानोंमे यथेच्छ दो स्वरोंका लोप होसकताहै अथापि भरतादिआचार्यों ने नियम करदियाहै कि षड्जग्रामकी षाडवतानोंमें षड्ज ऋषभ पंचम और निषाद इन्हींमेंसे एक स्वरका लोप होसकता है औरका नहीं तथा षड्जग्रामकी औडुव तानोंमें षड्ज पंचम, गंधार निषाद, ऋषभ पंचम इन्हीं दो दो स्वरोंका लोप होसकता है औरोंका नहीं, कहा है—

"षड्जगाः सप्त हीनाश्चेत् क्रमात् सरिपसप्तमैः।
तदाऽष्टाविंशतिस्तानाः मध्यमे सरिगोज्झिताः॥
सप्त क्रमाद् यदा तानाः स्युस्तदा त्वेकविंशतिः।
एते चैकोनपञ्चाशदुभये षाडवा मताः॥
सपाभ्यां द्विश्रुतिभ्यां च रिपाभ्यां सप्त वर्जिताः।

षड्जग्रामे पृथक् ताना एकविंशतिरौडुवाः ॥
रिधाभ्यां द्विश्रुतिभ्यां च मध्यमग्रामगास्तु ते ।
हीनाश्चदुर्दशैव स्युः पञ्चत्रिंशत्तु ते युताः ॥
सर्वे चतुरशीतिः स्युर्मिलिताः षाडवौडुवाः ॥" इति ।

यथा पाँच वा छः स्वरोंकी मूर्छनाको तान कहतेहैं तथा क्रमरहित मूर्छनाको कूटतान कहतेहैं कहा भी है—"अवरोहे सत्यामपि विपरीतानुपूर्व्यां क्रमत्वाभावने कूटतानत्वमेव । कूटत्वं नाम व्युत्क्रमोच्चारितस्वरत्वम् ।"

"असंपूर्णाश्च संपूर्णा व्युत्क्रमोच्चरितस्वराः ।
मूर्छनाः कूटतानाः स्युः ॥" इति ।

इनकूटतानोंका प्रस्तार करनेसे लत्तावधि संख्या होजातीहै प्रत्येक संपूर्णमूर्छनाकी पाँच पाँच हज़ार चालीस कूटतानें कहीहैं—

"पूर्णाः पञ्च सहस्राणि चत्वारिंशद्युतानि च ।
एकैकस्यां मूर्छनायां कूटतानाः सहक्रमैः ॥"

एवं षाडव औडुवादि कूटतानोंकी भी भारी संख्या जाननी यहाँ लिखनी विशेष सार्थक नहीं इससे सब संख्या नहीं लिखी ।

एक स्वरके प्रयोगको आर्चिक कहतेहैं, दोस्वरोंके प्रयोगको गाथिक, तीन स्वरोंके प्रयोगको सामिक, चारस्वरोंके प्रयोगको स्वरांतर, पाँचस्वरोंके प्रयोगको औडुव, छःस्वरोंके प्रयोगको षाडव, सातस्वरोंके प्रयोगको संपूर्ण कहतेहैं ये संज्ञा हैं, कहा है—

"आर्चिको गाथिकश्चैव सामिकश्च स्वरान्तरः ।
औडुवः षाडवश्चैव संपूर्णश्चेति सप्तमः ॥

एकस्वरप्रयोगो हि आर्चिकस्त्वभिधीयते ।
गाथिको द्विस्वरो ज्ञेयस्त्रिस्वरश्चैव सामिकः ॥
चतुःस्वरप्रयोगो हि स्वरान्तरक उच्यते ।
औडुवः पञ्चभिश्चैव षाडवः षट्स्वरो भवेत् ॥
संपूर्णः सप्तभिश्चैव विज्ञेयो गीतयोक्तृभिः ॥" इति ।

संगीतशास्त्रवाले गानक्रियाको—स्वरोच्चारणको वर्ण कहतेहैं । उसके चार प्रकार हैं—स्थायी आरोही अवरोही और संचारी, एक स्वरके निरंतर अनेकवार प्रयोगको 'स्थायी' कहतेहैं यथा—'सा सा सा' 'म म म म' इत्यादि, आरोहणको 'आरोही' कहतेहैं यथा—'सा रे ग म प ध नि' इत्यादि, अवरोहणको अवरोही कहतेहैं यथा—'नि ध प म ग रे सा' इत्यादि, इन तीनोंका यदि संकर हो तो उसे 'संचारी' कहतेहैं यथा—'सा सा सा नि म म रे सा म प प ध प म ग म प प ध नि नि ध प म म प ध प ध नि ध नि सा' इत्यादि । कहा भी है—

"गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः ।
स्थाय्यारोह्यवरोही च संचारीत्यथ लक्षणम्—
स्थित्वा स्थित्वा प्रयोगः स्यादेकैकस्यैव स्वरस्य यः ।
स्थायी वर्णः स विज्ञेयः, परावन्वर्थनामकौ ॥
एतत्संमिश्रणाद्वर्णः संचारी परिकीर्तितः ॥" इति ।

जिसको आजकलहके सांगीतिक फिकरा कहतेहैं उसको शास्त्रकार अलंकार कहतेहैं उनके बहुतसे भेद हैं, कहा है—

"विशिष्टवर्णसंदर्भमलङ्कारं प्रचक्षते ।
तस्य भेदा बहुविधाः ॥" इति ।

यहाँ वर्ण पदसे गानक्रियाका ग्रहण करना। यथा–सारेग रेगम मपध धनिसा, सानिध निधप पमग गरेसा १, सासा रेरे गग मम पप धध निनि सा २, सारेगमप गमपधनि मपधनिसा ३, सारे गरेसा गम गरेसा पधनि पमगरेसा ४, सासा गग रेरे मम गग पप मम धध पप नीनी धध सा ५, सारेसा पमगरेसा सानिधपमगरेसा ६, सानीसा गम पम गरेसा नी पमगरेसा ७, सासा नि गग रेसा धध पप मम रेगरेसा ८, सानीध पधनीसा नीसा ग गरेसा धपमग नीधपम पमगरे गमप मपधनि पमगरे पप नीनी धध मम रेरे गरेसा ९, सानीधपम गमपधनी गग मम पप सा रेसा गगरेसा गमप सासा रे सानीधप सानिधपम धधनी रेरे सा गरेसा सारेगम पमगरेसा धप धप मप पम पम पधनी पमगरेसा गम गरेसा गम पम धमगरेसा नी धपमगरेसा १०, इत्यादि। इन समग्र अलङ्कारोंका लिखना अशक्यहै। अलंकारकल्पनाके समय इतना ध्यान अवश्य चाहिए कि अलंकारकी कल्पना उत्तम हो, गंभीर (वज़नी) हो और राग के अनुकूल हो, रागमें जो स्वर छूटताहो उसके अलंकारमें भी वह स्वर नहो लगता, गानेबजाने-वालेको रागके स्वरूपपर खूब ही ध्यान रखनाचाहिए।

यथा कंठका माधुर्य विशेषकर परमेश्वरके अधीन है तथा हस्तका माधुर्य भी विशेषकर परमेश्वरके ही अधीन है, तो भी जैसे गला खटाई प्रभृति कुछ पदार्थों से बिगड़जाताहै और मलाईप्रभृति पदार्थों से सुधरताहै वैसे हस्त भी मुद्गरफेरनाप्रभृति व्यायाम (कसरत) से बिगड़जाताहै और तैलादि मलकर गरमजलसे धोनेसे कुछ सुधर भी जाताहै।

गानक्रियाकी षाड्जी आर्षभी गान्धारी मध्यमा पंचमी धैवती और नैषादी ये सात शुद्ध जाति कही हैं। पूर्वमे लिखदियाहै कि गीतारंभकस्वरको ग्रह कहतेहैं, गीतव्यापकस्वरको अंश कहतेहैं अंतरेकी समाप्तिमे जो स्वर होताहै उसे उपन्यास कहतेहैं, गीतकी समाप्तिमें जो स्वर होताहै उसे न्यास कहतेहैं। जिस गानक्रियामे षड्ज ही ग्रह अंश न्यास तथा अपन्यास हो उस गानक्रियाकी षड्जके प्राधान्यसे षाड्जी जाति जाननी, अर्थात् जिस गानका आरंभ भी षड्जसे हो समाप्ति भी षड्जसे हो उसके अवांतरखंडोंकी समाप्ति भी षड्जसे हो और उसमें षड्जका प्रयोगभी अधिकहो उस गानकी षाड्जी जाति जाननी, और इन सात ही शुद्ध जातियोंमें न्यास (गीतसमापक) स्वर तृतीयसप्तकका न होनाचाहिए।

एवं जिस गानमें ग्रह अंश न्यास तथा अपन्यास ऋषभ हो उसकी आर्षभी जाति जाननी। जिस गानमें ग्रह अंश न्यास अपन्यास गंधार हो उसकी जाति गांधारी जाननी। जिस गानमें ग्रह अंश न्यास अपन्यास मध्यम स्वर हो उसकी मध्यमा जाति जाननी। जिस गानमें ग्रह अंश न्यास अपन्यास पंचम हो उसकी पञ्चमी जाति जाननी। जिस गानमें ग्रह अंश न्यास अपन्यास धैवत हो उसकी धैवती जाति जाननी। जिस गानमें ग्रह अंश न्यास अपन्यास निषाद हो उसकी नैषादी जाति जाननी। कहा भी है—

> "शुद्धाः स्युर्जातयः सप्त ताः षड्जादिस्वराभिधाः।
> षाड्ज्यार्षभी च गान्धारी मध्यमा पञ्चमी तथा॥
> धैवती चाथ नैषादी, शुद्धतालक्ष्म कथ्यते—॥१॥

यासां नामस्वरो न्यासोऽपन्यासोंऽशोग्रहस्तथा ।

तारन्यासविहीनास्ता: पूर्णा: शुद्धाभिधा मता: ॥ २ ॥

एवं ग्यारह विकृत जाति कहीहैं यथा—

१ षाड्जी और गांधारी जातिके संकरसे षड्जकैशिकी जाति होतीहै इसमें गंधार न्यास स्वर होताहै और षड्ज निषाद पंचम अपन्यास स्वर होतेहैं और षड्ज ग्रह षड्ज गंधार पंचम ये अंश होते हैं ।

२ षाड्जी और मध्यमा जातिके संयोगसे षड्जमध्यमा जाति होतीहै इसमें षड्ज वा मध्यम न्यास और सातों ही स्वर अपन्यास होसकतेहैं; और मध्यम ग्रह सातों ही स्वर अंश हो सकतेहैं ।

३ गान्धारी तथा पंचमी जातिके योगसे गांधारपंचमी जाति होतीहै इसमें गंधार न्यास और ऋषभपंचम अपन्यास होतेहैं पंचम ही ग्रह तथा अंश होताहै ।

४ गांधारी और आर्षभी इन दोके संयोगसे 'आंध्री' जाति होतीहै इसमें गंधार न्यास और ऋषभ गंधार पंचम और निषाद ये अपन्यास होसकतेहैं, गंधार ग्रह ऋषभ गंधार पंचम निषाद ये अंश होतेहैं ।

५ षाड्जी गांधारी धैवती इनके योगसे षड्जोदीच्यवा जाति होतीहै इसमें मध्यम न्यास और षड्ज वा धैवत अपन्यास जानने, षड्ज ग्रह षड्ज मध्यम धैवत निषाद ये अंश होतेहैं ।

६ नैषादी पंचमी आर्षभी इनके संकरसे कार्मारवी जाति

होतीहै इसमें पंचम न्यास और ऋषभ पंचम धैवत निषाद ये अप-न्यास होतेहैं, ऋषभ ग्रह ऋषभ धैवत निषाद ये अंश होतेहैं।

७ गांधारी पंचमी आर्षभी इनके संयोगसे नंदयंती जाति होतीहै इसमें गंधार न्यास और मध्यम अपन्यास होताहै, गंधार ग्रह और पंचम अंश होताहै।

८ गांधारी धैवती षाड्‌जी मध्यमा इनके संकरसे गांधारोदीच्यवा जाति होतीहै इसमे मध्यम न्यास षड्‌ज वा धैवत अपन्यास होताहै, षड्‌ज ग्रह षड्‌ज और मध्यम अंश होतेहैं।

९ गांधारी धैवती मध्यमा पंचमी इनके योगसे मध्यमोदीच्यवा जाति होतीहै इसमें मध्यम न्यास षड्‌ज धैवत अपन्यास जानने, मध्यम ग्रह और पंचम अंश होताहै।

१० गांधारी नैषादी मध्यमा पंचमी इनके योगसे रक्तगांधारी जाति होतीहै इसमे गंधार न्यास और मध्यम अपन्यास होता है, पंचम ग्रह षड्‌ज गंधार मध्यम पंचम निषाद ये पाँच स्वर अंश होतेहैं।

११ षाड्‌जी गांधारी मध्यमा पंचमी इनके योगसे कैशिकी जाति होतीहै इसमें गंधार वा पंचम वा निषाद न्यास होताहै ऋषभके भिन्न सभी स्वर अपन्यास तथा अंश होसकतेहैं।

वर्णोंसे अलंकारोंसे पदोंसे तथा लयसे विशिष्ट गानक्रियाको गीति कहतेहैं। वर्ण स्थायी आरोही अवरोही संचारी ये चार प्रथम कहेहैं, अलंकार=फिकरे, पद यथा–"वरन वरन के पहिरे चीर" "तव विरहे सा दीना" इत्यादि। सुबंत तिङंतरूप, वीणादिवादन कालमें उस रागवाद्यके बोल ही पद जानने। लय द्रुत मध्य विलंबित तथा

मिश्रित यह चार प्रकारकी है । प्रथम "गानक्रियोच्यते वर्णः" ऐसा वर्णको भी गानक्रियारूप कहाहै सो वर्णरूप जो गानक्रिया है वह अवांतरभूत विशेषणरूप है अत एव वहाँ गानक्रियासे स्वरोच्चारण मात्रका ग्रहण करना और यह गीतिरूप गानक्रिया तो प्रधानभूत विशेष्यरूप है यही वर्णका और गीतिका भेद है । यथा पाकक्रिया प्रधान होनेसे अग्निप्रज्वालनादि अवांतरक्रियासे विशिष्ट होतीहै तथा यहाँ स्वरोच्चारणरूप अवांतरक्रियाभूत वर्णसे विशिष्ट गीतिरूप प्रधान गानक्रियाको जानना। इसगीतिके चार भेद कहेहैं मागधी अर्धमागधी संभाविता और पृथुला, कहा भी है—

वर्णाद्यलङ्कृता गानक्रिया पदलयान्विता ।
गीतिरित्युच्यते सा च बुधैरुक्ता चतुर्विधा ॥
मागधी प्रथमा ज्ञेया द्वितीया चार्धमागधी ।
संभाविता च पृथुलेत्येतासां लक्ष्म चक्ष्महे ॥" इति ।

प्रथम लय विलंबित हो फिर मध्य हो फिर द्रुत हो इस लयक्रमसे जो गान है उसे मागधी गीति जानना। जो पद गायाहै उसके आधे भागको फिर आगेके पदके साथ मिलाकर जो गाना है यथा 'रामचरण' इसको 'राम'—'मचरण' इस प्रकारसे गाना उसे अर्धमागधी गीति जानना, कि वा पदोंका दो दो बेर जो गानाहै उसे अर्धमागधी गीति जानना । जो पदोंके अक्षरोंको पृथक् पृथक् करके गाना है यथा—'रा म च र ण' एवं रूपसे उसे संभाविता गीति जानना । इसी संभावितागीतिके यदि सब अक्षर लघु ही हों तो उसे पृथुला गीति जानना ।

मैंने जो ये चारों गीतियोंके लक्षण लिखेहैं ये यद्यपि प्राचीन-

ग्रंथकारोंके लक्षणोंसे कुछ विलक्षणहैं, तो भी बहुत विरुद्ध नहींहैं। और मैंने प्रचलित सांगीतिक व्यवहारका भी इनमें मिलान करदियाहै, शास्त्रीय शुद्धलक्षण तो प्रचलितसांगीतिक व्यवहारसे मेल नहीं खाते इससे वे वैसेके वैसे नहीं लिखे।

आज कलह जो धुरपत ख़याल प्रभृति कई प्रकारकी गीति प्रचलित है उसका सब हाल भूमिकामें लिखदियाहै वहाँ देखो।

सातों स्वरों में से—

षड्ज का स्वभाव शांत है ॥१॥

ऋषभ का स्वभाव तीक्ष्ण है इसकारण ऋषभसंयोगसे रागमें तीक्ष्णता (चमक) होजातीहै। सारंगमें यह स्पष्ट प्रतीत होतीहै ॥२॥

गंधारका स्वभाव गंभीर होनेसे गंधारसंयोगसे रागमें गंभीरता आतीहै ॥३॥

उतरामध्यम भी शांत स्वभाव है ॥४॥

यथा नीबूके रससे हरिद्राका रंग खिल जाताहै तथा पंचम संयोगसे रागका स्वरूप भी खिल जाताहै ॥५॥

धैवत भी गंधारतुल्य गंभीरस्वभाव है ॥६॥

निषादसंयोगसे रागमें सौकुमार्य और आतुरता व्यक्त होतेहैं ॥७॥

उसपर भी स्वरोंके ये स्वभाव तीव्र होनेसे अधिक व्यक्त होतेहैं और स्वानुभव मात्र गम्य हैं, यह स्वभावज्ञान कुछ बारीक़ है। इन स्वरोंकी जो 'सा रे ग म प ध नी' ये संज्ञा पड़ी हैं उसमें भी बहुत संदेह हैं आद्याक्षरका ग्रहण कहा जाय तो या तो ध की

जगा धै चाहिए किंवा नीकी जगह न चाहिए इत्यादि । मेरी जानमें उच्चारणसौकर्यकेलिए ही ऐसा हुआ है इसीलिए षड्जके षकी जगह सा और ऋषभके ऋकी जगह रे हो गया, इसी लिए आदि के सा रे ये दो और अंतका नी ये दीर्घ स्वरांत कर लिए आगे राम जाने।

सितारवाले स्वरसमुदाय को ठाठ भी कहते हैं इस ठाठपदसे स्वरोंका निर्देश करनेमें बड़ा सुबीता (सत्तेप) होता है। ये ठाठ अनेक प्रकारके हैं यथा—

१ यदि सभी स्वर उतरे हों तो उसे भैरवीका ठाठ कहते हैं।

२ यदि सभी स्वर चढ़े (तीव्र) हों तो उसे इमनका ठाठ कहतेहैं।

३ यदि ऋषभ मध्यम धैवत ये उतरे हों और गंधार तथा निषाद चढ़े हों तो उसे भैरवका ठाठ कहते हैं। षड्ज और पंचम तो एकरूप ही रहते हैं उतरते चढ़ते नहीं यह प्रथम लिख दियाहै सो उतार चढ़ाव रि ग म ध नी इन्हीं पाँच स्वरोंमें होताहै इसका स्मरण रहे।

४ यदि ऋषभ धैवत चढ़े हों, गंधार मध्यम निषाद ये उतरे हों तो उसे काफीका ठाठ कहतेहैं। ये ही चार ठाठ अताइयोंमें विशेष प्रसिद्ध हैं।

५ यदि ऋषभ धैवत उतरे हों और गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े हों तो उसे पंचमका ठाठ कहतेहैं।

६ यदि ऋषभ गंधार और धैवत ये उतरे हों मध्यम निषाद ये चढ़े हों तो उसे टोड़ीका ठाठ कहतेहैं।

७ यदि ऋषभ चढ़ा हो और सब स्वर उतरे हों तो उसे दरबारी का ठाठ कहतेहैं ।

८ यदि ऋषभ उतरा हो और सब स्वर चढ़े हों तो उसे मारवे का ठाठ कहते हैं ।

९ यदि मध्यम उतरा हो और सब स्वर चढ़े हों तो उसे अल्हैया वा बिलावलका ठाठ कहते हैं ।

१० यदि मध्यम और द्वितीय सप्तकका निषाद उतरा हो, और स्वर चढ़ेहों तो उसे सोरठका ठाठ कहते हैं ।

इत्यादि रूपसे अनेक ठाठ हैं । प्रस्तार करनेसे ३२ ठाठ सिद्ध होते हैं किं तु ३२ ठाठोंके राग उपलब्ध नहीं होते इस लिए १५। १६ ही ठाठ काममें आते हैं ।

इन ठाठोंमेंसे सीखनेवालेको हस्ताभ्यासकेलिए भैरवका ठाठ सबसे अधिक हितकर है मेरी जानमें इसीलिए सबसे प्रथम कालंगड़ेकी गत सिखाई जातीहै ।

गाते बजाते दाँत सिकोड़ना. सर्वथा नेत्र मूंदना. भयभीत होना. कांपना. मुँहको भयानक फाड़ना. हाथ और कंठका क्रूर (कठोर) होना. श्रुति का उल्लंघन करना. गाना बजाना नीरस होना. शब्द व्यक्त न होना. सानुनासिक स्वरसे गाना इत्यादिक गानेबजाने वालेके पचीस दोष कहेहैं । यथा—

“संदंष्टोद्घृष्टसूत्कारिभीतशङ्कितकम्पिताः ।
करालो विकलः काकी वितालकरभोद्भडाः ॥
झोम्बकस्तुम्बकी वक्री प्रसारी विनिमीलकः ।
विरसापस्वराव्यक्तस्थानभ्रष्टाव्यवस्थिताः ॥

मिश्रकोऽनवधानश्च तथाऽन्यः सानुनासिकः ।

पञ्चविंशतिरित्येते गायना निन्दितामताः ॥" इति ।

कंठका वा हाथका शब्द उत्तम होना शरीर सुंदर होना तानके तथा गान वादनके आरम्भ और समाप्ति करनेमें कुशल होना. हाथ वा कंठ वशमें होना इत्यादि गाने बजानेवालेके कुछ गुण भी कहेहैं । यथा—

"हृद्यशब्दः सुशारीरो ग्रहमोक्षविचक्षणः ।

रागरागाङ्गभाषाङ्गक्रियाङ्गोपाङ्गकोविदः ॥

प्रबन्धगाननिष्णातो विविधालप्तितत्ववित् ।

सुसंप्रदायो गीतज्ञैर्गीयते गायनाग्रणीः ॥" इत्यादि ।

शब्दके भी अनेक प्रकार कहेहैं यथा कफज. अंतःनिस्सार. त्रिस्थानगम्भीर (यही सर्वोत्तम है) चतुर्थ मिश्रित ।

"चतुर्भेदो भवेच्छब्दः खाहुलो नारटाभिधः ।

बोम्बको मिश्रकश्चेति तल्लक्षणमथोच्यते ॥" इति ।

शब्दके पन्द्रह प्रकार और भी कहेहैं यथा—

"मृष्टो मधुरचेहालत्रिस्थानकसुखावहः ।

प्रचुरः कोमलो गाढः श्रावकः करुणो घनः ॥

स्निग्धः श्लक्ष्णो रक्तियुक्तश्छविमानितिसूरिभिः ।

गुणैरेभिः पञ्चदशभेदः शब्दो निगद्यते ॥" इति ।

इनके लक्षण संगीतरत्नाकरादिमें देखनेचाहिएँ ।

गाना बजाना एक और रीतिसे दो प्रकारका है—एक टूटे स्वरोंका यथा खड़ी सरगमका गाना और हारमोनियमप्रभृति वाद्योंका बजाना. इनमें लचक वा मीड वा सूत न होनेसे स्वर

परस्परसे पृथक् होनेसे टूटे कहातेहैं, इसी कारणसे हमारे देशी भारी राग हारमोनियमप्रभृतिवाद्योंमें योग्यरूपसे व्यक्त नहीं होते, इन वाद्योंमें लयद्रुत करनेसे स्वरोंका टूटापन कुछ कम अभिव्यक्त होनेसे कुछ रङ्ग जम जाता है, वस्तुगत्या ये वाद्य हमारे देशी रागोंके तथा विलंबित लयके योग्य नहीं हैं, सत्य तः यह है कि थीयेटरने हमारे देशी गानका और हारमोनियमने हमारे देशी राग-वाद्योंका लोप कर दिया। ये ही दो हमारे देशी संगीतके विनाशक हैं। यही बात राजा शौरिन्द्रमोहन ठाकुर भी मुझसे कहतेथे।

दूसरा—संश्लिष्टस्वरोंका यह स्वरोंका परस्पर संश्लेष गानेमें कंठकी लचकसे होताहै बजाने में मीड वा सूतसे होताहै, इसी प्रकारके गाने बजानेमें भारी रागोंका योग्यस्वरूप प्रकट होताहै। जब गानेवाला गंधारसे पंचम पर कंठकी लचकसे जाएगा तब मध्यके मध्यमस्वरका स्पर्श अवश्यही होगा, एवं जब बजानेवाला गंधारसे पंचमपर सूतसे जायगा वा गन्धारपर पंचमकी मीड देगा तब मध्यके मध्यमस्वरका स्पर्श अवश्य ही होगा. इस रीतिमें मध्यके स्वर सर्वथा कभी भी छूट नहीं सकते एवं और स्वरोंकी लचक मीड तथा सूतमें भी जानना। इस उत्कृष्ट प्रकारके गानेबजानेमें वस्तुगत्या सब रागोंमें सब स्वर लगते हैं यथा मालकौसमें यद्यपि पंचम वर्जित है तथापि यदि लचकसे वा मीडसे वा सूतसे मध्यम स्वरसे धैवत पर जायाजाय तो मध्यके पंचम स्वरका भी स्पर्श होगा ही, तब मालकौसादि रागमें पंचमादि स्वर वर्जित है गंधा-रादि स्वर अनुकूल है यह जो व्यवस्था है सो स्थिति की अपेक्षा से है, अर्थात् जिस रागमें जिन स्वरोंपर स्थिति हो सकतीहै उस

रागमें वे स्वर लगतेहैं ऐसा कहाजाताहै जिन स्वरोंपर स्थिति नहीं होसकती वे स्वर वर्जित हैं । ऐसा कहाजाताहै ।

इस पुस्तकमें मीयाँ अमीरखाँजीके चित्रके साथ वीणाका चित्र है। वीणाके नीचे दो बड़े तूँबे रहते हैं ऊपर गोल डाँड़ी होती है डाँड़ी पर कोई लोग २२ कोई २१ सारोंको मोमरालसे जमाते हैं इस कारण ग्रीष्म ऋतु वीणाके प्रतिकूल है क्योंकि ग्रीष्मसंताप से सारोंका मसाला नरम होजाताहै अत एव ग्रीष्ममें वीणाको संताप से बचाना पड़ताहै वर्षा और शीत वीणाके अनुकूल हैं क्योंकि इसमें सरेशका जोड़ नहीं होता । वीणाके 'डग डगड़ डाँ' इत्यादि बोल हैं । वीणामें केवल जोड़ही बजाया जाताहै । प्रथम कालमें वीणाके साथ मृदंग बजानेका भी प्रचार था वह अब नहीं है । वीणाकी डांड़ीपर मध्यम षड्ज पंचम तथा गंधार इनके यथाक्रम चार तार होतेहैं, प्रथम मध्यमका तार लोहेका होताहै शेष तीन तार पीतलके उत्तरोत्तर मोटे होतेहैं । दक्षिणहस्तकी ओर दो चिकारी होतीहैं, बाम हस्तकी ओर एक खरज (षड्ज) होताहै ये तीनों तार षड्जमें मिलाए जातेहैं । डांड़ीके आगे जो मयूराकार होताहै उसे कड़ा कहतेहैं । उस मयूरकी पृष्ठपर जो दांतकी स्वरधरी होतीहै उसे तख़्त कहतेहैं ।

सितारमें सरेश का जोड़ होनेसे वर्षाऋतु इसके अनुकूल नहीं शीतऋतु अनुकूल है । सितारके एक ही तूँबा होताहै । मीयाँ रहीमसेनजीने सितारकी डांड़ीके पीछे दो छोटी तूंबी लगा लीं अतएव यह चिह्न उन्हींके कुलके सितारका है उनको देख और भी कोई कोई लोगोंने अपने अपने रागवाद्यके पीछे एक तूंबी

लगाली। सितारके 'डा डिड़ डाड़ा डिड़ा डाड़' इत्यादि बोल होते हैं। सितारमें जोड़ भी बजाया जाताहै गत तोड़ा भी बजाया जाताहै। सितारपर १ मध्यम २ षड्ज २ पंचम ये यथाक्रम तार होतेहैं। कोई १ खरज और भी चढ़ालेतेहैं।

जो वाद्य चर्मसे मढ़े जातेहैं यथा रबाब मृदंगादि उनके वर्षा-ऋतु बहुत प्रतिकूल है ग्रीष्म ऋतु अनुकूल है। इत्यादि।

कुछ काल जोरसे साजको बजानेसे साजका भी कुछ काल-केलिए श्वास खराब होजाताहै इसकारण बजाकर कुछ काल साजको भी विश्राम देनाचाहिये, एवं हाथको भी विश्राम देनाचाहिये, सिद्धावस्थामें तो विशेषरूपसे साजको और हाथ को विश्राम देनाचाहिये।

॥ इति स्वराध्यायः समाप्तः ॥

अथ

रागाध्याय

सांगीतिकसमाजके अनुरंजक और प्राचीनसंगीतविद्वानोंके नियत किए स्वरसमुदायविशेष (स्वरोंकी आरोहावरोहीविशेष) को राग रागिनी कहतेहैं. कहा भी है—

"रञ्जकः स्वरसंदर्भो राग इत्यभिधीयते ।"

"योसौ ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।

रञ्जको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ।" इति ।

ग्रामीणोंके चित्तानुरंजक भी स्वरसमुदाय राग नहीं कहासकते इससे लक्षणमें सांगीतिकसमाजके अनुरंजक यह कहाहै ।

रागरागिनियोंके चार भेद हैं। १ राग. २ रागपत्नी. ३ रागपुत्र. ४ रागपुत्रवधू । प्रधान भेद दो ही हैं—राग और रागिनी । रागों में जो पुंस्त्व है और रागिनियोंमें जो स्त्रीत्व है उसको कोई भी स्पष्टरूपसे बता नहीं सकता । अथापि यथा दो कन्या बालक बाल्यावस्थामें यदि एकसमान वस्त्रादि पहिरेहों तो स्थूलबुद्धिपुरुष यह नहीं जान सकता कि यह कन्या है और यह बालक है किंतु सूक्ष्मदर्शी चतुर पुरुष उनके सौकुमार्यादिसे जानलेताहै कि यह कन्या है और यह बालक है तथा सूक्ष्मदर्शी सांगीतिक विद्वान् समझसकतेहैं कि यह राग है और यह रागिनी है, जो राग हैं उनमें ओज (खड़ापन) कुछ अवश्य प्रतीत होता है, जो रागिनी हैं उनमें सौकुमार्य कुछ अवश्य प्रतीत होताहै यही राग और

रागिनियोंका प्रधान भेद है। मेरी जानमें तो इसी ओज ही के कारण राग राग कहातेहैं और सौकुमार्यके ही कारण रागिनी रागिनी कहातीहैं।

आजकल्ह प्राय:करके तीनप्रकारके राग रागिनी प्रसिद्ध हैं १ औडुव. २ षाडव. और ३ संपूर्ण। जिसमें पांच ही स्वर लगतेहों उसे औडुव कहतेहैं यथा मालकौसप्रभृति, जिसमें छै स्वर लगतेहों उसे षाडव कहतेहैं यथा गूजरीप्रभृति, जिसमें सातों स्वर लगतेहों उसे संपूर्ण कहतेहैं यथा भैरवादि। चार स्वरकी कोई राग रागिनी प्रसिद्ध नहीं, तीन स्वरोंकी जलधरसारंग प्रसिद्ध है। यह विषय स्वराध्यायमें स्पष्ट है।

१ भैरव २ श्री ३ मालकौस ४ दीपक ५ मेघ ६ हिंडोल ये आदिके छै राग प्रसिद्ध हैं, इनमेंसे प्रथम तीन सदाके हैं उनमेंसे भैरव प्रात:कालका श्री दिनके चतुर्थप्रहरका मालकौस रात्रिका है ये ही तीन समय गाने बजानेके प्रधान हैं। पीछेके तीन तीनों ऋतुओं (मौसमों) के हैं उनमेंसे दीपक गरमीका. मेघ वर्षाका. हिंडोल शीतकालका है। दीपकरागका गाना बजाना मियाँ तान-सेनजीके समयसे बन्द है यह हाल भूमिकामें लिखाहै। मेघराग भी सामान्य ही है शेष चार राग बहुत अच्छे हैं उनमेंसे भी मालकौस बड़ा मस्त और तासीर करनेवाला राग है। सोरठा—

                १   २   ३
"प्रथमहि भैरव राग. मालकौस. हिंडोल गिन।
    ४   ५   ६
मेघ बहुरि. श्री राग. छठवों दीपक गाय जिन॥" इति स्वरसागरे।

इन रागरागिनियोंके पूर्वजसंगीताचार्योंने अनेक प्रकारसे परिवारकी कल्पना कीहै यथा एक रागकी कई पत्नियें फिर उनके पुत्र उन पुत्रोंकी भी वधुएँ इत्यादि, इस कल्पनामें ऐकमत्य न होनेसे उसे मैंने यहाँ नहीं लिखी. और इस परिवारकल्पनासे गानेबजानेमें कुछ उपयोग भी नहीं। यह कल्पना इसदेशमें नैसर्गिक है। संगीतरत्नाकरादि आकरग्रंथोंमें तो इस परिवारकल्पनाका नाम भी नहीं, वास्तविक विद्याचमत्कारमें असमर्थपुरुषोंकी ही ऐसे विषयोंमें विशेषकर प्रवृत्ति होतीहै।

अब मैं प्रथम प्रभातकालके कुछ रागोंके स्वरूपोंको लिखताहूँ। यहाँ सूर्योदयसे एकघंटा पूर्वसे लेकर सूर्योदयानन्तर एकघंटा पर्यंत प्रभातकाल जानना। यद्यपि सभी राग सभी समयोंमें गाए बजाए जा सकते हैं तथापि यथा उत्तमोत्तम रसौषधको भी अनुपानकी अपेक्षा रहतीहै तथा रागों को भी अपने उस उस नियत निजकालकी अपेक्षा रहती है क्योंकि वह वह समय उस उस रागकी तासीरका वर्धक है। इसका नियामक बुद्धिमें कुछ आता नहीं किसी ग्रंथमें भी लिखा देखा नहीं।

१ अथ भैरवराग

भैरव छै रागोंमेंसे प्रथम राग है कहा भी है "प्रथम राग भैरों"। आजकल्हके कुछ लोग इसे भैरों कहतेहैं यह प्रभातकालका राग है। इसमें सातों स्वर लगनेसे यह संपूर्ण कहाताहै इसमें ऋषभ म[illegible] [illegible] धैवत ये तीन स्वर उतरे लगतेहैं और गंधार निषाद ये दो स्वर [illegible]ढ़े लगतेहैं। गंधारस्वर इसका वादी (प्राण) है। इसमें गंधार मध्य[illegible] पंचम इन तीन स्वरोंका प्राधान्य है। गंधारपर पंचमकी

मींडको या गंधारसे पंचमतककी सूतको यह राग बहुत चाहताहै एवं अवरोहीके समय ऋषभपर गंधारकी मींडको बहुत चाहताहै। सितारवीणाप्रभृति वाद्योंमें मींड होतीहै। स्वरशृंगार रवाब सारंगी इत्यादि वाद्योंमें मींडकी जगह सूत होतीहै गलेमें उसीको लचक समझना चाहिए। सैनियोंके स्वरसागर में दूलहखाँजीने कहाहै—

"महादेव हैं देवता त्रिया भैरवी संग।
शरत्चंद्रकी रैनसम भैरव उज्ज्वल अंग॥"

"भैरव राग भैरवी[१] रानी और नारि सुनि लैहि वरारी[२]।
मधुमाद[३] सैंधवी[४] बंगाली[५] पांच नारि संग रहैं जुवाली॥"

इति शिवमतम्।

"भैरवी[१] विभाकरी[२] अरु तीजै गिन गूजरीकौ[३] चौथी गुनकली[४] औ विलावल[५] सुनारि है। पुत्र इनके सुनौ भैरवीकौ देवगंधार ताकौ सुघरईसौं अधिक पियार है। दूजै विभाकरी अरु पुत्र है विभास वाकौ सूहीकौ विभास मन राखत सँवार है॥ तीजै सुन गूजरीकौ पुत्र देवसाग भयो रागनिके वागवेल जूही निहारिहै। चौथे गुनकली पुत्र वाकौ गंधार सुनौ कुरंक रागनी तौ वाके मन की पियारी है। पाँचैं विलावल पुत्र वाकौ सूहा सुन सूहे की पियारी नारि बहुली निहारी है॥" इति गणेशमतम्।

इनमेंसे विभाकरी सूही जूही कुरंक बहुली ये पाँच रागे प्रायः अप्रसिद्ध हैं और सब प्रसिद्ध हैं।

सरगम यथा—'सा रे रे ग म प ध नी सा रे सा गरे सा नि ध प म ग. प म ग रे सा, गम प ध प म ग. प म ग रे सा' इत्यादि।

ध्रुवपद यथा—"सा रे रे ग म प ध नी सा सप्त स्वर मो मन ऐसे आए। आरोही अवरोही सुन लेओ सब कोई नी ध प म ग-रे सा" १॥

ध सा रे सा सा रे ग म प ग रे सा स रे ग म प ध प म ग रे

"रघुपति प्राणनाथ नाथन को नाथ अष्ट सिद्धि नव निधि

रे ग म प म ग रे सा ध नि सा ध नि सा रे सा स नि ध प म ग रे ग म ग रे सा

तुमसों पैयत। नाम धाम सब तेरो मंगल सिमरत दुख मिट जैयत" ॥२॥

इसपदपर स्वर भी लगादियेहैं अस्ताईमें प्रथम सप्तकके धैवतसे द्वितीय सप्तकके धैवत तक जाना फिर पीछे लौट आना, अंतरेमें द्वितीय धैवतसे तृतीय ऋषभ तक जाकर द्वितीय षड्जपर लौट आना।

यह राग बहुत प्रसिद्ध है। प्राचीन विद्वानोंने इसके वसंतभैरव और आनंदभैरव ये दो भेद और भी कहेहैं किन्तु आजकल्ह इनका प्रचार नहीं। संगीतपारिजातवालेने इसी भैरवको वसंतभैरव कहाहै, और शुद्धभैरवको ऋषभपंचमरहित कहाहै ॥ १ ॥

गत यथा—

सम

डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा

९ ८ ९ ८ ६ ८ ९ १० ११ १० ११ १२ १५१६

डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा।

६ १५१२ ११ ९ ८ ६ ५ ४ ५ ६ ८ ९

स्वर मध्य: [illegible]ह राग सर्वथा सीधा है भैरवका ठाठ बनाकर उसपर चाहे

जैसे दौड़ो हाँ दूसरा कोई राग प्रकट न होजाए इसपर पूरा ध्यान अवश्य रखनाचाहिए। वस्तुगत्या बिना गुरुशिक्षाके काम चल नही सकता। इसमें कभी कभी आरोहमें ऋषभको तथा पंचमको छोड़ भी देतेहैं। गतमें जो अंक लगाएहैं उनके लिए सितारके तूंबेकी ओरके सबसे नीचेके परदेसे एकसंख्यासे संख्याका आरंभ जानना। सितारमें समग्र पड़दे १७ सत्तरह जानने यथा 'म प ध ध नि नि सा रे ग म म प ध नि सा रे ग' इति। ऐसे ही आगे भी जानना।

२ अथ पंचम

पंचम हिडोलसैंधवीका पुत्र है इसमें सातों स्वर लगनेसे यह संपूर्ण रागपुत्र है। इसमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं। भैरवसे इसका विशेष भेद यही है कि भैरवमें मध्यम उतरा लगताहै इसमें चढ़ा लगताहै हां चाल इसकी भिन्न है। इसमें आरोहीमें पंचम बहुत ही कम लगताहै। यह भी प्रभातका राग है इसमें मध्यसप्तकके 'सा नी रे सा' इन स्वरोंको बजाकर इकदम तृतीय सप्तकके षड्‌जपर जाकर 'सा नी रे सा नि ध प म ग रे सा' इस क्रमसे लौटना चाहिए यही तान इसके स्वरूपको प्रकट करनेवाली है। सरगम यथा 'सा नी रे सा—सा नी रे नी ध प म ग, ग म ध नी रे नी ध म ग रे सा। रे सा ध म ग रे सा रे नी रे सा म ध प म ध म ग रे सा [illegible] नी रे सा—सा नी रे सा ग रे सा रे नी ध म ध प म ग ग नी सा नी ध प म ग म ग रे सा' इत्यादि।

३ अथ कालंगड़ा

कालंगड़ेमें सातों स्वर लगतेहैं उनमेंसे ऋषभ मध्यम धैवत ये तीन स्वर उतरे और गंधार निषाद ये दो स्वर चढ़े लगतेहैं। इसकी चाल बहुत सीधी है गानेबजानेवाले इसमें मींडका प्रयोग अधिक नहीं करते और इसमें पंचम विशेष लगताहै और मध्यमसे धैवत-पर जाकर पंचमपर लौटकर कुछ ठहरना चाहिये यही इसका भैरवसे विशेष भेद है। यह बहुत प्रसिद्ध है।

स

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

१० १२ ११ १० ६ १० ६ ८ ८ ६ १०११ १२ ११

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा॥१॥

२ ३ ४ ५ ६ ८ ६ ८ ५ ६ ८ ६ १० ११

सरगम यथा—रे सा नि सा रे नि ध प म म ध नि स. रे ग रे रे ग म ध प प ध नि सा रे सा नि सा रे सा नि ध प म ग रे सा, इत्यादि।

यह प्रभातका कालंगड़ा है एक श्यामका भी कालंगड़ा है। जिन गतोंपर तालका नाम नहीं उनका ताल धीमातिताला जानना।

४ अथ जोगिया

जोगिया भी संपूर्ण राग पुत्र है इसमें भी कालंगड़ेके तुल्य ऋषभ मध्यम धैवत ये तीन स्वर उतरे और गंधार निषाद ये दो स्वर चढ़े लगते हैं। इसमें आरोहमें गंधार और निषाद नहीं लगते यही इसमें विशेष है। 'सा रे ग रे म प ध रे सा' यह तान इसमें अधिक चमत्कारी है। गंधारीका और इसका ठाठमात्रका भेद है और चालढाल सब एकसमान है।

सरगम यथा—म म प ध ध प म ग रे म म प ध सा सा नि

ध प म प ध प म ग रे सा। स ग रे रे म प ध सा नि ध रे सा
नि ध प म ध प ध प ध सा नि ध प म ग रे सा ॥१॥ इत्यादि।

प्रभातके रागोंमेंसे कालंगड़ा और जोगियाको अताई लोग अधिक गाते बजाते और पसंद करतेहैं।

५ अथ ललित

ललित षाडव रागपुत्र है इसमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार निषाद ये चढ़े लगते हैं मध्यम उतरा चढ़ा दोनों प्रकारका लगताहै किंतु आरोहमें उतरा ही मध्यम लगता है और अवरोहमें चढ़ा मध्यम लगता है प्रकारविशेषसे अवरोहमें दोनों भी मध्यम लगसकते हैं इसमें पंचम नहीं लगता यही सब इसका विशेष है।

सरगम यथा—'सा रे ग म म ग ग म म ध ध प प म म (तीव्र) गम ध नी नी ध ध मग रे ग ध म ग रे सा। ग म ध नि सा सा रे सा नीनी म ध मम गग मम गरे गरे सा ॥' इत्यादि। कोई उस्ताद लोग इसमें अवरोहमें जरासा पंचम लगा भी देतेहैं।

स
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥
११ १० ९ १० ९ ८ ५ ८ ९ ८ ९ १०१११२
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा॥१॥
९ ९ ५ ८ ५ ४ २ ४ ५ ७ ५ ८ ७ १०१११२

६ अथ विभास

विभास रागपुत्र है षाडव है इसमें ऋषभ उतरा लगताहै गंधार मध्यम धैवत निषाद ये चढ़े लगतेहैं। वस्तुगत्या इसमें पंचम वर्जित है तो भी उस्ताद लोग कभी कभी जरासा पंचम लगा भी देते हैं. पंचम ऐसी रीतिसे अल्पसा अवरोहमात्रमें लगाना चाहिए

जो इसका आकार न बिगड़े यह बात शिक्षाके अधीन है। षड्ज भी इसमें कम लगताहै। इसमें यथार्थ फैलना कुछ कठिन है।

सरगम यथा—रे नी सा नि ध नि रे ग म म ग रे नि सा। गम ध सा नि रे सा नि रे ग रे नि ध म ग ग म ध सा नि रे नि ध म ग रे नि रे ग रे सा, इत्यादि। सरगममें यह स्मरण रखना कि सरगमके प्रथमभागमें द्वितीय सप्तकसे आगे नहीं जाना द्वितीयभागमें द्वितीयसप्तकसे तृतीयसप्तकमें जाना।

स

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥

१२ १२ १० ९ ७ ९ ७ ५ ७ ५ ९ ७ ९ १० ११

७ अथ देशकार

देशकार संपूर्ण रागपुत्र है इसमें भी ऋषभमात्र उतरा लगता है गंधार मध्यम धैवत निषाद ये चढ़े लगतेहैं। विभासकी अपेक्षा स्वरोंमें इसका यही विशेष है कि इसमें पंचम स्पष्ट लगता है हाँ चाल इसकी पृथक् है। बजानेवालेको इसमें चढ़ेमध्यमके पड़देपर पंचम धैवतकी मींड ज्यादा खैंचनी चाहिए उसमें भी यह विशेष है कि तारको ऐसा खैंचना जो प्रथम पंचम बोले झट ही आगे धैवत बोले इन सब बातोंका विना शिक्षा ज्ञान होना कठिन है क्योंकि मींडके अनेक प्रकार हैं जो लिखने कठिन हैं।

* मी१—२ मी१। मी१—२

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा॥१॥

९ ७ ७ ७ ९ १० ९ ९ ७ ७ ७ ९ १० ११

---

*गतपर (मी) यह मींड का संकेत जानना इसके आगे अंक स्वरोंके जानने यथा यहाँ सात का पड़दा मध्यम स्वरका है उसपर १ अंक से पंचम की और २ अंकसे धैवतकी मींड देनी एवं आगे भी सर्वत्र जानना।

यह मीयाँ अमृतसेनजीकी बनाई गतका टुकड़ा है अतएव रत्न-तुल्य है. मीयाँ अमृतसेनजीकी बनाई 'गतें' ऐसी प्राणसे भी प्यारी हैं कि उनको लिखदेनेका प्रथम तो साहस ही नहीं होता फिर उनके लिखनेसे लाभ भी कुछ नहीं क्यों कि वे गतें सीखनेपर भी हाथसे यथार्थ निकलनी कठिन ही हैं इसीकारण वे गतें बहुत कम लोगों के पास हैं।

सरगम यथा—सा रे सा गरे सा रे सा सा नि रे सा ग रे रे सा रे ग म प प ध प म ग म ग रे सा। प ध म ध ग रे

३ ३ ३
सा नि सा रे सा नि ध प म ग प म ग रे सा। इत्यादि।

सरे स ग रे स र स स र स ग नि स रेग ग रे सा नी
ध्रुवपद यथा—पढ पढ पंडित भाए पच पच नाचन लागे जो
स ग म प प ध प मग म ग र सा पधप ध प प म ग म ग ग रे स प
रचै पचै तै। गायवै। कठिन अत। जैान ग्राम गावत गुणिगण और
ध प म ग रे स निसरसा नि ध प म ग ग र सा
हूं विभेदहैं बताए औ दिखाए गुरु अमृत॥ १॥

इसमें अस्ताई प्राचीन है अंतरा मेरा बनायाहै, इस अंतरेमें जो स्वर हैं वे मीयाँ अमीरखाँजीके स्थिर किये हुएहैं। अंतरेमें 'वताए' इसपदमें व तो प्रथमसप्तकके निषादपर है शेष 'ताए' ये दो अक्षर तृतीय सप्तकके 'सारेसा' पर हैं यह ध्यान रखना। इसका फैलाव कठिन है। यह धुरपतियोंका देशकार है, खयालि-योंके देशकारमें ऋषभ चढ़ा लगताहै यही विशेष है, इसका स्वरूप आगे लिखे भकार से बहुत मिलता है विशेष यह है कि भकार में ऋषभ उतरा है और इसमें चढ़ा है, इस खयालियोंके देशकारको

रात्रिकी रागिनियोंसे बचाना कुछ कठिन है। इसभेदको करनेवाले भी तानसेनजीके ही दौहित्रवंशके संगीतविद्वान् हैं।

८ अथ आसा

आसा रागिनीका पंजाबकी वेश्याओंमें अधिक प्रचार है पूर्वमें इसका प्रचार कम है। इसमें मध्यम उतरा लगताहै और रि गे ध नी ये चार स्वर चढ़े लगतेहैं यह भी संपूर्ण रागिनी है। इसके आरोहमें गंधार निषाद वर्जित हैं, कभी कभी आरोहमें पंचमको भी छोड़ देतेहैं।

सरगम यथा—सा रे म प ध रे सा, रे सा नि ध प म ध प म ग रे सा। म प ध सा ग रे सा प ध रे सा ध सा रे सा ग रे सा नी ध प म ध प म ग रे सा।

सूत स काट का का

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

११ १० ८ ६ ५ ३ ४ ५ ६ ८ ५ ६ ६ ९ १० ११

२ ३ ५ ८ ८ ९ १०

४

का

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा ॥१॥

८ ८ ८ ६ ५ ३ ३ ३ ३ २ १ २ ३

१

९ अथ जीलफ

जीलफ रागिनी संपूर्ण है इसमें ऋषभ मध्यम धैवत ये उतरे और गंधार निषाद ये चढ़े लगतेहैं। यह छोटीसी रागिनी है। इसके आरोहमें ऋषभ छूटताहै अवरोहमें प्रायः षड्जको छोड़ देतेहैं।

सरगम यथा—सा ग म प ध प ध नी सा। ग म प ध म

प ध नी सा रे सा ग रे सा नी ध प ध प म प म ग म ग रे नी सा । इत्यादि ।

स
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डाड़ा ॥१॥
५ ६ ८ ९ ८ ५ ६ ५ ६ ८ ९ ८ ९ १० ११

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥
१० १२ ११ ९ ८ ६ ५ ६ ५ ४ ३ ४ ५ ६ ६

१० अथ भकार

भकारमें ऋषभ उतरा है गंधार धैवत निषाद ये चढ़े हैं मध्यम दोनों प्रकारका है वस्तुगत्या इसमें पंचम वर्जित छै ही स्वर होनेसे यह षाडव रागिनी है अथापि पंचमकी कहीं छूत कर भी देते हैं। कोई लोग इसमें उतराही धैवत लगाते हैं। यह रागिनी छोटीसी होने पर भी मजेदार है। छोटीसीका अभिप्राय सर्वत्र यह जानना कि उसमें फैलनाफूलना ज्यादा नहीं हो सकता। इसको प्रायः तृतीयसप्तकके षड्जसे शुरू करते हैं षड्जसे सूत देकर धैवतपर आकर फिर षड्जपर ही चलेजाना यह इसमें विशेष है। और आरोहावरोह दोनोंमें मध्यम चढ़ा लगता है किंतु अस्ताई अंतरेके अंतमें उतरा मध्यम लगता है यह भी विशेष है। आरोहमें निषाद नहीं ।

३ ३
सरगम यथा—सा ध सा रे सा ध म ग. ग रे सा नी रे सा म
३ ३ ३
ग म ध सा म। सा ध सा ग रे सा नि ध म ग ग रे सा. सा म ग
३
म ध सा. ग रे सा नी ध म ग रे सा म ग म ध सा म (उतरा)

सध स मग र स स मग मधसा म उतरा
ध्रुवपद यथा—आज रे आज दिन मंगल राधा घर श्री रामकृष्ण।
सधस गरससरसा मग र स समग मधस म उतरा
आज तिलक चढ़ाइये आज नवल यशोदा घर श्री रामकृष्ण ॥१॥
अस्ताई अंतरा दोनों ही तृतीयसप्तक के षड्जसे शुरू करने ॥
गत—डिड़ डा डिड़डाड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥
३ ५ ३ ५ ७ ६ ६ १० ११ ८
तोड़ा-डिड़डाडिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥
११ ७ ६ ७ ५ ३ १ २ ३ ६/८ ८

११ अथ अहीरी

यह रागिनी संपूर्ण है, इसमें ऋषभ मध्यम धैवत ये उतरे और गंधार निषाद ये चढ़े लगतेहैं। यह अवरोहमें ऋषभको बहुत चाहती है। प्रायः लोग इसको धैवतसे शुरू करते हैं। आरोहमें ऋषभको प्रायः छोड़ देते हैं।

सरगम यथा—ध ध प म ग रे रे सा नी रे सा। ग म प ध नी सा रे सा नी ध प म ध प म ग म म ग रे रे सा म ग रे रे सा॥१॥

त मी१
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥
५ ५ ६ ८ ६ १० १२ ११ ६ ८ ६ १० ११
का
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥१॥
३ ४ २ ३ ४ ५ ८ १० ६ ८ ६ १० ११
६

मैंने यहाँ प्रभातकालके भैरव पंचम कालंगड़ा जोगिया ललित विभास देशकार आसा जीलफ भकार अहीरी ये ११ रागरागिनी सविस्तर लिखे हैं। इनके सिवाय प्रभातकी पार्वती गौरा बंगाल

उमातिलक इत्यादि और भी कुछ रागिनी मुझे मालूम हैं किं तु उनका लिखना यहां व्यर्थ है क्योंकि विना शिक्षासे लेखमात्रसे उनके स्वरूपका ज्ञान होना कठिन है। एक प्रकारसे पार्वतीप्रभृति कुछ रागनियोंके कुछ संगीतविद्वानोंके पास नमूनेमात्र ही हैं यथार्थमें इनको फैलफूल कर आधा घंटा भी गाना बजाना बहुत कठिन है, श्रोताकी आँखमें धूल डालदेना यह दूसरी बात है। यदि हम किसी अज्ञात रागकी फरमायश करें तो धूर्त पुरुष चाहे जो खाक धूल गा देवे हम उसके यथार्थ तत्त्वको नहीं जानसकते, ऐसा प्रायः धूर्त लोग स्वमानरक्षार्थ करते भी हैं, इसी धूर्ततासे कुछ रागरागनियों के यथार्थ स्वरूप सर्वथा नष्ट ही होगए, और तौ क्या धूर्तोंने प्रसिद्ध भी रागरागनियोंका सत्यानाश करदियाहै। मीयां अमृतसेनजी कहतेथे कि पाँच सात रागरागनियें भी यथार्थ गानेबजाने आजायँ तो बहुत है इसमें कुछ फरक नहीं।

अब मैं सूर्योदयसे लेकर मध्यान्हके बारह बजेतककी कुछ रागनियों को अकारादिक्रमसे लिखताहूँ। मैं जो रागरागनियोंके नामके साथ यहां अंक देरहाहूं वह संख्या करने मात्रकेलिए देरहाहूं कुछ क्रमकेलिए नहीं देरहा। केवल एक भैरवकेलिए ही यह कहा है कि "प्रथम राग भैरों" और किसी रागरागिनीकेलिए कालातिरिक्त क्रम प्राप्त नहीं।

१ अथ आसावरी

आसावरीमें सभी स्वर उतरे लगतेहैं यह संपूर्ण रागिनी है, इसके आरोह में गंधार वर्जित है, ऋषभ इसका प्राण है, निषाद भी इसमें

प्रधान है। यह रागिनो बड़ी उत्तम तथा सुकुमार है खूब गाने बजानेकी है, इसको गंधारीसे बचाना कुछ कठिन है, वस्तुगत्या गंधारी और आसावरी ये दोनों सहोदर भगिनी हैं यह भी कह सकते हैं। यदि 'प ध सा' इस प्रकार से तान लेंगे तो गंधारी हो जायगी, यदि 'प नि सा' इस प्रकार से तान लेंगे तो भीमपलासी आकूदेगी, यदि 'प ध नि सा' इस प्रकार चलेंगे तो भैरवी बन जायगी, इस कारण गुरुसे खूब ध्यानसे इसकी चालको सीखना चाहिए जो सबसे बचीरहे अर्थात् पंचमसे निषाद पर जाकर धैवत पर आकर वहां एक झटका देकर षड्जपर जानाचाहिए यही तत्त्व है। इसमें 'सा रे ग रे म प नी नी ध प नी प ध प म ग रे रे रे सा नी सा ग रे सा' यह तान बहुत प्रधान तथा इसके स्वरूप को बनानेवाली है। इसके अवरोहमें ऋषभके पड़दे पर गंधारकी दो तीन मींड़ें देनी चाहिए, और पंचमपर निषादकी मींड़ें देनी चाहिएं। कभी कभी आरोहमें षड्जको छोड़ ऋषभपर जाकर षड्ज पर आनाचाहिए यथा—'म प नी नी ध—रे सा'। कभी 'रे सा नि

३

ध प सा' ग रे रे सा नि ध प म सा' ऐसे भी तान लेनी चाहिए याने द्वितीय सप्तकके पंचमसे वा मध्यमसे इकदम तृतीय षड्ज पर जाना।

मी१ मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥ १॥

११ १० ९ १० ८ ६ ४ ५ ६ ८ ९ १० १० ११

सरगम यथा—नी सा ग ग रे म प ध प प म म पनी धधप ध म ग ग रे रे म प ध ध म ग रे सा नी रे सा। म म प ध ध म

ग ग रे म प ध सा रे रे ग सा नी ध प म ग रे म प नी ध प म ग रे सा । इत्यादि । जोगियाके मिलापसे एक जोगिया आसावरी भी है इसका गाना बजाना कुछ टेढ़ा है ।

२ अथ खट

खट संपूर्ण रागिनी है इसमें उतरा चढ़ा दोनों ऋषभ लगते हैं और सब स्वर उतरे लगते हैं । आरोहमें ऋषभ गंधार दोनों छूटते हैं, अवरोहमें प्रायः पंचम छूटता है । इसकी आरोहमें विशेषकर गंधारीके तुल्य चाल है और अवरोहमें सूहेके तुल्य 'सा रे सा' इस तानमें ऋषभ चढ़ा लगाना, 'म ग रे सा' इस तानमे ऋषभ उतरा लगाना यही तत्त्व है, यह रागिनी यथार्थ गानी बजानी कुछ कठिन है लोकमें बहुत कम प्रसिद्ध है । चढ़ा धैवत भी जरा लगता है । मम्मूखाँजी तो कहते थे कि यह भैरवी के ठाठका कान्हड़ा है ।

मीं१ मी१
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डा डिड़ डाडाड़ा ।
११ १३ ११ ८ ८ ८ ६ ९ ८

डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥ १ ॥
६ ८ ६ ९ ८ ९ ८ ६ ८ ६ ४ ५ ६ ८ ९ १०

सरगम यथा—प ध नी सा. नी ध म ग रे सा. म म ग म प प नी ध नी ध म ग रे सा । ध नी सा सा सा नी सा रे नी ध नी नी नी ध म प ध नी सा म रे नी ध सा. सा सा म ग म प रे सा सा नी ध प ध ध म ॥ १ ॥

एक अमीरखुसरोकी खट पृथक् है इसमें ऋषभ चढ़ा नहीं लगता अर्थात् सभी स्वर उतरे ही लगते हैं, आरोहमें ऋषभ गंधार भी प्रायः नहीं छूटते यही इसमें पूर्वोक्त खटसे विशेष है, यह खट

बहुत ही अप्रसिद्ध है। यह अमीरखुसरो पूर्वोक्त वे ही हैं जिनने सितार निकाला है।

सरगम यथा—म प ध नी सा. नी ध प ध प म ग म प। नी ध नी ध प म ग रे सा. नी सा रे ग म प। ग रे सा नी ध प प प म ध नी प ध नो सा रे सा नी ध प प ध प म ग रेसा। इत्यादि।

३ अथ गंधारी

गंधारी रागिनी संपूर्ण है इसमें सबी स्वर उतरे ही लगते हैं इसके आरोहमें गंधार निषाद वर्जित हैं, यह भी ऋषभको तथा ऋषभ स्थानपर गंधारकी मींडको बहुत चाहतीहै, इसकी चाल सीधी है। इसका आसावरीसे बहुत कम भेद है। 'सा रे ग रे म प ध सा नी ध प म प ध रे सा' यह तान इसमें प्रधान है।

सरगम यथा—म म प ध ध प ध म ग रे म म प ध सा. सा नो ध प म प ध ध म ग रे ग रे सा। ग रे म प ध सा. नी सा रे सा नो ध प प ध म प म ध प ध म ग रे ग रे नी सा। इत्यादि।

स
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा डिड़ डाडाड़ा डिड़ डा डाड़ा
११ १२ १० ११ १० ९ १० ८ ६ ५ ६ ५ ६
मी२ मी१मी१
डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥ १ ॥
५ ३ ५ २ ३ ४ ५ ५ ६ ६ ८ ९ १०१०११

४ अथ गूजरी

गूजरी षाडव रागिनी है क्योंकि इसमें पंचम वर्जित है। टोड़ीसे इसका यही भेद है कि टोड़ीमें पंचम है इसमें नहीं है। इसमें ऋषभ गंधार धैवत ये उतरे लगतेहैं और मध्यम निषाद ये

चढ़े लगतेहैं। गंधार और धैवत इसमें प्रधान हैं, यह मध्यमपर धैवतकी और धैवत पर षड्जकी मींडको बहुत चाहतीहै। धैवतपर निषाद षड्ज और ऋषभ तककी मींडको इसमें खैंचतेहैं। कोई कोई उस्तादलोग इसमें तनिकसा पंचम लगा भी देतेहैं किंतु इसके स्वरूप पर पूरा ध्यान रखनाचाहिए जो बिगड़ न जाय।

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥ १ ॥
५ ७ ९ ७ ५ ३ ४ ३ २ ३ ४ ५ ७ ९ १० ११

सरगम यथा— ग ग म ध सा नी ध म ग ध ध ध म ग रे सा। ग ग म म ध ध ध म म ध ध सा रे सा रे रे नी नी ध ध ध ग ग ग रे सा। ग ग म म ध ध नी म ध नी ध म ग ग म ध म ध म ग म ध नी सा। ग रे सा नी रे सा ध नी सा ग ग ध ध म म ग ग ध ध ग रे सा सा नी ध ध ग ग ग रे सा। इत्यादि।

५ अथ जौनपुरी

जौनपुरी संपूर्ण रागिनी है इसमें सभी स्वर उतरे लगतेहैं, जौनपुरी टोड़ीका ही एक भेद है। इसके आरोहावरोहमें किसी भी स्वर के छूटनेका नियम नहीं अथापि ऋषभसे इकदम पंचमपर अधिक जातेहैं और अवरोहमें ऋषभ गंधार टोड़ीके तुल्य लगतेहैं इसमें 'सा रे ग रे ग रे सा रे ग ग रे सा रे प म ग रे सा. ग प म ग रे सा रे म प ग ग रे ग रे सा' यह तान विशेष शोभा देतीहै।

रसगरसा प म र ग म प म ग र सा र ग र ग
ध्रुवपद यथा—कौनके रंग रंगें नैन, ललना तुम्हारे।
ध म प ध नी सा ध नी सा नी र ग रे सा नी ध प म ग र सा ग ग रे ग रे सा
अरुन बरन देखत निस जागे रसीले बोलत बैन ॥ १ ॥

सरगम यथा—सारे ग गरेसा गरे सारे म प ध म प गरे गग रेसा। म प ध नी सा पध सा ध नी सा रे सा गगरे गरे सा नी ध प म प ध प म गरे गगरे सा। यह जौनपुरी धुरपतियोंकी है और कुछ नवीन मालूम होतीहै।

खयालियोंकी दोप्रकारकी जौनपुरी और हैं

एकमें ऋषभ चढ़ा भी लगताहै और सब स्वर उतरे लगतेहैं इसकी

स गमक मी१—२मी१सोटती

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा।

६ ८ ८ ८ ९ १०११ १० ८ ६ ६ ५ ४ ३ ३ ३ ३

६

५

तोड़ा—डिड़डाडिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा॥

४ ५ ६ ८ ६ ९१० ११ १० ८ ६ ९१०११

११

इसगतको दरवारीके ठाठपर बजानाचाहिए।

खयालियोंकी दूसरी जौनपुरीमें मध्यम चढ़ा लगताहै और सब स्वर उतरे लगतेहैं यह जौनपुरी डोड़ीको बहुत कुछ मिलतीहै।

६ अथ टोड़ी

टोड़ी रागिनी सं र्ण है बुद्धिमान् संगीतविद्वान् इसको घंटन गावजासकताहै यह रागिनी भारी होकर भी बहुत सीधी है। इसमें ऋषभ गंधार धैवत ये उतरे और मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं, गंधार और धैवत इसके प्राण हैं। इसमें घूमना फिरना कुछ भारी कठिन नहीं। यह गंधारके पड़देपर मध्यम पंचम की मींडको और धैवतपर निषाद और षड्जकी मींडको बहुत चाहतीहै।

सरगम यथा—सा रे ग म प ध नी ध प म ग रे सा, नी ध

ग रे सा । रे ग म प धधध म प म गग रेरे ग म प ध पम गरेसा ममम धध सा रेसा गरेसा नीध नीध प म गरे म गरे सा । गग ध पम धध नी सा ध सा रे ध सा गग म धध प म ग रे सा ॥३॥

गम न ध मपम धमग ध म ध म गरे सा सा नरग मग मपध

ध्रुवपद यथा—हौं तब जानौं वाकौ बड़ौ ज्ञान जो कंठसों कर

म ध म ध ध नी धम धसानि धगरेसा निधमग रे सासा न सा सा रेमसासारेग गरेनीसा

दिखलावै याकौ विस्तार। गंधार सुरको धैवत होतहै

म ध म ग म ग मपधसा धगरेसानिधमग

धैवत सुरको गंधार।

मी२

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा

९ १० ११ १२ ११ ९ ९ ७ ७ ७ ९ १० ११

मी१

तोड़ा—डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

१५ ११ १० ९ ७ ५ ६ ६ ६ ७ ९ १० ११

इसकी अस्ताई मध्यगंधारसे शुरू करनी और अंतरा तृतीय ऋषभसे शुरू करना, अस्ताई अंतरेकी अंत्यकी तान इसप्रकार है कि द्वितीय धसे प्रथम तृतीय सातक जाना फिर उसी धसे तृतीय गतक जाना वहांसे क्रमसे द्वितीय गतक लौट आना, यह तान कुछ कठिन है। गंधारसुरका धैवत और धैवत सुरका गंधार बनाना यह शास्त्रकी बात है पातके ओटमें पहाड़ है बड़ी मेहनत से यह रहस्य मिलाहै इसकारण सर्वसाधारण इस पुस्तक में लिखदेनेका उत्साह नहीं होता। इस धुरपतको बनानेवाले तानसेनवंशके एकपुरुषहैं जो संगीतके भारी विद्वान् होचुकेहैं इतने भारी विद्वान्के इसप्रभसे ही

अनुमान होसकता है कि यह एक संगीतशास्त्रका अप्रसिद्ध रहस्य अवश्य है । यदि कोई दोचारसौ रुपयेकी शरत लगाए तो उसे इस रहस्यको ग्रंथसे निकाल दिखासकताहूँ । किसी योग्य शिष्यको अंतमें बताऊंगा भी ।

टोड़ी लाचारी

एक लाचारी टोड़ी भी है इसमें ऋषभ चढ़ा लगताहै और सब स्वर उतरे लगतेहैं और इसके आरोहमें ऋषभ गंधार दोनों ही छूट-जातेहैं यही इसमें विशेष है ।

सरगम यथा— स नि स म ग रे सा मम पप ध प म ग
३
रे सा । सा नी ध प प सा नी मम ग रे सा । सा-सा गरेसा म गरेसा नी ध प मम गरेसा म गरेसा इत्यादि ।

टोड़ी विलासखानी

इस टोड़ीकी मीयां तानसेनजीके पुत्र फकीर मीयां बिलासखां-जीने कल्पना कीहै इसीसे यह विलासखानी टोड़ी कहातीहै । इसमें भी ऋषभ चढ़ा और सब स्वर उतरे लगतेहैं, इसमें गंधार प्रधान है अतएव यह गंधारको बहुत चाहतीहै ।

सरगम यथा—सा रे गगग म प ध प म गरे सा रे गग रेसा । गगग मम प ध नी सा रेसा गगग म ग रे सा नी ध प म सा रे ग, गरे सा नी ध सा रे गरेसा इत्यादि ।

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ।
१० १० १३ ११ १० ६ ६ ८ ६ १० ११
११

कोई कोई उस्तादलोग इसमें चढ़ा ऋषभ न लगाकर उतराही लगातेहैं, एकप्रकारसे यह उतरे ऋषभकी देशी दूसरी ही है।

गत—डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥

६ ८ ९ ११ १३ ११ ११ ८ ६ ८ ९ १० ११
१० १०

तोड़ा—डिड़ डाडिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा।१।

११ ८ ६ ४ ३ २ ३ ४ ५ ६ ८ ६ ८ ९ १० ११

८ अथ भैरवी

भैरवी रागिनी संपूर्ण है इसमें सबी स्वर उतरे ही लगातेहैं इसको रंगीन करनेकेलिए कोई लोग कभी कभी इसमें चढ़ा मध्यम भी लगादेतेहैं। यह बहुत ही प्रसिद्ध रागिनी है। गाने-बजानेवाला शायद ही कोई ऐसा होगा जो सांगीतिकविद्वानोंमेंसे मीयां तानसेनजी के नामको न जानता हो तथा भैरवीको गाने बजाने न जानताहो। उत्कर्षापकर्ष तो सर्वत्र ही लगेहैं। इसमें पंचम प्रधान है। इसके आरोहावरोहमें कोई भी स्वर छूटता नहीं अथापि रंगीन करनेकेलिए कभी कोई स्वर छोड़ भी देतेहैं इसमें 'सा नी ध प ग म ध नी सा' यह तान भी उत्तम है।

स

गत— डा डाडाड़ा डा डाडाड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।

९ ८ १० ९ ११ १० ८ ९ १० ११

तोड़ा—डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।१।

८ ६ ५ ४ ६ ५ ६ ८ ९ १० ११ १३ १५ १६० १५ ११
३ १३

पूर्वीबाजकीगत—डाड़ा डा डिड़ डिड़ डा डाड़ डाड़ डा डा डाड़ा डा
१११० ६ ५ ६ ५ ८ ५ ६ ९ ११ १० ९

डिड़ डिड़ डा डाड़ डाड़ डा डा ॥२॥ बोलोंपर तालके अंक दिये हैं।
८ ९ ८ ११ ९ १० ८

९ अथ रामकली

रामकली रागिनी संपूर्ण है इसमें सबी स्वर उतरे लगतेहैं तोभी कभी कभी चढ़ा गंधार भी लगताहै, यह एक बारीक रागिनी है इसका यथार्थ रूप दरसाना तथा उसे घंटा आधाघंटा भी उत्तम-रीति से गानाबजाना कुछ कठिन है। प्राय: लोग ऐसी रागिनियों के नमूनेमात्र जानाकरतेहैं, कोई लोग तो नमूना भी शुद्ध नहीं जानते। जिन रागोंकी आरोही वा अवरोहीमें कोई स्वर छूटता हो उन रागोंका गानाबजाना कुछ सहज होताहै। जिन रागोंकी आरोही वा अवरोहीमें कोई भी स्वर नहीं छूटता उनका गाना बजाना कुछ कठिन होता है क्योंकि समीपका राग उसको आपकड़ताहै यथा पूर्वोक्त जौनपुरी और रामकली इन दोनोंको पृथक् पृथक् करके कुछ काल गानाबजाना कठिन है।

सरगम यथा—ध ध़ प म प म ग रे सा सा रे ग म ध प म ग पम ग रे सा रे सा। ग ग म म प प नी ध सा. रे सा ग रे सा. ध नी सा. ग रे सा नी ध प म ध प म ग प म गरे सा ध ध प म ग रे सा।

ध प म प मगरेसा रेगरेसा रेधप धपमग पमग गरसा
ध्रुवपद यथा—आज वन बांसुरी बजाई, लेत सूधी सूधो तान।

गमपधनीसनीसा र ग रे सा नीधप मगरे ध प म ग रे सा
बांसुरीकी धुन सुन के मेरी सुध बिसराई।

यहां 'धुन सुन' ये पद तृतीय सप्तकके स्वरों पर हैं।

यह रामकली धुरपतियोंकी है।

खयालियों की रामकली

खयालियोंकी रामकलीमें ऋषभ मध्यम धैवत ये उतरे और गंधार निषाद ये चढ़े लगतेहैं यही विशेष भेद है और इसके आरोहमें कभी कभी ऋषभ छूट भी जाताहै।

मी१ स मी१
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डा डाड़ा।
५ ५ ६ ७ ९ ८ ५ ६ ७ ९ ९ १० ११
८ ९

दोनों ही रामकलियोंमें गंधार तथा धैवत प्रधान है। इस धुरपतिये और खयालियोंके परस्पर भेदको जाननेवाले बहुत कम लोग हैं।

१० अथ सिंधभैरवी

सिंधभैरवी संपूर्ण रागिनी है भैरवीकी अपेक्षा इसमें यही विशेष है कि इसमें चढ़ा ऋषभ लगता है सो भी कम ही लगता है और सभ भैरवीके तुल्य है। इसमें चढ़ा ऋषभ ऐसी रीतिसे लगाना चाहिये जो इसका स्वरूप बिगड़ न जाय।

स सू का
गत—डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।
१६ ९ १० ९ ९ ११ १० १३ ११ १३ ११ ११ १३ १० १३ १३ १६ १६
९ १० ११ १५ ०
११

सू का

तोड़ा—डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा ॥१॥

१५ ० १६१३ १६ १२११ १३११३ १० १३ १३ १६१६
६१० ११ १५ ०
११

मैंने यहां सूर्योदय से लेकर दोपहर तककी 'आसावरी खट २ गंधारी गूजरी जौनपुरी३ टोड़ी३ देशी२ भैरवी रामकली२ सिंध-भैरवी' ये दस रागिनी लिखोहैं इनके सिवाय इस समयकी वंगाली सैंधवी प्रभृति कुछ और भी रागिनी हैं उनको यहां नहीं लिखा। वंगाली भैरवीके ठाठ पर बजतीहै सैंधवीमें निषाद चढ़ा लगताहै और सब स्वर उतरे लगतेहैं। जहाँपर उतरे वा चढ़े सब स्वर लिखे जातेहैं वहाँ षड्ज और पंचम विना सब स्वर जानने क्योंकि षड्ज पंचम ये दो स्वर एकरूप ही रहतेहैं चढ़ते उतरते नहीं।

———

अब मैं दोघंटा सूर्योदयानंतरसे मध्यान्हके बारहबजेतककी कुछ रागिनियोंको अकारादिक्रमसे लिखता हूं। शीतकालमें इन रागिनियोंको लोग दुपहरके एकबजेतक भी गाबजा लेतेहैं। इस समय की जो रागिनिये हैं वे विशेषकर विलावलके ही भेद हैं।

१ अथ अल्हैया

अल्हैया संपूर्ण रागिनी है और विलावलका ही एक भेद है। इसको अल्हैयाविलावल भी कहतेहैं। इसमें मध्यम उतरा लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। यह बहुत सीधीसी रागिनी है। इसमें 'म प ध नी सा रे नी सा' यह तान बहुत उत्कृष्ट है।

सरगम यथा—ध नी ध प म गग रे सा. सारे प ध नी ध प म गरे सा। गम प ध नीसा रेसा गरे सा प म गरे सा म प ध नी सा रे नी सा। गग रेरे सा ग म गरेसा सा रे ग म प प प म पध ग म प ध नी म प ध नी सा रे ग म प ध नीसा रें नी सा, इत्यादि।

गत—डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।
११ १० ९८ ६ ५ ४ ३ ३४५ ३ ४ ५ ६ ८

तोड़ा—डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।
१ २ ३४ ५ ६ ८९ १० ९ ८ ९ १० ११

२ अथ कुकव

कुकव भी सम्पूर्ण रागिनी है इसमें भी अल्हैयाके तुल्य एक मध्यम ही उतरा लगताहै, और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। यह कुछ अप्रसिद्धसी रागिनी है इसमें ज्यादा फैलना कठिन ही है। अवरोहमें उतरे निषादका भी स्पर्श है।

सरगम यथा—म ग रे गरे सा सा रे ग म प म ग रे सा। सा नी ध प म प म ग रे सा नी सा प म ग ध प म नीध प म गरे सा नी ध सारे ग म, इत्यादि।

प म ग रे सा नि ध मधसा रे ग म ग रे ग म
पद यथा—री हौं ढूँढन को कित जाऊँ।
ग प नीसा प म ग रे नीसा प म मपमगरे
प्रीतम प्यारे प्राण नाथ को कौन ठौर हौं पाऊँ।

३ अथ गुनकरी

गुनकरी षाडव रागिनी है इसमें मध्यम वर्जित है और

स्वर चढ़े लगतेहैं। कोई लोग इसे गुनकली भी कहतेहैं। यह भी विलावलका भेद है। यह गंधारपर पंचमकी और पंचमपर धैवतकी मींडको तथा षड्जसे पंचमतककी सूतको बहुत चाहती है, पंचमसे धैवतका स्पर्श कर गंधारपर आना इसे भी बहुत चाहतीहै।

३

सरगम यथा–सा-प प ध प ग रे सा सा ग प प ग रे सा। ग ग प ध प गरे सा ग प सा नी ध प ग रे सा सा ग प प ग प नी सा ग रे सा रे सा ध नी सा ध सा ग रे सा नी ध प ग ध प ग प ग प ग रे ग गरे सा, इत्यादि।

मी१ स मी१-२ मी१ मी१

गत—डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा

२ ३ ४ ५ ५ ७ ६ ६ ९ ६ ७ ५ ७ ९ १०११

६

मी१ मींपंचम

डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा। इसका ताल इकताला है।

१२ ९ ९ १० १२ १० ११

४ अथ देवगिरी

देवगिरी संपूर्ण रागिनी है यह भी विलावलका एक भेद है। यह शांत रागिनी है। इसके आरोहमें प्राय: ऋषभको छोड़ देतेहैं। इसमें मध्यम उत्तरा लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं।

सरगम यथा—सा रे सा सा नी ध सा सा ग रे सा ग म ग रे ग रे सा सा सा रे ग म प पम गरे ग रे सा। ग ग म म प ध नी ध प म ग रे सा नी ध नी सा ध सा ग रे सा। ग ग म प ध सा रे सा ग म प प म ग रे सा ग रे सा सा नी ध प ध धप प म प प म ग म म गरे सा ग रे सा।

म प

स

गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा
११ १२ १४ १२ ११ ९ १० ९ १० ११ १२ ११ १० ११

ड़ा ॥१॥
१२

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा
१२ ११ १० ९ ९ १० ९ ६ ८ ९ १०

डा ड़ा ॥१॥
११ १२

५ अथ देवसाग

देवसाग षाडव रागपुत्र है क्योंकि इसमें धैवत वर्जित है। इसमें ऋषभ चढ़ा लगताहै और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं। सितारमें यह काफीके ठाठपर बजायाजाताहै। यह राग सूहा और सारंग इनदोको मिलाकर बनायागया प्रतीत होताहै क्योंकि इसकी कुछ चाल सूहेके सदृशहै, सारंगमें गंधार नहीं यह गंधार को विशेष चाहताहै यही इसका सारंगसे विशेष भेद है। इसके आरोहमें ऋषभको और अवरोहमें गंधारको प्रायः छोड़देतेहैं।

सरगम यथा—सा नी रे सा नी नी प नी सा ग ग म प प म म रे सा। रे सा रे नी सा प नी प म प प नी म प ग ग म ग म प म रेसा गगरेसा। म प नी सा रे सा गग रे सा नी प म ग म प नी प स म ग रे सा, इत्यादि।

गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा॥१॥
१०११ १३ ११ १३ १६ १३११९ ९ ८ ६ ९ ८ १० ११

६ अथ लच्छासाग

लच्छासाग संपूर्ण रागिनी है कोईलोग इसको लच्छासार भी कहतेहैं यह भी एक विलावल ही है, इसमें मध्यम उतरा लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। इसमें 'नी प ध म प म' यह तान बहुत खपती और आवश्यक है।

सरगम यथा—सा रे ग म प ध नीप धम पम गरे सा प म ग रे सा। ग ग प प धनी सा रे सा नीध पम ग रेसा सा रे ग म प म ग रे ग म. सा रे सा ग रेसा नी ध प म पम गरे सा, १
सा रे ग म प ध नीप धम पम म ग रे सा प म ग रे सा।
सा रे ग म प सा नीध नीप धम पम ग रे सा, २ इत्यादि।

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥
११ ११ १० ९ ८ ६ ५ ४ ६ ५ ८ ६ ८ ९ १० ११

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥
९ ६ ५ ४ ३ ३ २ ३ ५ ४ ६ ८ ९ १० ११

७ अथ विलावल शुद्ध

इसमें ऋषभ गंधार धैवत निषाद ये चढ़े लगतेहैं, मध्यम दोनों प्रकारके लगतेहैं किन्तु बहुत अल्प सो भी अवरोहमें ही, दोनों मध्यमोंको एकबेर नहीं लगाना, अवरोहमें तनिकसा उतरा मध्यम लगाते रहना चाहिये जो इसका स्वरूप स्पष्ट होतारहे। आरोहमें चढ़े मध्यम और निषादका शुद्धकल्याणके तुल्य स्पर्शमात्र है, चढ़े मध्यमपर पंचमकी और चढ़े निषादपर षड्जकी मींड़ इसमें अवश्य देनीचाहिये बस आरोहमें इतने ही मध्यम निषादकी

इसमें अपेक्षा है, कोईलोग चढ़े मध्यमसे निषाद वा षड्ज पर चले भी जातेहैं। निषाद तो अवरोहमें भी स्पष्ट नहीं। यह रागिनी अवरोहमें ऋषभपर गांधारकी मींड़को बहुत चाहतीहै। यह संपूर्ण रागिनी है कई रागिनियोंसे हाथ मिला बैठतीहै इससे बड़ी कड़ी है।

सरगम यथा—ध सासा सारे सा गरे ग म गरे सारे सा सा गम ग प नी धध पम गगग रेरे सा। ग प ध सा ससरे सा धध सा रे सा नी ध प म गग रे ग म गरेसा, इत्यादि।

सा रे ग ग रे सा रे ग म प म ग रे सा रे ग म प ग रे सा स ग म

ध्रुवपद यथा—वरन वरन पहिरें चीर यमुनाके तीर गोविंद

३

नी ध प म ग ग म ग ग रे सा म म प स रे स ग रे स नी ध ध म ग ग प ध नी स

ग्वाल लिएँ संग भीर। तैसोई वहत नीर तरंगन तैसीय

नी रे सा नी ध पप म ग रे ग म ग रे सा ग ग रे सा

सुवास अरगजा सीरी लागत समीर ॥१॥

गानेकी अपेक्षा इसका बजाना कुछ कठिन है। शुद्ध कल्याण और गौड़सारंगप्रभृतिसे बचानेका ध्यान रखनाचाहिये।

मी१ मी१ मी२ मी१ मी२ मी१

गत—डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।

१२ ६ ७ ५ ५ ५ ५ ६ ८ ८ १० १० ११

मी१ मी२ मी१ मी१ मी१

तोड़ा—डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥१॥

८ ८ ६ ५ ५ ३ ४ ५ ६ ९ ८ १० १० ११

८ अथ शुकल

यह भी एक विलावल ही है इसमें मध्यम उतरा और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। इसमें ऋषभ कम लगताहै। और इसके आरोहमें निषाद चढ़ा लगताहै और अवरोहमें उतरा यही इसमें विशेष है।

सरगम यथा–म ग सा रे ग म ग रे सा सा ग रे सा। सा नी ध प
२
प ध नी ध प म ग प म ग रे सा। म प ध प म धनी सा रे सा नी ध प म ग, इत्यादि।

(इसमें जहाँ २ दोका अंक दियाहै वहाँसे अंतरेके स्वर द्वितीयसप्तकके जानने)

स गमक मी१
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा।
८ ६ १० ११ ६ ८ ६ ८ ६ ६ ६ १०
मी नी
तोड़ा–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडा।
१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ ६ ५ ४ ५ ६ ८

९ अथ सुघरई

सुघरई संपूर्ण रागिनी है यह कान्हड़ा सूहा सारंग इनके मेलसे बनी प्रतीत होतीहै, इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं। धैवत इसमें बहुत कम लगताहै यह एक उत्तम रागिनी है। मध्यमसे ऋषभतककी सूतको बहुत चाहतीहै। अर्थात् सूतसे मध्यमसे ऋषभपर जाकर फिर मध्यमपर ही आजाना चाहिये आरोहमें यही सूत इसको सूहेसे बचातीहै अवरोहमें कान्हड़ेकी तान सूहेसे बचातीहै।

मी२ मी१ मी२ मी२ मी१ मी॥
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥
६ ६ ८ ९ ८ ६ ६ ६ ८ ८ ६ ९ ८ १० ११
मी१ मी२ मी२ मी१
तोड़ा–डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥
३ ४ ३ ६ ६ ८ ६ ९ ८ ६ ६ ८ ९ ९ १० ११

सरगम यथा–रेरे ग म प प म प ध प प म प ग म ध म प ग म गरे सा (कभी ग म रे सा) म प धनी सा सारे सा गरे सा म प म गरेसा नीनी ध प म प धनी रेसा नीध पम गरे सा ॥१॥

सारे मरे मप मप धप मप गम धप मप गम रेसा।

३
मप नी पनी सारेसारे नी सा नीप मप नीसा पनी प म प ग मरे सा २

यह दूसरी सरगम बहुत ही उत्तम है अमृतसेनजीके शागिरद अमीरखांजीकी बनाई है।

१० अथ सूहा

सूहाको भी सुघरईके तुल्य ही जानना हां इसकी चाल पृथक् (खड़ो) है इसमें (म रे म) (ग म रे सा) ये तानें नहीं हैं। इसमें धैवत नहीं लगता ऐसा भी मत है।

सरगम यथा–सारेसा गग रे सा नीनी धप नी सा गग पम पम गग रेसा। नीनी सा गप मप गग मप नीनी मप धम गरे सा रेसा।

गम प ध सा नीरेसा नी ध प प मम ध प मम प मम गग रे सा।

मी१ स मी१ मी१
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा।
६ ८ ६ ९ ९ ८ ६ ९ ९ ९ ९ १० ११ १० ११

मी१ मी१
तोड़ा-डिड़डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा ।
९ ८ ६ ३ ४ ३ ६ ६ ८ ६ ८ ९ १०११

सूहा सुघरई दोनों ही गंधार मध्यम पंचम इनपर एक एक स्वर की मींडको बहुत चाहतेहैं ।

मैंने यहाँ दोघंटा दिन चढ़ेसे दुपहरतककी 'अल्हैया कुकब गुनकरी देवगिरी देवसाग लच्छासाग विलावल शुकल सुघरई सूहा' ये दश रागिनी लिखी हैं इनके सिवाय इस समयकी पूर्वी प्रभृति कुछ और भी रागिनी हैं ।

अब दिनके एकबजेसे लेकर दिनके चारबजे तककी कुछ रागिनियोंको अकारादि क्रमसे लिखताहूँ, ग्रीष्मकालमें दिन बड़ा होनेके कारण पांचबजेतक भी इनका गानाबजाना होसकताहै क्योंकि रागरागिनियोंका समय सूर्यके हिसाबसे है ।

१ अथ धानी

धानी रागिनी संपूर्ण है इसमें ऋषभ धैवत चढ़े लगतेहैं और गंधार मध्यम उतरे लगतेहैं, प्रथमसप्तकका निषाद चढ़ा लगताहै और द्वितीय तृतीयसप्तकका निषाद उतरा लगता है सोरठके तुल्य।

सरगम यथा-स गग म प नी पनी सा सा रे सा गरेसा गग मम पप नीसा नी पम गम प गमपनी सा गरे सा नी ध प गम गरे सा ।

स
गत-डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डा डाड़ा ।
१० ११११२ ११ ९ ११ ९ ८ ६ ६ ९ ८

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा डा डा ड़ा डाडिड़ डा डाड़ा॥१॥
८ ६ ४ ३ १ २ ३ २ ३ ४ ५ ६ ९ ८

इसके अवरोहमें 'प ग म ग रे सा' इस प्रकारसे चलना चाहिए। आरोहमें ऋषभ धैवत वर्जित हैं।

२ अथ भीमपलासी

भीमपलासी संपूर्ण रागिनी है इसमें सबी स्वर उतरे लगतेहैं इसके आरोहमें ऋषभ धैवत छूट ही जातेहैं अवरोहमें लगतेहैं अवश्य किन्तु अल्पही। गंधार पंचम निषाद ये इसमें प्रधान हैं। यह गंधारपर मध्यम तथा पंचमकी और पंचमपर निषादकी मींडको बहुत चाहतीहै। इसके अवरोहमें चढ़े ऋषभकी भी छूतछात ज़रासी होजातीहै। अवरोहमें ऋषभपर गंधारको मींडना चाहिए। यह बहुत प्रसिद्ध रागिनी है।

सरगम यथा—नी नी सा सा ग म प म ग रे सा। नी नी सा नी ध प प सा ग सा ग म प म ग म प सा नी ध प म ग रे सा। म प ध प म ग म सा सा नीनी ध प म ग म ग ग रे सा नी सा। ग म प ग म प नी प नी सा ग रे सा नी ध प म ग रे सा म ग रे सा इत्यादि।

स
गत—डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा
१६ ६ ८ ६ ९ ८ ६ ४ ३ ४ ५ ६ ८ ६
(मम)

तोड़ा—डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा
१३ ४ ९ १ २ ३ ४ ५ ६ ८ ९ १० ११ ९ ८ ६
३ ६ ११

३ अथ मुलतानी

मुलतानी संपूर्ण रागिनी है इसमें ऋषभ गंधार धैवत ये उतरे और मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं यही इसका भीमपलासीसे भेद है और सब बात भीमपलासीके तुल्य है ये दोनों रागिनियें बहुत उत्तम हैं। यह सितारमें टोड़ीके ठाठपर बजती है।

सरगम यथा—म प ध प म गरे सा, नीनी सा गम पध प म ग म प नी सा नी ध प म गरे सा ग नी सा प नी सा। गम पम गम पनी सा नीसा रेसा नी ध प म नी धनी प ध प म गम गरे सा, इत्यादि।

स मी१

गत—डाडा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा।

४ ३ २ २ ४ ५ ६ ७ ९ ७ ६ ७ ९ १०११

तोड़ा—डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा

६ ४ ९ ७ ६ / ७ ६ ९ ६ ७ ९ १०११

यह मुलतानी धुरपतियोंकी है, ख़यालियोंकी मुलतानीमें गंधार चढ़ा लगताहै यही विशेष है और सब इसीके तुल्य है।

४ अथ सिंधूरा

सिंधूरा संपूर्ण रागपुत्र है इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं। इसके आरोहमें गंधार और धैवत वर्जित हैं।

सरगम यथा—सा नी सा रे मप ध प म प नी सानी ध पम गरे सा। ममप ध प पम गरे सा, सा नी ध प नी सा, रे मपप ध प मम प नी सा रेसा म गरे सा गरेसा नीसा सानी ध पम [illegible]म गरे म गरे सा।

स मी१
गत–डाडा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा।
४ ३ २ ३ ४ ५ ६ ९ ८ ६ ८ ९ १० ११
तोड़ा–डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा
१३ ११ १० ८ ६ ४ ३ २ ३ ४ ५ ६ ८ ९ १० ११

मेरे पास गतें अद्वितीय बड़ी बड़ी भारी हैं किन्तु उनका यहाँ लिखना व्यर्थ है क्योंकि बिना सीखे वाँचनेमात्रसे वे हाथसे निकल नहीं सकतीं।

मैंने यहाँ दिनके एकबजेसे लेकर चारपाँच बजे तककी 'धानी भीमपलासी मुलतानी २ सिंधूरा' ये चार राग रागिनी लिखी हैं इनके सिवाय इससमयकी एक दो और भी हैं। अमृतमंजरीमें ऋषभ धैवत नहीं लगते गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगते हैं भीमपलासीके तुल्य है। अपने उस्ताद मीयां अमृतसेनजीके नामपर मैंने ही इसकी कल्पना कीहै।

अब मैं दिनके तीनबजेसे सूर्यास्तके समयतककी कुछ रागिनियोंको अकारादिक्रमसे लिखताहूँ। पीलूके सिवा इन और सब रागिनियों को परज और सोहनीसे बचानेका यत्न करना चाहिये। 'सारेसा' इत्यादि तान लेनेसे इनमें परज तथा सोहनी आकूदतीहै।

१ अथ गौरी

गौरी रागिनी संपूर्ण है इसमें ऋषभ धैवत उतरे लगतेहैं और गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं। इसके आरोहमें ऋषभको नियमेन छोड़ देतेहैं कभी कभी पंचमको या धैवतको भी छोड़देते

हैं। यह रागिनी अताइयोंमें बहुत प्रसिद्ध है। प्रायः लोग इसे चारबजेके अनंतर ही गाते बजातेहैं।

सरगम यथा—सा रे नी सा ग म प म प म गरे सा नी सा गरे सा। गग मप ध मपध म ध नी सा गरेसा नी ध प म ग गम प नी ध प म गरे सा।

स
गत—डा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा ड़ा डा ड़ा डा ड़ा।
१० १२ ११ ८ ७ ६ ७ ९ १० ११ १० १२ ११ ९ १० ११

११
तोड़ा—डा डिड़ डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाड़ा डाड़ा डाड़ा ॥१॥
९ ७ ६ ६ ५ ७ ६ ५ ७ ७ ९ ९ १० १०
६ ६ ७ ९

२ अथ जयश्री

जयश्रीको आजकल्ह कोई लोग जैतश्री तथा जैतसिरी भी कहतेहैं। यह रागिनी बहुत उत्तम तथा कुछ अप्रसिद्धसी है और कठिन भी है इसमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार निषाद चढ़े लगतेहैं। कोई उस्ताद कहतेहैं कि इसमें मध्यम वर्जितहै इससे यह षाडव रागिनीहै, कोई उस्ताद कहतेहैं कि इसमें चढ़ा मध्यम थोड़ा लगता है इससे यह संपूर्ण रागिनी है। इसके आरोहमें ऋषभ धैवत नहीं लगते मध्यम भी प्रायः नहीं लगता। यह गंधारपर पंचमकी और पंचमपर धैवतकी मींडको बहुत चाहतीहै।

सरगम यथा—प धध ग रे सा प ध नी सा। सा ग प धध गरे सा ग प धध पम गरे सा। म प नी सा नी ध प म गप धप म गरे सा। गम पम गसा ग प धध प म गरे सा इत्यादि। यह संपूर्ण मतकी सरगमहै। अवरोह में धैवत निषाद अल्पहैं।

म ध ३ ग र स प ध मसगपध ३ प म ग र स गपपध ३ गरेसा

पद यथा—माई आवत लाड़ गहेली कमल फिरावत ॥ १ ॥

(इसपदपर जहाँ जहाँ (ध ३) यह चिह्नहै वहाँ वहाँ धैवतकी तीन तीन लचकहैं)

मी१ मी१ मी२

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ।१।

१२ ११ ९ १० ९ ६ ७ ५ ६ ६ ५ ७ ९ ९ ९ ११

६

३ अथ तिरवन

तिरवनमे ऋषभ धैवत उतरे और गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं । यह ऋषभको बहुत चाहतीहै, इसमें पंचम बहुत ही कम लगताहै । एकप्रकारसे वर्जित के तुल्य ही है । अवरोहमें गंधार वर्जितहै इसमें मध्यमसे इकदम ऋषभपर आना चाहिये यही तान इसकी प्राण है । यह श्रीराग और गूजरीके मेलसे बनी प्रतीत होतीहै ।

सरगम यथा—म रेरे गरे सा नीसा रे ग रे सा मरे ग रेरे सा रे । प ध नी रे सा नी ध प म रे सा म प रे गरे सा । मम रे नी सा म रेसा पसा रेसा गरेसा मप ध म ध नीसा नी ध म ध म ध पम रे सा रे ॥

मी१ सू मी१ मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डा डा ड़ा ॥१॥

१० ११ ७ ७ १० १० १० १०१०१२ १० १० १० १० ११

११ ११ ७

मी१ मी१ मी२ मी१ मी१ मी१ मी१

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

२ २ ४ ५ ५ ७ ७ ९ ९ १० १० १२१२ १०१०१०

३ १० ११

४ अथ धनाश्री

लोग इसे धनासिरी भी कहतेहैं यह संपूर्ण रागिनी है। धनाश्रीका पंजाबमें अधिक प्रचार है किंतु कुछ मनमाना ही गाते बजाते हैं वस्तुगत्या पंजाब का उत्कृष्ट गानाबजाना भी अताइयोंके तुल्य ही है।

धनाश्रीमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं। इसके आरोहमें ऋषभ धैवत वर्जित हैं अत एव इसकी चाल मुलतानीके तुल्य है।

सरगम यथा—नी सा नी रेसा गग मप म गरेसा सागमप नी सा नी सा नी ध प म गरे सा। गग मम प ध पम गरे सा। नीनी सा रेसा गरेसा नीधपम पध पमग पमग रेसा, इत्यादि।

स
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाड़ा डाड़ा डाड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा ॥१॥
६ ७ ९ १०११ १११२ ११ ९ १०११ १० १२ ११ ९ ७

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाड़ा डाड़ा डाड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा ॥१॥
६ ७ ९ १०११ ६ ७ ६ ४ ५ ६ १० १२ ११ ९ ७

५ अथ पीलू

पीलूको अताईलोग ही विशेषकर गाते बजातेहैं वस्तुगत्या पीलूमें गज़ल ठुमरीको ही विशेष गाते हैं ख़याल वा ध्रुपतका इसमें प्रचार नहीं, इसीकारण इसके स्वरोंका पूर्ण कुछ नियम नहीं सबीप्रकारके स्वरोंको इसमें लगादेतेहैं, अताइयोंमें यह बहुत प्रसिद्ध है। मथुराके मृत सेठ सी. आई. ई. राजा लक्ष्मणदासजीको यह बहुत प्रिय था। इसमें ऋषभ चढ़ा ही विशेष लगताहै किंतु उतरे ऋषभकी भी छूतछात है, गंधार धैवत उतरे हीहैं, निषाद चढ़ा है। मध्यम

दोनों प्रकार का लगताहै यह गतमें स्पष्ट है। धैवत इसमें बहुत ही कम लगताहै, मध्यम भी कम लगताहै, निषाद और गंधार इसके प्राण हैं। सितारमें यह काट कतर ही ज्यादा चाहताहै। लोग इसे रात्रिमें भी गातेबजातेहैं।

सरगम यथा–रे सा नी नी सा रे गा रेसा सानी पध् प मूप नी सा। गरे गम् सा नी सारे गग रे सा नी धपसा नी पनी सा। मप नीसा नी सा रे ग गम गरे सा नी पध पम गरे सा नी सारे ग गरे सा नीनी सारे सा, इत्यादि।

स
गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा
१० १६ १७१६ १२ १२ ११ १२ १० ११ १२ ९ १० १२ १०
११ १५ ११ ११ ११ ११ ११
१२ १०
९

६ अथ पूरवी

पूरवी संपूर्ण रागिनी है इसमें ऋषभ उतरा लगताहै, गंधार धैवत निषाद ये चढ़े लगतेहैं, मध्यम दोनोंही लगते हैं उनमेंसे चढ़ा मध्यम अधिक लगताहै और आरोहावरोह दोनोंमें स्पष्ट लगताहै, उतरा मध्यम अवरोहमें 'ग म ग' इसीप्रकार अल्पसा लगता है। यह रागिनी बहुत ही उत्तम तथा सुकुमार और खूब फैलकर गाने बजाने योग्य है। चतुर्थ प्रहरकी रागरागिनियोंमें यह सर्वोत्कृष्ट है, लोग इसे घड़ीभर रात्रि जाते तक भी गाबजा लेतेहैं। इसके आरोहमें कभी कभी ऋषभ तथा पंचमको छोड़ भी देतेहैं। यह धुरपतियोंकी पूरवी का वृत्तांत है, यह पूर्व देशमें उत्पन्न होनेसे

पूरवी कहातीहै इसीसे संस्कृतके संगीत ग्रंथोंमें इन रागोंको देशी राग कहाहै।

मी १

गत–डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा।

१० १० १२ ११ १० ९ ८ ९ ६ ७ ९ १०१०११
११

मी १

तोड़ा–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा॥१॥

९ ७ ५ ४ ३ २ ३ ४ ५ ६ ७ ६ ९ ९ १० ११
६

सरगम यथा–ममम गगरे गमध मगरे सा। सा नी गरे गम ग मम गग रेरे गमप मध नी रे नीरे सा नी धप म गरे सा। म ध प ग म ध मम सा रेसा गरेसा ग मप म गरे सा। नी ध प म म ध म पम गरे सा। म ध म ग म प ध नी सा नी ध प म ग म गरे सा, इत्यादि।

७ अथ पूरियाधनाश्री

पूरियाधनाश्री संपूर्ण रागिनी है, यह बड़ी कड़ी रागिनी है। इसको उत्तमरीतिसे गाना बजाना प्रत्येक कारीगरका भी काम नहीं। इसमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगते हैं, इसके आरोहमें पंचम निषाद बहुत कम लगतेहैं, यह गंधार पर पंचम मध्यमकी मींडको ज्यादा चाहतीहै। मानों वसंत की बहिन है।

सरगम यथा–नी ध ध प मम गरे ग प म धध प म गरे सा। नीसा रे ग म प गग मम प म ध सा नीसा नी रेसा गरे सा नी ध नीसा नी धध प म गम गप म गरे सा। ग मम ध सा गरे सा नी धसा नी ध प म गरे सा॥

ध प म ग रे सा रे ग म धसा धसा नि ध प म ग रे ग रे सा

पद यथा—इन बतियां प्रण प्रिया की कीनी ।

ग म ध म ध सा नि ध प ध प ध प म गरे सा रे ग गम ध धसानीधम ध प गरे गरेसा

श्रवण परत जिन हिय हुलसायो दुख खोयो रस भीनी ॥

यह पद मेरे बनाए अनर्घनलचरित्र नाटकका है, इसमें तानें मीयाँ अमीरखाँजीने रक्खीहैं । इसकी गतें बहुत टेढ़ी हैं ।

मीर मीर मीर मीर

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥

९ ९ ९ १० ११ ११ १०९ ९ ९ ७ ७ ९ ९१०११

मी१ मीर

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ।

९ ७ ५ ५ ३ १ २ ३ ६ ५ ६ ७ ९१०११

१०

९

८ अथ मारवा

मारवेमें पंचम वर्जित होनेसे यह षाडव रागपुत्रहै । इसमें एक ऋषभ उतरा लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं. इसके आरोहमें षड्जको छोड़ देतेहैं । यद्यपि अताइयोंमें यह प्रचलित नहीं तथापि इसके गाने बजानेमें विशेष क्लेश नहीं ।

सरगम यथा—मध मध म गरे सा, रे सा नी ध म मध नी सा । नीरे गम गम ध म ध नी सा नी गरे सा नी ध म गरे सा । गग मम धध मध सा नी रेसा नीरे ग म ध म गम म गरे सा, इत्यादि ।

स

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा ।१।

५ ७ ५ ७ ९ १० ९ ७ ९ १० ११

तोड़ा-

डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ।१।
१० १२ १४ १७ १४ १२ १० ९ ७ ५ ४ ५ ७ ८ १० ११
३

यह गत मेरी ही बनाईहै सीधी है।

९ अथ मालश्री

आजकल्ह कोई लोग इसे मालसिरी भी कहतेहैं, इसमें ऋषभ वर्जित होनेसे यह षाडव रागिनी है यही इसका जयश्रीसे विशेष भेद है। इसमें धैवत उतराहै, गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं, कोई उस्ताद लोग कहते हैं कि इसमें धैवत भी चढ़ा ही लगताहै, असलमें धैवत उतरा ही लगाना चाहिये ऐसा ही मीयाँ श्री अमृतसेनजीने बतायाहै।

सरगम यथा-गस स सा नी सा ग म प ध ध म ग सा। गम गप म म धप धप म ग मग सा। गग म ध प म प ध नी सा ग सा नी ध प म ग मग सा। पप धध मम ग गम धप सा गसा नी ध प म ध म ग सा॥

मीर मीरमीर
गत-डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा॥
१२ ११ ९ ९ ६ ७ ५ ६ ५ ६ ७ ९ ९ ९ ११
सा गम् पध पमग सागपधप गप गसा

पद यथा-अखियाँ काहू की काहू सों ना लगें।
गप धसागस पध पगसा निसगप गपधपधगपगस
मिल बिछुरे ते दोष दूनों निसदिन सोवें न जगें॥ १॥

१० अथ मालीगौरा

यह संपूर्ण रागपुत्रहै इसमे ऋषभ उतराहै, प्रथमसप्तकका धैवत चढ़ा लगताहै और द्वितीय तृतीय सप्तकका धैवत उतरा लगताहै, गंधार मध्यम निषाद ये चढ़े लगतेहैं। यह प्रायः अप्रसिद्ध राग है। इसके आरोहमें पंचम नही।

तो तो

सरगम यथा—सा नी रे सा नी ध प म ध नी रे सा। सा रे ग म ध नी सा रे नी सा गरे सा नी ध प म गरे सा। गग मम धसा नीध पम धम ग मग रे सा। पम धम ग ध पम सा नीरे सा नी धप म धम गरे सा।

स

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डा डाड़ा डा डिड़ डा डाड़ा ॥१॥
११ १२ १० १२१४ १६ १७ १४ १२ १० १० ११

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।१।
७ ९ १० ११ १७ १४ १२१०९ ७ ५ ७ ९ १० ११

११ अथ वराड़ी

वराड़ी रागिनी संपूर्ण है, लोग इसे टोड़ीका भेद कहतेहैं, इसमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार मध्यम निषाद ये चढे लगतेहैं, कोई उस्ताद कहतेहैं कि इसमें उतरा भी मध्यम लगताहै उसका यह प्रकार है कि किसी अंतरेके आरंभमें उतरा मध्यम लगाकर ऋषभपर आजाना चाहिए। इसमें ऋषभ प्रधान है। इसके आरोहमें प्रायः गंधारको छोड़देतेहैं और कभी पंचमको कभी धैवतको कभी निषाद को भी आरोहमें छोड़देतेहैं अर्थात् कभी 'म ध सा' कभी 'म प ध

सा' कभी 'म ध नी सा' इसप्रकार बढ़ना चाहिये। यह श्रीराग और टोडोके मेलसे बनी प्रतीत होतीहै।

सरगम यथा—नीनी रे ग रेरे सा नीनी रेरे मप धम प म गरे सा नी रे। मरे पम गरे सा प ध नी सा रे सा रे नी सारे गरे सा। गग मम सा नीरे सा सारे गरे सा नी ध प धध म पमगरे पम ध पम रे पम गरे सा।

मी१ मी१
गत—डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडा ड़ा ॥१॥
१० १० ७ ७१० ६१०११ ११ १२ १२ ११११०१०१०११
रे नी रे स-ग२ नी ध प म रे रे-ग ७

पद यथा—पी मन ले काहे रिसा ने।

मको रे सा रे प ध नी सा रे स रे सा रे सां रे-ग स रे-ग २सारे
प्रेम सागर तुम कोमल होके कौन हेतु निठुराने।

अंतरेका 'कौन' पद द्वितीयसप्तकके रे सा पर है। यह रागिनी बहुत उत्तम है ऋषभपर गंधारके झटकेको बहुत चाहती है।

१२ अथ श्रीराग

श्रीराग छः रागोंमेंसे एक राग है संपूर्णहै, इसमें ऋषभ धैवत उतरे गंधार निषाद चढ़े और मध्यम दोनों लगतेहैं किंतु विशेषकर चढ़ाही मध्यम लगताहै उतरा मध्यम इसमें लगाना कुछ चातुर्यका काम है नहीं तो राग बिगड़ जाएगा। इसके आरोहमें गंधार धैवत वर्जित हैं तो भी उस्ताद लोग कभी कभी आरोहमें पंचमको छोड़ धैवतको लगा भी देतेहैं। इसमें ऋषभ प्रधान है। इसमें ऋषभसे ऋषभ पर ऋषभसे मध्यम पंचमपर मध्यमसे पंचमसे ऋषभपर

यथायोग्य आना जाना चाहिये। इसरागको सरोवरादि जलाशयके तटपर गाने बजानेसे कुछ अधिक चमत्कार होताहै ऐसा उस्तादसे सुनाहै।

सरगम यथा—नी सा रे प गरे रे गरे सा। रे मप नी धप गम मग रेरे गरे सा। रेरे म प गरेप मप धप नी सा रेरे सा नीरे सा ग रेरे सा। नी. ध पप म गरे सा। सा रे ग ररे प मम ध पप नीनी रे सा रे—रे गरे सा।

स मी१
गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।
६ ७ ९ १० ११ १० ६ ६ ७ ६ ६ ७ ९ १० ११

मी१ मी१
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।१।
२ ३ ४ ५ ५ ७ २ २ १० १२ १० १० १० १० ११
६

सैनियोंके स्वरसागरमें श्रीरागकी देवता पृथ्वी. पटरानी गौरी. हरितवर्ण है ऐसा कहाहै, यथा—

"गौरी गौरा नार, नीलावती विहागरो।
विजयंतीसो प्यार, षटी गिनलै पूरिया॥
गौरीसुत कल्याण अहीरी वाकी नारी।
गौरासुत है गौर टंक वाकी अधिकारी॥
तनैना नीलापुत्र सिवाड़ा वाकी कहिये।
सुत विहागकौ हेम विहंगम वाकै रहिये॥
विजयंती सुख खेम (क्षेम) वधू बाल छामावत।
पुत्र पूरिया नाट सांझ भरतार कहावत॥"

इसप्रकार गणेशमतसे श्रीरागका परिवार भी स्वरसागरमें कहाहै।

मैंने यहाँ दिनके तीनबजेसे लेकर सूर्यास्ततककी गौरीसे लेकर श्रीरागपर्यंत ये बारह रागरागिनी लिखेहैं, इनके अतिरिक्त कुछ और भी इससमयकी धवलश्री श्यामकालंगड़ा प्रभृति रागिनी हैं वे यहाँ नहीं लिखीं 'सर्वं दद्यात् कदापि न'। यह भी जान लेना कि विद्या नाशमें क्षति केवल आगेके जिज्ञासुओंकी और देशकी है विद्वानोंकी कुछ क्षति नहीं इसकारणभी विद्वानोंको विद्याप्रदानमें कुछ कार्पण्य होजाताहै।

अब मैं सूर्यास्तके अनंतर दीपक जलनेके कालसे रातके दश बजेतककी कुछ रागिनियोंको अकारादि क्रमसे लिखता हूँ।

१ अथ इमन

इमन संपूर्ण तथा बहुत सीधी रागिनी है इसमें सभी स्वर चढ़े लगतेहैं। इसमें लिखनेयोग्य और विशेष कुछ नहीं चाहे जैसे चलो। कभी कभी आरोहमें षड्ज को छोड़ भी देते हैं, इसमें निषादकी बहुत खपत है।

सरगम यथा–सारे ग म प पम गरेसा नी धप म पप ध नीनी रेसा। सारे गग म पप धनी सा रेसा नीरे सा गरेसा गमप पम गरे सा रे नी सा नीनी ध पप गग पम गरे सा, इत्यादि।

स

गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा ॥१॥

९ १० ११ १२ ११ १० ९ १० ९ ७ ९ ६ ७ ९ १० ११

तोड़ा–डा डिड़ डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा डिड़ डा डिड़ डा डिड़ डा डा ड़ा

१ २ ३ ४ १२ ११ १० ९ ७ ६ ५ ४ ३ ९ १० ११

डा
डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा ॥ १ ॥
९ १० ११ १० ९ ६ ७ ९ ६ ४ ५ ६ ७ १० ११
१२ ९

२ अथ इमनकल्याण

इमनकल्याण संपूर्ण और उत्तम सुकुमार रागिनी है। इसमें मध्यम दोनों लगतेहैं और सब स्वर चढ़े लगतेहैं, आरोहावरोहमें चढ़ा ही मध्यम लगताहै, उतरामध्यम थोड़ासा 'ग म ग' इस प्रकारसे लगताहै। इसका और इमनका केवल उतरे मध्यमसे ही भेद है और कुछ भेद नहीं।

सरगम यथा–सा रे ग म प ध नी ध नी नी ध प ग म ध प म गम गरे सा। गम प ध नी रेसा गरे सा पम गरे सा। गग मप नी धनी सा रेसा गरे गरे सा नी धप नीनी धप म ग पप म गरे सा नी रेसा, इत्यादि।

स
गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा।
४ ५ ७ ५ ६ ९ ८ ९ १० १० ९ ९ ६ ९ १० ११
७ ८ ९

तोड़ा–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ॥१॥
३ ४ ५ ६ १० ९ ६ ५ ४ ५ ६ ७ ९ ९ १० ११
८ ८

प्रधान कल्याणको शुद्ध कल्याण कहतेहैं इस कारण उसे आगे लिखूँगा।

३ अथ कामोद

कामोद संपूर्ण रागिनी है इसमें मध्यम दोनों लगतेहैं और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। चढ़ा मध्यम कम है, और आरोहमें धैवत भी कम है, जरा भी चूकनेसे इसमें छाया आकूदतीहै। अवरोहमें केदारेके तुल्य गंधारपर उतरे मध्यमके दो झटके (मींड) देने चाहिये. गंधारपर उतरामध्यम बुलाकर ऋषभपर आनाचाहिये और ऋषभसे इकदमपंचमपर जानाचाहिये यही इसका तत्त्व है।

ती स

सरगम यथा—सानी रेसा रेरे पप मप ध प म गम् गम् रे सा। सानी ध पप सा रेसा रे प मप सा रे सा नी धप म गम् गम् रे सा। गग रे सा नीरे सा नी ध पप म पम ग प सा नी प सा रे प म गरे सा नी ध पम गम् गरे सा, इत्यादि।

मी१ म मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डा ड़ा।

११ १२ १० १० ६ ९ ८ १० ११ १० ६ ९ १० ११
११

मी१ मी१

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

३ ५ ६ ९ ६ ३ ९ ६ ९ ९ १०
४

४ अथ केदारनट

कोई लोग इसे नटकेदार भी कहतेहैं यह नट और केदाराके संयोगसे बनाहै अत एव इसके आरोहमें ऋषभ नहीं लगता। मध्यम दोनों पूर्वोक्त कामोदके तुल्य लगतेहैं और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। आरोहमें धैवत कम लगताहै। संपूर्ण जाति है।

सरगम यथा—सा नी रेसा गम प ध प मप म गम् गम् गरे सा। स गम पप नी ध प म प ध प म पम गम् गम् रेसा। सा मम प गम पध मप नी पसा गसा रेसा पसा नी धप मप धप मम गम् गम् रे सा।

खरज स नी१

गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।

१६ १७ १४१६ १४ ० १६ ११ ११ ९ ८ ६ ९ १० ११

नी१

तोड़ा–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥

९ ६ ८ ६ ३ ४ २ ३ ४ ५ ६ ८ ६ ९ १० ११

इसगतमें १४ पड़देपर जो (डा) है इसे पीतलके तारोंपर बजाना.

१४

पीतलके तारोंको दूसरीअंगुलि (मध्यमा) से दबाना चाहिये, ऐसा करनेसे यहाँ चढ़ागंधार बोलेगा।

५ अथ केदारा

केदारा संपूर्ण है इसे दीपककी रागिनी कहाहै। इसमें षड्जसे एकदम उतरे मध्यमपर जानाचाहिये यही इसका कामोदसे भेद है और सब कामोदतुल्य जानना। उतरामध्यम इसका प्राण है।

सरगम यथा—प ध प गम पप सा मम गगरे नी ध पप सा। मम गग पध पम गरे सा सारे सा। गगग पप सा गसा पम सा मम पप सा नी धप मम प मरे सा। सा म सा मम पध पनी प सा रेसा मसा नी ध पम ध पम पम गम् गम् रे सा।

मी१ स मी१ मी१ मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा ।

११ १२ १० ११ ८ ११ ८ ६ ६ ६ ६ १०

मी१ मी१ मी१ मी१ मी१

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।।१।।

११ ८ ६ ६ ७ ३ ४ ५ ६ ७ ६ ६ १०

केदारे चारप्रकारके हैं ऐसा लोग कहतेहैं यथासंभव और भेदों को आगे क्रम प्राप्त होनेपर लिखूंगा। मुझे तीन ही केदारे मालूम हैं। लोग इसीकेदारेको चांदनीकेदारा कहतेहैं, यह चंद्र-प्रकाशमें गानेबजानेके योग्य है। मीयां अमृतसेनजीकी केदारेकी एकतान से चंद्रिकामें कुछ अधिक चमत्कार प्रतीत हुआ यह मैं स्वानुभूत लिखताहूँ।

६ अथ खमाच

खमाच संपूर्ण रागिनी है इसमें मध्यम और द्वितीयसप्तकका निषाद ये उतरे लगतेहैं प्रथमसप्तकके निषाद दोनों लगतेहैं और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। इसके आरोहमें ऋषभ नहीं लगता यही इसका सोरठसे विशेष भेद है। यह वेश्याओंमें बहुत प्रसिद्धहै ठुमरीकी रागिनी है, धुरपत इसमें कभी सुना नहीं।

सरगम यथा—गम धप सा नी ध प म गम गरे सा। गग मप धसा नी धप धनी सारे सा गरेसा नीसा धनी पध मप नी धनी पम गरे सा इत्यादि।

स मी१ क

गत—डा ड़ा डा ड़ा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा।

२ ४ ४ ३ ५ ६ २ ४ ५ ६ ८ ६ ८ ८ ६ ५

४ ५ ४ ५

तोड़ा—डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा 'डाड़ा डाड़ा डाड़ा डाड़ा
६ ८ ९ १० ११ ९ ८ ६ ९ ८ ६ ५ ४ ३ २ १
डाड़ा डाड़ा डाड़ा डाड़ा' ॥१॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ८ ९

' इसचिन्हके भीतरके बोल दुगुनमें लेने। यह गत बहुत उम्दा है, मीयां अमृतसेनजीके पुत्र निहालसेनजीकी बनाईहै।

७ अथ गारा

गारा संपूर्ण रागिनी है यह भी खमाचके तुल्य ठुमरीकी रागिनी है अतएव इसकी आरोहावरोही कुछ नियत नहीं। इसमें मध्यम उतरा और सब स्वर चढे लगते हैं। इसमें ऋषभपर कुछ जादा ठहरतेहैं कभी आरोहमें ऋषभसे इकदम पंचमपर चले जातेहैं कभी आरोहमें ऋषभको छोड़ भी देते हैं 'स ग म प' 'सा रेरे पम गम् रे ग् सा' ये तानें इसकी अधिक प्रधान (व्यंजक) हैं। सितारमें यह काट कतर बहुत चाहती है। आरोहमें धैवत कम है। ऋषभ निषाद इसमें प्रधान हैं।

सरगम यथा—ध नी प ध प नी रे नी धनी सा रेरे प मप् गम् रेग् सा। सानी सा गम रे गम प रे पम गग रेसा। ग म पनी सा रेरेसा गरे सा नी. रे सानी धप म गरे नी सारे प मप् गम् रेग् सा।

सम
गत—डा ड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा डा डा ड़ा।
११ १२ ११ १० १२ १० १० ६ ८ ९१० ११ १० ११ १२
८ ९

तोड़ा—डा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा 'डाड़ा डाड़ा डाड़ा
९ ८ ६ ४ ३ १ २ ३ ४ १ २ ३ ४ ५ ६

डाड़ा डाड़ा डाड़ा' ॥

६ ८ ९ १० ११ १२

' ' इस चिन्हके भीतरके बोल दुगनमें बजाने।

८ अथ छाया

छाया संपूर्ण तथा बड़ी उत्तम और सुकुमार रागिनी है इसको विशेष कालतक गानाबजाना कुछ कठिन है। इसमें मध्यम उतरा और सब स्वर चढ़े लगतेहैं इसके आरोहमें मध्यम कम है। ऋषभसे पंचमतक तथा पंचम से ऋषभतक की घसीट इसकी प्राण है। अवरोहमें कभी मध्यम छोड़देतेहैं कभी गंधार मध्यम दोनों को भी छोड़ देते हैं।

सरगम यथा–नी ध प म ग रे सा नीसा रेरे गम् पप गरे सा निसा रेसा गरे सा नी प सा रेरे गम् पप नीनी धप सा गरे सा नीध प रेरे गमूप गरे सा।

गमग प ग र सरेगरेस रेगमूप रेगरेसा

पद यथा—जाके हिय न राम वै देही।

ग प नी सा नी रे सा परगमूप रेगरेस गपनीसा नीरेसा प रेगमूप रेगरेसा

तजै ताहि कोटि शत्रु सम यद्यपि परम स ने ही।

'नीनी ध परे रे गमूप प गरे सा' यही तान इसकी प्राण है।

मीयां अमृतसेनजीकेलिये कहागयाहै कि 'छायापि यस्यास्ति सदा प्रशस्ता' छायापद श्लिष्ट है। जयपुरनरेशरामसिंहजीने अमृतसेनजीसे कहकर छाया सुनी इनने भी उसदिन ऐसी छाया सुनाई कि रामसिंहजी जीवनपर्यंत न भूले।

मी१ मी१ मी२ का मी१ आ
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ।
११ १२ १० १०११ १४१११० १० ९ ९ ६ ९१०११
१०

सू मी१ मी१ सू सू
तोड़ा–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥
१० १० ६ ५ ६ ४ २ ३ ५ ६ ६ १० ९१०११
६ १० ६

इस गत में जो ऋषभ से पंचम तक सूत है उसमें गंधार मध्यम भी लगते हैं ।

९ अथ छायानट

छायानट संपूर्ण रागपुत्र है, यह छाया और नटके संयोगसे बनाहै, इसमें दोचार तानें नटकी और दोचार तानें छायाकी लेनी चाहियें यही इसका तत्त्व है किंतु यह संयोग कुछ कठिन है दालभातके संयोग सदृश सहज नहीं। इसमें मध्यम उतरा और सब स्वर चढ़े लगते हैं, छायामें ऋषभ प्रधान है और नट में ऋषभ वर्जित है इसविरोधके कारण छायानटके आरोहमें ऋषभ छोड़देनाचाहिये ।

सरगम यथा—धध पप म गगरे सा रेसा गम गरे सा। गग पप सा सारेसा गम गरे सा सानी धप नी धप धप म ग पप गम् गरे सा । नीध परे गम् प गरे सा साग मप धप म गरे सा रेरे गम् पप रे सा गम गरे सा ।

छाया स नट
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डा डा ड़ा डाडिड़ डा डा ड़ा।
११ १० ११ १०६ ६ ४ ५ ६ १०११ ९ ८ ६ ५ ६
९
८

छाया नट

डिड डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा ॥१॥

६ ३ १ २ ३ ४ ५ ६ ६ १० ८ ९ ११ ९ ९ ११
१० ९ ८ ८
८ ९
६

यह गत मेरी बनाई है।

१० अथ जैत (जय)

जैत संपूर्ण रागिनी है इसमें सबी स्वर चढ़े लगते हैं, मध्यम बहुत ही कम लगता है सो भी अवरोहमें. आरोहमें मध्यम नहीं लगता एवं ऋषभको भी आरोहमें छोड़ देते हैं, यह षड्जसे पंचम तक और पंचमसे षड्जतक की सूतको बहुत चाहती है। वस्तुगत्या यह शुद्धकल्याण और इमन इनके संयोगसे बनी है अत एव आरोहमें इसकी चाल शुद्धकल्याणके तुल्य है अवरोहमें इमनके तुल्यहै क्योंकि अवरोहमें निषाद और मध्यम थोड़ासा लगजातेहैं। यह गंधारपर पंचमकी मींडको चाहतीहै।

सरगम यथा—सा पप सा गग गप पध प गप् गरे सा। सा गग प ग प धपम् गप गरे सा। सानी धनी रेसा नी ध प सा पसा। गग पसा सानी रेसा गग प गग रे सा. सानी ध पम् गरे सा गग प गरे सा सानी धप प सा।

सू मी२ मी२ मी१ मी१ मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डा डिड़ डाडाड़ा ॥१॥

११ १२ १४ १६ ११ ९ ९ ९ ९ १२ १० १०१० ११
१६ गरेगरेसा गरेसा गप गरे पग गरेसा गप प गरेसा

धुरपत यथा—झकोरन वरी वरी बूंदन आयो ओ पानी। इत्यादि।

यह रागिनी कम प्रचलित है अच्छे विद्वानोंके गानेबजानेकी वस्तु है ।

११ अथ तिलंग

तिलंग रागिनी खमाचके ही तुल्य है, खमाचमें गंधारकी अपेक्षा मध्यम जादा है इसमें मध्यमकी अपेक्षा गंधार कुछ जादा है और आरोहमें धैवत वर्जित है कभी कभी आरोहमें धैवत निषाद दोनोंको भी छोड़देतेहैं, वस्तुगत्या ऋषभ और धैवत इसमें वर्जित ही है यही विशेष है। इसमें मध्यम निषाद उतरे और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। आरोहमें ऋषभ भी वर्जित है अवरोहमें भी ऋषभ कम है। गंधार इसमें प्रधान है।

सरगम यथा—सा गग म प सा सानी पप मग। नीनी सा नीप म गम पप सा गरे सासा नी प गमप नीप मग, इत्यादि ।

स सू मी१
गत—डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा ।
११ ९ ८ ६ ३ ३ ४ ६ ९ ५ ६ ८ ९
८
६

मी१ सू मी१
तोड़ा—डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डिड़ डाडिड़ डा ड़ा ।
४ ३ ४ ९ ६ ३ ४ ६ ९ ५ ६ ८ ९
८ ८
६

१२ अथ तिलककामोद

तिलककामोद भी खमाचके तुल्य ठुमरीकी रागिनी है इसीसे इसकी आरोही अवरोही कुछ नियत नहीं और यह काटकतरको साजमें बहुत चाहती है। यह कामोद और गाराके संयोगसे बनी

प्रतीत होती है क्योंकि इसकी कुछ चाल कामोद और कुछ चाल गाराके तुल्य है। इसके अवरोहमें निषाद उतरा और आरोह में निषाद चढ़ा लगताहै, कभी अवरोहमें चढ़ामध्यम भी जरासा लगा देतेहैं, उतरा मध्यम अच्छीतरह लगताहै, धैवत इसमें वर्जितप्राय है तो भी अवरोहमें जरासा चढ़ा धैवन लगादेतेहैं शेष ऋषभ गंधार चढ़े लगतेहैं। 'सा प म रे गसा' 'सा रे प म गरे सा' इत्यादि तानें इसका प्राण हैं।

सरगम यथा—गग सा नीसा रेसा पम ग रेग सा नीध पम प नी सा। सारे पम पनी सा रेसा नीध़ पम पम गम रेग सा, इत्यादि।

स का
गत–डिड़डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।
९ ११ १२ ११ ६ ५ ह ८ १० १० ६ ८ ९
१० ६ ९
११

१३ अथ नट

नटमें ऋषभ वर्जित है इससे यह षाडव रागपुत्र है, इसमें मध्यम उतरा लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। यद्यपि यह प्रचलित कम है तथापि इसकी चाल सीधी है, कभी कभी आरोहमें धैवत निषादको छोड़ भी देते हैं। कोई लोग ऋषभका भी स्पर्श इसमें करदेतेहैं।

सरगम यथा—स गग म प ध प मप मग गसा, नीसा नी ध प म प सा। गग मप ध पम ग मप मम पध पनी सा नी ध प सा गसा नी ध प म गसा गम गसा।

स

गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा ।

८ ९ ११ ९ ८ ६ ८ ९ ८ ६ ८ ९ ११

तोडा–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ।

६ ६ ३ ३ ३ ४ १ ३ ३ ४ ५ ६ ८ ९ ११

१४ अथ पहाड़

पहाड़ भी खमाचके तुल्य ठुमरीके योग्य है इसमें मध्यम नहीं है और सब स्वर चढ़े लगतेहैं । धैवतसे इकदम ऋषभपर षड्जसे गंधारपर ऋषभसे पंचमपर पंचमसे षड्जपर जाना तथा कतरतेहुए सूतसे जाना इसमें अधिक शोभाजनक है ।

सरगम यथा—सा सारेग. गरेसा. सानीसा । सानी ध ध रेरे सा । सारेग रेगप गप ध गप नी प सा ध रेरे सा सारे गसा । सा नि ध प धपग पगरे गरेसा ध रेरे सा, इत्यादि ।

सू स

गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डा डा ड़ा ॥१॥

९ १०९१० ११ १२१२ १४ १० ११ ११ ९
९ ११ ११ १० १० ११
६ १० १२ ९
११

ग

तोडा–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा ॥१॥

९ ९ ६ ६ ५ ६ ८ ६ ९ १० ११ ११ ९ ११
५ ५ ६ ९ १०१०
४ ९ १० ९

१६ अथ भूपाली

भूपाली रागिनी औडुव है इसमें मध्यम निषाद ये दो स्वर वर्जित हैं और सब स्वर चढ़े लगतेहैं, यह उत्तम रागिनी है बहुत प्रसिद्ध तथा सीधीहै, बजानेकी अपेक्षा गानेमें यह अधिक सुंदर है।

सरगम यथा—सारेसा गरेसा सारे गग प ध प ध ग प गग रेसा। गग प ध सा धसा रेसा गग रेसा धप धसा धप गरे सा गग रेसा, इत्यादि।

सा मीर

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।

१६ १४ ११ ११ १० ९ ६ ९ ९ १० ११ १० ११ १४

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ॥१॥

१० ९ ६ ५ ३ ५ ६ ९ ५ ६ ९ ११ १० ९ १० ११

१७ अथ शंकरा

शंकरा संपूर्ण रागपुत्र है इसमें सबी स्वर चढ़े लगतेहैं मध्यम बहुत कम शुद्धकल्याणके सदृश लगताहै। गंधार पंचम इसमें प्रधान हैं। यह बड़ा कड़ा राग है अत एव बड़े विद्वानोंके गाने-बजानेकी वस्तु है। ऋषभ भी कम लगता है कल्याण और विहागके मेलसे बना प्रतीत होताहै। धुरपतियोंके शंकरेमें विहागका मेल कमहै खयालियोंके शंकरेमें विहागका मेल जादा है यही दोनोंका विशेष है।

सरगम यथा—सासा नी ध प नी सा नी ध प म गग सा। नी ध प सा रेसा प म गरे सा गसा। ग म प सा सारे सा गरे

सा नी ध प म ग ग म ग सा साग सा गम सा रेसा गरे सा नी ध प म गरे सा, इत्यादि ॥

१८ अथ शुद्धकल्याण

शुद्धकल्याण भी संपूर्ण रागिनी कहातीहै इसमें सबी स्वर चढ़े ही लगते हैं, इसमें मध्यम और निषाद ये दो स्वर स्पष्ट नहीं लगते, यदि मध्यम निषाद स्पष्ट लगाए जाएँ तो इमन होजायगी यदि मध्यम निषाद सर्वथा छोड़ दिये जाएँ तो भूपाली होजायगी इस कारण इसमें मध्यम निषाद बड़ी युक्तिसे लगाए जातेहैं यह बात शिक्षामात्रके अधीन है। यह शुद्धकल्याण केवल तानसेनजीके पुत्रवंशकी है और लोग इसप्रकार शुद्धकल्याणको नहीं गाते बजाते किंतु मध्यम निषादको अधिक मिला देतेहैं यही खयालियोंकी शैली है। इसमें गंधार प्रधान है। यह गंधारपर पंचमकी मध्यम-पर पंचमधैवतकी निषादपर षड्जकी मींडको बहुत चाहती है। इसमें 'स गगम्प ध गग रे सा' यह तान बहुत शोभा देती है। सरगम यथा—सान् रेसा गग रे सा गगम् पप ध गग रे सा। गगम् पप धध न्सा रेसा गग रेसा न् धध प ध पम् गगम् पध गग रे सा, इत्यादि।

मी१ मी१
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा डा डाड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा।
११ ११ ९ ९ १० ९ १० ११ १६ १४ १२१० ११
१०

मी१ मी१ मी२ मी१ मी१-२
तोड़ा–डिड़ डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ॥१॥
१२ ११ ९ ७ ६ ५ ३ ४ ५ ६ ७ ९ १०११

यह गत धुरपतियों के शुद्धकल्याण की है।

१९ अथ श्यामकल्याण

श्यामकल्याण संपूर्ण रागिनी है इसमें मध्यम दोनों लगतेहैं और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। इसके आरोहमें मध्यम नहीं लगता पीछेकी तान केदारे के तुल्यहै यही विशेष है।

च उ

सरगम यथा—सारे सा नीरे सा गग प ध पम गग म रेसा।

च उ

गग प ध नीसा रेसा गग रेसा नी धध पप ध पम गगमरे सा, इत्यादि।

नी१

गत–डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडा ड़ा डिड़ डाडिड़ डाड़ा ॥

९ ५ ६ ७ ६ ५ ६ ९ ८ १० ११ १२ १० ११

२० अथ हेमकल्याण

हेमकल्याण भी संपूर्ण रागिनी है इसमें मध्यम उतरा और सब स्वर चढ़े लगतेहैं।

सरगम यथा–सारे सा गरेसा पप धनी सा सारे गम गरे सा। गम गप धनी सा नी ध प ध प ग म गरे स सारेगम. पधनीसा इत्यादि।

गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥ १ ॥

५ ६ ८ ९ १० १११२१४ १६१६ १२ ११

२१ अथ हमीर

हमीर भी संपूर्ण रागपुत्रहै इसमें मध्यम उतरा है थोड़ासा चढ़ा मध्यमभी अवरोहमें लगताहै और सब स्वर चढ़ेहैं इसके आरोहमें पंचम वर्जित है कभी कभी मध्यम पंचम दोनोंको भी

आरोहमें छोड़ देतेहैं। अवरोहमें उतरा मध्यम नहीं है गंधार-पर पंचमको मींडकर ऋषभपर जानाचाहिये। धैवत इसमें प्रधान है। यह प्रसिद्ध राग है।

गत–डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥

६ ७ ९ ८ ५ ४ ५ ५ ४ ३ ४ ५ ६

सरगम यथा—मग म धध मध नी सा नी धप मध धप गरे सा। गगरे गम पम धध पम धप धप गग रेसा। सानी सा धध प सा नी ध ध गरे सा। सानी धप धप म धध पम् गरे सा, इत्यादि।

ध नीसा नधपम ध पम म गरेसा

पद यथा—जौ रघु नाथ न चा ही।

गगप सा रेसानीधपमगम धप म ग प मगरे स सारेगमधनीसा नीधपमगपम गरेसा

राजन राज धराधर धूर मिलें सब जौ चाहेरघु राई।

भ्रम इत उत चहुँ दिश चाहे तू कितहु न पाय निकाई।

तनिकहु कोप किये जब देखत कोटिन भुवन विलाई।

रामकोपशरविद्धदीनको कोउ न सकत वचाई।

कोटि करै जु उपाय तऊ सुन अवसहि सो मिटजाई।

ब्रह्मलोकलौं धावै तबहू को उन शरण रखाई।

रावण मधु मुर विपुलबली सब छिनमधि धूरमिलाई।

कौन गतो पुनि मोसम तृणकी नखशिखलौं जरजाई।

करहु कृपा रघुवीर तुरत अब तू इक दीनगुसाईं ॥ १ ॥

यह पद तो मेरा बनायाहै इसमें तानें मीयां अमीरखांजीकी रक्खीहुई हैं। मैंने ये इमनसे लेकर हमीरतक २१ रागरागनियें

संध्याकालसे रातके दशबजेतककी लिखदीहैं इनके सिवाय इससमय, की और भी कुछ रागिनी हैं वे यहाँ नहीं लिखीं ।

अब मैं रात्रिके आठ नौ बजेसे रात्रिके ग्यारह बारह बजेतककी कुछ रागिनियोंको लिखताहूं—

१ अथ अड़ाना

अड़ाना एक कान्हड़ा है दीपककी रागिनी है संपूर्ण है। ऋषभ चढ़ा लगताहै और सब स्वर उतरे लगतेहैं। आरोहमें ऋषभ और धैवत नहीं लगता, धैवत तो अवरोहमें भी कम लगताहै। दरबारीसे इसमें यह विशेष है कि इसमें स्वरोंकी छूट अधिक होतीहै।

सरगम यथा—नीसा गग मध पप मग म गग प म प मग मध म गम रे सा। गग म पप ध सा नी सारे सा गग मरे सा नीनी ध पप मप गम रे सा। नी ध प म प सा नी प रे सा गग म ध पप रे सा प सा नी धप म गम रे सा, इत्यादि।

मी२ मी२ मी२ मी१ मी१ मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा।

६ ६ ८ ६ ५ ५ ५ ५ ८ ९ ९ ९१०११
६

गमक मी१

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडिड़डाड़ा डाडाड़ा।

१० ११ ३ ३ ४ २ ३ १ १ १ २ ३
११

मी१ मी१ मी१ मी२

डा डिड़ डा डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा ॥ १ ॥

२ ३ १ २ ३ ४ ५ ६ ८ ८ ६ ८ ९ ९ १० ११

२ अथ कौंसिया (कौशिक) कान्हड़ा

यह कान्हड़ा बहुत ही अप्रसिद्ध है, इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं और इसमें गंधार धैवत बहुत कम लगतेहैं। यह सारंग और दरबारी के मेलसे बना प्रतीत होताहै। और कान्हड़ोंकी अपेक्षा इसमें ऋषभ मध्यम अधिकहैं।

सरगम यथा—सा नी सा रे सा गरे म पप मम ग़म रे सा। नी रेरे सा मम प नी सा रेसा नी पप मम पपग़म रे सा, इत्यादि।

मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा।

६ ६ ८ ६ ३ ५ ६ ६ ८ ६ ९ ८ १० ११

तोड़ा—डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डा ड़ा ॥१॥

२ ३ ४ ६ ३ ४ ६ ८ ४ ६ ८ १० ६ ८ १० ११

३ अथ जैजैवंती

जैजैवंती (जयवंती) संपूर्ण रागिनी है इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगते हैं। जैजैवंती दो हैं—एक तानसेन वंशकी दूसरी चलतू, तानसेनवंशकी जैजैवंती वागीश्वरी के तुल्य है भेद यही है कि वागीश्वरीमें पंचम नहीं लगता इसमें लगता है और वागीश्वरीमें धैवतका कुछ नियम नहीं इसमें चढ़ा धैवत लगता है यह नियम है।

सरगम यथा—म प रे मा रे गग म प म गरे सा। सानी रेसा सा नी ध प ध नी रेसा नी धनी धनी रेसा। सारे सा गम ध पध नी धप रे सा सा नी धप धनी धप म गम म गरे सा, इत्यादि।

सू स

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा।

० १६ १० १० ९ ९ ८ ६ ८ ९ १० ११ १३

११

सो१

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा१

१३ ११ ९ ८ ५ ६ ५ ५ ६ ३ २ ३ ४ ४ ५ ६

यह जैजैवंती तानसेनवंशकी है।

४ अथ दरबारी कान्हड़ा

यह कान्हड़ा संपूर्ण तथा बहुत ही उत्तम रागिनी है। इसमें ऋषभ चढ़ा लगता है और सब स्वर उतरे लगते हैं। इसके आरोह में ऋषभ वर्जित है धैवत भी आरोह में वर्जित के तुल्य ही है। यद्यपि यह रागिनी बहुत प्रसिद्ध है तथापि इसका यथार्थ शुद्ध गाना बजाना कुछ कठिन है।

सरगम यथा—नी सा गग रे सा ग म प म गग रे सा। मप ध्नी सा प नी सा सारे नी सा गग रे सा नीध पम पप म गगम् रे सा। गग मप पम प ध पनी सा, सारे ग म प ध नी सा। गग रेसा गम पध पनी ध प म गम्रे सा, इत्यादि।

स. गमक सो१ सू

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।

१६ ० १६ १३ ११ ९ ८ ६ ९ ९ १० ११ १३ १३ ११

१६

मी१
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा।
१० १० १० १३ ११ ११ ३ ३ ४ २ ३ २ २ ३
मी१ सू मी१
डिड़ डा डिड़डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डा डा ड़ा॥१॥
२ ३ १ २ ३ ३ ६ ४ ३ ४ ५ ६ ८ ९ १० ११
६

५ अथ नायकीकान्हड़ा

नायकीकान्हड़ा भी संपूर्ण है तथा कौंसियेके तुल्य बहुत अप्रसिद्ध है। इसमें ऋषभ चढ़ाहै, धैवत दोनों हैं, किन्तु चढ़ा धैवत विशेष कर आरोहमें है और उतरे धैवतपर ही मींडसे ही चढ़ा धैवत लगाना चाहिये। उतरा धैवतकमहै इसकेआरोहमें प्रायः ऋषभ गंधार दोनोंको छोड़ देतेहैं। और सबस्वर उतरे लगतेहैं।

सरगम यथा— सा नि ध प ध नी सा मम गगरे सा। सासा पप म गरे म प धनी सा। मम पप धनी सा रेसा मगरे सा पम गरे सा। रेसा नी धम पध नीसा धनी सा। सारे सा मगरे सा नीध मप म गरे सा, इत्यादि।

मी१ ग
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डा डा ड़ा।
१० ११ १३ १५१६ १५ १३ ११ ८ ९ ९ १० ११
मी१ स मी१
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डा ड़ा डाडाड़ा॥१॥
२ ३ ४ ५ ५ ८ ६ ५ ४ ३ ३ १५ १३ ११

इसमें धैवतपर जो मीड़े हैं वे चढ़े धैवतकी जाननी यही विशेष है इस कारण यह कान्हड़ा सितारमें दरबारीके ठाठपर बजाना चाहिये।

६ अथ वागीश्वरी कान्हड़ा

इसे वाघेश्वरी कहतेहैं यह षाडव रागिनी है इसमें पंचम वर्जित है, यह कान्हड़ा मालकौसके मेलसे बना प्रतीत होताहै। इसमें ऋषभ चढ़ा है। कोई लोग इसमें चढ़ा धैवत लगातेहैं कोई उतरा धैवत लगातेहैं। वस्तुगत्या प्राचीनप्रथासे इसमें धैवत उतरा ही है किंतु इसको रंगीन करनेकेलिए खयालिये लोग इसमें चढ़ा धैवत लगाने लगगयेहैं, इसमें और उक्त जैजैवंतीमें पंचमसे ही भेद है। और सब स्वर उतरे लगते हैं। इसके आरोहमें ऋषभ छूटता है कभी ऋषभ गंधार दोनों को भी छोड़ देते हैं। अवरोहमें 'सा नी ध नी म' इसप्रकार प्राय: धैवतको छोड़देतेहैं।

सरगम यथा—सा रे सा नी धनी सा नी म ध नी सा। सा गग मम ध नी सा रेसा गरेसा म गरे सा नी धनी म नी धनी म गरे सा नीरे सा, इत्यादि।

स मी१ मी१
गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डाडाड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा।
१३ ११ ८ ९ १० ९ ८ ५ ५ ५ ५ ५ ८ ९ १० ११
११

मी१
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ॥१॥
१३ ११ ८ ९ १० ११ १३ १३१५ १३ ८ ९ १० १० ११ ११
१३

यह गत प्राचीन वागीश्वरीकी है।

७ अथ शहाना कान्हड़ा

यह कान्हड़ा अताइयोंमें बहुत प्रसिद्ध है अतएव इसकी आरोही अवरोही पूर्ण नियत नहीं, इसमें ऋषभ धैवत चढ़े गंधार मध्यम

निषाद ये उतरे लगते हैं उस्तादलोगोंके शहानेमें कुछेक अड़ानेकी चाल मिलीरहतीहै ।

प स रसनीधप मप नीधपम

अष्टपदी यथा—तव विरहे सा दीना ।

अपनी नीसारेसा मीधप धनीरेसा नीधप रे सानी धपम

माधव मनसिज विशिख भयादिव भावतया त्वयि लीना ॥

इसमें 'या' तृतीयसप्तकके ऋषभ पर है ।

सरगम यथा–पपम पधसा रेसा गरेसा नी धप नीपम पप मम गरे सा । सारे म गरे सा मम पध सा नी धप नीनी रेसा नी धप मप म गम गरे सा, इत्यादि ।

मीर मीर मीर मीर क क मी१

गत—डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा॥१॥

६ ६ ६ ८ ६ ५ ६ ६ ६ ५ ८ ६ ९ ९

६ ८

यह गत सैनियेंाके शहानेकी है ।

मैंने यहां ये सात कान्हड़े लिखेहैं कुछ पूर्वमें भी लिखचुकाहूँ कुछ और भी कान्हड़े हैं, कुछ अप्रसिद्ध भी हैं, प्रदीपकान्हड़ा पूर्वमें लिखदेना भूलगयाहूँ ।

८ अथ सावन

सावन भी खमाच सोरठके तुल्य हलकीसी रागिनी है। इसमें मध्यम उतरा लगताहै इसके अवरोहमें निषाद उतरा और आरोहमें चढ़ा लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं, गंधार इसमें बहुत ही कम है सोरठके तुल्य । आरोहमें धैवत भी नहीं । वस्तुगतया यह वर्षाऋतुकी रागिनी है ।

सरगम यथा—मम पप नी ध प म पप मरे सा। सा नी रेसा रेरे सा मम रेसा। सारे मप म पप धप नीसा पसा रेरे सा मरे सा नी ध पप मम गूम रेसा, इत्यादि।

मी१ स मी१

गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डा डाड़ा डा डिड़ डाडाड़ा ॥१॥

८६ ५ ८ ६ १०११२ १२१० ८ ६ ८ ३ ५५८

१२११ ११

मैंने यहाँ अड़ानेसे लेकर सावन तक आठ रागिनियें रात्रिके आठनौबजेसे लेकर रात्रिके ग्यारहबारहबजेतककी लिखीहैं इनके सिवाय कुछ और भी रागिनियें इससमयकी हैं वे नहीं लिखीं। न लिखनेका कारण यह है कि कोई कोई रागिनी ऐसी होतीहै जो लेखसे समझाई जा सकती नहीं। वस्तुगत्या तो कोई भी ऐसी विद्या नहीं जो पूर्ण गुरुशिक्षा के बिना प्राप्त होसके, गुरुशिक्षाके अनंतरही उसविद्याकेग्रंथ कुछ उपयोग देसकतेहैं। सत्य तो यह है कि लोगोंको वास्तविक रागविद्यामें रुचि ही नहीं, हां कुछ लोगोंको ठुमरीमें वा थीयेटरी गानेबजानेमें रुचि है।

अब मैं रातके दशबजेसे रातके एकबजेतककी कुछ रागरागिनियोंको लिखताहूँ—

१ अथ कुंबाएती

पंचमवर्जित होनेसे कुंबाएती षाडव रागिनी है कुछ बहुत सुन्दर भी नहीं, इसमें निषाद कोमल है और सब स्वर तीव्र हैं। यह एकग्रंथसे उपलब्ध हुईहै।

सरगम यथा-ध म गरे सा स नीरे मा सा रेरे सा। ग म ध म ध नी सा रेसा नी ध म धनी धम धम गरे सा, इत्यादि।

२ अथ गिरिनारी

गिरिनारी भी एक प्रकारकी सोरठ ही है इसमें निषाद मध्यम उतरे और तीन स्वर चढ़े लगतेहैं, गंधार बहुत ही कम है, आरोहमें धैवतगंधारवर्जित है। ऋषभपर मध्यमकी मींडको बहुत चाहतीहै।

सरगम यथा-सा नी रेसा रेरे म प मम पप मग् मरे रे सा। मम रेरे सारे म पप नी सा नीनी रेरे सा नी ध पप मम गम् मरेरे सा, इत्यादि।

सम
गत-डा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाड़ा डाड़ा डाड़ा।
१३ ११ १० ८ १० १० ८ ८ ६ ४ ३ ४

मी० मी०
तोड़ा-डा ड़ा डाड़ा डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डाड़ा॥१॥
२ २ ८ १० ४ १३ ११ १० ८ ६ ४ ३ २ ८ १०

३ अथ देस

देस भी संपूर्ण है इसमें मध्यम कोमल और सब स्वर चढ़े लगते हैं इसका सोरठसे यही भेद है कि इसमें सबी निषाद चढ़े लगतेहैं और गंधार भी स्पष्ट लगताहै। आरोहमें धैवत वर्जित है और गंधार भी कम है।

सरगम यथा-सानी सा रेरे सा ग रेरे सा नी ध पप नी सा रेरे सा। रेरे गरे म पप मग रेरे पप नीसा रेरे सा नी ध पप मम गरे मम ग्रेरेसा, इत्यादि।

स

गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा ।
११ १२ ११ १० ९ १० ९ ८ ८ ९ १० ११ १२ ११

तोड़ा–डिड़डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा॥ १॥
३ ४ ५ ६ १० ६ ८ ९ ९ १० ११ १२ ११

४ अथ मालकौस

मालकौसको मालवकौशिक भी कहतेहैं इसमें ऋषभ पंचम ये दो स्वर वर्जित होनेसे यह औड़ुव राग है। इसमें सब स्वर उतरे ही लगतेहैं यह राग बहुत उत्तम तथा भारी है अथापि इसकी आरोहावरोही कुछ कठिन नहीं। कभी कभी आरोहावरोहमें गंधारको भी छोड़ देतेहैं। कोई प्राचीन लोग इसमें ऋषभको भी लगादेतेथे अतएव वे इसे षाडव, राग मानतेथे ऐसी भी सरगम देखीहै।

सरगम यथा–मग सा नी धनी ध म गग मध नी सा धनी सा गग सा मग सा नी ध मग सा सानी ध म गग सा । सा मम सा गम धनी सा गग सा, सानी ध मग सा, सानी सा म सा गग मम गम धध मग सा मसा ॥

इसीमें ऋषभ मिलादेनेसे षाडव मालकौस होजायगा।

टाकीठा

गत–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा 'डाडा' डा ड़ा डा ड़ा डा डा ड़ा ।
११ १३ १५ १३ ११ ८ ९ ८ ५ ४ ५ ८ ९ ११

टाकीठा

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा 'डाड़ाडाड़ा' डा डा ड़ा ॥१॥
९ ८ ५ ४ ३ १ ३ १३ १ ८ ९ ११

यह गत तोड़ा मेरा ही बनाया है ।

स्वरसागरमें कहाहै कि यह राग साधुवेश है इसका विष्णु देवता है अत एव यह शांत सात्विक राग है इसकी भठहारी पटरानी है ।

दोहा—भठहारी अरु सरस्वती रूपमंजरी वाम ।
चतुरकदंबी पाँचवीं रूपरसाला नाम ॥१॥

चौ०—भठहारीकौ पुत्र अहंग । बधू सोहनी वाके संग ॥
अरु सरस्वतीसुत वैराग । ताहि अरघटी अधिक सुहाग ॥
रूपमंजरी पुत्र विहंग । नागवतीकी ताहि उमंग ।
चतुरकदंबीपुत्र सुढंग । ललितावधू रहै नितसंग । २॥

दोहा—पंचम कौशिकनंदनी परज पुत्र वा गेह ।
रामकली वाकी वधू गणपतिमत सुन एह ॥३॥

इनमेंसे भठहारी सोहनी परज और रामकली ये चार प्रसिद्ध हैं । कुछ दाक्षिणात्यलोग इसे प्रात:काल गातेहैं किंतु इसका स्वरूप मध्यरात्रिके ही योग्य है इससे इसदेशके लोग इसे मध्यरात्रिमें ही गातेबजातेहैं यही उचित है ।

५ अथ विहंगिनी

यह संपूर्ण रागिनी है इसमें मध्यम कोमल और सब स्वर चढ़े लगातेहैं । आरोहमे ऋषभधैवत छूट जातेहैं । यह बिहागकी तुल्यतामें भगिनी ही है । वस्तुगत्या आजकलह बहुत लोग इसीको विहाग कहतेहैं ।

सरगम यथा—सानीधपप नीसा रेसा म गरे सा । मम गग

म पप ध प नी सा नी रेसा गरेसा नीनी ध पप मम प मग प म गग म गरे सा, इत्यादि।

मी१ स मी१ मी२ मी१
गत—डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा।
६ ५ ५ ६ ६ ६ ८ ८ ८ ९ १०१०११

मी१ मी१
तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा
६ ५ १ २ ३ ३ ४ ५ ६ ६ ८ ९ १० १०१०११

ऋषभ छोड़देनेसे यही विहागड़ा होजायगा।

६ अथ विहाग

विहाग संपूर्ण रागिनी है और उत्तम तथा प्रसिद्ध है, इसमें दोनों मध्यम लगतेहैं और सब स्वर चढ़े हैं, पंचमसे ही चढ़े मध्यम-पर जाना फिर पंचम पर ही आजाना यही चढ़े मध्यमके लगाने-का प्रकार है। आरोहमें ऋषभ धैवत नहीं लगते।

सरगम यथा—सासा नीनी रेसा मसा सा गग म पप पम गग रे सा। मम पप गग मप मप म गरे सा। पप नीसा रेसा म गरेसा नी ध प नी पम गरे सा इत्यादि।

मी१ मी२ मी२
गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डा डाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा॥१॥
११ १२ ११ ९ ७ ६ ४ ५ ६ ८ ९ ९१०११
७
६

७ अथ सोरठ

सोरठ में गंधार बहुत कम है आरोहमें गंधार धैवत छूट जाते-हैं मध्यम कोमलहै, निषाद द्वितीयसप्तकका कोमल और प्रथम

सप्तकका दोनों प्रकारका लगताहै और सब स्वर चढ़े लगतेहैं। यह बहुत प्रसिद्ध रागिनी है। इसी सोरठसे मीयां रहीमसेनजी अमृतसेनजी मेरे उस्तादने झझरमें सर्पको बुलायाथा वह सर्प एक घंटा पूरा इनसे सोरठ सुनता रहा।

सरगम यथा—नीसा नीनी रेरे मम ग्रेरे सा। सानी ध् पप नी सा रेरे सा। मम पप नीनी धप सा नीसा नी ध प नी सा रेरे सा नी ध पप मम ग्रेरे सा, इत्यादि।

स
गत—डाडिड़ डा ड़ा डाडिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा।
१६ १२११ १० ६ ८ ९ १० ११ ११ १० ८ ६ ४

डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा ॥१॥
३ २ ३ ४ ८ ६ ५ ८ ८ ९ १० ६ ८ ९ १२ ११

मैंने ये कुंबाएतीसे लेकर सोरठ तक सात राग रागिनियें रात्रिके दशबजेसे एकबजेतककी लिखीहैं इस समयकी कुछ और भी रागिनी हैं।

———

अब मैं रात्रिके ग्यारहबजेसे लेकर रात्रिके दोतीनबजेतककी कुछ रागरागनियें लिखताहूँ—

१ अथ तनक

तनक रागिनी षाड़व है क्योंकि इसमें धैवत वर्जित है, इसमें ऋषभ और मध्यम कोमल हैं गंधार और निषाद चढ़ा है।

सरगम यथा—गम प सा नी रेसा गरे सा नी पप मप म गरे सा।

सारे ग गम प म पप म गग म गरे सा। सारे सा नी गरे सा नी पम प गम पम गरे सा, इत्यादि।

यह रागिनी एकग्रंथसे प्राप्त हुईहै इससे इसमें अधिक नहीं कुछ लिखसकता। सोहनीका इसका यही भेद है कि सोहनीमें पंचम नहीं धैवत है इसमें पंचम है धैवत नहीं।

२ अथ परज

परज रागपुत्र संपूर्ण है इसमें ऋषभ धैवत उतरे और गंधार मध्यम निषाद ये स्वर चढ़े लगतेहैं, आरोहमें ऋषभ नहीं लगता। यह राग मध्यम श्रेणीका है तथा प्रसिद्ध है।

सरगम यथा—सा ग म प ध नी सा धसा रेसा ग रेसा नी धप म गरे सा। नीनी ध नीनी धप ध मप धनी सा नीसा रेसा नी धप मप धध मप म गग रेसा। गग मप म पप धप गम धप धसा नी ध पम पप म गग रे सा, इत्यादि।

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।
११ ९ ७ ६ ५ ४ ३ ५ ६ ५ ७ ९ ९ १० ११ १२
६ ७

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा डा डाड़ा डा डिड़ डा डाड़ा
९ ७ ५ ४ ४ ३ ४ ३ ५ ४ ५ ४
डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥
४ ३ १ २ ३ ३ ४ ५ ६ ५ ७ ९ ९ १० ११ १२
६ ७

इसपरजको विहागमें मिलादेनेसे परजविहाग बनजायगा। मिलानेका प्रकार यह है कि चढेमध्यमसे गंधारपर आजाना। इसको बजानेलगे तो ठाठ विहागका ही रखना।

३ अथ परजकालंगड़ा

परजकालंगड़ा बहुत रंगीन है खमाचादिके तुल्य हलकी चीज ठुमरीके योग्य है। इसमें ऋषभ मध्यम धैवत ये उतरे और गंधार निषाद ये चढ़े लगतेहैं, इसके आरोहमें ऋषभ और निषादको छोड़ देतेहैं संपूर्ण जाति है।

सरगम यथा—स ग म पप मप ध सा रेसा नी ध सा नी धप म धप म गरे सा। गग म ध पप मप धसा धसा गरे सा नी ध पध सा नी धप मध पप म गरे सा इत्यादि।

स

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।

११ ६ ९ ८ ६ ६ ५ ३ ४ ५ ६ ८ ९ १० ११

तोड़ा—डिड़ डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥

९ ८ ६ ८ ९ १०११२१५ १६० १६ १५११

४ अथ सोहनी

सोहनीमें पंचम नहीं लगता इससे यह षाडव रागिनी है इसमें ऋषभ मध्यम उतरे और गंधार धैवत निषाद ये स्वर चढ़े लगतेहैं। आरोहमें ऋषभ नहीं लगता।

सरगम यथा—सा ग म धनी सा नीध गम गरे सा। ध नी सा गम धनी सा नीसा रेनी सा धनी धध गम गरे सा। मध सा नी ध मम धध मध सा। गरे सा नी ध म मध सा नी धम धध मम गरे सा, इत्यादि।

स

गत—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा।

१० ११ १२ १४ १२ ११ ९ ९ ८ ९ १० ११ १२ ११

ताड़ा–डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ॥१॥
६ ८ ५ ८ ५ ३ ५ ३ ४ ५ ८ ५ ८ ६ ११
१०

मैंने तनकसे लेकर सोहनी तक ये चार रागरागनियें रात्रिके ग्यारह बजेसे रात्रिके दो तीन बजेतककी लिखीहैं इस समयकी कुछ और भी राग रागिनी हैं। कोई लोग मालकौसको भी रातके दोबजे तक गातेबजातेहैं।

मैंने भैरवरागसे लेकर सोहनीपर्यंत ८७ रागरागनियें प्रभात-कालसेरात्रिशेषपर्यंतकालकी लिखीहैं। मध्यान्हसे लेकर रात्रिके दशबजेतकके जंगला और जिला ये दो प्रसिद्ध हैं इससे यहां नहीं लिखे।

अब मैं मौसमी रागरागिनियोंमेंसे प्रथम ग्रीष्मऋतुकी कुछ रागरागनियोंको लिखताहूँ।

गौड़सारंगके बिना सभी सारंगोंका समय ग्रीष्मऋतुमें दुपहर याने दिनकेदसग्यारहबजेसे दिनके एकबजेतक है, गौड़सारंग तृतीय पहरकी है।

१ अथ आहंग सारंग

इसमें मध्यम और निषाद उतरे हैं ऋषभ धैवत चढेहैं। गंधार वर्जित है षड्ज भी नहीं लगता, धैवत भी थोड़ा ही लगताहै सो भी अवरोहमें।

सरगम यथा—पप मप धपममरेरे। नीरेरेरेनी पधपनीनी

रेरे पपम ध पप मप धप नी रेरे। म रे नी ध प म पप मम रेरे। नी रे, इत्यादि।

मी१

गत-डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा॰डाडिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा ॥१॥

१३ १६ १३ १३ १० ५ ५ ६ ८ १०

२ अथ गौड़सारंग

गौड़ सारंगमें सभी स्वर चढ़े लगतेहैं किन्तु मध्यम उतरा ही लगताहै चढ़ा मध्यम बहुत कम लगताहै। इसमें गंधारस्पष्ट लगता है यही विशेष है 'सा गरे ममगरे सा' यह तान इसमें प्रधान है, कुछ छायाकी औरबिलावलकी छायाभी पड़तीहै। यह तृतीय प्रहरकी सारंग है।

सरगम यथा-सारेसा गरे म गरे ग पप ध नी रेसा नीनी ध पप मगरे मम गरे सा। गग पप मगरे म ग म प ध नी पप म गरे सा। पप नी सा रेसा गम गरे म गरे सा सानी ध प धप नी पप मम ग मम पप ग मम गरे सा, इत्यादि।

स मी१

गत-डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।

९ १० १० ११ ९ १० १० ९ ९ ९ ७ ६ ७ १० १० ९

१२ ९ ९ ५ ६ ९ ९

८ ८

मी१

तोड़ा-डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥

२ ३ ४ ५ ६ ९ ७ ६ ७ ९ ७ ६ ७ १० १० ९

५ ६ ५ ६ ९ ९

८

३ अथ जलधर सारंग

यह तीन स्वरकी रागिनी है इसमें षड्ज और चढ़ा ऋषभ और उतरानिषाद ये ही तीन स्वर लगतेहैं इनीका प्रस्तार करना चाहिये। यथा—सा नीनी रेरे सा नीसा रेसा नीनी रेरे नी सा, इत्यादि ।

४ अथ तिलंग

तिलंगको लोग ग्रीष्म ऋतुमें सूर्यास्तसे लेकर रात्रिके दशग्यारह-बजेतक गाते बजातेहैं, कोई लोग इसका ग्रीष्मऋतुके साथ नियम नहीं भी मानते यह भी एक खमाचके तुल्य हलकी रागिनी है इसमें मध्यम उतरा है निषाद प्रथमसप्तकका दोनोंप्रकारका और द्वितीयसप्तकका उतरा है, और सब स्वर चढ़े हैं, आरोहमें ऋषभ धैवत नहीं लगते, वस्तुगत्या ऋषभ धैवत ये स्वर बहुत कम लगतेहैं वर्जितप्राय हैं निषादभी कम लगताहै ।

सरगम यथा—सा गग मम पप म धू प म गरे सा । सा नी रेसा सा. गग म पसा सानी धू पप मम धप म गरे सा, इत्यादि ।

सू मी१
गत—डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डा ड़ा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा ॥१॥
११ ९ ८ ६ ३ ६ ९ ५ ६ ८ ९
८
७
६

५ अथ बढहंस

बढहंस भी एकप्रकारकी सारंग है समय मध्यान्हहै । इसमें गंधार धैवत नहीं लगते, ऋषभ चढ़ा है मध्यम निषाद उतरे हैं ।

सरगम यथा—सारे मम पप नी प मरे पम रे सा। मम पप नीसा रेसा मरे सा नी पप सा नी प म पप मम रे॰मप म रें सा. इत्यादि।

स
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा।
११ ११ १० ८ ६ ४ ६ ८ ६ ८१० ११

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥
८ १० ८ ६ ३ २ ३ ४ ६ ८ ६ ८ १० ११

६ अथ बरवा

बरवामें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं, यहभी एकप्रकारकी सारंग ही है किंतु जरा कान्हड़े का मेल है, समय मध्याह्नहै। आरोहमें ऋषभ धैवत नहीं लगते गन्धार भी कम लगताहै।

सरगम यथा—म गगरे गम पम गरे सा नीरे सा। नीनी म गरे गम पध मप मप म गरे सा। सारे सा सानी धप मप नीनी धनी सारे सा नी धप म गम पनी ध पम गग रे सा नी।

अताईलोगोंका बरवा एक और भी है। यह बरवा धुरपति-योंका है।

मी१ मी१ मी॥मी॥ मी१मी१
गत—डा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥
९ ८ ६ ६ ६ ८ ९ १० ९ ९ १० १० १० ११

७ अथ मधुमाद

मधुमाद भी सारंगका भेद है इसमें ऋषभ चढ़ा और मध्यम

निषाद ये उतरे लगतेहैं। चढ़े धैवतका स्पर्श मात्र है वस्तुगत्या गन्धार और धैवत नहीं लगते।

सरगम यथा—सानी रेसा रे मम पप म रेरे सा। मम पप नी सा रेरे सा नीरे सा नी ध़ प म पप मम पम रेरे सा, इत्यादि।

मी १
गत—डाडिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा डा डाड़ा
५ ६ ८ १० १० १० ११ १२ ११ १० ८ ११ १० ११

८ मीयांकी सारंग

यह सारंग मीयां तानसेनजीकी बनाईहै अत एव मीयांकी सारंग कहातीहै एवं और भी कई रागरागनियें मीयां तानसेनजीने बनाएहैं। इसमें मध्यम दोनोहैं और सब स्वर चढ़ेहैं इसका शुद्ध सारंगसे यही भेद है कि इसमें मध्यम और निषाद चढ़े स्पष्ट लगतेहैं किंतु अल्प ही। यह सारंग बहुत उत्तम है। गंधार नहीं लगता।

च च च
सरगम यथा—सान्सा रे सा रे नी ध पम धप धनी रेरे सा।
च
ससा रेरे मूप मम पप धप नीरे सा नी ध़प पम म रेरे सा, इत्यादि।

स मी मी
गत—डिड़डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥
११ १० ७ ६ ८ १० ११ १० १२ १४ १२ १० १० ११
१२
११

९ अथ लंकदहन सारंग

इसमें गंधार लगता नहीं मध्यम निषाद उतरे हैं ऋषभ धैवत चढ़े हैं।

सरगम यथा-रेसा धनी सा रेरे मम पम रे सा धनी सा। सा नी पप मम रेरे सा। मम पप रे पम प ध पनी सा रेसा नी धूप मप म रेरे सा॥

क
गत-डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डाडाड़ा डाडिड़ डाडाड़ा॥
१० ११ १४ १३११ १० ८ १० १११४१३
११

तोड़ा-डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा॥१॥
१० ११ १० ८ ६ ४ ३ २ ३ ४ ६ ८१०११

१० अथ वृंदावनी सारंग

इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं, इसके अवरोहमें गंधार धैवत जरासा लगतेहैं यही इसमें विशेष है।

सरगम यथा-रे सा नी मप नीनी सा रेसा। रेरे मम पप मम गूरेसा। मम पप नीसा रेसा नी धूपप मप मम रेरे गूरेसा, इत्यादि।

मी१ स
गत-डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा।
१० १० १० १० ११ ९ ११ १३ १३ ११ १३१० ११
१०

तोड़ा-डिड़डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥
१० १० ८ ६ ५ ४ ३ २ ३ ४ ५ ८ ९ ११
६ ६ १०

११ अथ शुद्धसारंग

यह प्रधान तथा सब सारंगोंकी मूलभूत सारंग है बड़ी उत्कृष्टहै मीयांकी सारंगके तुल्य इसका भी गाना बजाना कुछ कठिन है।

इसमें मध्यम उतराहै निषाददोनोंहैं और सब स्वर चढ़ेहैं गंधार वार्जितहै धैवतका स्पर्शमात्रहै विशेषकर षड्ज ऋषभ पञ्चम ही लगतेहैं अतएव इसका गाना बजाना कठिन है, गंधार पर पञ्चम-मध्यमकी मींडको बहुत चाहती है। इससारंगकी मसीतखाँजीके पुत्र बहादुरखाँजीकी बनाई गत बहुत ही उत्तम है। इस कृपण हृदयपर इतनी उदारता नहीं जो उस रत्नको यहाँ पटकदे, दूसरी गत मीयां रहीमसेनजीकी बनाईहै वह भी बहुत उत्तम है। इनरत्नों का योग्य ग्राहक आज तक कोई न मिला।

मीं॥ मींर मीं१लौटती

गत—डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥

११ ११ १० ८ ६ ६ ५ ६ ८ १२ १० १० १० ९ ९१०११

६

७

सरगम यथा–ध् सरे म ग्रे सा रेरे सा मप ध् पसा रेसा। मप ध् पप नीसा रेसा मरे सा नी पप म ध् पप ध् ग् मम पम रेरे सा, इत्यादि।

समग्रसारंगोंका ऋषभ प्राण है।

मैंने ये अहंगसारंगसे लेकर शुद्धसारंगतक ग्यारह रागिनियें ग्रीष्मऋतुकी यहां लिखीहैं इस ऋतुकी कुछ और भी रागिनी हैं।

दीपक राग भी ग्रीष्म ऋतुका ही है किंतु दीपकका गाना-बजाना मीयां तानसेनजीने बन्द करदियाहै यह सब सविस्तर भूमिकामें लिखाहै। दीपकका वर्ण लाल और देवता सूर्य वा अग्नि कहाहै। स्वरसागरमें कहाहै–

"कान्हरा किदारा अरु अड़ाना चौथे मारु गिन पांचमैं विहाग नार दीपकके मन वसी। कान्हरेके पुत्र गारा सोरठ है वाकी नार केदारासुत जलधर नारी लंकधर (लंकदहन) सी। तीसरी अड़ाना नार सुत वाके सक्तभरन (शंकराभरण) वाकी है नार काफी कोमल-सेतनकसी। चौथी है मारु नारि पुत्र वाके सक्तकरन (शंकरा-करण) वाके घर नारी पारवती ओपनसी। पांचमी विहाग है सुनार ताकै पुत्र सक्तअरन वाको तो पूरवी पियारीसी?" इनमैंसे कान्हरा (दरवारी) पटरानी है।

यहां ग्रीष्मऋतु होरीसे लेकर जबतक वर्षाका आरम्भ नहो तब तक जाननी। संगीतशास्त्रके स्थूलमानसे तीनही ऋतु हैं–ग्रीष्म, वर्षा और शीत।

अब मैं वर्षाऋतुकी कुछ राग रागनियें लिखताहूँ। वर्षाके आरंभ-से आश्विनप र्यं त यहाँ वर्षा ऋतु जाननी, और इन रागरागनियों-का मध्यान्हसे रातके दस ग्यारह बजेतक प्रधान समय है, कोई लोग सूर्योदयसे रातके एक दो बजेतक भी इनका समय मानतेहैं। वस्तुगत्या मेघमंडलका समय ही इनका समय है। इनसबमें मीयां-की मलार ही सरदार है। समग्रमलारोंका धैवत प्राण है।

१ अथ गौनमलार

कोईलोग इसे गौड़मल्हार भी कहतेहैं, इसमें मध्यम और निषाद उतरे ऋषभ गंधार धैवत ये चढ़े लगतेहैं, आरोहमें निषाद कम है, धैवतपर निषाद तथा षड्जकी मींड विशेष अपेक्षित है।

सरगम यथा—धध पप मप धसा ध प म मप म रे सा पम ग रे सा । म पप धसा सा रेसा नीध पप मप धसा धप म पम गरे सा सारे ग म रेसा ।

मी१ मी१मी१ मी१ मी१

गत— डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडिड़ डा ड़ा डाडिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा ॥

८ ८ ९ ६ ६ ९ ९ १० ११ १२ १० ९ ८ ९ १० ११

८

मी१ मी१

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा ॥१॥

११ १२ ४ ३ ६ ५ ३ २ ३ ४ ५ ६ ८ ९ १० ११

यह धुरपतियोंका गौन है, खयालियोंके गौनमें उतरा निषाद नहीं किंतु चढ़ा लगताहै और कुछ चालमें भी फरक है उसकी भी गत लिखदेताहूँ ।

स

गत—डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा ड़ा डा ड़ा ।

९ ८ १० ९ ९ ११ १२ ११ १० ९ ८ ९ ८ ६ ८ ९

मी१

तोड़ा—डा डा ड़ा डाडाड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा ॥१॥

६ १ १ २ ३ ४ ३ ५ ६ ८ ९ ८ ६ ८ ९

आजकल्ह रासधारीप्रभृति जो मलार गातेहैं वह कौनसा मलार है यह निश्चित नहीं होता वस्तुगत्या वह मलार नहीं किंतु मलारकी छायाका हिंडोला है ऐसा गुणीलोग कहतेहैं अतएव उस अताईमलारका और इन मलारोंका बहुत भेद है हां अताईमलार इन मलारोंकी अपेक्षा मधुर है और सहज भी है । इनमलारोंमें 'सारेनीसा साधनीप' यह तान उत्तम है ।

२ अथ झँझोटी

इसमें मध्यम उतरा है निषाद दोनोंहैं ऋषभ गंधार धैवत ये चढ़े हैं, आरोहमें निषाद नहीं लगता। यह हलकी रागिनी है। इसमें ऋषभसे पंचमपर इकदम जादा जानाचाहिए।

स
गत—डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा।
१० ११ १३ १६ ० १४ ११ १६ १४ ११ १० ६ ९ १० ११
१४ १४ १६ ८ ९

तोड़ा—डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़डा ड़ा डा डिड़डा ड़ा डाडाड़ा।
१० ९ ६ ५ ३ २ ११ ३ २ १ १ २ ३

मी१
डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा ॥१॥
२ ३ ४ ५ ६ ५ ५ ६ ८ ९ ११ १० ६ ९ १० ११
८ ९

३ अथ धूरिया मलार

इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं। आरोहमें धैवत निषाद कम हैं।

सरगम यथा—सा नी रेसा नी धप पसा रेसा गरेसा। गग मम पप धप सा नी रेसा नी धप म गरे सा, इत्यादि।

स मी॥ मी१
गत—डिड़डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा॥१॥
९ ९ ८ ६ ५ ५ ६ १० ११ १३ १ ९ १० ११

४ अथ नटमलारी

इसमें मध्यम उतरा प्रथमनिषाद चढ़ा और द्वितीयनिषाद

उतरा लगताहै ऋषभ गंधार धैवत ये चढ़े लगतेहैं । आरोहमें गंधार धैवत कम हैं ।

सरगम यथा--रेरे म प नीसा नी धप धप पम गरे पम गरे सा । मम पप नीसा रेसा म गरे सा सानी ध प म गरे पम गरे सा, इत्यादि ।

मी१ क

गत--डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

१० १० ८ ६ ५ ५ ६ ५ ६ ८ ९ १० ६ ८

६

५ अथ मीयांकी मलार

यह मलार बहुत ही उत्तम तथा कठिनहै अतएव बड़े उस्ताद-लोगोंके गानेबजानेका है । इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद ये उतरे लगतेहैं इसमें कान्हड़ेका मेल है । आरोहमें कभी निषादको छोड़ भी देतेहैं, कभी ऋषभसे इकदम आगेके पंचम-पर भी जाते हैं । इसमें धैवतपर निषादषड्जकी क्रमसे मींड अधिक अपेक्षितहै ।

मी१ मी१ मी१ मी१ मी१ मी॥ मी॥ सू मी२ मी२ मी१ मी१

गत—डिड़डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडिड़डाड़ा डाडाड़ा ॥१॥

५ ५ ६ ८ ६ ९ ९ १० ११ १३ १३ १३ ११ १० ११ ११

१० १०

सरगम यथा—ध नी सा रेरे सा सारे ध प म प ध नीनी ध सा । रे प म गग रे गमरे सा नीनी ध सा । रेरे पप मम गरे सा मप गग रे धनी सा । मम पप धध सा गसा गरे सा सानि ध प प ध नी सा रे सा नी धप म गगरे ग मरे सा । सानि धप पध नी सा ध सा, इत्यादि ।

रसानीसा नीधप धनीसा सा रे मपमगरेमग रेसाधनीसा नीधप
धुरपत यथा—गगन घन छाए मोर दादुर अकुलाए चपला
धनीरेसा रेसा धनीसा सा रे म प मगमरे सा नीधपधनीसारेसा
चमक डर पाए श्याम आज हून आयरे।

६ अथ मीरांका मलार

इसमें भी ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद उतरे लगतेहैं। इसके आरोहमें गंधार निषादको छोड़देतेहैं अवरोहमें भी कमही लगातेहैं 'रे मम पप म गप ध सा' इसप्रकार विशेष चलना चाहिये।

सरगम यथा—सानी ध सा रेरे मप मप म गम रे सा। मम गम गप मप धसा नृध पम पप म गग मरे सा गरे सा धसा रे सा, इत्यादि।

मी१ स
गत--डिड़ डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।
८ ९ ८ ९ ६ ८ ६ ८ ६ ८ ९ ८ १० ११

मीरांका मलार इसनामसे प्रतीत होताहै कि यह मलार जगत्-प्रसिद्ध भगवद्भक्त श्रीमीरांबाईजीका हो, किंतु उस्तादघरानेसे सुनाहै कि गोपालनायककी लड़कीका भी मीरांबाई ही नाम था यह उसी का मलार है, यही संभव भी है क्योंकि गोपालनायक संगीतके भारी विद्वान् थे उनने अपनी मीरां लड़कीको संगीतविद्या सिखाई होगी इससे उस मीरांने यह मलार बनायाहो। यह भी संभव है कि इस मीरांने अपने पिताके गुरु वैजूबावरेसे भी कुछ संगीतशिक्षा पाईहो क्योंकि वैजूका गोपालपर बहुत स्नेह था।

अकबरपादशाह तथा मीयां तानसेनजीके समय किंवा कुछ पूर्व कालमें वैजूबावरे संगीतके भारी विद्वान थे, ये स्वभावसे फ़कीर थे और कुछ विक्षिप्त भी थे ऐसा सुनाहै अतएव इनसे लोकोपकार अधिक नहीं हुआ, गोपाल कोई छोटी जातिका सुंदर लड़का था इसपर इनका बहुत प्रेम हुआ इससे ये गोपाल को सदा पास रखतेथे और संगीतविद्या सिखातेथे, इनने गोपालको ऐसी मनसे शिक्षादी कि एक तुच्छ घरका लड़का गोपाल नायक कहागया और जगत्‌में प्रसिद्ध होगया और तो क्या अबतक गोपालका नाम चलाआताहै।

शास्त्रमें कहाहै कि "लब्धविद्यो गुरुं द्वेष्टि" अर्थात् विद्या प्राप्त होनेके अनंतर विद्यार्थी गुरुसे द्वेष करताहै, सो गोपाल भी विद्याप्राप्ति के अनंतर नायक कहा अपने गुरु वैजूसे लड़कर किसी राज्यमें चलागया तथा कृतघ्न बन गया, उसराज्यके राजा गोपालका गान सुन बहुत प्रसन्न हुए गोपालको बड़े आदरसे राजाने नौकर रखलिया। राजाने सोचा कि ऐसे विद्वान् गोपालके गुरु न जाने कैसे होंगे उनका गान सुनें तो बहुत ही अच्छा हो इससे राजाने गोपालसे गुरुका नाम पूछा गोपालने कहा ऐसीविद्या मनुष्यसे प्राप्त नहीं होसकती अतएव मेरा कोई गुरु नहीं मुझे यह विद्या देवप्रसादसे प्राप्त हुईहै, राजाने कहा कि 'चाहे जो हो बिना गुरुके विद्या नहीं प्राप्त होती' सो तुम अपने गुरुको बताओ इसमें तुमारी कोई क्षति नहीं, हम और भी आपकी तनखाह जादा करदेंगे और तुमारे गुरुको भी बुलाकर सुनेंगे, गोपालने कहा कि 'मेरा गुरु कोई नहीं' इसपर दोनोंका आग्रह बढ़गया गोपालने जो गुरुद्वेषरूपी दौर्भा-

ग्यका बीज बोयाथा अब उसका अंकुर निकल आया सो राजाने कहा कि 'या तो तुम अपने गुरुको बताओ नहीं तो यदि कभी तुमारा कोई गुरु सिद्ध होगया तो तुमको प्राणदण्ड मिलेगा पक्का जानना' गोपालने इस नियमको (प्राणदंडको) स्वीकृत किया किंतु गुरुको स्वीकृत न किया।

इधर गोपालके बिना वैजूको चैन कहां वावरे ही ठहरे सो वैजू गोपलको खोजते खोजते जहाँ गोपाल था वहां ही जापहुँचे उस समय गोपाल आमदरबारमें राजाके संमुख गारहाथा वैजू एक तो विद्वान् दूसरे वावरे फिर उन्हें भय कहां सो मारे स्नेहके दरबारके बीच जाकर गोपालसे लिपट रोने लगगये (स्नेह बुरी बला है) इसीसे कहाहै कि "अँखियां काहूकी कांहूसों न लगे।" गोपालने दरबारी चपड़ासीको वैजूको परे दूर हटानेका हुकुमदिया भला वैजू परे क्यों हटें! राजाने गोपालसे पूछा 'यह कौन है?' गोपाल बोला 'मैं नहीं जानता कौन है।' वैजूका वेश परमदरिद्र था याने एक फटी गुदड़ी वैजू ओढ़ेथा कितु वैजूके मुखपर वैराग्य और विद्या का बड़ा तेज था बेचारा यथा भरत मृगके स्नेहमें फंसगया तथा वैजू गोपालके स्नेहमें फंसगयाथा, उस तेजके कारण वैजूका कोई निरादर कर न सका। राजाने वैजूसे पूछा कि 'आप कौन हैं और यह कौन है' वैजूने कहा 'मैं वैजू वावरा हूँ यह तो मेरा ही लड़का गुपला है मैंने इसको बड़े श्रमसे संगीत विद्या सिखाई अब यह मेरे बुढ़ापेमें मुझसे लड़ कर चला आया मुझसे इसके बिना रहा नहीं जाता इससे इसे खोजता खोजता यहां आयाहूँ' राजाने गोपालसे कहा कि 'क्यों तेरा गुरु निकल आया न।' गोपालने अब भी गुरुको स्वीकृत न

कर कहा कि 'यह पागल है व्यर्थ बोलताहै मैं इसे जानता भी नहीं मेरा गुरु कोई नहीं' राजाने कहा कि 'अब भी आग्रहको छोड़ दो जो सत्य है सो कहो तुमारा प्राणदण्ड माफ़ किया जायगा मिथ्या बोलनेसे प्राणदण्ड माफ़ न होगा' अथापि गोपालने गुरुको स्वीकृत न किया। राजाने वैजूसे पूछा कि 'हम आपको गोपालका गुरु कैसे समझें?' वैजू बोला कि 'जैसे आपकी इच्छा हो' राजाके हृदयपर बैठगया कि वैजू सच्चा है अन्यथा ऐसी चेष्टा नहीं होसकती गुरु बिना विद्या तो प्राप्त होती ही नहीं सो गोपाल झूठा है, यह विचार सोचा कि दोनोंके गानके तारतम्यसे इसका निश्चय होजायगा सो दोनोंका गान सुना तो वैजू वैजू ही था गोपालकागाना वैजूका शेष प्रतीतहुआ तब राजा ने गोपालसे कहा कि 'वैजू तुमारा गुरु अवश्य है' गोपालने स्वीकृत न कर एक धुरपत गाया उससे वनका मृग आया गोपालने उस मृगके कंठमें एकमुक्तामाला पहना दी गाना बंद किया मृग वनको चलागया तब गोपालने राजासे कहा कि यदि यह मेरा गुरु है तो भला उस मृगको तो बुलावे राजाने यह बात वैजूसे कही वैजू गाने लगे सो एक छोड़ बीस तीस मृग मुक्तामाला पहिरेहुए वनसे आगए वैजूने राजा और गोपालसे कहा कि अपनी माला पहचानकर उतारलो फिर क्या था राजा चकित और गद्गद हो सिंहासनसे नीचे उतर आए गोपाल लज्जित होगया राजाने बड़े क्रोधसे गोपालको आक्षेपवचन कहा कि ऐसे लोकोत्तर महात्मा गुरुके साथ तूऐसी की तेरेसे कृतघ्नका मुख देखना पाप है अब तुझे प्राणदण्ड मिलताहै, पूर्व वृत्तांत वैजूसे कहकर गोपालके तत्क्षण वधकी आज्ञादी वैजू रोने लगा हाथ जोड़ पल्लापसार गोपालप्राणकी

राजासे भिक्षा मांगी राजाने एक न मानी राजहठ चढ़गया वैजूसे कहा कि 'आपकी सेवाकेलिए मैं स्वयं हाज़िर हूँ आप अपनी कुछ चिंता न करें किंतु इस कृतघ्नको मरवाए बिना न छोडूंगा' बस गोपाल मारागया उसका दाह कर उसकी अस्थिएँ एक जलाशयमे गेर दीगईं। वैजूकी फिर क्या दशा हुई सो विदित नहीं।

गोपालका यह वृत्तांत सुन उसकी मीरां लड़की ने पितृस्नेहसे वहां आकर उस जलाशयपर स्नान कर यह (मीरांकामलार) मलार ऐसा गाया अर्थात् इसप्रकार मलार ऐसा गाया कि सुनतेहैं कि गोपालकी अस्थिएँ जलपर तैर आईं उनको मीरांने इकट्ठा करलिया। इस मलारकी यह कथा सुनीहै आगे सचझूठकी रामजाने, उस समयके उनलोगोंकी लड़कियोंकी यह सामर्थ्य थी। यदि गोपालका कोई लड़का होता तो न जाने क्या करता। इस समय तो सब गप्पे हैं, गप्पें चाहे जितनी सुनलो।

७ अथ मेघराग

मेघरागमें वस्तुगत्या गंधार तथा धैवत वर्जित होनेसे यह औडुव रागहै अनएव सारंगके सदृशहै सारंगका पति भी है इसमें ऋषभ चढ़ाहै मध्यम निषाद ये उतरेहैं। गंधार धैवत इनको सर्वथा त्याग देनेसे सारंग ही बनजातोहै इसकारण उस्तादलोग इसमें गंधार धैवत इनको भी थोड़ा लगादेतेहैं।

सरगम यथा–सा रेरे म पप मप मम रेरे सा। मम पप नीसा रेरे सा रेरे नीनी पप मप मम रेरे सा। सानी पनी पम पप मप सां नी रेरे सा। रेरे नी सा मरे पप मप रे सारे पम प नी सा रेरे सा रे नी पम रेरे सा इत्यादि।

ख

गत--डिड़डा डिड़डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा।
१०१० ४ ६ ८ १० १० ११ १३ ११ १० ११

तोड़ा--डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डा ड़ा डिड़ डा डा ड़ा॥१॥
२ ३ ४ ६ ३ ४ ६ ८ ४ ६ ८ १० ६ ८ १० १०

स्वरसागरमेँ मेघकी पटरानी सारंग देवता इंद्र मौसम वर्षा कहाहै। "सारंग अरु गौडगिरी औ जैजैवन्ती धूरिया सभावती है नारी मेघरागकी। सारंगके पुत्र सुनौ सावत (सावन्त वा सावन) है वाको नाम ताकी तो नार सकवनसी बड़भाग की। गौड़ (गौन) पुत्र गौड़वती वाकी नार, तीजै जैजैवंतीको पुत्र नट वाउकी। देवगिरी, चौथे धूरियाको पुत्र सुनो मोदमल्हार कुकुव भारजा सुहागकी। पांचवी सभावतीकौ पुत्र मधुमाध वाकी तो नारी मधुमाधवी सुनौ पियारी अतिमानकी ॥१॥"

८ अथ सूरकी मलार

इसमें धैवत नहीं लगता, ऋषभ चढ़ा है गंधार मध्यम निषाद उतरेहैं आरोहमें गंधार कम है, इसमें सारंगका मेल विशेष है अत एव ऋषभ जादा लगताहै। ऋषभसे गंधारपर ठहरकर फिर ऋषभपर वहाँसे षड्जपर आजाना चाहिए।

सरगम यथा–नीसा रेरे सा सारे ग रेरे सा। सारे म पप मप म गरे सा नी रेरे सा। मम पप नी सा पसा रेरे नी पम पप मरे रे गरे सा नी रेरे सा नी इत्यादि।

गत–डिड़डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डाड़ा।
८ ८ ६ ८४ ३ १ ७ २ ३ ४ ६ ८ १० ११ १२

ख

स
तोड़ा--डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़डा ड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा॥१॥
११ १० ९ ९ १० ८ ६ ४ ३ ४ ६ ८ १० १० ११
११

मैंने यहाँ गौनमलारसे लेकर सूरकी मलार तक आठ राग-रागनियें वर्षा ऋतुकी लिखी हैं इनके सिवाय कुछ और भी इस ऋतुकी रागिनी हैं।

अब मैं वसंत ऋतुकी अर्थात् मार्गशीर्षसे लेकर फाल्गुन-पर्यंतकी कुछ रागरागनियें लिखताहूँ दुपहरसे अर्धरात्रतक इनका समयहै।

१ अथ काफी

काफीको विशेषकर फाल्गुनमें ही गाते बजातेहैं यह प्राधान्येन होरीकी रागिनी है बहुत प्रसिद्ध है। इसमें ऋषभ धैवत चढ़े और गंधार मध्यम निषाद उतरे लगतेहैं।

सरगम यथा--सारे नी सा रे ग मम प ध पम पम गरे सा। मम प ध नीसा सारे सा नी धप म गरे सा रेनी सारे गग मम प मप म गरे सा, इत्यादि।

स दुगन
गत-डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाड़ा डाड़ा डा ड़ा'डाड़ा डाड़ा डाड़ाडाड़ाडाडा'
९ १० ८ ६ ५ ४ ४ ६ ८ ६ ८ ६ ५ ६ ८ ६ ८ ९ १०
११ ५

तोड़ा-डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥१॥
११ १० ९ ८ ६ ६ ५ ८ ६ ८ ६ ९ ८ ९ १० ११

२ अथ वसंत

वसंत वहुत ही उत्तम रागपुत्र है बड़े विद्वानोंके गानेबजाने- योग्य है। इसमें ऋषभ उतरा गंधार धैवत निषाद ये चढ़े मध्यम दोनों लगते हैं किंतु उतरा मध्यम बहुत कम है। इसके आरोहमें प्राय: ऋषभ और पंचमको छोड़ देतेहैं, वस्तुगत्या इसका गाना- बजाना कुछ कठिन है। अवरोहमें भी ऋषभको जरासाही लगाना चाहिए।

च च च
सरगम यथा–नी सा ग म ध 'ममम' गगरे सा नी ध पम धनी
च च च
सा। मम ग मम ग सा सानी सा रेसा नीध सा मगरे सा। सा
उ च च
म ध नी ध प म धम गरे सा। स ग म ध सा धनी सा गरे सा
सा नी ध प म ध म ग रे सा, इत्यादि।

मी१ स मी१
गत–डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा डा ड़ा।
३ ४ ६ ६ ५ ७ ६ ६ ७ ५ ५ ७ ६ १० ११
६ ६
७

मी२
तोड़ा–डिड़डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़डा ड़ा डा डा ड़ा॥१।
६ ६ ७ ५ ४ ५ ३ १ ३ ४ ५ ५ ६ ७ ६ ११
२ १०

यह ध्रुरपतियोंका वसंत है, खयालियों का वसंत इससे पृथक् है उसमें मध्यम तथा धैवत उतरे ही विशेष लगते हैं यही उसका इससे भेद है। मीयां अमीरखांजीने इन दोनों वसंतोंसे पृथक् भी एक और वसंत सुनायाथा, बताया भी था।

मीर　　　　मीर　　　　मीर

तोड़ा--डा डिड़ डाड़ा डाडिड़ डाड़ा डाडा ड़ा डिड़ डाडिड़ डाड़ा ॥ १॥

६ ७ ५ ४ ५ ७ ५ ५ ७ ६ ६ ६ ११

स्वरसागरमें हिंडोलकी पटरानी टोड़ी देवता ब्रह्मा वर्ण पीत कहा है।

"पाँचौं नार हिंडोलकी टोड़ी पहिली वाम ।
जैतश्री आसावरी अरु बंगाली नाम ॥
और पाँचवीं सैंधवी सुत इनके सुन कान ।
टोड़ीपुत्र भकार बधू रूपमंजरी जान ॥
जैतश्रीको पुत्रसो लङ्कदहन कहलाय ।
पटमंजरी वाकी बधू वाको अधिक सुहाय ॥
सुनौ पुत्र आसावरी जाहिकहौ खट राग ।
भीमपलासी नार है वाघर अति बड़ भाग ॥
बंगालीकौ पुत्र वसंत वधूवसंतीको वह कंत ॥
पुत्र सैंधवीकौ सुनौ पंचम ताको नाम ।
वाकी वधू रिवासुरी मनमोहनसी वाम ॥" इति ।

मैंने शीतऋतुके ये चार रागरागिनी लिखेहैं ।

यद्यपि मेरे लिखे ये रागस्वरूप वाद्यमात्रकेलिए एक समानहैं तथापि वीणादिवाद्योंकी वादनप्रणाली पृथक् पृथक् है वह बिना शिक्षा के प्राप्त नहीं होसकती । इतना ही नहीं किंतु बड़े बड़े गुरुघरानोंका तो एक प्रकारके भी गानेबजानेमें परस्पर भेद रहताहै, यथा गुवरहारों और खंडारोंके धुरपतका एवं वाद्योंमें भी । वीणा रवाब स्वरश्रृंगार सैनीसितार इत्यादि वाद्यों की वादनप्रणाली बहुत कठिन है ।

आदि से मैंने भैरवरागसे लेकर हिंडोलराग तक पूरे एकसौ

रागरागिनी लिख दिये हैं, यद्यपि इनके सिवाय पचासरागरागिनी तो मुझे भी और मालूम हैं और कितने हैं इसका कुछ नियम नहीं होसकता सबमिलकर दो अढ़ाईसौ रागरागिनी अवश्य हैं, उनमें से पचास साठ तो सर्वथा लुप्त हो चुके हैं जो वर्तमान हैं वे भी ठुमरीरसिकोंकी कृपासे नष्ट होरहेहैं। कुछ कालतक ये सब राग नष्ट होकर देसी गीत ही प्रधान हो जाएँगे। उस्तादघरानों को वस्तुगत्या विद्यामें प्रेम नहीं किंतु वे धन चाहतेहैं धनदेनेवाले श्रीमानोंके बोध जैसे हैं वे स्पष्ट ही हैं फिर ये बेचारे राग कैसे बचें, जो लोग विद्यामें प्रवृत्त होते भी हैं वे समयके प्रभावसे विद्यातत्त्वको त्याग कर दंभपाखंडमें अग्रसर होजातेहैं इससे भी विद्या नष्ट होरहीहै। तथापि जो मैंने एक सौ रागरागनी यहाँ लिखेहैं वे भी कम नहीं हैं। वस्तुगत्या शिक्षाके बिना विद्या आ नहीं सकती जिसने किसी भी अच्छे गुरु (उस्ताद) से शिक्षा पाईहै उसको मेरे इस ग्रन्थसे कुछ सहायता मिलसकतीहै। जिसने गुरुमुखसे उस-राग का स्वरूप ही जाना नहीं वह उसरागको कभी भी गाबजा सकता नहीं, गाने बजानेमें प्रथम यह है कि रागका स्वरूप न बिगड़े, यह रागस्वरूपज्ञानके बिना होसकता नहीं, फिर स्वर ताल ठीक होने चाहिए, तानें मार्मिक होनीं चाहिए, गानेमें गला बजाने में हाथ सुरीला होनाचाहिये यह बात इसविद्यामें और विद्याओंसे विशेष है। बहुत से रागरागिनी ऐसे भी हैं कि जिनके गानेबजाने की शैली पृथक् पृथक् है सभी एक शैलीसे गाए बजाए नहीं जाते यह भी एक गूढ़ तत्त्व है। यद्यपि चढ़े उतरे स्वर सभी रागोंकेलिए एक समानहैं तो भी सूक्ष्मभेद भी रहताहै यथा

ऋषभ विलावलमें चढ़ाहै सारंगमें विलावलसे भी सूतभर चढ़ा रहता है एवं और रागोंमें भी जानना।

जो राग शांत हैं उनका प्रायः रात्रिका और दिनका तृतीय चतुर्थ प्रहर काल है शांतातिरिक्त रागोंका अन्य काल है। ताल-रहित आलाप जोड़कर गानाबजाना शांतरसानुकूल है अतएव उसका दरजा बड़ा है और आजकलके रसिकोंको वह पसंद भी नहीं। ताल युक्त गानाबजाना शृंगाररसके अनुकूल है।

जिस रागरागनीके गानेबजानेका अभ्यास छूट जाताहै उसका फिर अभ्यास किये विना उत्तम गानाबजाना नहीं बनता। थोड़ा थोड़ा काल अनेक रागोंको सदा गानेबजानेसे एक रागको अधिक कालतक गानेबजानेकी शक्ति नहीं उत्पन्न होती।

जो गानवाद्यकी शैली हज़ार आठ सौ वर्षसे परिष्कृत होकर चली अब उसकी अंत्यावस्था है जो उत्पन्न होता है वह एक न एक दिन अवश्य नष्ट होताहै भगवत्‌ने भी कहा है कि "जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः" मीयां अमृतसेनजी हैदरबख़शजी आलमसेनजी इनलोगोंसे जो मैंने गानाबजाना सुनाहै उसकी अब छाया भी शेष नहीं रही, जो कुछ शेष है वह भी अमीरख़ॉजी[1] और रहमतख़ां-जीके दमतक है इनके अनंतर सर्वथा इसविद्याकी इतिश्री समझ-लेनी, इस इतिश्रीमें भी उनलोगोंकी कोई क्षति नहीं क्षति तो केवल हम आगेवाले जिज्ञासुओं की ही है।

"सकल पदारथ या जगमाहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं।"

स्त्रीके तुल्य रागनियोंके भी सुकुमारमध्यपुष्टत्वभेदसे तीन प्रकार हैं।

---

१ अब ये भी दोनों नहीं रहे अर्थात् इतिश्री होगई।

१ सुकुमार यथा आसावरी छाया प्रभृति,
२ मध्यरूपा यथा टोड़ी भैरवी प्रभृति,
३ पुष्टरूपा यथा कन्हाड़ा भीमपलासी इत्यादि ।

---

१ केवलऋषभरहित—मालश्री नट इत्यादि ।
२ केवलगंधाररहित—गिरिनारी शुद्धसारंग इत्यादि ।
३ केवलमध्यमरहित—गुनकरी प्रभृति ।
४ केवलपंचमरहित—गूजरी पूरिया मारवा दर्शमंजरी इत्यादि।
५ केवलधैवतरहित—देवसागप्रभृति ।
६ केवलनिषादरहित —आसा प्रभृति ।
७ षड्जगंधारद्वयरहित—आहंगसारंग,
८ ऋषभपंचमद्वयरहित—मालकौस हिंडोल प्रभृति ।
९ गंधारधैवतरहित—मधुमाद प्रभृति ।
१० मध्यमनिषादरहित—भूपालीप्रभृति ।
११ गंधारमध्यमपंचमधैवतरहित—जलधरसारंग ।

मेरी जानमें सबसे प्रथमका गाना वह है जो ऋग्वेद यजुर्वेद का है उसके अनंतर उन्नति होने से सामवेदका गाना स्थिर हुआ । उसके अनंतर स्वरोंके प्रस्तारसे भैरवादि छै राग क्रम से वा अक्रमसे बने उसके अनंतर जो राग बने उनको रागिनियें बनाया उसके अनंतर रागपुत्र उनके अनंतर रागपुत्रवधू बनीं ऐसा तर्क होताहै आगे राम जाने। सब रागों की प्रधान प्रकृति तो स्वरही हैं संकीर्ण रागोंमें अप्रधान प्रकृति वह वह राग भी होताहै यथा बराड़ी श्रीराग और टोड़ीके मेलसे बनीहै सो श्रीराग और

टोड़ो ये भी बराड़ीके प्रकृति हुए अर्थात् प्रकृति विकृतिभाव रागोंमें भी है । और भैरवीमेंसे उतरे मध्यम निषाद निकालकर चढ़े लगादिये सो टोड़ो बनगई उसमेंसे भी पंचम पंचम निकाल देने से गूजरी बनगई यह प्रस्तारका क्रम है ।

रागवाद्योंमेँ गानकी सहायताकेलिए प्रथम तुम्बूरा बनाया-गया, जब गानेमें कुछ लोगोंको लज्जा होने लगी तो उनकेलिए वीणा बनाईगई उसके अनंतर क्रमसे और रागवाद्य निकले। यथा वेदांत-शास्त्रमें कई शास्त्रोंकी अपेक्षा होनेसे वेदांतशास्त्रियोंने सबसे अधिक प्रतिष्ठा पाई तथा गानकी अपेक्षा रागवाद्य उत्तम बजानेमें अधिक क्लेश (श्रमादि) तथा बुद्धिव्यय होनेसे वीणाकारोंने गायकोंसे भी अधिक प्रतिष्ठा पाई । वीणाके अनंतर ही और रागवाद्य बने ।

तालवाद्योंमें नगारा सबसे अधिक प्राचीन प्रतीत होताहै, नगारे का स्वरूप भी इस तर्कका सहकारी है उसके अनंतर मृदंग बना फिर तबला प्रभृति बने ऐसा प्रतीत होता है । आगे राम जाने। डमरू तो रागताल दोनों का वाद्य है वस्तुगत्या डमरू को बजाने वाला अब कोई नहीं । कांस्य के तालवाद्य की विशेष उन्नति नहीं हुई ।

यद्यपि मैंने सितार सीखाहै तथापि मुझे रागवाद्योंमें सबसे बढ़कर सनाई पसंद है एक तो सनाईकी आवाज़ सैकड़ों जनोंपर छाजातीहै दूसरा इसका आकार छोटा सा है एक हाथ में चाहे चार सनाई उठालो ये गुण दूसरे रागवाद्यमें नहीं । हमारे सितारके लिए तो रेलवेका एक सीट चाहिये ।

रागपरिवारकोष्ठ

रागनाम	रागिनीनाम	रागपुत्रनाम	रागपुत्रवधूनाम
भैरव	भैरवी	देवगंधार	सुवरई
	विभाकरी	विभास	सूही
	गूजरी	देवसाग	जूही
	गुनकरी	गंधार	कुरंक
	बिलावल	सूहा	बहुली
श्रीराग	गौरी	कल्याण	अहीरी
	गौरा	गौड	टंक
	नीलावती	तनैना	सिवाड़ा
	विहंगड़ा	हेमकल्याण	विहंगिनी
	विजयन्ती	खेमकल्याण	लक्ष्मी
	पूरिया	नट	मांझ

रागपरिवारकोष्ठ

रागनाम	रागिनीनाम	रागपुत्रनाम	रागपुत्रवधूनाम
मालकौंस	भठहारी	श्रंग	सोहनी
	सरस्वती	वैराग	श्ररघटी
	रूपमंजरी	विहंग	नागवती
	चतुरकदंबी	सुढँग	ललिता
	कौशिकनंदिनी	परज	रामकली
दीपक	कान्हड़ा	गारा	सोरठ
	किदारा	जलधर	लंकधर
	श्रड़ाना	शंकराभरण	काफ़ी
	मारू	शंकराकरण	पार्वती
	विहाग	शंकरा	पूरवी

रागपरिवारकोष्ठ

रागनाम	रागिनीनाम	रागपुत्रनाम	रागपुत्रवधूनाम
मेघ	सारंग	सावन	सकवनी
	गौड़गिरी	गौड (मलार)	गौडवती
	जैजैवंती	नट (मलार)	देवगिरी
	धूरिया	मोदमलार	कुकुव
	सभावती	मधुमाध	मधुमाधवी
हिंडोल	टोड़ी	भकार	रूपमंजरी
	जयश्री	लंकदहन	पटमंजरी
	आसावरी	खट	भीमपलासी
	बंगाली	वसंत	वसंती
	सैंधवी	पंचम	रिवासुरी

मैंने यह रागपरिवार स्वरसागरके अनुसार लिखाहै इसमें मूलग्रंथलेखकके प्रमादसे कुछ गड़बड़ अवश्य होगईहै उसमें वश कुछ नहीं। और रागपरिवार भी मतभेदसे भिन्न भिन्न प्रकारका है वस्तुगत्या यह कल्पनामात्र है, यह परिवारकल्पना इसदेशमें निसर्गसे ही चलीआतीहै। रागके रूपवेशपरिवारादिके श्रवण-से चित्तको विशेष चमत्कार न होनेसे ही संगीतविद्वानोंने इसकी उपेक्षा करदी अतएव बहुत अल्प विद्वानोंको इसका ज्ञान है, वस्तु-गत्या यह विषय कुछ चमत्कारी नहीं।

प्रात:काल चतुर्थप्रहर और रात्रि ये तीन काल और ग्रीष्म वर्षा और शीत ये तीन ऋतु प्रधान होनेसे छैराग हुए। और षड्जातिरिक्त ऋषभादि छैस्वरोंके प्राधान्यसे भी छैराग हुए ऐसा तर्क होताहै, उनमेंसे ऋषभप्राधान्यसे श्री. गंधारप्राधान्यसे भैरव. मध्यमप्राधान्यसे मालकौस. पंचमप्राधान्यसे दीपक. धैवतप्राधान्यसे हिंडोल. निषादप्राधान्यसे मेघ. बनाहै, षड्जका तो सभीमें प्राधान्य है क्योंकि षड्ज सब स्वरोंका राजा है, ऐसे राग रागिनी दो चार ही हैं जिनमें षड्जका प्राधान्य नहीं। रागोंकी षट्संख्यामें और भी इसीप्रकार कोई तर्क करसकतेहैं।

गाना विप्रलंभश्रृंगारके गीत गानेकेलिए चला फिर संभोग-श्रृंगारमेँ फिर शांतमें फिर वीरमें घुसा अंतमें बात बातमें घुस गया ऐसा तर्क होताहै, अति करदेना यह लोकरीति ही है।

कफवातप्रधान रोगोंकेलिए सारंगोंका. उन्मादकेलिए टोड़ी प्रभृतिका, जोफजिगरकेलिए भैरवी प्रभृतिका, पित्तप्रधान रोगोंके-लिए देशी दरबारी प्रभृतिका गाना बजाना हितकारी है।

प्रत्येक राग प्रत्येक रागपर जम नहीं सकता किन्तु विलक्षण जमता है। कुछ राग ऐसे हैं जो प्रथम सप्तकको विशेष चाहतेहैं यथा दरबारी प्रभृति, कुछ राग द्वितीय सप्तकको विशेष चाहतेहैं यथा इमन प्रभृति, टोड़ी प्रभृतिके तीनों सप्तक अनुकूल हैं, खमाच प्रभृतिके प्रथम सप्तक विशेष अनुकूल नहीं। ये सब रहस्य दुर्लभ हैं।

बजाई भी अनेक प्रकार की है यथा देर तक एक राग को बजाने के लिए वाद्य का एक एक स्वर बढ़ते जाना, अस्ताई अंतरे का बजाना, बिलंबित मध्यद्रुत तीनों लयोंको क्रमसे बजाना फिर संकीर्ण करके बजाना, छोटी रागनियोंमें अंतरेको मंद बजाकर अस्ताईको जोरसे बजाना किंवा एक सम बजाना, इत्यादि।

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
१ अडाना	सर्व	॥६*	संपूर्ण	ग म ध नी	रे	०
२ अल्हैया	सर्व	२	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
३ अहीरी	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रे म ध	ग नी	०
४ आसा	सर्व	प्रभात	षाडव	म	रे ग ध	नी
५ आसावरी	सर्व	१—२	संपूर्ण	सभी	०	०
६ आहंगसारङ्ग	ग्रीष्म	२॥	औडुव	मनी	रे ध्	स ग
७ इमन	सर्व	५॥	संपूर्ण	०	सभी	०
८ इमनकल्याण	सर्व	५॥	संपूर्ण	म्	सभी	०
९ उमातिलक	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रे म ध	ग नी	०
१० काफी	फागुन	१—६	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
११ कामोद्	सर्व	५—६	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०

सरगममें ग् ऐसे स्वरों का प्रयोग अल्प जानना।

* पंचमप्रहर आधा और षष्ठ प्रहर संपूर्ण अड़ानेका समय है। इसी रीतिसे आगे भी अङ्कोंसे समय जानना।

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्व
१२ कालंगड़ा	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रे म ध	ग नी	०
१३ कुंवाएती	सर्व	६।	षाडव	नि	रे ग म ध	प
१४ कुकव	सर्व	२	संपूर्ण	म नी	रे ग ध नी	०
१५ केदारनट	सर्व	५–६	संपूर्ण	म	रे ग धनी	०
१५ केदारा	सर्व	५–६	संपूर्ण	म	रे ग म् ध नी	०
१६ कौंसिया-कानड़ा	सर्व	॥६	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
१७ खट	सर्व	१–२	संपूर्ण	रेगमधनी	रे	०
१८ खट(अमीर-खुसरोकी)	सर्व	१–२	संपूर्ण	सभी	०	०
१९ खमाच	सर्व	५–६	संपूर्ण	मनी	रे ग धनी	०
२० गंधारी	सर्व	१–२	संपूर्ण	सभी	०	०
२१ गारा	सर्व	५–६	संपूर्ण	म	रे ग धनी	०
२२ गिरिनारी	सर्व	६।	षाडव	मनी	रे ध	ग
२३ गुनकरी (ली)	सर्व	२	षाडव	०	रेनी ग ध	म
२४ गूजरी	सर्व	१–२	षाडव	रे ग ध	म नी	प

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
२५ गौड़सारंग	ग्रीष्म	३॥	संपूर्ण	म	रेगम्‌धनी	०
२६ गौन	वर्षा	१—६	संपूर्ण	मनीग	रेगधनी	०
२७ गौरा	स	प्रभात	संपूर्ण	रे ध	गमनी	०
२८ गौरी	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे ध	गमनी	०
२९ छाया	सर्व	५—६	संपूर्ण	म्	रेगम्‌धनी	०
३० छायानट	सर्व	५—६	संपूर्ण	म	रेगम्‌ध नी	०
३१ जंगला	सर्व	३—६	संपूर्ण	गमनी	रेधनी	०
३२ जयश्री	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे ध	गम्‌ नी	०
३३ जलधरसारङ्ग	ग्रीष्म	२-॥	सामिक	नि	रे	गमपध
३४ जिला	सर्व	३—६	षाडव	गम नी	रे ध	प्
३५ जीलफ	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रेमध	ग नी	०
३६ जैजैवंती	सर्व	॥६	संपूर्ण	गम नी	रे ध	०
३७ जैत	सर्व	५—६	षाडव	०	सभी	म्
३८ जोगिया	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रेमध	गनी	०

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
३९ जौनपुरी	सर्व	१–२	संपूर्ण	सभी	०	०
४० झंझोटी	वर्षा	२–६	संपूर्ण	म नी	रे ग ध नी	०
४१ टोडी	सर्व	१–२	संपूर्ण	रे ग ध	म नी	०
४२ तनक	सर्व	६।	षाडव	रे म	ग नी	ध
४३ तिरवन	सर्व	।।४	संपूर्ण	रे ध	ग म नी	०
४४ तिलंग	ग्रीष्म	५–६	षाडव	म नी	ग ध	रे
४५ तिलककामोद	सर्व	५–६	षाडव	म नी	रे ग म् नी	ध्
४६ दरबारी	सर्व	।।६	संपूर्ण	ग म ध नी	रे	०
४७ दर्शमंजरी*	सर्व	५–६	षाडव	०	सभी	प
४८ देवगिरी	सर्व	२	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
४९ देवसाग	सर्व	२	षाडव	ग म नी	रे	ध
५० देस	सर्व	६।	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
५१ देसकार	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रे	ग म ध नी	०

* यह दर्शमंजरी और अमृतमंजरी ये दो रागिनी मेरी ही बनाई हैं।

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
५२ देसी	सर्व	१—२	संपूर्ण	ग म ध नी	रे	०
५३ धनाश्री	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे ध	ग म नी	०
५४ धवलश्री	सर्व	॥४	औडुव	रे	मनी	गध
५५ धानी	सर्व	३॥	संपूर्ण	गमनी	रेध	०
५६ धूरियामलार	वर्षा	१—६	संपूर्ण	गमनी	रेध	०
५७ नट	सर्व	५—६	षाडव	म	गधनी	०
५८ नटमलारी	वर्षा	५—६	संपूर्ण	मनी	रेगधनी	०
५९ नायकी कानडा	सर्व	॥६	संपूर्ण	गमनीध	रेध	०
६० पंचम	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रेध	गमनी	०
६१ पटमंजरी*	सर्व	सायं		०	प्रायः सबी	प
६२ परज	सर्व	६—७	संपूर्ण	रेध	गमनी	०
६३ परजका-लंगड़ा	सर्व	६—७		रेमध	गनी	०

* कोई २ लोग 'पटमंजरीको प्रातःकालकी बतातेहैं बिलावलके तुल्य। वस्तुगत्या पटमंजरी और रूपमंजरी ये दोनों ही लुप्तप्राय हैं। कोई केदारे के तुल्य कहते हैं। मेरे पास इसकी एक छोटी सी गत है बस।

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्व
६४ पहाड़	सर्व	५॥	षाडव	म्	रेगधनी	म्
६५ पार्वती	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रेमध	गनी	०
६६ पीलू	सर्व	३—६	संपूर्ण	गमध्	रेमधनी	०
६७ पूरवा	सर्व	२	संपूर्ण	म	रेगधनी	०
६८ पूरवी	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे	गमधनी	०
६९ पूरिया धुरपती	सर्व	५—६	षाडव	०	सभी	प
७० पूरिया खयाली	सर्व	५—६	षाडव	रे	गमधनी	प
७१पूरियाधनाश्री	सर्व	॥४	संपूर्ण	रेध	गमनी	०
७२ प्रदीप	सर्व	३॥	संपूर्ण	गमनी	रेध	०
७३ प्रभाती	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रेम	गमधनि्	०
७४ भकार	सर्व	प्रभात	षाडव	रेम	गमधनि्	प
७५ भटहारी	सर्व	५॥	संपूर्ण	म	रेग धनी	०
७६भीमपलासी	सर्व	३॥	संपूर्ण	सभी	०	०
७७ भूपाली	सर्व	५—६	औड़ुव	०	रेगध	मनी

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
७८ भैरव	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रे म ध	ग नी	०
७९ भैरवी	सर्व	१–२	संपूर्ण	सभी	०	०
८० मधुमाद	ग्रीष्म	२॥	औडुव	मनी	रे	ग ध
८१ मलोया-केदारा	सर्व	२॥	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
८२ मारवा	सर्व	॥४	षाडव	रे	ग म ध नी	प
८३ मालकौस	सर्व	६–७	औडुव	ग म ध नी	०	रे प
८४ मालश्री	सर्व	॥४	षाडव	०	ग म ध नी	रे
८५ मालीगौरा	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे ध	ग म ध नी	०
८६ मीयांकी-मलार	वर्षा	१–६	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
८७ मीयांकी-सारंग	ग्रीष्म	२॥	षाडव	०	रे म् ध नी	ग
८८ मीरांकी-मलार	वर्षा	१–६	संपूर्ण	ग म नि	रे ध	०
८९ मुलतानी धुरपती	सर्व	३॥	संपूर्ण	रे ग ध	म नी	०
९० मुलतानी खयाली	सर्व	३॥	संपूर्ण	रे ध	ग म नी	०
९१ मेघ	वर्षा	१–६	औडुव	नीम	रे	ग ध

अकारादिक्रमसे कुछ रागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
९२ रामकली	सर्व	१—२	संपूर्ण	सभी	ग्	०
९३ लङ्कदहन	ग्रीष्म	२॥	षाडव	मनी	रे ध	ग
९४ लच्छासाग	सर्व	२	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
९५ ललित	सर्व	प्रभात	षाडव	रे म ध	ग म नी	प
९६ लाचारी टोड़ी	सर्व	१—२	संपूर्ण	ग म ध नी	रे	०
९७ बंगाल	सर्व	प्रभात	संपूर्ण	रे ध म	ग नी	०
९८ बंगाली	सर्व	१—२	संपूर्ण	सभी	०	०
९९ वढ़हंस	ग्रीष्म	२॥	आडुव	मनी	रे	ग ध
१०० वरवासैनी	ग्रीष्म	२॥	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
१०१ वराड़ी	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे ध	ग म नी	०
१०२ वसंत-खयाली	शीत	४—६	संपूर्ण	रे म ध	ग म नी	०
१०३ वसंत धुरपती	शीत	४—६	संपूर्ण	रे म्	ग म ध नी	०
१०४ वहार	शीत	४—६	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
१०५ वागीश्वरी	सर्व	॥६	षाडव	ग म ध नी	रे ध	प

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
१०६ विभास	सर्व	प्रभात	षाडव	रे	ग म ध नी	प
१०७ बिलावल शुद्ध	सर्व	२	संपूर्ण	म्	रेगम्धनि	०
१०८ विलास-खानीटोडी	सर्व	१-२	संपूर्ण	ग म ध नी	रे	०
१०९ विहंगिनी	सर्व	६॥	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
११० विहाग	सर्व	६॥	संपूर्ण	म	रे ग म ध नी	०
१११ वृंदावनी	ग्रीष्म	२॥	संपूर्ण	ग् म नी	रे ध्	०
११२ शङ्करा	सर्व	५-६	संपूर्ण	०	रे ग म् ध नी	०
११३ शहाना	सर्व	॥६	संपूर्ण	गमनी	रेध	०
११४ शुकल	सर्व	२	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
११५ शुद्ध कल्याण	सर्व	५-६	संपूर्ण	०	रे ग म् ध नि्	०
११६ शुद्धसारङ्ग	ग्रीष्म	२॥	षाडव	म	रे ध् नी	ग
११७ श्याम	सर्व	५॥	संपूर्ण	०	सभी	०
११८ श्यामका लङ्गड़ा	सर्व	॥४॥	संपूर्ण	रेध	ग म नी	०
११९ श्रीराग	सर्व	॥४	संपूर्ण	रे ध	ग म नी	०

अकारादिक्रमसे कुछरागोंका विवरणकोष्ठ

रागनाम	ऋतु	प्रहर	जाति	उतरे स्वर	चढ़े स्वर	वर्जितस्वर
१२० सावन	वर्षा	५–६	षाडव	मनि	रे ध	ग
१२१ सिंधभैरवी	सर्व	१–२	संपूर्ण	ग म धनी	रे	०
१२२ सिंधूरा	सर्व	३॥	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
१२३ सुघरई	सर्व	२	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
१२४ सुरपरदा	सर्व	२	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०
१२५ रंकी-मलार	वर्षा	१–६	संपूर्ण	ग म नी	रे ध् नी	०
१२६ सूहा	सर्व	२	संपूर्ण	ग म नी	रे ध	०
१२७ सैंधवी	सर्व	१–२	संपूर्ण	रे ग म ध	नी	०
१२८ सोरठ	सर्व	॥६॥	संपूर्ण	मनी	रे ग् ध नी	०
१२९ सोहनी	सर्व	॥७	षाडव	रेम	ग ध नी	प
१३० हमीर	सर्व	५–६	संपूर्ण	म	सभी	०
१३१ हिंडोल	शीत	४–६	औडुव	०	ध नी	रे प
१३२ हेम-कल्याण	सर्व	५–६	संपूर्ण	म	रे ग ध नी	०

शुद्धं रागस्वरूपं मिलितमपि परैर्बुद्धिपूर्वं हि किं वा
व्याप्तं संगीतशालां श्रवणसुखकरं तानसौन्दर्ययुक्तम् ।
आदौ मध्येऽवसाने त्रिविधलययुतं युक्तरीतिप्रयुक्तं
प्रौढाचार्योपदिष्टं हरति यदि मनः सा हि संगीतरीतिः ॥१॥
ज्ञानाभावेन तावन्मिलितमपि परैर्विस्वरं रीतिरिक्तं
मन्देष्वेव प्रयुक्तं श्रवणसुखहरं तानसौन्दर्यहीनम् ।
अज्ञाचार्योपदिष्टं लयनयवियुतं स्वात्मनैव प्रशस्तं
स्वल्पं यद्रागरूपं मधुरिमरहितं सा न संगीतरीतिः ॥२॥

॥ इति रागाध्यायः समाप्तः ॥

———

अथ

तालाध्याय

कालगतिका वा कालका जो मान करना (नापना है) वही तालपदार्थ है कहा भी है "तालः कालक्रियामानम्" इति। जिस तालकी जितनी मात्राएं होतीहैं उन मात्राओंसे उसतालके योग्य कालका नाप कियाजाताहै, उन मात्रओंकी अभिव्यक्तिकेलिए 'एक दो तीन' इत्यादि किंवा तालवाद्यके 'धा धा दिंता' 'धिं धिं ता ता' इत्यादि किंवा रागवाद्यके 'डा डिड़ डा ड़ा' इत्यादि शब्दोंका उच्चारण किया जाता है क्योंकि वस्तुगत्या स्वस्वरूपेण काल तथा कालगति अप्रत्यक्ष पदार्थ हैं, कालका तथा कालगतिका ज्ञान कोई शब्दादि उपाधि द्वारा ही होसकताहै यथा घड़ीकी सूईके कुछ दूर घूमनेसे घंटा वा मिनटका ज्ञान होताहै यथा च सूर्यके उदयाचलसे अस्ताचलतक जानेसे दिन कालका और अस्ताचलसे उदयाचलतक पहुँचनेसे रात्रिकालका ज्ञान होताहै एवं एकसे सोलह तक संख्याशब्दोंके समान उच्चारणसे सोलह मात्रा अभिव्यक्त होतीहैं उनसोलहमात्राओंका जो काल है वही धीमें तितालेका काल है, जो बारह मात्राका काल है वही चौतालेका काल है इत्यादि। मात्राभिव्यंजक शब्दोंकी संख्याके विना यह कालमान स्थिर नहीं हो सकता इसीकारणसे तालवाद्योंकी सृष्टि हुई और गानवादनके साथ तालवाद्यके बजानेकी अपेक्षा पड़ी क्यों कि रागको गानेबजाने वालेका ध्यान रागकी ओर रहताहै और उसकी तानोंका जब

प्रवाह चलताहै तब वह मात्राभिव्यंजक शब्दोंकी संख्या कर नहीं सकता इसलिए मात्राओंको गिनतेहुए किंवा उसतालावृत्तके बंधे बोलोंको बजातेहुए समप्रभृतिस्थानोंको गानेबजानेवालेको दिखाते जाना यही तालवाद्यबजानेवालेका प्रधान कार्य है। तदनंतर ताल-वाद्य वादकोंने सोचा कि यथा गाने बजाने वाले रागतानोंकी अनेक प्रकारसे कल्पना कर वाह वाह लेतेहैं ऐसे हम भी अपने ताल-वाद्यमें कल्पना कर वाहवाह क्यों न लें यह सोच उनने तालवादनमें भी ऐसे परिष्कार किये कि उनका वादन भी स्वतंत्र होगया यथा. कदौसिंह प्रभृति तालवाद्यके विद्वान् स्वतंत्र अपने वाद्यको बजाते सुनातेथे। सर्वथा पारतंत्र्य किसीको भी अभीष्ट नहीं होता इस कारण गानेवाले हाथसे और बजानेवाले पैरसे ताल देने लगगए, मीयां अमृतसेनजीको पैरसे तालचलानेका इतना पूर्ण अभ्यास था कि वे तालवाद्यवादक पर विश्वास न रख अपने पैरपर ही विश्वास रखतेथे और पैरसे बराबर ताल देतेजातेथे इसमें कभी चूके नहीं। यह अवश्य है कि गाने वालेको हाथसे ताल देनेकी अपेक्षा बजाने-वालेको पैरसे ताल देना बहुत कठिन है।

संगीतपारिजातकारने क्रियापारिच्छिन्न (उक्तशब्दादिक्रियासे परिमित) कालको ही ताल कहाहै यथा—"कालः क्रियापरिछिन्नः तालशब्देन भण्यते" इति, अभिप्राय वहीहै जो पूर्वमें कहाहै, चाहे क्रियाविशेषसे परिच्छिन्नकालको ताल कहिये चाहे कालक्रियामान को ताल कहिए तात्पर्य एक ही निकलताहै केवल विशेष्यविशेषण भावमें भेदहै।

यथा सातस्वरोंकी आरोहावरोहीके प्रस्तारसे राग अनेक होगए

यथा च छंदके प्रस्तारसे छंद अनेक होगए एवं कालक्रियामानके किंवा तालप्रकारके प्रस्तार से तालभी अनेक होगए। यथा कोई ताल दश मात्राका कोई ग्यारहमात्राका कोई बारह मात्राका इत्यादि, फिर दश मात्राके भी ताल समस्थानके भेदसे तथा और जरबोंके भेदसे अनेक होसकतेहैं, एवं ग्यारह बारह प्रभृति मात्राओंके भी तालोंमें जानना।

सभी तालोंके स्वरूप अर्थात् मात्राएँ और समादिजरबोंके स्थान पृथक् पृथक् होतेहैं। आरंभकरनेको हम उसतालकी चाहे जिस मात्रासे गाने बजानेका आरंभ करसकतेहैं इसमें कोई दोष नहीं हाँ उस तालकी मात्राओंमें और समादिजरबोंके स्थानमें तनिक भी भेद नहीं होसकता, समस्थानके तनिक भी भेद से उस भेदको करनेवाला बेताला ही कहायेगा इसकारण समपर आकर बराबर पूरा मिलना अत्यावश्यक है। समपर पूरा मिलजाना पद्यरचनामें वृत्तनिर्वाहके तुल्य दोषाभावमात्र है कुछ गुण नहीं क्योंकि समपर पूरा न मिलनेसे बेताला होनेंा दोष माथे लगताहै इस कारण समपर पूरा मिलजाना कुछ लयतालका पांडित्य नहीं किंतु पहिली दूसरी प्रभृति उन उन मात्राओंमें पूरा मिलकर जो समपर मिलनाहै वही तालका पांडित्य है, अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी लोग तो मात्राके भी दो दो तथा चार चार भाग करके उन मात्राभागस्थानोंमें मिलकर दिखादेतेथे यह काम बहुत कठिन है और प्राचीनलोग इसीको लयकारी कहतेथे समपर मिलजानेको लयकारी नहीं कहतेथे, इन मात्राभागस्थानोंमें मिलनेमें मीयाँ अमृतसेनजी बहुत निपुण थे कदौंसिंह प्रभृति पखावजी इनकी लयकारीकी स्पष्ट

प्रशंसा करतेथे । और आड़ी टेढ़ी इत्यादिक भी लयकारीके अनेक विशेष हैं ।

जिस तालकी जिसमात्रापर जो जरव है वह जरव उसीमात्रा-पर रहेगी इसमें भेद नहीं होसकता ।

यथा उसतालकी चाहे जिस मात्रासे गाने बजानेका आरंभ होसकताहै एवं समाप्ति भी चाहे जिसमात्रापर होसकतीहै तो भी समपर समाप्त करनेका लोकमें प्रचारहै यही उत्तमहै क्योंकि तालमें समस्थान ही प्रधान होताहै ।

कुछकाल तालचलनेसे तालका चक्र बँधजाताहै उस तालचक्रमें उस तालकी वह वह मात्रा और वह वह जरव उतने उतने कालके ही अनंतर बराबर आती रहतीहै ।

तालवाद्य बजानेवालेका यह भी कर्तव्य है कि वह तालवाद्य को ऐसे मुलायम हाथसे बजावे जो रागका गाना बजाना दब न जाय । तालरहित भी कुछ गाना बजाना होता है यथा ध्रुपति-योंका आलाप और तंत्रीकारका जोड़ । तालनिर्वाहके कारण गानेबजानेवालेको रागतानों के प्रवाहको कुछ रोकना पड़ताहै इसकारण आलाप तथा जोड़के साथ तालका प्रचार नहीं ।

गानेबजानेवाले ऐसी आड़ी तान भी लियाकरतेहैं जिससे तालवाद्यबजानेवाला चूक जाताहै किंतु पूर्ण विद्वान् नहीं चूकता वह उस आड़ीकी ओर ध्यान न दे अपने तालके बोलोंको नहीं छोड़ता ।

आजकलह तालस्वरूपनिरूपणमें उस तालकी मात्रासंख्या और समादिजरवोंकी संख्या तथा स्थान कहने पड़तेहैं, संस्कृतके ताल-

ग्रंथोंमें यह सब उपलब्ध नहीं होता किंतु छंदशास्त्रके तुल्य केवल लघुगुरु बताएहैं यथा "ताले निश्शङ्कलीलाख्ये प्लुतौ द्वौ गद्वयं लघुः" अर्थात् निश्शङ्कलीलाख्य तालमें 'दो प्लुत दो गुरु एक लघु' ये होते हैं। "श्रीरङ्गःसगणो लपौ" अर्थात् श्रीरंगनामकतालमें 'दो लघु एक गुरु एक लघु एक प्लुत' ये होतेहैं, इन लक्षणोंसे मात्रा तो निकल सकतीहैं किंतु समादिजरबोंके स्थान और संख्या नहीं निकल सकती इससे प्रतीत होताहै कि प्राचीनकालमें अर्थात् संस्कृत-ग्रंथोक्त तालोंका कुछ स्वरूप और ही था। किं वा यह भी कह-सकतेहैं कि प्राचीनकालमें तालमें छंदके तुल्य गुरुलघुप्लुतोंका ही प्राधान्य था जरबोंका कुछ नियम न था किंतु मनोनुरंजनके अनु-कूल जरबें लगादेतेथे यह बात देशीतालोंकेलिए संगीतरत्नाकरमें कहीभीहै यथा—

"देशीतालस्तु लघ्वादिमितया क्रियया मतः।
यथाशोभं कांस्यतालध्वननादिकया युतः॥" इति।

संस्कृतके संगीतग्रंथोंमें रागोंके तुल्य ताल भी मार्ग तथा देशी भेदसे दो प्रकारके कहेहैं, चंचत्पुट चाचपुट संपक्वेष्टक षट्पिता-पुत्रक इत्यादि कुछ मार्गताल कहेहैं, संगीतरत्नाकरकारने एकसौबीस देशी ताल कहेहैं, मार्ग ताल तथा देशीतालोंका जो कुछ स्वरूप उस समय था उसको ग्रंथकारोंने अपने अपने ग्रंथमें भली भाँति लिखदियाहै किंतु उससे लोकमें अब कुछ उपयोग प्रतीत नहीं होता इसकारण मैं उनतालोंको यहाँ लिखना नहीं चाहता क्योंकि मेरा यह ग्रंथ तो केवल प्रचलित विषयोंके संग्रहार्थ ही है, उन तालोंका स्वरूप दो लक्षणोंसे यहाँ दिखादियाहै जिसको विशेष

जिज्ञासा हो उसकेलिये संगीतरत्नाकरादि ग्रंथ वर्तमान हैं। ग्रंथकारोंने कालकलालयादिक दश पदार्थ तालके प्राण कहेहैं यथा—

"कालो मार्गः क्रियाङ्गानि ग्रहो जातिः कलालयः।
यतिः प्रस्तारकश्चेति तालप्राणा दश स्मृताः ॥" इति।

अब मैं लोकप्रचलित कुछ तालोंके स्वरूपको लिखताहूँ—

१ अथ धीमा तिताला

यह ताल बड़ा कड़ा है इसमें सोलह मात्रा हैं पहिली पांचवीं और नवीं मात्रापर जरबें पड़तीहैं तेरहवींमात्राकी जरब खाली जाती है, पांचवीमात्रापर जो दूसरी जरब है उसको सम कहते हैं।

१ २ ३ ४

'धिं धिं ता ता धिं धिं ता ता धिं धिं ता ता तिं तिं ता ता' इस प्रकार इसका ठेका बजातेहैं। सितारके बोल कई प्रकारसे संकलित हो सकतेहैं अथापि इतना अवश्य चाहिये कि सम डा पर पड़े।

२ अथ जलद तिताला

इसको त्योहरा भी कहतेहैं इसकी जरबें जलदी पड़तीहैं धीमेतितालेसे इसका परिमाण आधा है अतएव इसकी आठ मात्रा कह सकतेहैं इन आठ मात्राओंमेंसे पहिली तीसरी तथा पांचवींपर जरबें हैं, पांचवींपर जो तीसरी जरब है उसे सम कहतेहैं।

३ अथ चौताला

इसमें बारह मात्रा हैं पहिली पाँचवीं सातवीं तथा नवीं मात्रा-पर जरब पड़तीहैं इन चार जरबोंमेंसे चौथी जो जरब है उसे सम

१ २ ३ ४
कहतेहैं 'धाधादिंता किटितक गिदिगिना धाधादिता' इस प्रकार इसे मृदंगमें बजातेहैं।

४ अथ आड़ाचौताला

इसमें चौदहमात्रा हैं पहिली तीसरी सातवीं तथा ग्यारहवीं मात्रापर जरब पड़तीहै। पहिलीपर जो जरब है उसे सम कहतेहैं। कोई लोग इसमें दो दो मात्राके सात खंड करके पहिली तीसरी सातवीं तथा ग्यारहवीं पर भरी जरवें और पांचवीं नवीं तथा तेरहवीं मात्रापर खाली जरवें हैं ऐसा भी कहतेहैं। सम तो इनके मतमें भी पहिलीपर ही है, पर्यवसान दोनों मतोंका एकसा ही है केवल खंडसंख्यामे भेद है।

सीधाचौताल भी एक है इनकी दशमात्रा कहीहैं।

५ अथ दादरा

इसमें छै मात्रा हैं उनमेंसे पहिली और चौथी मात्रापर जरब है, पहिलीमात्रापर जो जरब है उसे ही सम कहतेहैं। अंगरेज़ीबाजे-वाले प्राय: इसी तालको बजाया करतेहैं।

६ अथ कव्वाली

इसमें आठ मात्रा हैं पहिली तीसरी पांचवीं और सातवीं मात्रा पर जरबे हैं इनमेंसे पहिलीमात्रापर जो जरब है उसे सम कहतेहैं। कव्वाल लोग प्राय: इसी तालसे गाया करतेहैं।

७ अथ फरोदस्त

इसमें चौदह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी पांचवीं सातवीं और ग्यारहवीं मात्रापर जरवें हैं, सातवीं मात्रापर जो चौथी जरब है

उसे ही सम कहते हैं। और नवीं तथा तेरहवीं मात्रापर खाली जरवें हैं।

८ अथ इकताला

इसमें बारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पांचवीं और नवीं मात्रा-पर जरवें हैं उनमेंसे पांचवीं मात्रापर जो दूसरी जरव है उसे ही सम कहतेहैं।

९ अथ रूपक ताल

इसमें सात मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी और पांचवीं मात्रापर जरवें हैं सातवींपर एकमात्राकी खाली है, पांचवीं मात्रापर जो तीसरी जरव है उसे सम कहतेहैं।

१० अथ झूमरा

इसमें चौदह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पांचवीं और आठवीं मात्रापर जरवें भरी हैं बारहवीं मात्रापर खाली है, उनमेंसे पांचवीं मात्रापर जो जरव है उसे ही सम कहते हैं।

११ अथ सूलफाखता

इसमें दस मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पांचवीं और सातवीं मात्रा-पर जरवें हैं उनमेंसे पहिलीमात्रापर जो जरव है उसे ही सम कहतेहैं।

१२ अथ रामताल

इसमें अठारह मात्रा हैं, पहिली छठी दशवीं और पंद्रहवीं मात्रापर जरवें हैं उनमेंसे पहिलीपर जो जरव है वही सम है।

१३ अथ सुरंगताल

इसमें तेरह मात्रा हैं उनमेंसे तीसरी सातवीं और ग्यारहवीं मात्रापर जरवें हैं उनमेंसे दूसरी जरव सम है।

१४ अथ मेघताल

इसमें बीस मात्रा हैं, पहिली छठी ग्यारहवीं और सोलहवीं मात्रापर जरवें हैं। पहिली जरब ही सम कहाती है।

१५ अथ धमार ताल + १

इसमें सात मात्रा हैं उनमेंसे पहिली चौथी और सातवीं इन-मात्राओंपर जरवें हैं, उनमेंसे पहिली जरबको सम कहतेहैं। कोई-लोग कहते हैं कि इसकी सात मात्राओंमेंसे पहिली चौथी तथा छठी इनमात्राओंपर जरवें हैं और दूसरी जरब सम है, मेरी जानमें यही मत संगत है।

१ २ ३
बोल यथा—क धिटि धिटि धा धि किटि किटि ता

१६ अद्धा

यह धीमेतितालेका अद्धा (अर्धपरिमाणका) ताल है जरवों-में भेद है। इसमें आठ मात्रा है उनमेंसे पहिली तीसरी और सातवां इन मात्राओंपर जरवें हैं उनमेंसे दूसरी जरब सम है, पांचवीं मात्रा पर खालीहै यही धीमेतितालेसे भेद है।

१ २ ० २
बोल यथा—ता धिंधा धाधिंधा धातिंता ताधिंधा।

१७ दीपचंद

इसमें दश मात्राहैं उनमेंसे पहिली चौथी और छठी इन

---

१ जिन तालोंके नामपर + यह चिन्ह है उनतालोंमें मुझे कुछ संशय है। इससंशयका कारण यहीहै कि इन तालोंको किसी उत्तम उस्तादसे नहीं समझा।

मात्राओंपर जरवे हैं उनमेंसे दूसरी जरव समहै नवमीं मात्रापर खाली है ।

१ २ ३ ०

बोल यथा—धागेधिन् धादिन् धागेतिन् तातिन्

मात्रा— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१८ झपताल

इसमें दश मात्रा हैं उनमेंसे पहिली और पांचवीं मात्रापर जरवें हैं, दूसरी जरव सम कहातीहै, नवमीं मात्रापर खाली है ।

१९ पिश्तों

इसमें पाँच मात्रा हैं पहिली और दूसरी मात्रापर जरवें हैं, दूसरी जरव सम है, चौथी मात्रापर खाली है ।

२० चंचल (चपक)

इसमें तीन मात्रा हैं उनमेंसे पहिली और दूसरी मात्रापर जरवें हैं, तीसरी मात्रापर खाली है, दूसरी जरव सम है ।

२१ सवारी

कोई लोग इसे असवारी भी कहतेहैं । इसमें पंद्रह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पांचवीं नवीं और तेरहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, उनमेंसे दूसरी जरवको सम कहतेहैं ।

१ २ ३ ४

बोल यथा—धिनक धिनक ता धीधीना धीधीना तीन्तोना कता ।

सोलह मात्राका भी एक सवारी ताल है उसमें पाँच जरव हैं पहिली जरवको सम कहतेहैं, किन मात्राओंपर जरवें हैं यह विशेष ज्ञात नहीं हुआ । आजकल्हके मार्दंगिकोंका इधर ध्यान नहीं ।

२२ ब्रह्मताल +

इसमें चौदह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली चौथी पाँचवीं आठवीं नवीं ग्यारहवीं बारहवीं तेरहवीं और चौदहवीं इनमात्राओंपर जरवें है अंतिम जरब सम है, ऐसा कहतेहैं। कोई लोग कहतेहैं कि इसमें—पहिली, तीसरी चौथी, छठी सातवीं आठवीं, दसवीं ग्यारहवीं बारहवीं तेरहवीं, इनमात्राओंपर जरवें हैं। प्रथम जरब सम है।

२३ योगब्रह्म +

इसमें पंद्रह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी चौथी छठी सातवीं आठवीं दसवीं ग्यारहवीं बारहवीं और तेरहवीं इनमात्राओंपर जरवें हैँ उनमें से पहिलीपर सम है।

१ ० २ ३ ० ४ ५ ६ ० ७ ८
बोल यथा—तद्धा दिद्धा गद्दो गिनता धा गद्दो गिनता धा दीधा

९ १० ० ० १
गद्दो गिनता गद्दी गिन धा

कोई लोग कहतेहैं कि इसमेँ अठारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी चौथी, छठी सातवीं आठवीं, दसवीं ग्यारहवीं बारहवीं तेरहवीं, पंद्रहवीं और सत्रहवीं इन मात्राओंपर जरवेंहैं, पहिली जरब सम है।

२४ लक्ष्मीताल +

इसमें अठारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी तीसरी, छठी सातवीं, नवीं दसवीं, बारहवीं सवाचौदहवीं सवापंद्रहवीं सोलहवीं और सत्रहवीं इन मात्राओंपर एक एक जरब है और पांचवीं ग्यार-

हवीं तथा तेरहवीं इन तीन मात्राओंपर दो दो जरवें हैं, पहिली जरव सम है, ऐसा कहते हैं ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८

बोल—त्तेत्तेथेइ त्तेत्तेत्तेथेइ त्तेथेइ त्ते त्ते थेइ त्ते त्ते त्ते तत त्ते थेइ ।

कोई लोग कहतेहैं कि लक्ष्मीतालकी सोलह मात्रा हैं अठारह जरवें हैं ।

२५ रुद्र १६ मात्राका

इसमेँ सोलह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी चौथी छठी सातवीं आठवीं दसवीं बारहवीं तेरहवीं चौदहवीं और पंद्रहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, पहिली जरव सम है ।

रुद्रताल १५ मात्राका

इसमें पंद्रह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी चौथी छठी सातवीं आठवीं नवीं दसवीं ग्यारहवीँ बारहवीं तेरहवीं चौदहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, प्रथम जरव सम है । कोई कहतेहैं कि इसमें बारह मात्राहैं प्रत्येक मात्रापर जरवहै । प्रथम जरव समहै ।

२६ षट्ताल

इसमेँ नौ मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी पाँचवीं सातवीं आठवीं और नवमीं इन मात्राओंपर जरवें हैं दूसरी जरव सम है ।

२७ श्रुति (सात) ताल

इसमें ग्यारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी पाँचवीं सातवीं नवमीं दसवीं और ग्यारहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, उनमेंसे अंतिम जरव सम है ।

२८ अष्टमंगल

इसमेँ चौदह मात्रा हैं उनमेँसे पहिली तीसरी चौथी छठी सातवी नवी ग्यारहवी और तेरहवी इन मात्राओं पर जरवें हैं, प्रथम जरव सम है ।

२९ नवधा

इसमें नौ जरवें हैं ।

३० मयूरताल

इसमेँ सत्तरह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी सातवी और तेरहवी मात्रापर जरवें हैं दूसरी जरव सम है ।

३१ सिंहताल

इसमें तेरह मात्रा हैं उनमेंसे तीसरी सातवी और ग्यारहवी मात्रापर जरवें हैं दूसरी जरव सम है ।

३२ शार्दूलताल

इसमें सोहल मात्रा हैं उनमेंसे दूसरी छठीं नवमीं और तेरहवीं मात्रा जरवें हैं प्रथम जरव सम है ।

३३ घोरताल

इसमें तीस मात्रा हैं उनमेंसे दूसरी चौथी छठी आठवीं दसवीं बारहवीं चौदहवीं सोलहवीं अठारहवीं बीसवीं बाईसवीं चौबीसवीं छब्वीसवीं अट्ठाईसवीं और तीसवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, दूसरी जरव सम है ।

३४ श्रीताल

इसमें आठ मात्रा हैँ उनमेंसे पहिली तीसरी और छठी इन मात्राओंपर जरवें हैं, दूसरी जरव सम है ।

३५ चंद्रताल

इसमें सोलह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी पांचवीं और तेरहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, दूसरी जरब सम है।

३६ सूर्यताल

इसमें अठारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी सातवीं ग्यारहवीं और पंद्रहवीं मात्रापर जरब है, दूसरी जरब सम है।

३७ क्रमताल

इसमें बाईस मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी छठी दसवीं पंद्रहवीं और इक्कीसवीं मात्रापर जरवें हैं, पहिली सम है।

३८ बृहत्क्रमताल

इसमें सत्ताईस मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी छठी दसवीं पंद्रहवीं और इक्कीसवीं इनमात्राओंपर जरवें हैं, दूसरी जरब सम है। इन दोनों क्रमतालोंमें एकएकमात्राकी छूट बढ़ती जातीहै।

३९ विष्णुताल

इसमें बारह मात्रा हैं उनमेंसे तीसरी सातवीं औरग्यारहवीं मात्रापर जरवें हैं उनमें पहिली जरब सम है।

४० इंद्रताल

इसमें पंद्रह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पाँचवीं नवमीं ग्यारहवीं और तेरहवीं मात्रापर जरवें हैं, दूसरी जरब सम है।

४१ रणताल

इसमें बारह मात्राहैं उनमेंसे पहिली दूसरी पाँचवीं छठी नवमीं और दशवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं उनमेंसे दूसरी छठी और दशवीं ये तीनों जरवें सम कहाती हैं।

४२ राजताल

इसमें सोलह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी नवमीं और दशवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, दूसरी जरव सम है ।

४३ महाराजताल

इसमें बीस मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी नवमीं दशवीं तेरहवीं चौदहवीं सत्रहवीं और अट्ठारहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैँ, दूसरी जरव सम है ।

४४ गोपालताल

इसमें बीस मात्रा हैं उनमेसे पहिली दूसरी पाँचवीं छठी सातवीं आठवीं ग्यारहवीं बारहवीं सत्रहवीं और अट्ठारहवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, चौथी जरव सम है ।

४५ गजताल

इसमें अट्ठाईस मात्रा हैं उनमेंसे पहिली सातवीं और पंद्रहवीं मात्रापर जरव है बाईसवीं मात्रापर खाली है, दूसरी जरव सम है।

४६ शंखताल

इसमें दश मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी तीसरी सातवीं और आठवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं, तीसरी जरव सम है ।

४७ शरताल

इसमें सोलह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पाँचवीं ग्यारहवीं तेरहवीं और पंद्रहवीं मात्रापर जरवें हैं, नवमीं मात्रापर खाली है। पहिली जरव सम है ।

४८ धनताल

इसमें चौबीस मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी तीसरी, नवमीं

दशवीं ग्यारहवीं बारहवीं, सत्रहवीं अट्ठारहवीं उन्नीसवीं बीसवीं और इक्कीसवीं इनमात्राओंपर जरवें हैं, तीसरी जरव सम है ।

४९ घनताल

इसमें चौदह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी तीसरी चौथी नवमीं दशवीं ग्यारहवीं और बारहवीं इनमात्राओंपर जरवें हैं, उनमेंसे चौथी जरव सम है ।

५० दीपकताल

इसमें सात मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी और पांचवीं मात्रापर जरव है तीसरी जरव ही सम है ।

५१ कौशिकताल

इसमें अट्ठारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली नवमीं और सत्रहवीं मात्रा पर जरव है, पहिली जरव सम है ।

५२ महेशताल

इसमें नौ मात्रा हैं उनमेंसे पहिली पाँचवीं और सातवीं मात्रा-पर जरव है पहिली जरव सम है ।

५३ चामरताल

इसमें बारह मात्रा हैं उनमेंसे पहिली तीसरी पाँचवीं और सातवीं इन मात्राओंपर जरवें हैं दूसरी जरव सम है ।

५४ कोकिलताल

इसमें आठ मात्रा हैं उनमेंसे पहिली दूसरी और तीसरी मात्रापर जरव है, तीसरी जरव सम है ।

मैंने यहाँ ये (पूर्वोक्त) साठ तालोंके लक्षण लिखेहैं । आज-कल्ह सांगीतिकोंमें 'इकताला दोताला (चंचल) तिताला चैताला, फरोदस्त षट्ताल (खटताल) श्रुतिताल अष्टमंगल नवधा ब्रह्म योग-ब्रह्म रुद्र रूपक' यें साढ़े बारह ताल कहातेहैं क्योंकि रूपकको क्रमापेक्षया छोटा होनेसे आधा ताल गिनतेहैं । इनमेंसे फरो-दस्ततक ५ और रूपक ये छै ताल प्रसिद्ध हैं ।

वस्तुगत्या रागोंके तुल्य ताल भी बहुत हैं किंतु मुझे अधिक तालोंका ज्ञान नहीं, जो ज्ञात हैं वे प्रायः लिखदियेहैं । स्वरसागर-में कहाहै—

"पच हजार नौ सौ कई ताल कहावत नाम
इनमैंते सोलह लए वर्तमान सों काम"

इससे प्रतीत होताहै कि स्वरसागरकर्ता दूलहखाँजीके समय-में १६ ताल प्रसिद्ध थे, दूलहखाँजीको मरे लगभग अस्सी वर्ष हुए ये संबंधमें अमृतसेनजीके पितामह तथा नाना लगतेथे । बड़ेभारी नामी उस्ताद थे ।

तालगतिकी समताको लय कहतेहैं "लयः साम्यम्" इति, वह लय द्रुत मध्य और विलंबित भेदसे तीन प्रकारका है उत्तरोत्तर लयका दुगना परिमाण कहाहै । संगीतरत्नाकरमें तो तालक्रियाके अनंतर अर्थात् तालों (जरबों) के मध्यमें जो विश्रांति (अवकाश) है उसे लय कहाहै, तात्पर्य एक ही निकलताहै—

"क्रियानन्तरविश्रान्तिर्लयः स त्रिविधो मतः ।
द्रुतो मध्यो विलम्बश्च, द्रुतो शीघ्रतमो मतः ।
द्विगुणद्विगुणौ ज्ञेयौ तस्मान्मध्यविलम्बितौ ॥" इति ।

वस्तुगत्या ताल (जरब) गति ही लय पदार्थ है उसीके द्रुत मध्य विलम्बित ये तीन भेद हैं। निरंतर एक चालसे चलना कठिन होनेसे लय बड़ा कठिन पदार्थ है। आजकल्ह जिसे लयकारी कहतेहैं वह सब इस अध्यायके आरंभमें लिखाहै।

आधुनिक सांगीतिक लोग विलम्बितको 'ठाकीठा' मध्यको 'ठा' द्रुतको 'दुगन' ऐसा कहते हैं। चतुर्थ एक संकीर्ण लय भी है जिस गाने बजानेमें निरंतर एकप्रकारकी लय न हो किन्तु अनेक प्रकारकी लय हो याने कभी द्रुत कभी मध्य कभी विलं-बित लय हो वहाँ लयसंकर होनेसे उसे संकीर्ण लय कहतेहैं।

द्रुतलयमेँ तालावृत्तका जितना परिमाण होगा मध्यलयमेँ उससे द्विगुण होगा और विलंबितलयमें उससे भी द्विगुण होगा—अतएव विलंबितकी अपेक्षा मध्यमें तथा मध्यकी अपेक्षा द्रुतमें शीघ्र शीघ्र ताल (जरबें) पड़तेहैं। इतने विलंबितको विलंबित लय कहना चाहिये यह कुछ नियम नहीं, हाँ उत्तरोत्तर द्विगुणित होना चाहिये।

आजकल्ह सांगीतिक लोग गानेबजानेमें कभी तो विलंबितकी अपेक्षा मध्यमें मध्यकी अपेक्षा द्रुतमें तालगतिको बढ़ा देतेहै (त्वरित करदेतेहैँ) इस क्रममें उत्तरोत्तरलयमें ताल शीघ्र शीघ्र पड़तेहैं अर्थात् विलंबितलयमें वह तालावृत्त यदि आठ पलमें पूरा होगा तो मध्यलयमेँ चारपलमेँ और द्रुतलयमें दो पलमेँ पूरा होगा यही प्रधान पक्ष है। कभी तो तालगतिको नहीं बढ़ाते अर्थात् जरबोंका अंतरकाल तीनों लयोंमेँ एकसमान ही रहता है किन्तु गायक कंठकी और वादक हस्तकी गतिको बढ़ादेतेहैं इस-पक्षमेँ यदि विलंबितलयमेँ उस तालावृत्तमें सोलहशब्द (वाद्यादिके

बोल) समाएँगे तो मध्यलयमें ३२बत्तीसशब्द और द्रुतलयमें ६४चौंसठ शब्द समाएँगे यथा धीमें तितालेमें । कंठ तथा हस्तकी गतिके बढ़नेमें शब्द अवश्य ही बढ़ेंगे क्योंकि तालगतिको बढ़ाया नहीं, लयके बढ़नेसे तालगति वा शब्दसंख्या अवश्य बढ़ेगी। और विशेष विशेषज्ञगुरुकी शिक्षाके अधीन है।

उत्तमगुणियोंकी कठिनविषयमें प्रवृति विशेष होतीहै और तालोंमें धीमा तिताला बहुत कठिन है क्योंकि इसका आवृत्त भी बड़ा है चारों जरबें एकसम हैं उनमेंसे भी एक खाली जातीहै इत्यादि इससे लोग धीमातितालेके और चौताला बहुत सुन्दर है इससे चौतालेके पीछे पड़गए इसकारण और सब ताल दबगए। सातही स्वर होने से रागोंके प्रभेद उतने नहीं होसकते जितने तालके प्रभेद होसकतेहैं क्योंकि मात्रासंख्याकी और जरबस्थानोंकी कुछ सीमा नहीं, चाहे तो एकहजार मात्राका भी ताल बनसकताहै और उसकी चाहे जिन मात्राओंपर जरबोंको स्थिर कियाजासकताहै। आजतक जितने ताल बनेहैं वे सब इसी प्रस्तारक्रमसे ही बनेहैं।

आजकल्हके किसी किसी तालविद्वान्‌को यह भ्रम है कि सबी तालोंकी प्रथममात्रापर ही उनका सम होताहै, इस भ्रमका कारण यह है कि तालवाद्यको बजानेवाले प्रायः समसे ही अपने बजानेका आरंभ किया करतेहैं क्योंकि तालमें समस्थान ही प्रधान है और रागको गानेबजानेवालेके साथ जब वे बजातेहैं तो भी उनको विवश समसे ही आरम्भ करना पड़ताहै क्योंकि तालके समस्थानसे अतिरिक्त स्थानको पकड़ना एक प्रकारसे अशक्य ही है, कोई कोई उस्ताद लोग तो समको भी ऐसा छिपा लेतेहैं कि

उसका भी पकड़ना अशक्य होजाताहै, एकदिन मीयाँ रहीमसेनजीकी गतका सम रत्नसिंह जैसे भारी उस्ताद पखावचीसे भी पकड़ा न गया। इन कारणोंसे तालवाद्यशिक्षकलोग अपने शागिरदको भी जो तालबोल बताते हैं वे समसे ही आरम्भ कर बतातेहैं. शागिरद जब उनसे उसतालके समको पूछताहै तो वे प्रथमबोल (शब्द) पर समको बता देतेहैं इसी प्रकार सबी तालोंका सम प्रथमबोलपर बतानेसे शागिरद निश्चय करलेताहै कि सबी तालोंका सम प्रथमही मात्रापर है वस्तुगत्या ऐसा नहीं, जैसे सितारकी गतको चाहे जिसमात्रासे उस्ताद बाँधतेहैं वैसे तालवाद्यके उस्ताद सौकर्यादिकारणसे समसे ही प्रायः तालके शब्दोंको बाँधते हैं इसीसे पूर्वोक्त भ्रम फैल गयाहै। 'सम किस मात्रापर होताहै यह समग्रतालोंकेलिए एकसम नियम नहीं' यह अच्छे अच्छे ताल तथा रागके विद्वानोंसे भी सुनाहै। यदि कहो कि 'रागविद्वान् तालके मर्मको क्या जानें' तो यह भी उचित नहीं क्योंकि यथा सितार बजानेवाला वीणाके कायदेको न जाननेपर भी वीणाके रागको जानसकताहै क्योंकि रागस्वरूप उभयत्र एकसमानहै तथा रागविद्वान् भी तालवाद्यके कायदेको न जानकर भी तालको पूर्णरीतिसे जानसकताहै क्योंकि तालस्वरूप सर्वत्र एकसमान है और जब कि तालरागको गानेबजानेका एक अंग है तब रागको गानेबजानेवाला तालको न जानेगा तो और कौन जानेगा। जो हमको अज्ञान और भ्रम है वह हमारे कर्म और शिक्षाका दोष है उससे दूसरा कोई दूषित नहीं होसकता इत्यलमधिकेन।

॥ इति तालाध्यायः समाप्तः ॥

अथ

नृत्याध्याय

"गीतं वाद्यं च नृत्यं च त्रयं संगीतमुच्यते"

गाना बजाना और नृत्य ये तीनों मिलकर संगीत कहाताहै इसकारण गीतका रागाध्याय और तालवाद्यका तालाध्याय लिखकर अब मैं संक्षेपसे नृत्याध्याय लिखताहूँ। भरतसूत्रमें इसका बहुत विस्तर है।

प्रथम कालमें नृत्य केवल स्त्रियोंके ही अधीन था और बड़े बड़े कुलोंकी स्त्रियें नृत्य करतीथीं ऐसा ग्रंथोंसे पाया जाताहै, लास्यनृत्यकी प्रथम करनेवाली श्रीपार्वतीजीको लिखाहै, वह समय बड़ा शुद्ध था अतएव बड़े बड़े कुलकी भी स्त्रियें स्वपांडित्यप्रदर्शनार्थ नृत्य करनेमें दोष नहीं समझतीथीं। जब नृत्य करनेमें कुछ अप्रतिष्ठा प्रतीत होने लगी तब इसके लिए वेश्याएँ स्थिर कीगईं, ऐसा प्रतीतहोताहै। नृत्य बहुत कामोद्भावक है इसकारण पुरुष वेश्याओंके संग कुकर्ममें प्रवृत्त होगए इसकारण वेश्यालोग भी नृत्यपांडित्यकी उपेक्षा कर पुरुषसंमोहनमें विशेष प्रवृत्त होगईं क्योंकि इसमें धनलाभ अधिक है इन कारणोंसे वेश्याओंका नृत्यपांडित्य क्षीण होगया, तदनन्तर स्त्रीवेशको धारण कर पुरुष ही नृत्य करने लगगए इनका नाम भावबतानेके कारण कत्थक (कथक) पड़गया, संस्कृतमें इनका नाम भ्रुकुंस इत्यादि है पीछेके कालमें लखनऊके इलाकेमें इनका बहुत आधिक्य था। हनुमान् प्रभृति

कई उत्तमोत्तम कत्थक होचुकेहैं, वर्तमान कालमें लखनऊके विन्दादीनजी कत्थकोंमें सर्वप्रधान हैं और ये उनी वृद्ध गुणियों-मेंसे हैं इनने अपने भतीजेंको अच्छी शिक्षा दीहै।

यद्यपि तांडवनृत्यके प्रथमपुरुष श्रीमहादेवजी हैं एवं श्रीकृष्ण-चंद्रने भी व्रजमें नृत्य कियाहै एवं और भी अर्जुनादि कई नृत्या-चार्योंके नाम चलेआतेहैं तथापि वे सामान्यतः उत्सवादिमें नृत्य नहीं करतेथे और नृत्यक्रियामें प्राधान्यस्त्रीलोगोंका ही था यही उचित भी है इसीकारणसे मैंने इस अध्यायके आरंभमें 'प्रथम कालमें नृत्य केवल स्त्रियोंके ही अधीन था, ऐसा लिखाहै। कहा भी है-

"पात्रं स्यान्नर्वनाधारो नृत्ते प्रायेण नर्तकी" इति।

नृत्यादि पद "नृती गात्रविक्षेपे" इस धातुसे बनाहै अत एव रसोद्‌भावक जो हस्तपादादि शरीरांगोंकी विशेष चेष्टा है उसे नृत्य कहतेहैं कहा भी है—"नृतेर्गात्रविक्षेपार्थत्वेनाङ्गिकबाहुल्यात् तत्कारिषु च नर्तकव्यपदेशात्" इति। पूर्वाचार्योंने इसके तीन भेद कियेहैं नाट्य, नृत्य और नृत्त, उनमेंसे दूसरेके अनुकरणको नाट्य कहतेहैं, लयतालरहित नाचको नृत्य कहतेहैं, लयताल सहित नाचको नृत्त कहतेहैं कहा भी है—

आङ्गिकाभिनयैरेव भावानेव व्यनक्ति यत्।
तन्नृत्यं मार्गशब्देन प्रसिद्धं नृत्यवेदिनाम्॥
गात्रविक्षेपमात्रं तु सर्वाभिनयवर्जितम्।
आङ्गिकोक्तप्रकारेण नृत्तं नृत्तविदो विदुः॥"

"अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्" "अन्यद्‌भावाश्रयं नृत्यम्" "नृत्तं ताललयाश्रयम्"

"तन्यते शार्ङ्गदेवेन नर्त्तनं तापकर्त्तनम् ।
नाट्यं नृत्यं तथा नृत्तं त्रेधा तदिति कीर्त्तितम् ॥
अन्यद् भावाश्रयं नृत्यं नृत्तं ताललयाश्रयम् ।
आद्यं पदार्थाभिनयो मार्गः, देशी तथा परम् ॥" इत्यादि

उनमेंसे नृत्य मार्गपदार्थ है और नृत्त देशी पदार्थ है। नृत्य और नृत्तके फिर दोदो भेद हैं यथा—सुकुमार जो नृत्य तथा नृत्त उसे लास्य कहते हैं अर्थात् लास्यनृत्य लास्यनृत्त, उद्धत जो नृत्य तथा नृत्त उसे तांडव कहतेहैं अर्थात्—तांडवनृत्य तांडवनृत्त।

"मधुरोद्धतभेदेन तद्द्वयं द्विविधं पुनः ।
लास्यताण्डवरूपेण नाटकाद्युपकारकम् ॥
लास्यं तु सुकुमाराङ्गं मकरध्वजवर्धनम् ॥" इत्यादि

चतुर्मुख ब्रह्माने भरतमुनिको यह शास्त्र दिया तब क्रमसे यह शास्त्र और लोगोंको प्राप्त हुआ ऐसा कहाहै—

"नाट्यवेदं ददौ पूर्वं भरताय चतुर्मुखः ।
ततश्च भरतः सार्धं गन्धर्वाप्सरसां गणैः ॥
नाट्यं नृत्यं तथा नृत्तमग्रे शंभोः प्रयुक्तवान् ।
प्रयोगमुद्धृतं स्मृत्वा स्वप्रयुक्तं ततो हरः ॥
तण्डुना स्वगणाग्रण्या भरताय न्यदीदिशत् ।
लास्यमस्याग्रतः प्रीत्या पार्वत्या समदीदिशत् ॥
बुद्ध्वाथ ताण्डवं तण्डोर्मर्त्येभ्यो मुनयोऽवदन् ।
पार्वती त्वनुशास्ति स्म लास्यं बाणात्मजामुषाम् ॥
तया द्वारवतीगोप्यस्ताभिः सौराष्ट्रयोषितः ।
ताभिस्तु शिक्षिता नार्यो नानाजनपदास्पदाः ॥

एवं परम्पराप्राप्तमेतल्लोके प्रतिष्ठितम् ॥" इति ।

तथा—

"तण्डूक्तमुद्धतप्रायप्रयोगं ताण्डवं मतम् ।

लास्यं तु सुकुमाराङ्गं मकरध्वजवर्धनम् ॥" ऐसा कहाहै ।

करणोंसे तथा अंगहारोंसे नृत्यकी संपत्ति कहीहै—

"करणैरङ्गहारैश्च साधितं नृत्तमुच्यते" इति ।

हस्तपादादि अंगोंकी जो रसोद्भावक क्रियाहै उसे करण कहतेहैं—

"स्यात् क्रिया करपादादेर्विलासेनाऽत्रुटद्रसा ।

करणं नृत्तकरणम्" इति ।

हस्तपादादि अंगोंकी उचित प्रदेशमें जो प्राप्ति है उसे अंगहार कहतेहैं—

"अङ्गानामुचिते देशे प्रापणं सविलासकम् ।

मातृकोत्करसंपाद्यमङ्गहारोऽभिधीयते ॥" इति ।

शिर दोनोंहस्त दोनोंपाद दोनोंपार्श्व वक्षःस्थल कटी दोनोंस्कंध ये सात अंग कहेहैं । दोनोंभुजा दोनोंजंघा दोनोंऊरू दोनोंमणिबन्ध दोनोंजानु ग्रीवा पृष्ठ उदर और भूषण ये नौ प्रत्यंग कहेहैं । दृष्टि भ्रू तारा कपोल नासिका श्वास अधर दंत जिह्वा चिबुक (ठोड़ो) मुख और मस्तक ये बारह उपांग कहेहैं ।

शिरकी उन्नीसप्रकारकी चेष्टा कहीहैं यथा—

'धुत विधुत आधूत अवधूत कंपित आकंपित उद्वाहित परिवाहित अंचित निहंचित परावृत्त उत्क्षिप्त अधोमुख लोलित तिर्यग्नत उन्नत स्कंधानत आरात्रिक पार्श्वाभिमुख' इति ।

हस्तकी चेष्टा बहुत प्रकारकी कहीहै यथा—

'पताक त्रिपताक अर्धचन्द्र कर्तरीमुख अरालमुष्टिशिखर कपित्थमुख खटकामुख अंजलि कपोत कर्कट स्वस्तिक आविद्धवल्क सूच्यास्य रेचितार्ध अरेचित' इत्यादि ।

"सर्वे च मिलिताः सन्तः सप्तषष्ठिरिमे कराः ।
आनन्त्यादभिनेयानां सन्त्यऽनन्ताः परे कराः ।।" ऐसा कहाहै ।

वक्षःस्थलके पांच प्रकार कहेहैं—

'सम आभुग्न निर्भुग्न प्रकम्पित उद्वाहित' इति ।

पार्श्वके भी पाँच प्रकार कहेहैं—

'विवर्तित अपसृत प्रसारित नत उन्नत' इति ।

कटीके भी पांच प्रकार कहेहैं—

'कंपिता उद्वाहिता छिन्ना वितृता रेचिता' इति ।

पादके प्रकार अनेक कहेहैं यथा—

'सम अंचित कुंचित सूची अग्रतलसंचर उद्‌घटित त्रोटित घटित उत्सेध घट्टित मर्दित अग्रग पार्ष्णिग पार्श्वग' इत्यादि ।

स्कंधके पांच प्रकार कहेहैं—

'एकोच्च कर्णलग्न उच्छ्रित स्रस्त लोलित' इति ।

ग्रीवाके नौ प्रकार कहेहैं—

'समा निवृत्ता वलिता रेचिता कुंचिता अंचिता त्र्यस्रा नता उन्नता ।'

दृष्टिके प्रकार अनेक हैं—

' कांता हास्या करुणा रौद्री वीरा भयानका वीभत्सा अद्‌भुता' ये आठ आठों रसोंकी दृष्टि कहीहैं ।'

'स्निग्धा हृष्टा दीना क्रुद्धा दृप्ता भयान्विता जुगुप्सिता विस्मिता' ये आठ आठों स्थायिभावोंकी दृष्टि कहीहैं ।

'शून्या मलिना श्रांता लज्जिता शङ्किता' इत्यादि और भी दृष्टि कहीहैं ।

भ्रूके सात प्रकार कहेहैं--

'सहजा पतिता उत्क्षिप्ता रेचिता कुंचिता भ्रुकुटी चतुरा' इति ।

कपोलके छै प्रकार कहेहैं—

'कुंचित कंपित पूर्ण क्षाम फुल्ल सम' इति ।

मुखके भी छै प्रकार कहेहैं—

'व्याभुग्न भुग्न उद्वाहि विधुत विवृत विनिवृत्त' इति ।

जिह्वाके भी छै प्रकार कहेहैं—

'ऋज्वी स्टक्कानुगा वक्रा लोला उन्नता अवलेहिनी' इति ।

एकसौ आठ नृत्तके करण कहेहैं—

तलपुष्पपुट लीन वर्तित वलितोरु मण्डलस्वस्तिक आक्षिप्तरेचित अर्धस्वस्तिक दिक्स्वस्तिक पृष्ठस्वस्तिक स्वस्तिक अंचित अपविद्ध समनख उन्मत्त स्वस्तिकरेचित निकुट्ट अर्धनिकुट्ट कटीच्छिन्न कटीसम भुजङ्गत्रासित अलात विक्षिप्ताक्षिप्तक निकुंचित घूर्णित ऊर्ध्वजानु अर्धरेचित मतल्लि अर्धमतल्लि रेचकनिकुट्टक ललित वलित दंडपक्ष पादापविद्धक नूपुर भ्रमर च्छिन्न भुजङ्गत्रस्तरेचित भुजंगांचित दंड-रेचित चतुर कटिभ्रांत व्यंसित क्रांत वैशाखरेचित वृश्चिक वृश्चिक-कुट्टित वृश्चिकरेचित लतावृश्चिक आक्षिप्त अर्गल तलविलासित ललाटतिलक पार्श्वनिकुट्टक चक्रमण्डल उरोमण्डल आवर्त कुंचित

दोलापाद विवृत्त विनिवृत्त पार्श्वक्रांत निशुम्भित विद्युद्भ्रांत अति-
क्रांत विक्षिप्त विवर्तित गजक्रीडित गंडसूचि गरुडप्लुत तलसंस्फोटित
पार्श्वजानु गृध्रावलीनक सूचि अर्धसूचि सूचीविद्ध हरिणप्लुत परिवृत्त
दंडपाद मयूरललित प्रेंखोलित संनत सर्पित करिहस्त प्रसर्पित अप-
क्रांत नितंब स्खलित सिंहविक्रीडित सिंहाकर्षित अवहित्थक
निवेशित एलकाक्रीडित जनित उपसृत तलसंघट्टित उद्वृत्त विष्णु-
क्रांत लोलित मदस्खलित संभ्रांत विष्कम्भ उद्घट्टित शकटास्य ऊरू-
द्वृत्त वृषभक्रीडित नागापसर्पित गंगावरण इति

"इत्यष्टोत्तरमुद्दिष्टं करणानां शतं मया ।
गतिस्थितिप्रयोगाणामानंत्यात् करणान्यपि
अनन्तान्यऽङ्गहारेषु क्रियातामुपयोगिता ॥" इत्युक्तम् ।

बत्तीस अंगहार कहेहैं--

'स्थिरहस्त पर्यस्तक सूचीविद्ध अपराजित वैशाखरेचित पार्श्व-
स्वस्तिक भ्रमर आक्षिप्तक परिच्छिन्न मदविलसित आलीढ आच्छु-
रित पार्श्वच्छेद अपसर्पित मत्ताक्रीड विद्युद्भ्रांत विष्कंभापसृत
मत्तस्खलित गतिमंडल अपविद्ध विष्कंभ उद्घट्टित आक्षिप्तरेचित
रेचित अर्धनिकुट्टक वृश्चिकापसृत' अलातक परावृत्त परिवृत्तक-
रेचित उद्वृत्तक संभ्रांत स्वस्तिक रेचित' इति ।

"करणव्रातसंदर्भानन्त्यात् तेषामनन्तता ।
द्वात्रिंशत् ते तथाप्युक्ताः प्रधान्यविनियोगतः" इति

गतिरहितअंगका जो संनिवेशविशेष है उसे स्थान कहतेहैं

"संनिवेशविशेषोऽङ्गे निश्चलः स्थानमुच्यते" इति

इसस्थानके इक्कावन प्रकार कहेहैं यथा—

'वैष्णव समपाद वैशाख मंडल आलीढ प्रत्यालीढ आयत अवहित्थ अश्वक्रांत गतागत वलित विनिवर्तित मोटित स्वस्तिक वर्धमान नंद्यावर्त संहत एकपाद समपाद पृष्ठोत्तानतल चतुरस्र पार्ष्णिविद्ध पार्ष्णिपार्श्वगत एकपार्श्वगत एकजानुनत परावृत्त समसूचि विषमसूचि खंडसूचि ब्राह्म वैष्णव शैव गारुड़ कूर्मासन नागबंध वृषभासन स्वस्थ मदालस क्रांत विष्कंभित उत्कट स्रस्तालस जानुगत मुक्तजानु विमुक्त सम आकुंचित प्रसारित विवर्तित उद्वाहित नत, इति।

"एकपञ्चाशदाचष्ट स्थानानि करणाग्रणी:" इति ॥

मैंने नृत्याध्याय के कुछपदार्थोंके ये नाममात्र लिखेहैं इनके लक्षण इसकारण नहीं लिखे कि जिन लोगोंमें नाच करनेका प्रचार है उनमें पढ़ने लिखनेका प्रचार बहुत अल्प है, जिन लोगोंमें पढ़ने लिखनेका प्रचार है उनमें नाच करनेका प्रचार नहीं। जिनलोगोंको इनके लक्षण देखनेहों वे भरतसूत्रादिग्रंथोंमें देखलें। यहाँ लिखनेसे ग्रंथ बहुत बढ़जायगा इससे भी नहीं लिखे। और मैं स्वयं तनिक भी नृत्यक्रियामें कुशल नहीं इसकारण भी विशेष लिखसकता नहीं।

चारोंप्रकारके अभिनयमें अभिज्ञको नट कहते हैं नृत्तके पंडितको नर्तक कहतेहैं—

"चतुर्धाभिनयाभिज्ञो नटो भाणादिभेदवित्"

"नर्तकः सूरिभिः प्रोक्तो मार्गनृत्ते कृतश्रमः" इति।

पात्रं स्याद् नर्तनाधारो नृत्ते प्रायेण नर्तकी।

मुग्धं मध्यं प्रगल्भं च पात्रं त्रेधेति कीर्तितम्।

मुग्धादेर्लक्षणं प्रोक्तं यौवनत्रितयं क्रमात् ॥" इति।

इत्यादिक और भी बहुतसा विषय संगीतग्रंथोंमें कहाहै वहाँ ही देख लेना, मेरा यहाँ नृत्यपर लक्ष्य नहीं किंतु स्वराध्याय और रागाध्यायपर ही है वह विषय जितना उचित समझा उतना यथामति लिख ही दियाहै इससे अब मैं इस ग्रंथको समाप्तकर निवेदन करताहूँ कि भ्रमप्रमादादिदोष पुरुषसाधारण होनेसे जो विषय आपको अशुद्ध जँचे उसे त्याग जो शुद्ध जँचे उसका ग्रहण करना बड़े बड़े भट्टपादादि अवतार पुरुषोंने भी अपने ग्रंथोंमें यही कहाहै कि 'ऐसा कोई जीव नहीं जो चूके न' फिर मुझ पामर मंदमतिकी तो कथा ही क्या इत्यलम्, इति शम्।

॥ इतिनृत्याध्यायः समाप्तः ॥

अमृतसेनपदपद्मयुग सिमर सिमर सिर नाइ।
संगीतसुदर्शन ग्रंथ इह हौं मतिमंद बनाइ ॥१॥
एक सात नव एक (१९७१) अरु संवत् काशीधाम।
रच्यौ ग्रंथ संगीतकौ हौं निजनामसनाम (संगीतसुदर्शन)॥२॥
स्वराध्याय इह प्रथमहै रागाध्याय द्वितीय।
नृत्याध्याय चतुर्थ है तालाध्याय तृतीय ॥३॥
महामहोपाध्याय अरु सी आइ ई गुरुराज।
काशीमें पंडितमुकुट गंगाधर महाराज ॥४॥
इनकी चरणकृपा हि ते कीने ग्रंथ पचीस।
जिनको पढ़ विद्यारथी वैष्णव देत असीस ॥५॥
अमृतसेन नायक अरु गंगाधर बुधराज।
ए दोऊ मेरे गुरू गुणियनके सिरताज ॥६॥
नितप्रति इनके चरणकौं सिमरौं वारं वार।

ज्ञानसरोवरमें सदा ए दोउ लावत पार ॥७॥
दोऊ परम कृपालु थे करत न बनत बखान।
मोसम दुर्जनकौ जिन जान्यौ तनुजसमान ॥८॥
सुदर्शनकौहौं पुत्रसम समझौं सब सुनलेहु।
अमृतसेन निजमुख कह्यौ वचन अंतमें एहु ॥९॥
जिमि निषाद रघुवीरपद पायौ परमपुनीत।
ईशकृपा पाए तथा हौं गुरु दऊ सुरीत ॥१०॥
अमृतसेनपदपद्मकौ पुनि प्रणाम करि ध्यान।
संगीतसुदर्शनग्रंथकौ करौं समापत जान ॥११॥
संगीतरसिक या ग्रंथकौ निरखैं कछु चित लाय।
तिनके रुचिकर होय तौ मोमन हर्ष मनाय ॥१२॥
अमृतसेन गुरुते लह्यौ जौ प्रसाद हौं मंद।
सो तव संमुख कीन है रागरसिकवरचंद ॥१३॥
भूल चूक सब माफ कर गुनको ग्राहक होउ।
कहूँ न चूके जोय सो मनुजदेह ना कोउ ॥१४॥
और कहौं कहँलग सखे वचन अंत ना पाय।
बुरौ सबनते ग्रंथ मम निजमुख कहौं बनाय ॥१५॥
प्रथमपुरुष संगीतको पुस्तक रचे अनेक।
परम तुच्छ तहँ तनिकसौ पुस्तक मम इह एक ॥१६॥
करौं प्रनाम तुहि अंतमें श्रीगुरुकौ सिरनाय।
श्रीहरिकौ अरु शारदाचरणनकौ मनलाय ॥१७॥

इति पंजाबीपंडितसुदर्शनाचार्यशास्त्रिविरचित
संगीतसुदर्शन ग्रंथ समाप्त हुआ।

कलकत्तेके संगीतडाकृर सी. आइ. ई. राजा शौरीन्द्रमोहन ठाकुर ने जो मेरे सांगीतिकशास्त्रज्ञानसे और सितारसे प्रसन्न हो मुझे चिट्ठी दी उसको मैं यहाँ प्रमाणत्वेन उपस्थित करताहूँ।

PATHURIAGHATA,
CALCUTTA,
9th January, 1912.

I had the pleasure of listening to a performance on the SITAR of Pt. Sudarshanacharya Shastri of Benares. The Pandit is a Sanskrit scholar and has studied the theory of Music as laid down in the Sanskrit treatises on the subject.

SHOURINDRAMOHAN TAGORE,
Music Doctor, Raja,
C. I. E.

अर्थात्—

हमको काशीस्थ पं० सुदर्शनाचार्यशास्त्रीजीके उत्तम सितार सुननेका सौभाग्य प्राप्त हुआथा। पण्डितजी संस्कृतके भारी विद्वान् हैं और सङ्गीतविषयके संस्कृतग्रन्थोंके भी सिद्धान्तोंका अभ्यास किये हैं।

राजा शौरीन्द्रमोहन ठाकुर
म्यूसिक डाकृर सी० आई० ई०
कलकत्ता।

———

श्रीः

निजजीवनवृत्तांत

पाठकवर इस समय मेरे तीन कनिष्ठ भ्राता हैं और एक ज्येष्ठ भगिनी। इससे पूर्व दो तीन बहन भाई मेरे मर भी चुके हैं। मेरे श्रीपिताजीका श्रीवंशीधराचार्य नाम था उनके पिताका श्रीराधाकृष्णाचार्य और पितामहका श्रीरामप्रतापाचार्य नाम था इनके नामसे ही प्रतापका संबंध न था किंतु पंजाब देशमें इनका भारी प्रताप था पंजाबके राजा महाराजा तथा विद्वान् और साधु महात्मा सभी इनको बहुत कुछ मानतेथे क्योंकि ये स्वयं अत्यन्त महात्मा तथा विद्वान् थे पटियालेके राजानरेन्द्रसिंहकी इनमें अतिशयित श्रद्धा थी। द्रविड़देशसे कश्मीरको जाते तथा आते समय श्रीरामानुजस्वामी मेरे पूर्वजपुरुषोंके घरपर ठहरेथे कुछ लोगोंको शिष्य भी किया ऐसा सप्रमाण सुनाहै।

मेरे पिता पंजाब ज़िला लुधियानेके जगराओं शहरमें रहतेथे संवत् १९२६ आश्विनकृष्ण षष्ठीकी अपर रात्रिमें जगराओंमें मेरा जन्म हुआ उससमय पिताकी केवल २६ वर्षकी अवस्था थी और ब्राह्मण वैष्णव होनेके कारण मेरे जन्मका उत्सव मनानेकी कुछ भी अपेक्षा नथी तथापि मातापिताने भारी उत्सव मनाया तथा अपनी शक्तिकी अपेक्षा बहुत अधिक धन बाँटा ऐसा सुना है। पंचमवर्षपर्यंत मेरा बहुत लाड रहा फिर धीरे धीरे अष्टमवर्षपर्यंत

---

१ ग्रंथकारका।

घटता घटता निश्शेष होगया। पंचमवर्षमें चूडाकर्म और अष्टम-वर्षमें उपनयन हुआ अब शिक्षाका आरम्भहोगया। जराजरासी बातपर खूब ही मार पड़ती थी। एक दिन एक भिक्षुक आया वह आटा (चून) लेता था माताने मुझे भिक्षा देनेको कहा मैंने बालशाठ्यसे नीचे दाना रख ऊपर आटा रख उसकी झोलीमें डालदिआ उसके आटेमें दाना मिलजानेसे उसने मातासे कहदिआ माताने उसका आटा छनवाके फिरसे भिक्षा दिलवादी उसके चले-जाते ही माता मेरी छातीपर छुरी लेकर चढबैठी और यही कहा कि तैंने भिक्षुकके साथ दगा किया फिर भी करेगा इससे आज तेरा गला काटडालतीहूँ। बड़ी कठिनसे मजूरिन तथा भगिनीने मुझको छुड़ाया। ऐसी वारदातें बहुतवार हुईं। मैं मातापिताकी उन शिक्षाओंका बड़ा उपकार समझताहूँ उनसे मेरे बहुतसे काँटे झड़गए पिताने एकबार मुझे अनवसरमें हँसदेनेपर भी पीटाथा। बाल्यावस्थामें जैसी कुछ मुझे मातापितासे ताडना प्राप्त हुई भगवत् करे वैसी सभको प्राप्त हो किंतु देखनेमें आताहै कि अब वैसी ताडना तथा शिक्षा प्राप्त नहीं होती, मेरे कनिष्ठ भ्राताओंको भी वह प्राप्त न हुई। माता मुझे संतोष और दया करनेकी भी बड़ी शिक्षा देतीथी। मेरी माताके सदृश संतोष और दया करनेवाली स्त्री बहुत अल्प हैं।

संवत् १९३७ के आरम्भसे ही पिताने मुझे अपने साथ रख-नेका आरम्भ किआ प्रथम मुझे अपने साथ अमृतसर लेगए फिर मार्गमासमें श्रीवृन्दावन लेगए वहां उनने अपने आचार्यपुत्र श्रीमान् स्वामिश्री १०८ श्रीनिवासाचार्यजीमहाराजसे मुझको श्रीरामानुज-

संप्रदायकी दीक्षा दिलाई क्योंकि असीमकालसे लेकर हमारे घरमें श्रीरामानुजसंप्रदाय ही चलीआतीहै और पूर्वपुरुषोंसे लेकर स्वयं शिष्य करनेकी भी मर्यादा चली आतीहै इससमय भी मेरे पिताके बहुतसे शिष्य वर्तमान हैं तथा मेरे भी ।

संवत् १९३८ लगते ही पिता घरको चले आए और मुझे श्रीसंप्रदायानुयायी शौच आचार व्यवहारकी खूब शिक्षा दीगई मैं भी अल्पकालमें ही यथाशक्ति उसमें निपुण होगया। संवत् १९३९ में पिताने मेरा विवाह करदिआ । १९४० में मैं वृन्दावनको चला-गया मेरे पिताको वहाँके सी. आई. ई. राजा सेठ लक्ष्मणदासजीने बड़े आदरसे बुलायाथा इससे २ मास पीछे पिता भी आगए उनने पुत्रप्राप्तिकेलिए पितासे अनुष्ठान करायाथा ।

दो चार जीव ऐसे पिताके मुँह लगेथे और मुझसे उनसे पटी नहीं इससे उन लोगोंने पिताको मेरीओरसे सिखाने पढ़ानेका आरम्भ किआ जिससे पिताकी कृपामें अंतर पड़ने लगगया । वृन्दा-वनमें पहुँचनेके समय भेदसे मेरे और पिताके निवासस्थानका भी भेद था इससमय पिताके यहां एक बार ब्राह्मण-भोजन था पिता ने मुझे भोजनकेलिए भी नहीं कहा और भोजनकी कोई वस्तु भी नहीं भेजी मुझे भी पिताकी इस निठुराईसे कुछ खेद हुआ इससे मैं भी उस दिन पिताके मकानपर नहीं गया । यह रञ्ज बराबर सं० १९४५ तक बढ़ताही गया । मैंने बहुत चाहा भी कि पिताकी कृपा प्राप्त हो परन्तु सभ यत्न व्यर्थ गया, सं० ४० से ४४ तक कई बार पिता वृन्दावन गए कई बार नाभे गए शेष काल घर भी रहे और मैं भी पिताके साथ ही था किंतु अनबनसे ही । मुझे

चारों दिशाओंमें अंधकार ही प्रतीत होताथा क्योंकि पिताके विना मेरेलिए और कोई अन्नका भी आश्रय नहीं था, पिता मुझे कुछ पढ़ाते अवश्य थे किन्तु अपनी सेवा इतनी कड़ी करातेथे कि पढ़ने पर श्रमको समय प्राप्त नहीं होताथा, पिताने मुझे इतनी उपेक्षा दिखाई कि सं० ४२ के बाद वस्त्रकी भी तङ्गी होगई और ४४ में मुझे ४० दिन तक ज्वर आतारहा किन्तु पिताने बाततक न पूछी औषध और विश्रामको समय देना तो दूर रहा, यह सब प्रभाव केवल दुष्टोंकी चुगलखोरीका ही था। इस निठुराईसे भीतरो भीतर पिताकी भी निन्दा हुई। किन्तु मेरे गोचर जितना काम था मैं उस सभको उस ज्वरमें भी नित्यंप्रति पूरा करताथा ४० दिन पीछे मैं अच्छा भी होगया। पिताका इतना पानी भरा है कि अबतक हाथों में अट्टन वर्तमान हैं। अब मेरीओरसे पिताका हृदय इतना बिगड़ गया कि कोई वस्तुको इधरसे उधर रखनेमें भी अनेक संदेह करने लगे मूसे बिलैयाके खाजानेसे उस खाद्यकी चोरी भी मेरे माथे मढ़ने लगे यहाँतक कि उनके रक्खे मोदकोंको मूसोंने नोचलिआ पिताको उस नोंचनेका मुझपर भ्रम ऐसा पक्का हुआ कि दो पुरुषोंके संमुख वह मोदक मेरे माथेपर ही मारा जिससे मेरे कुछ चोट भी लगी और लज्जाकी तो क्या लिखूँ यही जीपर आया कि पृथ्वी फट जाए तो उसमें समा जाऊँ। पिताके इन अत्याचारोंसे चित्त बड़ा दुखी होगया। मथुराके सेठ लक्ष्मणदासजी वृन्दावनके पंडित सुदर्शनाचार्यशास्त्रीजी नाभेके बाबा बासुदेवदासजी इन तीन महापुरुषोंसे पिताका प्रथम असीम प्रेम था फिर स्वयं पिताने निज बेपरवाहीसे उस प्रेमको बिगाड़ डाला और उस प्रेमके बिगड़ जाने

मैं मुझे ही हेतु समझलिआ किंतु मेरा इसमें रत्ती भी अपराध न था प्रत्युत ऐसे बहुतसे उपाय किए जिससे इन लोगोंका प्रेम न बिगड़े उन का कुछ फल भी हुआ किंतु पिताकी भारी उपेक्षासे पूर्णफल न हुआ।

इधर वैमनस्य बहुत बढ़गया था पिताकी ओरसे बड़ा दुःख भोगना पड़ताथा तथापि अन्न वस्त्रका कोई आश्रय न होनेसे सभ सहता था। संवत् १९४४ के माघमें एक दिन पिताके मुहलगा एक नौकर पिताको भड़का रहाथा मैंने उस नौकरको कुछ डाटा किंतु मेरा डाटना पिताको सह्य न हुआ पिताने मुझे बहुत गालिएँ दीं और बहुतसे शाप दिए मैंने पिताके उस समग्र भाषणके उत्तर में इतनाही कहा कि यदि मैंने जानबूझकर आपका कुछ बिगाड़ किआ हो तो मुझे चौदह नहीं अट्ठाईस कुष्ठ हों और मेरे हाथसे यदि कोई वस्त्रभूषणादि आपका खोगया हो वा टूटगया हो तो आप कहिए मैं अपना देह बेचकर भी उसका पलटा दूँगा और आपका घर मौजूद है आप सम्हाल लेना मैं जुम्मेवार नहीं और आप अब मुझपर विश्वास नहीं करना मैं बहुत शीघ्र आपके घरसे निकल जाऊँगा, मेरा यह उत्तर सुन पिताका कोप शांत होगया और पिताको मेरी सम्हाली हुई भगवत्सेवा के सम्हालनेकी भारी चिंता उत्पन्न होगई इस हेतु पिताने बहुत यत्न किआ कि मैं बाहिर न जाऊँ किंतु मैंने न माना, मैंने हृदयपर दृढ़सङ्कल्प करलिआथा कि भिक्षा माँगनी अच्छी पिताके घर अब रहना उचित नहीं सो मैं फाल्गुन लगते ही घरसे चलपड़ा उस समय माता पिता बहुत रोए और जैसे जैसे पिताकी निठुराई बढ़ती जातीथी माताकी कृपा भी उतनी ही बढ़ती जातीथी।

मैं घरसे निकलकर हरिद्वार होकर जयपुर पहुँचा इधर पिताके चित्तपर चलनेके समय जो मृदुता थी वह दुष्टपिशुनतासे नष्ट होगई कोप वैसेही फिर आजमा किंतु पूर्वकी अपेक्षा बढ़ा नहीं। मुझे उस समय गानेबजानेवालोंसे मिलनेकी बड़ी रुचि थी सो मैं जयपुरमें श्रीतानसेनवंशावतंस मीयाँ श्रीअमृतसेनजीसाहेबके मकानपर गया उनका सितार सुनकर मैं मुग्ध होगया मैंने उनसे सितार सीखनेका दृढ़संकल्प करके उनसे कहा मेरी प्रार्थना मानी नहीं किंतु ऐसा मुझे समझाया कि जिससे मेरा वह संकल्प टूट जाय किंतु टूटा नहीं। एक दिन उनके एक भ्राताने मुझे उद्देश्य करके समयकी तथा सीखनेवालोंकी निंदा की मैंने कहा 'यदि लायकपुरुषके द्वारपर कोई नालायक भिक्षुक आता है तो घरवाला भिक्षुककी नालायकी-की ओर देख जवाब नहीं देता किंतु अपनी लायकीकी ओर देख भिक्षा देता ही है' यह सुन वे चुप होगए मैं उनके पीछे पड़ा ही रहा। इतनेमें काशीवासी राजा भरतपुरकी ज्येष्ठ कन्याका मेरे द्वारा सम्बन्ध हुआ था इससे मुझे काशी आना पड़ा काशी से मैं फिर जयपुर गया बड़ी कठिनसे पाँच मास पीछे पीछे फिरनेसे श्रीअमृतसेनजीने मुझे सं० १९४५ के श्रावणमें शागिरद बनाया फिर उनने मेरे साथ कोई बातका कपट नहीं किआ मेरी अनुकूलतासे उनकी मुझपर असीम कृपा होगई। कुछ दिनके बाद मैंने वहाँ पंडित श्रीसुन्दरजी-ओझासे पढ़नेका भी आरंभ करदिआ मैंने काव्यकोश सिद्धांतकौमुदी काव्यादर्श इत्यादि कुछ ग्रंथ यथाक्रम उनसे पढ़े। और अमृतसेन-जीसे सितार भी सीखता रहा। पिता मुझे स्वयं भी बहुत ही अल्प खर्च भेजतेथे कि ४५ से ५० तक छै वर्षमें सब मिलाकर मुझे

चौसठ रुपए भेजेथे और दूसरेको भी खर्च या कर्ज भेजने नहीं देते थे इस कारण मुझे धनकी इतनी तंगी उठानी पड़ी कि मासमें कई बेर फाके करने पड़ते थे दो दो चार फाकोंकी तो अब संख्या का भी स्मरण नहीं। एकबार ऐसा भी समय आया कि नौ दिन मुझे अन्न प्राप्त नहीं हुआ केवल जल पीकर मैंने ९ दिन बिताए। एक जाड़ाभर वस्त्रकी भी इतनी तंगी भोगी कि मेरे पास दो चटाई थीं उनमेंसे एकको मैं नीचे बिछाताथा एकको शीतसे त्राण-केलिए ऊपर ओढ़ताथा पाठकवर वह समग्र जाड़ा एक चटाई ओढ़कर बिताया और क्या लिखूँ। मैंने उस समय अपनी शक्त्य-नुसार भारी विपत्ति भोगी किन्तु आजतक किसीसे यह हाल नहीं कहा यहाँपर मिथ्या लिखना उचित न समझ विवश लिखना पड़ा। वस्तुगत्या जीवमात्रकेलिए उसपर भी ब्राह्मणकेलिए तो विपत्ति बहुत हितकर है मेरी जानमें मनुष्य विपत्तिसे ही मनुष्य बनताहै। और पिताकी निठुराईसे चित्त इतना दुखी था कि सभ उक्तविपत्ति तो सह ली किन्तु पिताको कुछ नहीं लिखा। और विपत्तिसे असीम दुःखी होनेपर भी मैंने अपने विद्याऽभ्यासमें तनिक भी त्रुटि नहीं की किन्तु निरंतर अभ्यास करता ही रहा क्योंकि विपत्कालकी सेवासे सरस्वतीदेवी बड़ी प्रसन्न होतीहैं।

पिताको विश्वास था कि सुदर्शन झख मारकर हमारा ही फिर आश्रय लेगा किंतु मैं फिर पिताके यहाँ रहनेको नहीं गया इससे पिताका वह अभिमान टूटगया और कोप भी कुछ कुछ शांत होने लगा ५० के संवत्तक कोप सर्वात्मना शांत होगया। इधर मीयां श्रीअमृतसेनजी मुझे बड़े स्नेह तथा श्रमसे सितार सिखातेरहे वाद्य

बजानेवाले लोग गैर आदमीको जोड़ नहीं सिखाते किन्तु श्रीअमृत-सेनजीने मुझे जोड़ भी सिखाया मैं उनकी उस उदारता तथा कृपाका सात जन्ममें भी प्रत्युपकार पूरा नहीं करसकता। उनके शिष्य तथा मातुलपौत्र हफीजखाँजीने भी मुझे सितार सीखनेमें बड़ी सहायता दी। उस समय मीयां अमृतसेनजीके घरमें उनसे नीचेके दस बारह उस्ताद लोग और थे सबी कृपा रखते थे। वह घर क्या था मानों संगीतका कालिज था अब वह बात नहीं रही। हम लोगोंके दौर्भाग्यसे सं० १९५० पौषकृष्ण अष्टमीको प्रातःही श्रीअमृत-सेनजी सदाकेलिए इसलोकसे बिदा होगये मानों संगीतका सूर्य अस्त होगया यद्यपि उनकी अवस्था उस समय ८० वर्षकी थी तथापि लोगोंने बड़ा शोक मनाया। मैं उनकी मृत्युसे उदास होकर घर गया वहाँ रोगग्रस्त होगया कुछ कालमें अच्छा होकर और कुछ माताकी आज्ञासे गृहस्थके कामोंको समेट कर श्रीअमृत-सेनजीके पुत्र मीयाँ निहालसेनजीको मिलने जयपुर गया वहाँ से अपने पिता तथा परममित्र राजासेठ लक्ष्मणदासजीको मिलने वृंदा-वन गया वहाँसे पढ़नेकेलिए काशीको चलाआया।

पाठकवर उक्त विपत्तिका खेद चार वर्ष मैंने निरन्तर भोगा उसके अनंतर एक परमश्रीमान् मेरा मित्र मुझे खोजकर जयपुरमें मिला वह मेरी उस दशाको देख बड़ा दुखी हुआ और विपत्तिवृत्तांत न लिखनेका बड़ा उपालंभदिआ। उसने जयपुरसे चलते समय एक हजारका नोट मुझे दिआ और आगेको खर्च देनेका करार किया। मैंने उस रुपयेसे सब ऋण चुकता किया। आगेको जो उक्त महापुरुष से खर्चको मिलता रहा उससे मैं अपना काम चलाता

रहा और उस पुरुषने छात्रावस्थाकी योग्यतासे बहुत अधिक खर्च मुझे दिआ याने पाँच छैसौसे कम किसी वर्ष नहीं दिआ और बड़े आदरके साथ विना माँगे देतारहा। किन्तु वह सब रुपया मुझसे खर्च होजाताथा इसीतरह उस पुरुषने मुझे छै वर्ष तक खर्च दिआ जिससे मैंने बड़े सुखसे विद्याभ्यास किआ। उसके पलटेमें यही आशीर्वाद देताहूँ कि भगवान् उसके पुत्रपौत्रोंकी सभतरह से वृद्धि करें। छै वर्षके अनंतर वह स्वयं बड़ी धनकी तंगीमें फंसगया इससे उसने खर्च भेजना बंदकरदिआ किन्तु जवाब नहीं दिआ यह लिखा कि किसी समय सब इकट्ठा हीं देदूँगा, तदनन्तर रोगग्रस्त होकर कुछ हीं दिनमें वह भी इस लोकसे चलदिआ उसकी पति-व्रता पत्नी के साथ मेरी विद्या भी मानों उसदिन विधवा होगई। यदि इस समय जीता रहता तो इस समय उससे मुझे बहुत धन तथा मानप्रतिष्ठा प्राप्त होनेकी आशा थी, क्योंकि उसने मुझे बहुत कुछ कहा हुआथा। मैं भी संवत् १९६५ तक उसके विना और किसी धनवान्के द्वारपर नहीं गया यदि वह जीता रहता तो कभी किसीके द्वारपर जानेका समय न आता। किंतु ऐसा सौभाग्य कहाँ।

मैं संवत् १९५१ के मार्गमें काशी पहुँचकर महामहोपाध्याय सी. आइ. ई. श्रीमान् विद्यानिधि श्रीगंगाधरशास्त्रीजीमहाराजसे पढ़नेलगा प्रथम काव्यप्रकाश कुवलयानंद अलंकारसर्वस्व ध्वन्यालोक चित्रमीमांसा तथा रसगंगाधर ये ग्रंथ पढ़े फिर सांख्य और योगके ग्रंथ पढ़े फिर अद्वैत वेदांत तथा पूर्वमीमांसाका अध्ययन किया न्यायके दर्शनभागका भी अध्ययन किया कुछ विशिष्टाद्वैत तथा शब्दखंडका भी अध्ययन किआ साहित्य और अद्वैतवेदांतका अध्य-

सकलल्लोकप्रसिद्ध अकबरपादशाहके उस्ताद
तथा एकरत्न संगीतपरमाचार्य
मीयां श्रीतानसेनजी

अखिलल्लोकसंमान्य अद्वितीयभगवद्भक्त सारस्वत-
कुलाब्धिकौस्तुभ दिव्यसंगीतपरमाचार्य भूतपूर्व
श्रीहरिदासस्वामीजीमहाराज ।

अकबरपादशाहके उस्ताद तथा एकरत्न सकललोक-
प्रसिद्ध संगीतपरमाचार्य मीयां श्रीतानसेनजी।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

नवाबझझरके उस्ताद जगद्विख्यात उत्कृष्टसितारवादनके
प्रथमपुरुष (उस्ताद) मृत मीयां श्रीरहीमसेनजी

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अलवरनरेशके उस्ताद जयपुरनरेशके जागीरदार जग-
द्विख्यात उत्कृष्टसितारवादनके द्वितीयपुरुष (उस्ताद)
मृत मीयां श्रीअमृतसेनजी
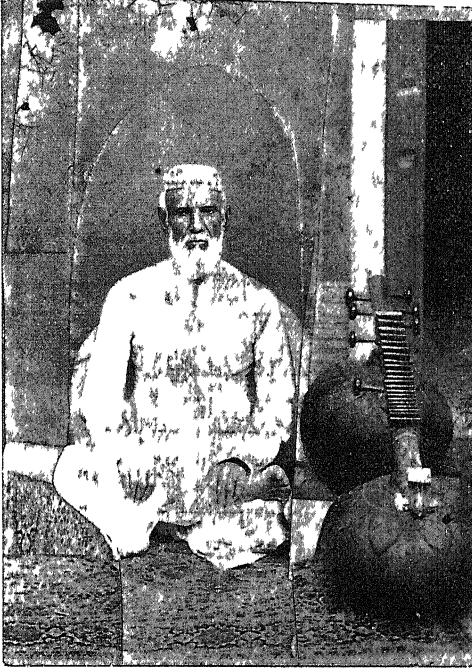
गवालियरनरेशके उस्ताद जगद्विख्यात उत्कृष्टसितारवादनके
प्रथमखलीफा मृत मीयां अमीरखांजी

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ।

जयपुरनरेशके जागीरदार श्रीअमृतसेनजीके पुत्र उत्कृष्टसितार-
वादनके द्वितीयखलीफा मीयां निहालसेनजी

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

नवावटौंक तथा नवावरामपुरके परमकृपापात्र उत्कृष्ट सितारवादनके तृतीयखलीफा मृत मीयां हफीजखांजी

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ।

मृत मीयां अमीरखांजीके पुत्र
फिदाहुसेनजी

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

यन प्रचारापेक्षया मैंने बहुत अधिक किआ किंतु सभ उक्त श्रीगुरु-प्रवरोंसे ही इतना अध्ययन करते करते १९६३ का संवत् बीतगया। और इस कालमें मैंने स्वयं भी कई ग्रंथ बनाए यथा संस्कृतमें— [१]श्रीरंगदेशिकशतक [२]संस्कृतभाषा [३]अद्वैतचंद्रिका [४]विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला, भाषामें [५]स्त्रीचर्या, [६]भगवद्गीतासतसई [७]आल्वारचरितामृत [८]अष्टादशरहस्यभाषा, संस्कृत तथा भाषा दोनोंमें [९]अनर्घनलनाटक, संस्कृतके कुछ उपयोगी पद्योंका संग्रह करके उसका नाम [१०]नीतिरत्नमाला नियतकरके उसकी भाषामें टीका लिखी ये सब ग्रंथ छप भी चुके हैं। इन ग्रंथोंके कारण लोकसे मुझे बहुत कुछ मान भी प्राप्त हुआ। और रघुनाथचंपू एक कोश ये दो ग्रंथ मैंने भाषाके लिखने आरंभ किए किंतु अभीतक अधूरे पड़ेहैं। और [११]सिद्धांत-कौमुदीकी भाषाटीका तथा भगवद्गीतापर विशिष्टाद्वैतकी रीतिसे अद्वैतमतखंडनपुरस्सर [१२]तत्त्वार्थसुदर्शनी नामकी भाषाटीका लिखी जिसका और लोगोंने भगवद्गीताभाषाभाष्य यह भी नाम रखदिआ —यह बंबईके वेंकटेश्वर प्रेसमें छपी है। इन सभके पीछे [१३]शास्त्रदीपि-

---

१ श्रीरंगदेशिकशतक मैंने अपने परमाचार्यों का स्तोत्ररूप बनाया है। २ संस्कृतभाषामें 'आदिकालमें भारतकी भाषा संस्कृत थी' यह प्रतिपादन किआहै। ३ अद्वैतचंद्रिका अद्वैतवेदांतानुसार प्रमाण तथा प्रमेयका ग्रंथ है इतना प्रमेयसंग्रह और किसीएक ग्रंथमें नहीं मिलेगा। ४ विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला श्रीभाष्यका सारभूत है ५ स्त्रीचर्या स्त्रियोंके उपयोगी है। ६ भगवद्गीतासतसई में भगवद्गीताके प्रत्येक श्लोकका एक एक दोहेमें अनुवाद है। ७ आल्वारचरितामृतमें श्रीसंप्रदायके १२ भक्तोंका चरित्र है। ८ अष्टादशरहस्यभाषा श्रीरामानुजाचार्य-प्रणीत अष्टादशरहस्यका अनुवाद है। १० नीतिरत्नमाला धर्म और नीति प्रतिपादक श्लोकोंका संग्रह है ।

काप्रकाश नामकी शास्त्रदीपिकाके तर्कपादकी संस्कृतमें सविस्तर टीका लिखी यह काशीके विद्याविलासप्रेसमेँ छपीहै । इस ग्रंथके लिखनेपर मुझे भारी श्रम उठाना पड़ा । हिंदी भाषाका व्याकरण (हिंदीदर्पण) बनाया, शक्तिवाद व्युत्पत्तिवादपर भी आदर्श नामक टीका बनाई इस टीकासे छात्रलोग बहुत प्रसन्न हुए ।

इधर काशीमें आनेके अनंतर मैं तीन चार बेर पितासे मिला । सं० १९५७ के कार्तिकमें मेरी माताकी मृत्यु होगई केवल डेढ़मास मैँ माताकी कुछक सेवा करसका । मार्गमास समाप्त होते पिता से मिलकर मैं फिर अध्ययनकेलिए काशी आगया । संवत्‌१९५८ के श्रावणमेँ पिताकी भी अमृतसरमेँ मृत्यु होगई उस समय भी मैं वहाँ था पिताकी मृत्युके ३ दिन पीछे मेरे छोटे भाइओंने मुझे पैत्रिकदायसे कोरा जवाब देदिआ उसके प्रमाणकेलिए एक कागज़ लिखाहुआ मुझे दिखाया जिसमें लिखाथा कि "हमारे ज्येष्ठपुत्र सुदर्शनका हमारी किसी वस्तुपर भी कुछ हक्क नही" मैं इस वज्र-पातको संतोषसे इतना सहलिआ कि मैंने भाइओंसे यह भी न पूछा कि यह क्या हुआ किंवा क्यों हुआ । यही उत्तरमेँ कहा बहुत ठीक है । उसी समय दु:खी होकर मैंने हृदयसे अपने पैत्रिकदायको त्याग दिआ और ऐसा त्यागा कि आजतक उधर दृष्टि भी कभी नहीं दी । उक्त अन्यायसे मेरे पिता तथा भ्राताओंकी निंदा भी हुई और मेरे संतोषसे मुझे इतना यश प्राप्त हुआ कि लाखन रुपया खर्च करनेसे भी जो प्राप्त होना कठिन है, एकबार सभ पंजाबमें यह चर्चा फैल गई तथा मध्यप्रदेशके भी कई नगरोंमें । मैं भ्राताओंके जवाब देनेसे अपनी पत्नीको साथ ले सूखे हाथन घरसे निकलपड़ा

मेरे निकलते ही नगरमें त्राहि त्राहि मचगई दोनों भैंने बड़ी रोई पीटीं उस समय जो पुरुष मुझसे मिला वह रोदिआ उस समय बड़ा करुण बीतगया। भ्राताओंके इस अन्यायसे रुष्ट होकर पिताके बहुतसे शिष्यलोग मेरे पक्षमें होगए। पिताने जो अंतसमय असीम निठुराई दरसाई वह भी एक जीवके सिखानेसे, उसने मेरी ओरसे पिताको इतना सिखादिआ कि मैं अंत्यसमय जीवितपिताके दर्शनतक न करनेपाया, इधर पिताको मेरी आँखका बड़ा लिहाज था सिखानेवाला जानता था कि यदि सुदर्शन इनके संमुख आगया तो मेरी मंथरानीति समग्र नष्ट होजायगी ये सर्वस्व सुदर्शनको सम्हाल जाएँगे यह सोच सिखानेवालेजीवने मेरा पिताके निकट पहुँचना ही बंद करादिआ। और मैंने भाइओंको यथाशक्ति बहुत कुछ सहायता दीथी तथापि उसीके सिखानेसे तथा धनलोभमें पड़कर भाइओंने मुझे पैत्रिकदायसे जवाब दिआ परतु कुछ कालबाद भाइओंको पछताना पड़ा और पिताका घर भी नष्ट भ्रष्टसा होगया।

बहुतसे लोगोंने भाइओंके साथ मुकद्दमा लड़नेका मुझसे आग्रह किया किन्तु मैंने एक न मानी संतोष करना ही उचित समझा और यद्यपि इदालतमें जानेसे मुझे मेरा पैत्रिकदाय तुरत मिल जाता तथापि इदालतमें जानापड़ता। नाभेके बाबा वासुदेवदासजीने सभ हाल जानकर यही कहा कि "आपके इससंतोषसे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ आपने बहुत हो उचित किआ जो पैत्रिकदाय त्याग दिआ ऐसे निरादरकारिओंसे न लेना ही उचित है।" और यद्यपि मेरे भाइओंने मेरे साथ कम नहीं की और मेरा उनका कोई प्रकारका व्यवहार भी रहा नहीं तथापि मैं उनको प्रेमकी

हो दृष्टिसे देखताहूँ और यही चाहताहूँ कि श्रीनारायण उनको सदा आनंद प्रसन्न रक्खे। भाइओंने जो मुझे दायसे जबाब देदिआ उस बातको लोकमें उचित ठहरानेकेलिए भाइओंने मुझपर बहुतसे झूठे दोष लगाने आरम्भ किए किन्तु देशके लोग उनकी दोषारोपकी बातोंका मुहतोड़ उत्तर देतेरहे क्योंकि लोग मेरे आचार व्यवहारसे भली भांति परिचित थे और भाइओंके अनुचित लोभ को भी समझ गएथे। मैं भी काशीमें बैठा उन दोषारोपोंको सुनता था किन्तु उन झूठी बातोंका उत्तर देना उचित नहीं समझा। और देशके लोग स्वयं उन झूठी बातोंका उत्तर देते थे। उस समय परिचिताऽपरिचित सर्वसाधारण जीवमात्र ने जैसा कुछ मेरा पक्ष पकड़ा तथा प्रीति जताई उतनी मुझे आशा न थी।

महाशय उस मेरे मित्र महापुरुषने मुझे छैही वर्ष खर्च दिआ था और मैंने उससे खर्च मिलना बंद होने पर भी अध्ययन को बंद नहीं किआ किन्तु ऋण लेकर उससे खर्च चलाकर अध्ययन चलाया और मातृमृत्यु कार्यपर डेढ़ हज़ार रुपया नक़द खर्च उठाथा उसमेंसे एक हज़ार पिताकी तरफसे मिलाथा शेष पाँच सौ ऋण लेकर मैंने अपनी ओरसे मातृसेवा समझ खर्च किआथा इत्यादि खर्चोंके कारण जिस समय भाइओंके जबाब देनेसे मैं सूखे हाथ घरसे निकला उस समय दो हज़ार रुपया मेरे सिरपर ऋण था उसकी मुझे बड़ी चिन्ता लगी किन्तु उसी समय पिताके शिष्यभूत दो घरोंने मिलकर तीन हजार रुपया मेरे भेंट किआ मैंने भी उस-मेंसे समग्र ऋण चुकता करदिआ और काशी आकर शेष धनमेंसे

कुछमें कुछ दिन अपना काम चलाया कुछ धन से विशिष्टाद्वैताधि-करणमाला और अद्वैत चन्द्रिका ये दो स्वनिर्मितसंस्कृत ग्रन्थ छपवाए। और अध्ययनका आरम्भ किआ उसके अनंतर तीनवर्ष पर्यंत शिष्य-लोगोंसे उचित धन प्राप्त होतारहा इसके अनंतर शिष्यलोग धन-प्रदानके कारण अभिमान दिखाने लगे और मानमर्यादाको भी बिगाड़ने लगे इससे मैंने शिष्यलोगोंसे भी धन लेना बंद करदिआ क्योंकि तुच्छ धनकेलिए मैंने उनकी खुशामद करनी और अपनी मानमर्यादाको अल्प करालेना उचित नहीं समझा यदि मैंने खुशामद ही करनी होती तो मथुराके राजा लक्ष्मणदासजीसे बहुत कुछ धन कुमालेता। मेरे स्वभावमें बहुतसे दोष हैं यथा गुरुलोगोंके सिवा और कोईकी खुशामद न करनी और कोईसे अपमान भी न सहना इत्यादि। और मैं अपनी ओरसे ऐसी चेष्टा यथाशक्ति नहीं ही करता जिससे किसीके साथ वैमनस्य उत्पन्न हो यदि दैवात् वैमनस्य उत्पन्न होजाय तो उस दूसरेके वैमनस्य छोड़े विना मैं भी वैमनस्यको नहीं छोड़ता हाँ इतना अधिकतर ध्यान रखता हूँ कि जहाँतक बने कोई के अनिष्टमें प्रवृत्त नहीं होता यदि दूसरा वैमन-स्यको त्याग दे तो मैं भी तुरत त्याग देताहूँ मैं कोईका द्वेषी नहीं द्वेषसे बहुत डरताहूँ वैमनस्योत्पत्तिके ही भयसे दूसरेके साथ वार्तालापमें यदि मैं किसी बातपर दूसरेका आग्रह देखताहूँ तो झट अपने पक्षको शिथिल करदेता हूँ जो वैमनस्य उत्पन्न न हो। और व्यावहारिक बातमें मिथ्या बोलनेसे भी बचताहूँ मेरी श्रद्धा वैष्णवसंप्रदायमें ही है। मैं विपत्तिको उपकारिणी तथा भूषण समझताहूँ दूषण नहीं। प्राचीन कालमें नलादि बड़े बड़े चक्र-

वर्त्तिओंने भारी विपत्ति भोगी है फिर मादृशानिर्भाग्य जीवोंकीकौन कथा । ग्रन्थ लिखनेकी चाट मुझे मेरे मित्र काशीके राधाकृष्णदासने लगा दी इसे मैं अपने वर्तमानसमयकेलिए कुछ अच्छी नहीं समझता इससे विद्याभ्यासमें भी कुछक चति हुई तथापि सभ मिलाकर मैंने बाईस वर्ष विद्याभ्यासमें विताए हैं । यदि कोई मेरा वास्तविक दोष दिखाता है तो यद्यपि उससे पश्चात्ताप बड़ा होता है तथापि दोषको स्वीकार करलेताहूँ ।

पिताके मरनेके अनंतर एक मेरा छोटा भ्राता मेरे पक्षमें रहा यह विदित नहीं कि वह कपटसे मेरे पक्षमें था किंवा सत्यसे । मुझसे जो बनआई सो मैंने उसकी सहायता की और शिष्य-सेवकोंमें उसे मैंने अपना मुखत्यार बनादिआ सभको यह कहाकि इसको मेरा ही रूप जानना । तीनचार वर्षमें जब उसके शिष्य-वर्गमें पैर जमगये तब वह भीतरोभीतर मेरा शत्रु बनगया इसकी मित्रमुखशत्रुताने मेरी बहुत हानि की, कुछकालके अनंतर इसकी शत्रुता सभको प्रकट होगई । और यह स्पष्ट शत्रु बनगया ।

इधर निजव्ययसे और शास्त्रदीपिकाके तर्कपादपर टीकाके बनाने तथा स्वयं छपवाने के व्ययसे मेरे सिरपर बहुत भारी ऋण होगया उससमय मैं शक्तिवाद समाप्त कर चुकाथा । व्युत्पत्तिवादको उक्तश्रीगुरुपादोंसे पढ़नाचाहताथा किंतु ऋण तथा खर्चकी तंगीसे उससमय न पढ़सका ऋण उतारनेकेलिए काशीसे बंबईकी ओर चलागया । बंबई जाकर गीतापरजो तत्त्वार्थसुदर्शनी (भाषाभाष्य) नामकी टीका लिखीथी उसके छपनेका वेंकटेश्वरप्रेसमें प्रबंध किया तदनतर अर्शरोगसे पीड़ित हो पूना पंढरपुर शोलापुर होताहुआ

दक्षिण हैदराबादमें जा पहुँचा, एक वेर आरोग्य प्राप्त हुआ किंतु फिर वही अर्शरोग इतना बढ़ा कि आठमासतक अत्यंत पीड़ित रहा।

आरोग्यहोनेपर मनमेँ आया कि श्रीरंगधामकी यात्रा करनी-चाहिये इससे खर्चकी तंगीके कारण केवल श्रीरंगधामयात्राकेलिए उद्यत हुआ, मेरे इससंकल्पको जान हैदराबादके कुछ श्रीमानोंने सेवा की जिससे मेरे पास सातसौ रुपया इकट्ठा होगया तब मैंने यथाशक्ति दक्षिणमेँ होनेवाले बहुतसे वैष्णवधामोंकी यात्राका आरंभ किया जहाँ जहाँ सवारी जासकतीथो वहाँवहाँकी प्रायः यात्रा नहीं छोड़ी यथा—

हैदराबादसे—विजवाडा, पणानृसिंह, कांची, भूतपुरी, वीर-राघव, मदरास (यहाँभी कई दिव्यदेश हैँ) मधुरांतक चिदंवर श्रीमुष्टि, सियाडी, मायावरम्, कुंभकोण तंजौर, श्रीरंगनाथ, मदुरा, सुंदर-बाहु, रामेश्वर धनुष्कोटि, दर्भशयन विल्लुपत्तूर, अल्वारतिरुनगरी (यहांनौ ग्राम तीर्थहैं) तोताद्रि, त्रिकनगुडी छोटेनारायण, त्रिप्तिसार, पद्मनाभ जनार्दन फिर श्रीरंगम्, श्रीरंगपट्टन, मयसूर मैलकोटा, हैदराबाद इसक्रम से छैमासमेँ यात्रा समाप्त की।

लौटकर हैदराबाद आया तो जिस सर्वोत्तम लाभकी आशा थी वहतो न हुआ किंतु सेठ लोगोंसे एक हज़ार प्राप्त हुआ उसे ऋणवालोंको भेजदिया हैदराबादसे नाशिक स्नान करताहुआ बंबई आया इसवेर बंबईसे भी अच्छा लाभ हुआ वहांसे गुजरात काठियावाड़ होताहुआ द्वारकाको गया।

इस यात्रामेँ मान बहुत पाया। महाराजवड़ौदा भी बड़े मानसे

मिले और पांचसौ रुपया दिया। भावनगरसे भी अच्छा लाभ हुआ यहां के दीवान बड़ेयोग्य पुरुष थे।

द्वारिकासे सिंधमें आया यहां लाभ तो अच्छा नहीं हुआ किंतु अद्वैतवेदांतके रसिक अच्छे अच्छे मिले जो सूक्ष्मविषयोंको भी अच्छा समझ जातेथे। सिंधसे पंजाबमें आया, पंजाब अमृतसरमें बहुत ही अच्छेलाभकी आशा थी किंतु उक्त शत्रुभूतभ्राताकी शत्रुताके कारण वैसा लाभ न हुआ पंजाबसे जयपुर आया। यहां से ऋण उतारनेको राजपूतानेमें घूमनेका विचार था किंतु जयपुरमे ज्वर बड़ेजोरसे आया इधर सवावर्षसे अन्न छोड़ाहुआथा (फलाहार करताथा) इन दोकारणों से निर्बलता इतनी बढ़गई कि विवश होकर काशीको चलाआया। काशी आकर फिर व्युत्पत्तिवाद के पाठका आरंभ किया।

इस जगापर ऋणदेनेवालोंकी प्रशंसाकिये बिना मुझसे नहीं रहाजाता कि समयातिक्रमहोने पर भी मुझे किसीने तंग नहीं किया यह उन लोगोंकी लायकीहै इसके अनंतर मैंने शक्तिवाद और व्युत्पत्तिवादपर आदर्शनामक टीका लिखकर छपवाई इनदोनों टीकाओंके बनाने तथा छपवाने में भी बुद्धि तथा धनका बहुत व्यय हुआ। इसके अनंतर श्रीवैष्णवव्रतनिर्णय बनाकर छपवाया।

श्रीगुरुचरणोंके अलिविलासिसंलापपर भी उनकी आज्ञासे टीका लिखी जो अभीतक छपी नहीं। यह अलिविलासिसंलाप दार्शनिकविषयका बहुत ही उत्तम पद्यात्मक ग्रंथ है, यह ग्रंथ बेजोड़ है यह कहनेमें भी कुछ अत्युक्ति नहीं।

पूर्वोक्त भ्रातामहाशय ने जैसा कुछ मेरे साथ विश्वासघात किया

उसे कुछ लिख नहीं सकता। इसके अनंतर यह संगीतसुदर्शन ग्रंथ लिखा। अष्टश्लोकीपर भाषाटीका लिखकर वेंकटेश्वरप्रेसमें छपवाई यह वैष्णवसंप्रदाय का ग्रंथ है।

धीरे धीरे ऋण भी उतरा किंतु ऋण पीछा नहीं छोड़ता कुछ न कुछ बनाही रहता है।

तदनंतर दशरूपक न्यायभाष्य श्रीभाष्य इन ग्रंथोंपर टीका लिखकर छपवाई इन ग्रंथोंसे विद्वान्लोगभी बहुत प्रसन्न हुए।

महाशय मैंने जो यह अपना जीवनवृत्त लिखाहै इसकी कुछ भी अपेक्षा न थी किंतु लोगोंकी देखादेखी लिखदिआहै क्षमा करना और जो कुछ मैंने यहां लिखाहै वह बड़े संक्षेपसे लिखाहै यदि पूर्णरीतिसे लिखता तो सौ पचास पेजसे कम न होता सविस्तर लिखता तो दो सौ पेज होजाता किंतु मैं इतने संक्षेपको भी विस्तर ही समझता हूँ क्योंकि वस्तुगत्या देखा जाय तो मेरे जीवनवृत्तमेंसे यदि वक्तव्य श्रोतव्य हो सकतीहैं तो दो ही वार्ता होसकतीहैं—एक तो—मैंने अपनी शक्त्यनुसार उक्त भारी विपत्तिके समय भी विद्याभ्यासमें न्यूनता नहीं की और अत्यंत अपरिचित गुरुसे दो अक्षर संपादितकिए तथा विजातीय संगीतविद्याको भी सीखा। द्वितीय—भ्राताओंके पैत्रिकदायसे जवाब देनेसे मैंने सर्वथा संतोष किआ पैत्रिकदाय त्यागनेमें भगवदनुग्रहसे मैं कोईतरह भी ब्राह्मण-वैष्णव मर्यादासे भ्रष्ट नहीं हुआ, बस। मैंने यहां अपने पिता तथा भ्राताओंकी निठुराईका जो वृत्तांत लिखाहै इससे भ्राताओंको अवश्य खेद हुआ होगा इससे मैं भ्राताओंसे क्षमा मांगता हूँ, सत्यको छिपाना उचित न समझ मैंने यह वृत्तांत लिखाहै और जगतशिक्षा-

केलिए भी लिख दिआ है, इस वृत्तांतकेलिए अब भ्रातालोग भी पश्चात्ताप करतेहैं, इस विपत्तिने मेरा तो पूर्ण उपकार ही किया। आगे कैसे बीतेगी यह कुछ प्रतीत नहीं। वस्तुगत्या जिनका जीवन-वृत्त कुछ अलौकिक हो उनीका पढ़ने तथा लिखने योग्य होताहै ना कि मेरेसे साधारण जीवका। अच्छा कहाहै—

"चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातक नाशनम् ॥"
चरित्रं रामचन्द्रस्य ज्ञेयं गेयं ह्यलौकिकम्।

संवत १९७२ पंजाबी पं० सुदर्शनाचार्यशास्त्री,
काशी।

———

॥ श्रीः ॥

अथ

सुदर्शनाचार्यशास्त्रिकृता

शिवाष्टपदी

भज विषमविलोचनवेशम्,

चन्द्रकिरणसमशुभ्रसुदर्शनशैलनितम्बनिवेशम् ॥ ध्रु० ॥

निटिलविलोचनलोचनतः कृतभस्मशरीररतीशम् ।

हिमनिधिसानुसमाधिसमञ्चितचक्रधरं धरणीशम् ॥ १ ॥

यामवतीपतिपूर्वकलापरिकलितविशालललाटम् ।

हैमवतीपरिरम्भपवित्रितचित्रितवत्सकपाटम् ॥ २ ॥

व्यालवलयकमनीयकरम्बितभूषितहस्तसरोजम् ।

शैलसुतावदनेन्दुविलोचनचञ्चलहृदयमनोजम् ॥ ३ ॥

विष्णुपदीपरिभोगपरिष्कृततुङ्गकपर्दकतल्पम् ।

गानकलाकुतुकेन नवीकृतताण्डवकल्पमनल्पम् ॥ ४ ॥

भक्तजननमरणादिमहास्रवमोचनकौशलवेषम् ।

त्रिभुवनमण्डलमण्डनपण्डितवन्दितपादविशेषम् ॥ ५ ॥

विष्णुमतीयतृतीयविचक्षणवल्लभवादनिदानम् ।

चाटुकथाचातुर्यनिकृन्तितगिरिजामानसमानम् ॥ ६ ॥

संहृतसागरमथनविनिस्सृतदारुणदारदशोकम् ।
मन्मथविशिखभुजङ्गविषाहतिसंहृतिसमवितलोकम् ॥ ७ ॥
गीतमिदं हरहर्षकरं किल सुखयुत पुररिपुदासम् ।
अष्टपदीरचनेन पिनाकी वितरतु हरिपदवासम् ॥ ८ ॥

म. म. सी. आइ. ई. श्रीगङ्गाधरशास्त्रिणामन्तेवासी
पञ्चनदीयः
सुदर्शनाचार्यशास्त्री, काशी

॥ श्री ॥

अथ

श्रीकृष्णपञ्चकम्

कादम्बहंसपरिसेवितवारिधारा
फुल्लारविन्दशतशोभितमध्यभागा ।
कादम्बनिम्बबकुलादिलसत्तटाढ्या
वृन्दावने वहति या यमुना स्रवन्ती ॥ १ ॥

तस्यास्तटे परममञ्जुलरम्यशोभे
सङ्ख्याविहीनसुभगाकृतिगोसुयूथे ।
कामप्रियापरिभवार्हसुदिव्यरूप-
वृन्दीभवद्व्रजजनीव्रजरङ्गभूते ॥ २ ॥

बर्हावतंसललितः करकङ्कणाढ्यो
मुक्तावलीशतविभूषितवक्रकण्ठः ।
अर्धेन्दुतुल्यनिटिलः कलिकाभनासो
मुग्धारविन्दविलसत्सुविलोलनेत्रः ॥ ३ ॥

श्रीमन्मृणालसहिताब्जमनोहरेण
हस्तेन बिम्बफलसुन्दरदन्तपत्रे ।
वेणुं निधाय मधुरध्वनिधामरागा-
नालापयन् हृदयमोहनमन्त्रभूतान् ॥ ४ ॥

सूच्याद्यनेकपदपाटवकोविदेन्दु-
दिव्यप्रसूनतुलसीकृतदामवत्सः ।
श्रीराधिकावदनपङ्कजलुब्धचित्तो
नृत्यत्यहो प्रियकिशोरतनुर्मुरारिः ॥ ५ ॥

काशीनिवासी
पं० सुदर्शनाचार्यशास्त्री.

पञ्जनदीयपण्डितसुदर्शनाचार्यशास्त्रिनिर्मित-
मुद्रितपुस्तकानां सूची—

---

१ श्रीभाष्यश्रीमती
२ न्यायभाष्यप्रसन्नपदा
३ शास्त्रदीपिकाप्रकाश:
४ व्युत्पत्तिवादादर्श:
५ शक्तिवादादर्श:
६ विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला
७ सावलोकदशरूपकप्रभा
८ अद्वैतचन्द्रिका
९ संस्कृतभाषा
१० श्रीरङ्गदेशिकशतकम्
११ श्रीसृतियतीन्द्रवन्दना
१२ अनर्घनलचरित्र (नाटक)
१३ भगवद्गीताभाषाभाष्य
१४ श्रीआल्वारचरितामृत
१५ अष्टादशरहस्यभाषा
१६ श्रीचर्या
१७ नीतिरत्नमाला
१८ श्रीवैष्णवव्रतनिर्णय

१९ भगवद्गीतासतसई
२० हिंदीदर्पण (हिन्दी-भाषाव्याकरण)
२१ भाषाशब्दसंग्रह (हिन्दीकोश)
२२ अष्टश्लोकीटीकासुदर्शनी
२३ संगीतसुदर्शन (यह)

शंखचक्रतिलकबन्ध चित्रपट

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्--

चौखंभासंस्कृतसीरिज आफीस
बनारससिटी